इस्तांबुल के बास्टर्ड के बेस्टसेलिंग लेखक से

एलिफ शफाक

ईव की तीन बेटियाँ

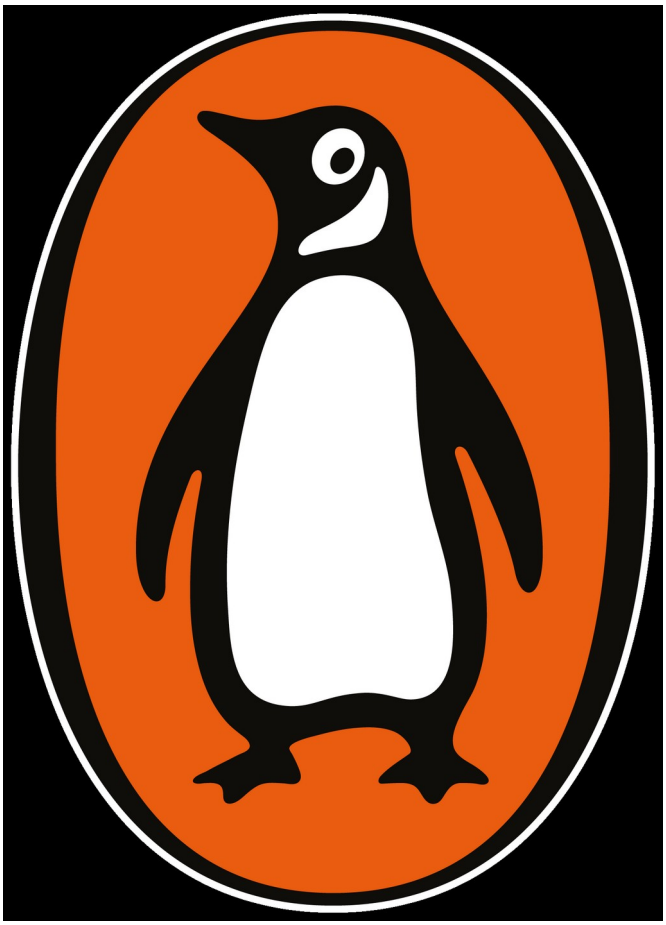

[redacted]

[redacted]

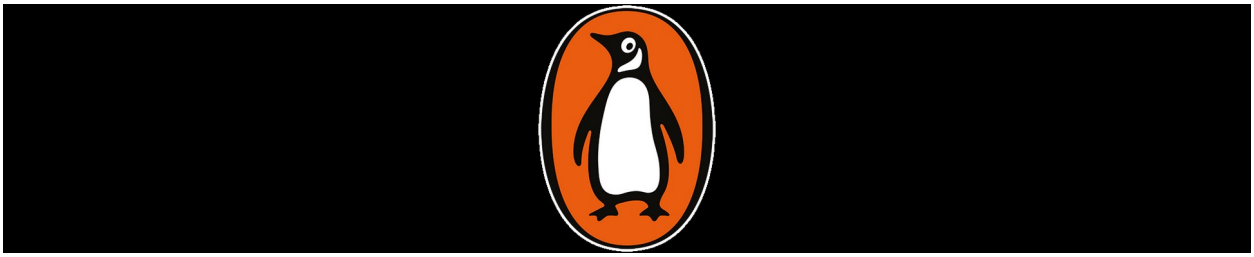

अंतर्वस्तु

भाग एक
हैंडबैग
मूक कवि
चाकू
खिलौना
नोटबुक
पोलरॉइड
बगीचा
होजा
मछलीघर
नाश्ते की मेज
अज़राएल के साथ टैंगो
कविता
प्रतिज्ञापत्र
पिछले खाना
भाग दो
विश्वविद्यालय
वो नक्शा
खामोशी
मनोरंजन
धावक
मछुआ
काला कैवियार
उत्सव
शब्दकोश
देवदूत
संगीत बॉक्स
कुंवारीपन की बेल्ट

भाग तीन

सिस्किन
पवित्र पाठ्यक्रम
विपणन रणनीति
घातक चुंबन
खाली पृष्ठ
वृत्त
छाया नाटक
उत्पीड़ित
स्वप्न व्याख्याकार
लबादा
भविष्यवाणी
लिमोसिन
हिमखंड
मानसिक

भाग चार

बीज
रात
झूठ
बेली डांसर
सूची
दूसरे का चेहरा
चक्र
यरीहो का घर
प्यादा
मार्ग
शेरी का गिलास
ईश्वर की अनुपस्थिति की ध्वनि द डॉन रेडवुड
अलमारी
अपमान
तीन जुनून
स्वीकृतियाँ
पेंगुइन का अनुसरण करें

लेखक के बारे में
एलिफ शफाक दस उपन्यासों की प्रशंसित लेखिका हैं, जिनमें 'द आर्किटेक्ट्स अप्रेंटिस' और 'द बैस्टर्ड ऑफ इस्तांबुल' शामिल हैं। वह तुर्की में सबसे अधिक पढ़ी जाने वाली महिला लेखिका हैं। उनकी रचनाओं का चालीस से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और उन्हें प्रतिष्ठित 'शेवेलियर डेस आर्ट्स एट डेस लेट्रेस' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वह एक प्रसिद्ध वक्ता, महिला अधिकार कार्यकर्ता और टिप्पणीकार भी हैं, जो नियमित रूप से 'द न्यूयॉर्क टाइम्स', 'गार्जियन' और 'ला रिपब्लिका' सहित अंतरराष्ट्रीय प्रकाशनों में योगदान देती हैं। एलिफ को ऑरेंज प्राइज, बेलीज प्राइज और इम्पैक डब्लिन अवार्ड के लिए लॉन्गलिस्ट किया गया है और इंडिपेंडेंट फॉरेन फिक्शन प्राइज के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया है। वह लंदन में रहती हैं।
और इसे www.elifshafak.com पर पाया जा सकता है।

हे भगवान, जब मैं मर जाऊँगा तो आप क्या करेंगे?
जब मैं, तुम्हारा गेंदबाज, टूटा हुआ, झूठ बोलता हूँ? जब मैं, तुम्हारा पेय, बासी या सूखा हो जाऊँ?
मैं तुम्हारा लिबास हूँ, तुम्हारा धंधा हूँ।
मुझे खोकर तुम अपना अर्थ खो देते हो।
– आर. एम. रिल्के, द बुक ऑफ आवर्स से

अगर कोई आपको बुलाए तो क्या आप आएंगे?
गलत नाम से?
मैं रोया, क्योंकि वर्षों से
वह मेरी बाहों में नहीं आया;
फिर एक रात मुझे एक रहस्य बताया गया;
शायद यही वह नाम है जिससे आप ईश्वर को पुकारते हैं। यह वास्तव में उनका नहीं है।
हो सकता है यह सिर्फ एक उपनाम हो।
– राबिया, पहली महिला सूफी संत, आठवीं शताब्दी, इराक

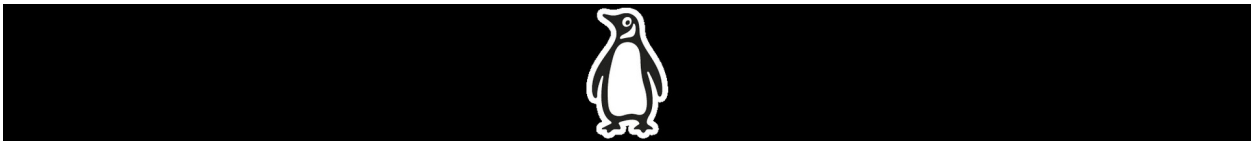

□□□ □□

[redacted]

[redacted], 2016

[redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

सहकर्मियों के लिए शानदार भोज आयोजित करती थीं; रमज़ान के पहले और आखिरी दिन रोज़ा रखती थीं, लेकिन बीच के दिन अक्सर छोड़ देती थीं; हर ईद पर मेहंदी लगी भेड़ की कुर्बानी देती थीं। उन्होंने कभी सड़कों पर कूड़ा नहीं फेंका, सुपरमार्केट में कभी लाइन नहीं तोड़ी, कभी अपनी आवाज़ नहीं उठाई - यहाँ तक कि जब उनके साथ बुरा बर्ताव किया गया तब भी नहीं। वे एक आदर्श पत्नी, एक आदर्श माँ, एक आदर्श गृहिणी, एक आदर्श नागरिक और एक आदर्श आधुनिक मुस्लिम थीं।
समय, एक कुशल दर्जी की तरह, पेरी के जीवन को ढकने वाले दो धागों को इतनी सहजता से सिल चुका था: लोग उसके बारे में क्या सोचते थे और वह खुद अपने बारे में क्या सोचती थी। दूसरों पर उसकी छाप और उसकी आत्म-धारणा इस कदर आपस में जुड़ गई थी कि वह यह बता ही नहीं सकती थी कि उसके हर दिन का कितना हिस्सा दूसरों की इच्छाओं से तय होता था और कितना हिस्सा उसकी अपनी सच्ची चाहत से। उसे अक्सर साबुन के पानी से भरी बाल्टी लेकर सड़कों, सार्वजनिक चौकों, सरकार, संसद, नौकरशाही को साफ करने और साथ ही कुछ लोगों के मुंह भी धोने की तीव्र इच्छा होती थी। इतनी गंदगी साफ करनी थी; इतने टूटे हुए टुकड़ों को जोड़ना था; इतनी गलतियों को सुधारना था। हर सुबह जब वह घर से निकलती, तो एक गहरी आह भरती, मानो एक ही सांस में वह पिछले दिन की सारी गंदगी को मिटा देना चाहती हो। पेरी हमेशा दुनिया पर सवाल उठाती थी और अन्याय के सामने चुप रहने वालों में से नहीं थी, फिर भी उसने कुछ साल पहले जो कुछ उसके पास था, उसी में संतुष्ट रहने का संकल्प लिया था। इसलिए यह आश्चर्य की बात होगी जब एक सामान्य से दिन, पैंतीस वर्ष की आयु में, स्थापित और सम्मानित होने के बावजूद, वह खुद को अपनी आत्मा में खालीपन को घूरते हुए पाएगी।
बाद में उसने खुद को तसल्ली दी कि यह सब ट्रैफिक की वजह से था। गड़गड़ाहट, शोर, धातु से धातु टकराने की आवाज़, मानो हज़ारों योद्धाओं की चीखें हों। पूरा शहर एक विशाल निर्माण स्थल बन गया था। इस्तांबुल बेकाबू होकर बढ़ता ही जा रहा था – एक फूली हुई सुनहरी मछली की तरह, जिसे पता ही नहीं था कि उसने अपनी क्षमता से ज़्यादा खा लिया है, और वह अभी भी खाने की तलाश में भटक रही थी। उस मनहूस दोपहर को याद करते हुए, पेरी ने निष्कर्ष निकाला कि अगर वह भयानक जाम न होता, तो घटनाओं की वह श्रृंखला, जिसने उसकी यादों के एक लंबे समय से सुप्त हिस्से को जगा दिया, कभी शुरू ही न होती।

वे दोनों एक दो लेन वाली सड़क पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, जो एक पलटे हुए ट्रक से आधी अवरुद्ध थी, और हर आकार के वाहनों के बीच फंसे हुए थे। पेरी की उंगलियां स्टीयरिंग व्हील पर थपथपा रही थीं, और वह हर कुछ मिनटों में रेडियो चैनल बदल रही थी, जबकि उसकी बेटी, ईयरफोन लगाए, यात्री सीट पर ऊबे हुए चेहरे के साथ बैठी थी। जैसे कोई जादुई छड़ी गलत हाथों में पड़ जाए, वैसे ही ट्रैफिक मिनटों को घंटों में, इंसानों को दरिंदों में और समझदारी के हर अंश को घोर पागलपन में बदल देता था। इस्तांबुल को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था। समय, दरिंदे और पागलपन की तो उसके पास कोई कमी नहीं थी। एक घंटा ज़्यादा, एक घंटा कम; एक दरिंदा ज़्यादा, एक पागल कम – एक निश्चित सीमा के बाद, कोई फर्क नहीं पड़ता था।
इस शहर की गलियों में पागलपन ऐसे दौड़ रहा था मानो खून में कोई नशीली दवा घुल गई हो। हर दिन लाखों इस्तांबुलवासी इसकी एक और खुराक ले रहे थे, यह जाने बिना कि वे और भी ज़्यादा असंतुलित होते जा रहे हैं। जो लोग अपनी रोटी बाँटने से इनकार करते थे, वे अब अपना पागलपन बाँट रहे थे। सामूहिक रूप से तर्क खो देने में कुछ रहस्यमय सा था: अगर काफ़ी लोगों की नज़रें एक ही मतिभ्रम का अनुभव करतीं, तो वह सच बन जाता; अगर काफ़ी लोग एक ही दुख पर हँसते, तो वह एक छोटा सा मज़ाक बन जाता।
‘अरे, अपने नाखून कुरेदना बंद करो!’ पेरी ने अचानक कहा। ‘मुझे कितनी बार कहना पड़ेगा?’
धीरे-धीरे, बहुत धीरे-धीरे, डेनिज़ ने अपने इयरफ़ोन को अपनी गर्दन के चारों ओर नीचे खींच लिया। 'ये मेरे नाखून हैं,' उसने कहा और उनके बीच रखे कागज़ के कप से एक घूंट पिया।
सड़क पर निकलने से पहले वे स्टार बोरेक पर रुके – यह एक तुर्की कॉफी चेन है जिस पर स्टारबक्स ने अपने लोगो, मेनू और नाम के विकृत रूप का इस्तेमाल करने के लिए बार-बार मुकदमा किया था, लेकिन कानूनी खामियों के कारण यह अभी भी चल रही थी – और उन्होंने दो ड्रिंक्स खरीदीं: पेरी के लिए एक स्किनी लैटे और उसकी बेटी के लिए एक डबल चॉकलेट चिप क्रीम फ्रैपुचिनो। पेरी ने अपनी ड्रिंक खत्म कर ली थी, लेकिन डेनिज़ बहुत देर लगा रही थी, जैसे कोई घायल पक्षी धीरे-धीरे घूंट ले रही हो। बाहर सूरज क्षितिज में डूब रहा था, उसकी आखिरी किरणें झोंपड़ियों की छतों, मस्जिदों के गुंबदों और गगनचुंबी इमारतों की खिड़कियों को एक ही फीके जंग के रंग में रंग रही थीं।

पेरी ने धीमी आवाज़ में कहा, 'और ये मेरी कार है। तुम फर्श पर त्वचा के टुकड़े गिरा रही हो।'
जैसे ही ये शब्द उसके मुँह से निकले, उसे पछतावा हुआ। मेरी कार! अपने बच्चे से, या किसी से भी, ऐसी बात कहना कितना बुरा है! क्या वह उन भौतिकवादी मूर्खों में से एक बन गई थी जिनकी आत्म-पहचान और पहचान उनकी संपत्ति में सिमटी हुई थी? उसे उम्मीद थी कि ऐसा नहीं था।
उसकी बेटी अचंभित नहीं दिखी। इसके बजाय, डेनिज़ ने अपने पतले कंधों को उचकाया, बाहर की ओर देखा और गुस्से में अगले नाखून पर काम करने लगी।
कार अचानक आगे बढ़ी, फिर टायरों की तेज़ आवाज़ के साथ रुक गई। डीलर के कैटलॉग के अनुसार, यह मोंटे कार्लो ब्लू रंग की रेंज रोवर थी। ब्रोशर में अन्य रंग विकल्प भी थे: दावोस व्हाइट, ओरिएंटल ड्रैगन रेड, सऊदी डेजर्ट पिंक, घाना पुलिस ग्लॉस ब्लू या इंडोनेशियाई सेना मैट ग्रीन। पेरी ने होंठ सिकोड़ते हुए और सिर हिलाते हुए उन तुच्छ मार्केटिंग वालों के बारे में सोचा जिन्होंने ये नाम रखे थे, और सोचा कि क्या ड्राइवरों को पता है कि जिन शानदार और आलीशान कारों में वे शान दिखाते हैं, उनका संबंध पुलिस, सेना या अरब प्रायद्वीप के रेतीले तूफानों से है।
इस्तांबुल में चाहे उनका रंग कोई भी हो, आलीशान गाड़ियों की भरमार थी, जिनमें से कई बेमेल लगती थीं, मानो उच्च कुल के, खानदानी कुत्ते हों जो आराम और सुख-सुविधाओं भरी जिंदगी जीने के लिए पैदा हुए हों, लेकिन किसी तरह रास्ता भटक कर जंगल में आ गए हों। वहां रेसिंग कन्वर्टिबल गाड़ियां थीं जो रफ्तार पकड़ने की जगह न मिलने की निराशा में दहाड़ रही थीं, ऑफ-रोडर गाड़ियां थीं जो बड़ी कुशलता से भी छोटी पार्किंग जगहों में नहीं घुस पाती थीं – अगर संयोग से कोई जगह मिल भी जाती थी तो – और महंगी सेडान गाड़ियां थीं जो खुली सड़कों के लिए बनी थीं, लेकिन दूर देशों और टीवी विज्ञापनों में ही दिखाई देती थीं।
पेरी ने कहा, 'मैंने पढ़ा है कि इसे दुनिया का सबसे खराब स्थान दिया गया है।'
'क्या?'
‘ट्रैफिक की हालत! हम नंबर वन हैं। काहिरा से भी बदतर, सोचिए। दिल्ली से भी बदतर!’

ऐसा नहीं था कि वह कभी काहिरा या दिल्ली गई हो। लेकिन, कई इस्तांबुलवासियों की तरह, पेरी का भी यही मानना था कि उसका शहर उन दूरदराज, उबड़-खाबड़ और भीड़भाड़ वाले स्थानों से कहीं अधिक सभ्य है – भले ही, 'दूरदराज' एक सापेक्ष अवधारणा थी और 'उबड़-खाबड़' और 'भीड़भाड़' दोनों ही विशेषण अक्सर इस्तांबुल के लिए इस्तेमाल किए जाते थे। फिर भी, यह शहर यूरोप की सीमा से लगा हुआ था। इतनी नज़दीकी का कुछ तो महत्व होना ही था। यह इतना आश्चर्यजनक रूप से नज़दीक था कि तुर्की ने यूरोप के द्वार में एक पैर रखा और अपनी पूरी ताकत से आगे बढ़ने की कोशिश की – लेकिन पाया कि द्वार इतना संकरा था कि उसका बाकी शरीर कितना भी छटपटाए, वह अंदर नहीं घुस सका। और यूरोप, इस बीच, दरवाज़ा बंद कर रहा था, इससे स्थिति और भी बिगड़ गई। ‘वाह!’ डेनिज़ ने कहा।
‘शानदार?’ पेरी ने अविश्वास से दोहराया।
'हाँ। कम से कम हम किसी चीज़ में तो नंबर एक हैं।'
उसकी बेटी की यही खासियत थी: हाल ही में, पेरी किसी भी विषय पर जो भी राय व्यक्त करती, डेनिज़ उसका ठीक उल्टा रुख अपना लेती। पेरी की हर बात, चाहे कितनी भी सटीक या तर्कसंगत क्यों न हो, उसकी बेटी उसे घृणा की हद तक शत्रुतापूर्ण ढंग से लेती। पेरी जानती थी कि साढ़े बारह साल की नाज़ुक उम्र में पहुँच चुकी डेनिज़ को अपने माता-पिता – विशेषकर परिवार की मुखिया
– के प्रभाव से मुक्त होना ही था। वह यह समझती थी। लेकिन जो बात उसे समझ नहीं आ रही थी, वह थी इस प्रक्रिया में शामिल क्रोध की मात्रा। उसकी बेटी के अंदर ऐसा उग्र क्रोध भरा हुआ था, जैसा पेरी ने अपने जीवन के किसी भी पड़ाव पर, यहाँ तक कि किशोरावस्था में भी कभी अनुभव नहीं किया था। उसने स्वयं किशोरावस्था को एक मासूम उलझन, लगभग भोलेपन के साथ पार किया था। अपनी बेटी की तुलना में वह कितनी अलग किशोरी थी, जबकि उसकी माँ उसके जितनी समझदार और विचारशील नहीं थी। एक अजीब से तरीके से, पेरी अपनी बेटी के अचानक होने वाले क्रोध से जितना अधिक पीड़ित होती, उतना ही वह खुद पर इस बात के लिए क्रोधित होती कि उसने अतीत में अपनी माँ पर पर्याप्त क्रोध क्यों नहीं किया।
'जब तुम मेरी उम्र के हो जाओगे, तब इस शहर के लिए तुम्हारे पास धैर्य नहीं बचेगा,' पेरी ने धीरे से कहा।

‘जब तुम मेरी उम्र की हो जाओगी…’ डेनिज़ ने चिढ़कर नकल की। ‘तुम कभी ऐसे बात नहीं करती थी।’
‘ऐसा इसलिए है क्योंकि हालात और भी बदतर होते जा रहे हैं!’
‘नहीं, माँ, ऐसा इसलिए है क्योंकि आप खुद को बूढ़ा बना रही हैं,’ डेनिज़ ने कहा। ‘यह आपके बात करने का तरीका है। और देखो आपने क्या पहना है!’
मेरी ड्रेस में क्या खराबी है?
मौन।
पेरी ने अपनी बैंगनी रेशमी पोशाक और मोतियों और कढ़ाई वाली शिफॉन जैकेट पर एक नज़र डाली। उसने यह पोशाक एक बड़े शॉपिंग सेंटर के भीतर बने एक नए और चमकदार शॉपिंग सेंटर की एक बुटीक से खरीदी थी – मानो एक शॉपिंग सेंटर ने दूसरे को जन्म दिया हो। यह बहुत महंगी थी। जब उसने कीमत पर आपत्ति जताई, तो दुकानदार ने कुछ नहीं कहा, बस उसके होंठों के कोने पर एक हल्की सी मुस्कान थी। "अगर आप इसे खरीद नहीं सकतीं, तो आप यहाँ क्या कर रही हैं?" मुस्कान ने कहा। पेरी को यह तिरस्कार भरा रवैया बहुत बुरा लगा। उसने खुद को कहते सुना, "मैं इसे ले लूंगी।" अब उसे अपनी त्वचा पर कपड़े की जकड़न महसूस हुई, और रंग की खामी भी नज़र आई। दुकान की फ्लोरोसेंट लाइटों के नीचे जो बैंगनी रंग बोल्ड और आत्मविश्वास से भरा दिख रहा था, वह दिन के उजाले में भड़कीला और दिखावटी लग रहा था।
ये सब व्यर्थ के विचार थे, क्योंकि उसके पास घर जाकर कपड़े बदलने का समय नहीं था। वे पहले ही एक व्यवसायी के समुद्र किनारे बने आलीशान बंगले में रात के खाने के लिए देर हो रही थी, जिसने पिछले कुछ वर्षों में अपार दौलत कमाई थी - वैसे इसमें कुछ भी असामान्य नहीं था। इस्तांबुल में बूढ़े गरीब और नए अमीर, दोनों ही बहुतायत में थे, और ऐसे लोग भी थे जो एक झटके में पहले वर्ग से दूसरे वर्ग में छलांग लगाने की लालसा रखते थे।
पेरी को ये डिनर पार्टियाँ बिल्कुल पसंद नहीं थीं, जो देर रात तक चलती थीं और अक्सर अगले दिन उसे सिरदर्द दे देती थीं। वह घर पर रहना और रात के समय उपन्यास में खो जाना ज़्यादा पसंद करती थी – पढ़ना ही उसके लिए ब्रह्मांड से जुड़ने का तरीका था। लेकिन इस्तांबुल में एकांत एक दुर्लभ सौभाग्य था। हमेशा कोई न कोई महत्वपूर्ण कार्यक्रम होता था या कोई जरूरी सामाजिक जिम्मेदारी निभानी होती थी, मानो संस्कृति, अकेलेपन से डरे बच्चे की तरह, यह सुनिश्चित करती थी कि हर कोई हर समय दूसरों के साथ रहे। खूब हंसी-मजाक

और खाना-पीना। राजनीति और सिगार। जूते और कपड़े, लेकिन सबसे बढ़कर, डिजाइनर हैंडबैग। महिलाएं अपने हैंडबैग को दूर-दराज की लड़ाइयों में जीती हुई ट्रॉफी की तरह दिखाती थीं। कौन जानता था कि कौन से असली हैं और कौन से नकली। इस्तांबुल की मध्यम-से-उच्च वर्ग की महिलाएं, नकली सामान खरीदते हुए पकड़े जाने से बचने के लिए, ग्रैंड बाज़ार और उसके आसपास की संदिग्ध दुकानों में जाने के बजाय, दुकानदारों को अपने घरों में आमंत्रित करती थीं। शनेल, लुई विटन और बोटेगा वेनेटा से भरी वैन, जिनकी खिड़कियां काली की हुई थीं और नंबर प्लेटें कीचड़ से ढकी हुई थीं (हालांकि बाकी वाहन बिल्कुल साफ-सुथरे थे), अमीरों के इलाकों के बीच तेजी से आती-जाती रहती थीं, और विला के निजी गैरेज में पिछले दरवाजों से प्रवेश करती थीं, जैसे किसी नॉयर फिल्म या जासूसी फिल्म में होता है। भुगतान नकद में किया गया, कोई रसीद जारी नहीं की गई, कोई और सवाल नहीं पूछा गया। अगली सामाजिक सभा में, वही महिलाएं एक-दूसरे के हैंडबैग की चुपके से जांच करतीं, न केवल लक्जरी ब्रांड की पहचान करने के लिए, बल्कि उसकी प्रामाणिकता - या नकली की गुणवत्ता - का भी अंदाजा लगाने के लिए। यह बहुत मेहनत का काम था। दिखावटी मेहनत।
महिलाएं घूर रही थीं। वे एक-दूसरे की खामियों को तलाश रही थीं, चाहे वे स्पष्ट हों या छिपी हुई। मैनीक्योर में देरी, बढ़ा हुआ वजन, लटकता पेट, बोटॉक्स लगे होंठ, नसें, लिपोसक्शन के बाद भी दिख रही सेल्युलाईट, रंगाई की जरूरत वाले बालों की जड़ें, पाउडर की परतों के नीचे छिपा हुआ मुंहासा या झुर्री... उनकी पैनी निगाहों से कुछ भी नहीं छूट रहा था। पार्टी में आने से पहले वे चाहे कितनी भी बेफिक्र क्यों न रही हों, कई महिला मेहमान धीरे-धीरे पीड़ित और अपराधी दोनों बन गईं। पेरी आने वाली शाम के बारे में जितना ज्यादा सोचती, उतना ही उसे डर लगने लगा।
कार से बाहर निकलते हुए डेनिज़ ने कहा, 'मुझे अपने पैरों को थोड़ा आराम देना है।'
तुरंत ही पेरी ने एक सिगरेट जला ली। उसने दस साल से भी ज़्यादा समय पहले धूम्रपान छोड़ दिया था। लेकिन हाल ही में वह सिगरेट का पैकेट साथ रखने और कभी-कभार जलाने की आदत में पड़ गई थी; कुछ कश लेने के बाद संतुष्टि तो मिल जाती थी, पर वह कभी भी पूरी सिगरेट खत्म नहीं करती थी। हर बार बची हुई सिगरेट को वह अपराधबोध और घृणा के भाव से फेंक देती थी। बाद में गंध को

छिपाने के लिए वह पुदीने की च्युइंग गम चबाती थी, हालाँकि उसे उसका स्वाद पसंद नहीं था। उसे हमेशा से यह शक था कि अगर च्युइंग गम के स्वाद राजनीतिक व्यवस्थाएँ हों, तो पुदीने का स्वाद फासीवाद होगा – सर्वाधिकारवादी, नीरस और कठोर।
‘माँ, मुझे साँस लेने में दिक्कत हो रही है,’ डेनिज़ ने वापस आकर कहा। ‘क्या तुम्हें नहीं पता कि इससे तुम्हारी जान चली जाएगी?’
डेनिज़ उस उम्र में थी जब बच्चे धूम्रपान करने वालों को खुलेआम घूम रहे पिशाचों की तरह देखते हैं। स्कूल में उसने धूम्रपान के हानिकारक प्रभावों पर एक प्रस्तुति दी थी, जिसमें एक पोस्टर भी शामिल था जिस पर चमकीले तीर एक नए खुले सिगरेट के पैकेट से एक नई खोदी गई कब्र की ओर इशारा कर रहे थे। 'ठीक है, ठीक है,' पेरी ने हाथ हिलाकर बात टालते हुए कहा।
'अगर मैं राष्ट्रपति होता, तो मैं उन माता-पिता को जेल में डाल देता जो अपने बच्चों के बगल में धूम्रपान करते हैं। सचमुच!'
'अच्छा हुआ कि आप चुनाव नहीं लड़ रहे हैं,' पेरी ने अपनी खिड़की नीचे करने के लिए बटन दबाने से पहले कहा।
उसके द्वारा छोड़े गए धुएं ने हवा में चक्कर लगाया और फिर धीरे-धीरे, अप्रत्याशित रूप से, उनके बगल वाली कार की खुली खिड़की से अंदर प्रवेश कर गया। इस शहर में यही एक चीज़ थी जिससे कभी छुटकारा नहीं पाया जा सकता था: निकटता। हर चीज़ किसी दूसरी चीज़ से सटी हुई थी। पैदल यात्री गलियों में एक इकाई की तरह चलते थे; यात्री नौकाओं पर ठसाठस बैठे होते थे या बसों और मेट्रो में कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होते थे; शरीर कभी टकराते और भिड़ते थे, और कभी भारहीनता से एक-दूसरे के साथ मौजूद होते थे, हवा में उड़ते सिंहपर्णी के बीजों की तरह एक-दूसरे को धीरे से छूते हुए।
उनके बगल वाली कार में दो आदमी बैठे थे। दोनों ने उसे देखकर मुस्कुराया। यह याद करके कि पितृसत्ता पर आधारित 'एडवांस्ड लर्नर्स गाइड' में किसी अनजान पुरुष के चेहरे पर धुआं उड़ाने को एक महिला द्वारा खुला यौन आमंत्रण बताया गया है, पेरी का चेहरा पीला पड़ गया। हालांकि कभी-कभी यह बात भूल जाना आसान होता है, लेकिन शहर मर्दानगी के हिमखंडों से भरा एक तूफानी समुद्र था, और उनसे सावधानी और समझदारी से दूर रहना ही बेहतर था, क्योंकि कोई नहीं जानता था कि सतह के नीचे कितना खतरा छिपा हो सकता है।

चाहे गाड़ी चला रही हो या पैदल चल रही हो, एक महिला हमेशा अपनी निगाहें कहीं और टिकाए रखती थी, मानो दूर की यादों में खोई हो। जहाँ भी संभव हो, उसे अपना सिर नीचे झुका लेना चाहिए था ताकि शालीनता का स्पष्ट संदेश दे सके, जो आसान नहीं था, क्योंकि शहरी जीवन के खतरों, अवांछित पुरुषो का ध्यान और यौन उत्पीड़न के कारण हर समय सतर्क रहना ज़रूरी था। पेरी की समझ से परे था कि महिलाओं से यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि वे अपना सिर नीचे रखें और साथ ही साथ अपनी आँखें चारों ओर खुली रखें। उसने सिगरेट फेंक दी और खिड़की बंद कर ली, इस उम्मीद में कि वे दोनों अजनबी जल्द ही उसमें दिलचस्पी खो देंगे। ट्रैफिक लाइट लाल से हरी हो गई, लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा। कुछ भी नहीं हिल रहा था।
तभी उसकी नज़र सड़क के बीचोंबीच चलते एक आवारा पर पड़ी। लंबा-पतला, नुकीले चेहरे वाला वह दुबला-पतला था, माथे पर उम्र से कहीं ज़्यादा झुर्रियाँ थीं, ठुड्डी पर दाने थे और हाथों पर एक्ज़िमा के धब्बे थे जिनसे पानी बह रहा था। उसने पहले सोचा कि वह उन लाखों सीरियाई शरणार्थियों में से एक है जो अपनी जानी-पहचानी ज़िंदगी छोड़कर भाग आए हैं – हालाँकि यह भी मुमकिन था कि वह कोई स्थानीय तुर्क, कुर्द, जिप्सी या इन सबका मिश्रण हो। इस अंतहीन पलायन और बदलावों की धरती पर कितने लोग यकीन से कह सकते हैं कि वे एक ही शुद्ध नस्ल के हैं, जब तक कि वे खुद से और अपने बच्चों से झूठ न बोल रहे हों? लेकिन फिर भी, इस्तांबुल में धोखे की भरमार थी।
उस आदमी के पैर सूखी मिट्टी से सने हुए थे, और उसने एक फटा हुआ कोट पहना हुआ था जिसका कॉलर ऊपर की ओर मुड़ा हुआ था, इतना गंदा कि लगभग काला हो गया था। उसकी लिपस्टिक से सनी सिगरेट पाकर वह बेपरवाही से उसे पी रहा था। पेरी की नज़र उसके मुंह से उसकी आँखों तक गई, यह देखकर वह हैरान रह गई कि वह उसे एक मनोरंजक भाव से देख रहा था। उसके हाव-भाव में एक अकड़ थी, मानो चुनौती दे रहा हो; वह किसी आवारा से ज़्यादा एक अभिनेता की तरह लग रहा था जो आवारा का किरदार निभा रहा हो और अपने अभिनय पर आश्वस्त होकर तालियों की प्रतीक्षा कर रहा हो।
अब तीन आदमियों से बचना था - कार में बैठे दो और एक आवारा आदमी - पेरी अचानक एक तरफ मुड़ गई, यह भूलकर कि वहाँ एक कॉफी का कप रखा था। फ्रैपुचिनो कप पलट गया और उसका झागदार पेय उसकी गोद में गिर गया।

‘अरे नहीं!’ पेरी चीख पड़ी और अपनी महंगी पोशाक पर फैलते गहरे दाग को देखकर दहशत से उसकी आंखें फटी रह गईं।
उसकी बेटी ने सीटी बजाई, मानो इस गड़बड़ी का आनंद ले रही हो। 'आप कह सकते हैं कि यह किसी नए सनकी डिजाइनर की रचना है।'
उस टिप्पणी को अनसुना करते हुए और खुद को कोसते हुए, पेरी ने बिना देखे अपना हैंडबैग उठाया – एक लैवेंडर रंग का शुतुरमुर्ग चमड़े का बिरकिन बैग, जो हर तरह से बिल्कुल सही था, सिवाय 'हर्मेस' शब्द पर गलत उच्चारण चिह्न के, क्योंकि शहर के अवैध व्यापारी सही वर्तनी को छोड़कर लगभग हर चीज की नकल कर सकते थे – जिसे उसने अपनी टांगों के बीच दबा रखा था। उसने टिशू का एक पैकेट निकाला, हालांकि वह जानती थी, या उसके मन का एक हिस्सा जानता था, कि पोंछने से दाग और भी गहरा हो जाएगा। अपनी इसी लापरवाही में उसने एक ऐसी गलती कर दी जो इस्तांबुल का कोई भी अनुभवी ड्राइवर कभी नहीं करता: उसने अपना हैंडबैग पिछली सीट पर फेंक दिया – और दरवाजे खुल गए।
उसकी नज़र के कोने से कुछ फड़फड़ाता हुआ दिखाई दिया। बारह साल से कम उम्र की एक भिखारी लड़की सिक्कों की भीख मांगते हुए उनकी ओर आ रही थी। उसके दुबले-पतले शरीर पर कपड़े फड़फड़ा रहे थे, हथेली आगे की ओर फैली हुई थी, वह कमर से ऊपर के शरीर को बिना हिलाए ऐसे चल रही थी मानो पानी में चल रही हो। वह हर कार के सामने लगभग दस सेकंड रुकती और फिर अगली कार की ओर बढ़ जाती। शायद, पेरी ने सोचा, उसे समझ आ गया था कि अगर कोई इतने कम समय में दया नहीं जगा सकता, तो वह कभी नहीं जगा पाएगा। करुणा कभी अचानक नहीं आती: यह या तो सहज होती है या पूरी तरह से अनुपस्थित होती है।
जब लड़की रेंज रोवर के पास पहुँची, तो पेरी और डेनिज़ दोनों ने अपने आप ही दूसरी दिशा में देखा, मानो उसे देखा ही न हो। लेकिन इस्तांबुल के भिखारी दूसरों की नज़रों से ओझल रहने के आदी थे और पूरी तैयारी के साथ आए थे। ठीक उसी जगह पर जहाँ माँ और बेटी ने अपना सिर घुमाया था, लगभग उसी उम्र का एक और बच्चा खुला हाथ लिए खड़ा था।
पेरी को बेहद राहत मिली जब लाइट हरी हो गई और गाड़ियाँ तेज़ी से आगे बढ़ने लगीं, मानो किसी बगीचे की नली से पानी बह रहा हो। वह एक्सीलरेटर दबाने ही वाली थी कि तभी उसने पीछे का दरवाज़ा इतनी तेज़ी से खुलते और बंद होते सुना, मानो कोई चाकू चला रहा हो। शीशे में उसने देखा कि उसका हैंडबैग कार से बाहर निकाला जा रहा है।

‘चोर!’ संघर्ष के कारण उसकी आवाज बैठ गई थी, पेरी चिल्लाई। ‘मदद करो, उन्होंने मेरा बैग चुरा लिया। चोर!’
उसके पीछे चल रही गाड़ियाँ बेतहाशा हॉर्न बजा रही थीं, मानो उन्हें पता ही न हो कि क्या हुआ है, वे जाने के लिए बेताब थीं। यह स्पष्ट था कि कोई भी मदद करने वाला नहीं था। पेरी एक पल के लिए हिचकिचाई, लेकिन बस एक क्षण के लिए। स्टीयरिंग व्हील को कुशलता से घुमाते हुए, उसने गाड़ी को फुटपाथ की ओर मोड़ दिया और इमरजेंसी लाइटें जलाकर छोड़ दीं।
‘माँ, तुम क्या कर रही हो?’
पेरी ने कोई जवाब नहीं दिया। समय नहीं था। उसने बच्चों के भागने की दिशा देख ली थी और उसे तुरंत उनके पीछे जाना था; उसके भीतर कुछ, शायद एक पशुवत प्रवृत्ति, उसे आश्वस्त कर रही थी कि अगर वह उन्हें ढूंढ लेगी तो उसे वह वापस मिल जाएगा जो वास्तव में उसका हक है।
‘माँ, इसे जाने दो। यह सिर्फ एक बैग है – और वह भी नकली!’
‘मेरे पास उसमें पैसे और क्रेडिट कार्ड हैं। और मेरा फोन भी!’
लेकिन उसकी बेटी चिंतित थी, यहाँ तक कि शर्मिंदा भी। डेनिज़ को ध्यान आकर्षित करना पसंद नहीं था, वह बस भीड़ में घुलमिल जाना चाहती थी, मानो धूसर रंग के सागर में एक बूँद। उसकी सारी विद्रोही भावनाएँ मानो उसकी माँ के लिए ही थीं।
पेरी ने कहा, 'यहीं रुको, दरवाजे बंद कर लो, मेरा इंतजार करो। एक बार तो मेरी बात मानो। प्लीज़!'
लेकिन, माँ…
बिना सोचे-समझे, बिल्कुल भी सोचे बिना, पेरी कार से बाहर भागी, एक पल के लिए यह भूल गई कि उसने ऊँची एड़ी के जूते पहने हुए हैं। उसने अपने जूते उतारे और उसके नंगे पैर सड़क पर ज़ोर से पड़े। कार के अंदर से उसकी बेटी उसे हैरानी और शर्मिंदगी से आँखें फाड़कर देखती रही।
पेरी दौड़ी। बैंगनी रंग की पोशाक में, उम्र का बोझ ढोते हुए, लाल गालों वाली, तीन बच्चों की माँ, दर्जनों निगाहों के सामने, इस बात से बुरी तरह वाकिफ थी कि उसके स्तन बेतहाशा उछल रहे थे और वह कुछ नहीं कर पा रही थी। फिर भी, एक अजीब सी आज़ादी का एहसास करते हुए, एक ऐसे वर्जित क्षेत्र में प्रवेश करते हुए जिसे वह नाम नहीं दे सकती थी, वह सड़क पार करके अंदरूनी गलियों की ओर दौड़ पड़ी, जबकि ड्राइवर हंस रहे थे और समुद्री पक्षी उसके

सिर के ऊपर मंडरा रहे थे। अगर वह हिचकिचाती, अगर वह एक पल के लिए भी धीमी होती, तो वह अपने इस काम से भयभीत हो जाती। जंग लगे कीलों, टूटी हुई बीयर की बोतलों या चूहे के पेशाब पर पैर रखने की संभावना उसे डरा देती। इसके बजाय वह आगे बढ़ती रही। उसके पैर, मानो अपने आप ही, अपनी याददाश्त के साथ, तेज़ी से और तेज़ी से दौड़ते रहे, ऑक्सफोर्ड के उस पुराने समय को याद करते हुए जब वह हर दिन, चाहे बारिश हो या धूप, तीन से चार मील दौड़ती थी।
पेरी को दौड़ना बहुत पसंद था। उसके जीवन की अन्य खुशियों की तरह, यह भी अब नहीं रहा।

मूक कवि

इस्तांबुल, 1980 का दशक
जब पेरी छोटी थी, तब नलबंतोग्लस परिवार इस्तांबुल के एशियाई हिस्से में स्थित एक निम्न-मध्यमवर्गीय इलाके, मूक कवि गली में रहता था। जीर्ण-शीर्ण जीवन के बीच, खुली खिड़कियों से तरह-तरह की गंध आती थी - तली हुई बैंगन, पिसी हुई कॉफी, ताज़ी पकी हुई रोटी, धीमी आंच पर पकता लहसुन - इतनी तेज़ कि वह हर चीज़ में समा जाती थी, नालियों और मैनहोल के ढक्कनों में भी रिस जाती थी; इतनी तीखी कि सुबह की हवा तुरंत अपनी दिशा बदल लेती थी। लेकिन स्थानीय लोगों ने शिकायत नहीं की। उन्होंने कभी उस गंध पर ध्यान नहीं दिया। यह गंध केवल बाहरी लोगों को ही महसूस होती थी - हालाँकि बहुत कम बाहरी लोगों को कभी इस इलाके में आने का कोई कारण होता था। घर एक अव्यवस्थित कब्रिस्तान में कब्रों की तरह टेढ़े-मेढ़े खड़े थे। हर तरफ ऊब का कोहरा छाया रहता था और केवल तभी क्षण भर के लिए छंटता था जब खेल में नकल करते बच्चों की चीखें हवा में गूंजती थीं।
सड़क के इस विचित्र नाम की उत्पत्ति को लेकर कई अफवाहें प्रचलित थीं। कुछ लोगों का मानना था कि इस क्षेत्र में रहने वाले एक प्रसिद्ध ओटोमन कवि, जिन्होंने महल में एक कविता भेजी थी और बदले में उन्हें मामूली बख्शीश मिली थी, उससे असंतुष्ट होकर सुल्तान द्वारा उचित पुरस्कार दिए जाने तक फिर कभी न बोलने की कसम खाई थी।
“निश्चित रूप से सीज़र और सिकंदर महान की भूमि के स्वामी, तीन महाद्वीपों और पाँच समुद्रों के शासक, पृथ्वी पर ईश्वर की छाया, अपने दीन प्रजाजन पर अपनी असीम कृपा बरसाएँगे। लेकिन यदि वे ऐसा नहीं करते, तो मैं इसे अपनी कविताओं की निम्नता का संकेत मानूँगा और अपनी मृत्यु तक मौन रहूँगा, क्योंकि एक असफल कवि से एक मृत कवि बेहतर है।” आधी रात की बर्फ की तरह शांत होने से पहले उनके ये अंतिम शब्द थे। यह दिखावा नहीं था; वे अपने मन में शासक की जो भी छवि रखते थे, उसका आदर करते थे, उससे भयभीत होते थे और उसकी आज्ञा का पालन करते थे। फिर भी, एक कलाकार होने के नाते, वे अधिक ध्यान, अधिक प्रशंसा, अधिक प्रेम की लालसा से खुद को रोक नहीं पाए – और कुछ और पैसे भी मिल जाएँ तो बुरा नहीं होगा।

पलंग पर रखा और अपने पति के मुँह में जीभ वापस लगाने के लिए किसी सर्जन को ढूंढने गई, तभी एक सीगल खुली खिड़की से झपट्टा मारकर उसे चुरा ले गया। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि इस्तांबुल के सीगल कुख्यात रूप से कूड़ा बीनने वाले होते हैं और स्वाद की परवाह किए बिना जो कुछ भी उनके रास्ते में आता है, उसे खा जाते हैं। एक ऐसा पक्षी जो अपने से दोगुने आकार के जानवरों की आँखें नोचकर निगल सकता है, वह कुछ भी खा सकता है। इसलिए कवि मछुआरे के दीपक की तरह मौन रहा। इसके बजाय, उसके सिर के ऊपर चक्कर लगाता हुआ एक सफेद पक्षी उन कविताओं को गा रहा था जिन्हें वह अब पूरे शहर के सामने सुना नहीं सकता था।
इसके नाम के पीछे की सच्चाई चाहे जो भी हो, जिस गली में नलबंतोग्लस परिवार रहता था, वह एक शांत और सुनसान गली थी, जहाँ सबसे प्रिय सद्गुणों को पदार्थ की तीन अवस्थाओं के आधार पर परिभाषित किया जाता था: अल्लाह और इमामों की आज्ञा का अटूट पालन, पूर्ण समर्पण और दृढ़ स्थिरता के साथ पालन करना (ठोस); जीवन की दिव्य नदी को स्वीकार करना, चाहे वह कितनी भी कीचड़ और गंदगी बहाकर लाए (तरल); और महत्वाकांक्षाओं का त्याग करना, क्योंकि सभी संपत्ति और उपलब्धियाँ अंततः हवा में विलीन हो जाएँगी (गैस)। यहाँ हर भाग्य को पूर्वनिर्धारित माना जाता था, हर पीड़ा अपरिहार्य थी, जिसमें गली के निवासियों द्वारा एक-दूसरे पर किए जाने वाले अत्याचार भी शामिल थे, जैसे फुटबॉल के झगड़े, राजनीतिक कलह और पत्नी पर मारपीट।
उनका घर दो मंजिला था, जिसका रंग खट्टी चेरी जैसा था। वर्षों से इसे कई अलग-अलग रंगों में रंगा गया था: नमकीन बेर जैसा हरा, अखरोट के जैम जैसा भूरा, अचार वाले चुकंदर जैसा बैंगनी। नालबंतोग्लस परिवार निचली मंजिल किराए पर लेता था; उनका मकान मालिक ऊपरी मंजिल पर रहता था। हालाँकि परिवार बिल्कुल भी अमीर नहीं था – समय और स्थान के अनुसार धन का महत्व सापेक्ष होता है – पेरी बिना किसी अभाव का अनुभव किए पली-बढ़ी थी। यह अभाव बाद में आएगा और, सभी विलंबित चीजों की तरह, यह इतनी तीव्रता से आएगा कि मानो बीते हुए समय की भरपाई कर रहा हो। वह उस घर की कमियों को देखना सीखेगी जिसमें वह कभी इतनी सुरक्षित और प्रिय बेटी थी।
वह नालबंतोग्लस परिवार की सबसे छोटी संतान थी, उसका जन्म एक बड़ा आश्चर्य था, क्योंकि उसके माता-पिता पहले ही दो बेटों को किशोरावस्था के अंतिम चरण तक पाल चुके थे और उन्हें उम्रदराज माना जाता था। लाड़-प्यार से पली-बढ़ी,

हर ज़रूरत पूरी की गई बल्कि पहले से ही तय की गई, पेरी ने अपने शुरुआती वर्षों में एक सुखमय जीवन व्यतीत किया। फिर भी, उसे घर में तनाव का एहसास होता था, जो तब और बढ़ जाता था जब उसके पिता और माता एक ही कमरे में होते थे।
वे सराय और मस्जिद की तरह एक-दूसरे के विपरीत थे। उनके माथे पर छाई शिकन और उनकी आवाज़ में व्याप्त कठोरता उन्हें प्रेम में डूबे जोड़े के रूप में नहीं, बल्कि शतरंज के खेल में प्रतिद्वंद्वी के रूप में दर्शाती थी। अपने विवाह के धुंधले बोर्ड पर वे दोनों आगे बढ़ते हुए, अगली चालों की रणनीति बनाते हुए, किले, हाथी और वज़ीरों पर कब्ज़ा करते हुए, अंततः एक-दूसरे को हराने का लक्ष्य रखते थे। दोनों पक्ष एक-दूसरे को परिवार का अत्याचारी, असहनीय मानते थे और एक दिन यह कहने की इच्छा रखते थे, 'चेकमेट, शाह मनद, सम्राट असहाय है।' उनका विवाह आपसी द्वेष से इतना गहराई से जुड़ा हुआ था कि उन्हें अब अन्याय और निराशा महसूस करने के लिए किसी कारण की आवश्यकता नहीं थी। उस छोटी उम्र में भी पेरी को यह आभास हो गया था कि प्रेम उसके माता- पिता के साथ रहने का कारण नहीं था, और शायद कभी था भी नहीं।
शाम को वह अपने पिता को मेज पर झुके हुए देखती, जहाँ राक़ी की बोतल के चारों ओर मेज़े (स्वादिष्ट पकवान) की प्लेटें रखी होती थीं। भरवां अंगूर के पत्ते, मसले हुए चने, भुनी हुई लाल मिर्च, जैतून के तेल में पके हुए आर्टिचोक और उनका पसंदीदा, मेमने के दिमाग का सलाद। वह धीरे-धीरे खाते, हर व्यंजन का स्वाद ऐसे चखते जैसे कोई पारखी हो, जबकि यह खाना उनके लिए केवल एक मजबूरी थी ताकि वे खाली पेट शराब न पी सकें। 'मैं जुआ नहीं खेलता, मैं चोरी नहीं करता, मैं रिश्वत नहीं लेता, मैं सिगरेट नहीं पीता और मैं औरतों के पीछे नहीं भागता; अल्लाह अपनी इस पुरानी रचना को इतने बुरे कर्मों से तो ज़रूर बख्शेगा,' मेन्सुर अक्सर कहा करते थे। आमतौर पर, इन लंबे रात्रिभोजों में उनके साथ एक-दो दोस्त भी शामिल होते थे। वे राजनीति और नेताओं के बारे में बातें करते, हालात से निराश होते। इस देश के अधिकांश लोगों की तरह, वे उन चीजों के बारे में सबसे ज़्यादा बात करते थे जो उन्हें सबसे कम पसंद थीं।
‘दुनिया घूमो, तुम्हें पता चलेगा, हर कोई अलग-अलग तरह से पीता है,’ मेन्सुर कहा करते थे। खुद उन्होंने जवानी में जहाज के इंजीनियर के तौर पर काफी यात्रा की थी। ‘लोकतंत्र में, जब कोई आदमी नशे में धुत हो जाता है, तो वह

रोता है, “मेरी प्रेमिका को क्या हुआ?” जहाँ लोकतंत्र नहीं होता, वहाँ जब कोई आदमी नशे में धुत हो जाता है, तो वह रोता है, “मेरे प्यारे देश को क्या हुआ?”’
जल्द ही शब्द धुनों में घुलमिल जाएंगे और वे गाने लगेंगे - पहले बाल्कन की जोशीली धुनें, फिर काला सागर के क्रांतिकारी गीत, और धीरे-धीरे, अनिवार्य रूप से, दिल टूटने और एकतरफा प्यार के अनातोलियन लोकगीत। तुर्की, कुर्द, ग्रीक, अर्मेनियाई, लाडिनो गीत हवा में घुलमिल जाएंगे, जैसे धुएं के गुबार लहरा रहे हों।
एक कोने में अकेले बैठी पेरी के मन में भारीपन छा जाता था। वह अक्सर सोचती थी कि उसके पिता को इतना उदास क्या कर देता है। उसे लगता था मानो दुख उनके साथ ऐसे चिपक गया हो जैसे जूते के तले के नीचे काली तारकोल की पतली परत। वह न तो उनका मनोबल बढ़ा सकती थी और न ही कोशिश करना छोड़ सकती थी, क्योंकि जैसा कि परिवार के सभी लोग गवाही देंगे, वह अपने पिता की ही बेटी थी। दीवार पर सजे अलंकृत चित्र में से, तुर्कों के पिता अतातुर्क, सुनहरे रंग से जगमगाती अपनी नीली आँखों से नीचे देखते रहते थे। राष्ट्रीय नायक के चित्र हर जगह लगे थे; रसोई में सैन्य वर्दी में अतातुर्क, बैठक में रेडिंगोट पहने अतातुर्क, मुख्य शयनकक्ष में कोट और कलपाक पहने अतातुर्क, और हॉल में रेशमी दस्ताने और लहराते हुए लबादे में अतातुर्क। राष्ट्रीय अवकाशों और स्मृति दिवसों पर, मेन्सुर एक खिड़की के बाहर तुर्की ध्वज के साथ उस महान व्यक्ति का चित्र लटका देता था ताकि हर कोई उसे देख सके।
‘याद रखना, अगर वो न होते तो हम ईरान जैसे हो जाते,’ मेन्सुर अक्सर अपनी बेटी से कहते थे। ‘मुझे गोल दाढ़ी बढ़ानी पड़ती और खुद शराब की तस्करी करनी पड़ती। पता चल जाता तो वे मुझे चौक पर कोड़े मारते। और तुम, मेरी जान, इतनी कम उम्र में भी चादर ओढ़े होती!’
मेंसुर के मित्र—स्कूल शिक्षक, बैंक अधिकारी, इंजीनियर—भी अतातुर्क और उनके सिद्धांतों के प्रति उतने ही समर्पित थे। वे देशभक्ति कविताएँ पढ़ते, सुनाते और जब प्रेरणा मिलती, तो लिखते—जिनमें से कई लय में इतनी समान और सार में इतनी दोहराव वाली थीं कि वे अलग-अलग रचनाएँ नहीं, बल्कि एक ही आह्वान की गूँज प्रतीत होती थीं। फिर भी, पेरी को बैठक कक्ष में रुककर उनकी सौहार्दपूर्ण बातचीत सुनना, उनकी आवाज़ों के स्वर और लय को महसूस करना अच्छा लगता था, जो हर बार गिलास भरने के साथ ऊपर-नीचे होते रहते थे।

- जो शराब पीने जितना ही गंभीर पाप है। न तो रसीले अंगूर और न ही बोतलबंद शराब में उनकी उतनी रुचि थी जितनी कि कुचलने की क्रिया में।
उपदेशक के प्रभाव में आकर सेल्मा में स्पष्ट परिवर्तन आ गया था। अब वह न केवल विपरीत लिंग के लोगों से हाथ मिलाने से इनकार करती थी, बल्कि किसी पुरुष द्वारा खाली की गई बस सीट पर बैठने से भी मना कर देती थी, भले ही उस पुरुष ने उसके लिए सीट खाली कर दी हो। हालांकि वह अपनी कुछ करीबी सहेलियों की तरह नकाब नहीं पहनती थी, फिर भी वह अपना सिर पूरी तरह ढक कर रखती थी। उसे पॉप संगीत से नफरत हो गई थी, जिसे वह भ्रष्ट और भ्रष्ट करने वाला मानती थी। उसने घर से हर तरह की मिठाइयाँ, स्नैक्स, आइसक्रीम, आलू के चिप्स और चॉकलेट उत्पाद - यहाँ तक कि हलाल लेबल वाले खाद्य पदार्थ भी - निकाल दिए थे, क्योंकि उज़ुम्बाज़ एफेंडी ने उसे बताया था कि उनमें जिलेटिन हो सकता है, जिसमें कोलेजन हो सकता है, और उसमें सूअर का मांस हो सकता है। सूअर के मांस के किसी भी अर्क के संपर्क में आने से वह इतनी भयभीत थी कि शैम्पू की जगह वह कच्चे जैतून के तेल का साबुन इस्तेमाल करती थी; टूथपेस्ट की जगह मिसवाक की छड़ी; और मोमबत्ती की जगह बाती लगी मक्खन का टुकड़ा जलाती थी। उन्हें शक था कि शायद इन जूतों को बनाने में सूअर की हड्डियों से बना गोंद इस्तेमाल किया गया हो, इसलिए उन्होंने विदेशी ब्रांड के जूते पहनने से इनकार कर दिया और सबको भी ऐसा ही करने की सलाह दी। सैंडल सबसे सुरक्षित थे। कई सालों तक, अपनी माँ के निर्देश पर, पेरी स्कूल ऊँट के चमड़े की सैंडल और बकरी की ऊन के मोज़े पहनकर जाती रही – लेकिन सहपाठी उसका मज़ाक उड़ाते थे।
समान विचारधारा वाले लोगों के एक समूह के साथ, सेल्मा ने इस्तांबुल और उसके आसपास के समुद्र तटों पर यात्राओं का आयोजन किया, और बिकनी में धूप सेंक रही महिलाओं को समझाने की कोशिश की कि वे अपने पापों का पश्चाताप कर लें, इससे पहले कि उनकी आत्माओं का उद्धार हो सके। 'आज तुम जो भी शरीर दिखाओगी, वह कल तुम्हें नरक में झुलसा देगा।' समूह ने खराब व्याकरण और उससे भी बदतर वर्तनी वाले पर्चे बांटे, जिनमें विस्मयादिबोधक चिह्नों की भरमार थी और अल्पविरामों की कमी थी; वे इस बात पर जोर दे रहे थे कि अल्लाह हव्वा की पोतियों को सार्वजनिक स्थानों पर अर्धनग्न देखना नहीं चाहता। बाद में शाम को, जब समुद्र तट सुनसान हो जाते थे, तो वही पर्चे हवा में फड़फड़ाते हुए दिखाई देते थे, फटे और दागदार, जिन पर 'व्यभिचार', 'अपवित्रता', 'शाश्वत नरक' जैसे शब्द सूखे समुद्री शैवाल की तरह रेत में बिखरे होते थे।

सेल्मा हमेशा से ही जीवंत स्वभाव की थी, लेकिन जीवन के इस नए पड़ाव में वह और भी अधिक बातूनी और वाद-विवाद करने वाली हो गई थी, क्योंकि वह दूसरों को, विशेषकर अपने पति को, सही राह पर लाने के लिए उत्सुक थी। यह देखते हुए कि मेन्सुर सुधरने को तैयार नहीं था, नलबंतोग्लू परिवार दो हिस्सों में बँट गया था: उसका क्षेत्र और उसका क्षेत्र – दार अल-इस्लाम और दार अल-हार्प – यानी समर्पण का क्षेत्र और युद्ध का क्षेत्र।
धर्म उनके जीवन में उल्कापिंड की तरह अप्रत्याशित रूप से आ गिरा और परिवार को दो विरोधी गुटों में बांटकर एक खाई खड़ी कर दी। छोटा बेटा, हाकान, जो कट्टर धार्मिक और अति-राष्ट्रवादी था, अपनी माँ का पक्ष लेने लगा; बड़ा बेटा, उमुत, संघर्ष को शांत करने के प्रयास में कुछ समय तक तटस्थ रहा, हालाँकि उसके हर कथन और कार्य से यह स्पष्ट था कि उसका झुकाव वामपंथी विचारधारा की ओर था। जब उसने अंततः खुद को वामपंथी घोषित किया, तो वह एक पूर्ण मार्क्सवादी के रूप में सामने आया।
इन सब बातों ने सबसे छोटी बच्ची पेरी को एक अजीब स्थिति में डाल दिया, जहाँ उसके माता-पिता दोनों ही उसे अपने वश में करने की कोशिश कर रहे थे; उसका अस्तित्व ही परस्पर विरोधी विश्वदृष्टिकोणों का युद्धक्षेत्र बन गया था। यह सोचकर कि उसे अपनी माँ की कट्टर धार्मिकता और अपने पिता के कट्टर भौतिकवाद के बीच हमेशा के लिए एक चुनाव करना होगा, वह लगभग पंगु हो गई थी। पेरी ऐसी शख्सियत थी जो संभव हो तो किसी को नाराज़ नहीं करना चाहती थी। आपस में ही विद्रोह करने वाले और अंतहीन युद्ध लड़ने वाले योद्धाओं से घिरी होने के कारण, उसने मजबूरी में शांत रहना स्वीकार कर लिया और खुद को आज्ञाकारी बना लिया। किसी को पता चले बिना, उसने अपने अंदर की आग को बुझा दिया, उसे राख में बदल दिया।
पेरी के माता-पिता के बीच की खाई बैठक कक्ष के एक कोने में सबसे ज़्यादा स्पष्ट थी। टीवी स्टैंड के ऊपर दो अलमारियाँ थीं, जिनमें से पहली उसके पिता की किताबों के लिए आरक्षित थी - लॉर्ड किनरोस द्वारा लिखित 'अतातुर्क: द रिबर्थ ऑफ ए नेशन', स्वयं अतातुर्क द्वारा लिखित 'द ग्रेट स्पीच', नाज़िम हिकमत द्वारा लिखित 'थिंग्स आई डिडंट नो आई लव्ड', दोस्तोयेव्स्की द्वारा लिखित 'क्राइम एंड पनिशमेंट', बोरिस पास्टर्नक द्वारा लिखित 'डॉक्टर ज़िवैगो', प्रथम विश्व युद्ध पर जनरलों और आम सैनिकों के संस्मरणों का

पूरा संग्रह, और उमर खय्याम की 'द रुबाइयात' का एक पुराना संस्करण, जिसका आवरण कई बार पढ़ने से फट चुका था।
दूसरी शेल्फ बिल्कुल अलग ही दुनिया थी। सालों से उस पर हर आकार और रंग के चीनी मिट्टी के घोड़े सजे हुए थे – सुनहरे अयाल और इंद्रधनुषी पूंछ वाले टट्टू, नर घोड़े और मादा घोड़े, जो उछल-कूद करते, दौड़ते और चरते नज़र आते थे। धीरे-धीरे किताबें आने लगीं: अल-बुखारी द्वारा संकलित हदीसें; अल-ग़ज़ाली द्वारा रचित 'आत्मा का अनुशासन'; 'इस्लाम में प्रार्थना और दुआ के लिए चरण-दर-चरण मार्गदर्शिका'; 'पैगंबरों की कहानियां'; 'अच्छी मुस्लिम महिला की पुस्तिका'; 'धैर्य और कृतज्ञता के गुण'; 'सपनों की इस्लामी व्याख्या'। दाहिना कोना उज़ुम्बाज़ एफ़ेंडी की दो किताबों के लिए आरक्षित था: 'एक अनैतिक दुनिया में पवित्रता का महत्व' और 'शैतान तुम्हारे कान में फुसफुसा रहा है'। जैसे-जैसे नई किताबें जुड़ती गईं, घोड़े धीरे-धीरे शेल्फ के अंत में खिसकते चले गए, जहाँ वे किसी चट्टान के किनारे पर लटके हुए से लग रहे थे।
घर के गलियारों में उमड़ते शब्दों और भावनाओं के सैलाब ने पेरी के भोले- भाले मन को स्तब्ध कर दिया। उसे बचपन से यही सिखाया गया था कि अल्लाह ही एकमात्र है। फिर भी, वह एक पल के लिए भी यह विश्वास नहीं कर पा रही थी कि जिन धार्मिक शिक्षाओं को उसकी माँ पवित्र मानती थी और जिनके खिलाफ उसके पिता ज़ुबान चलाते थे, वे एक ही ईश्वर की थीं। यकीनन ऐसा नहीं हो सकता था। और अगर ऐसा था भी, तो दो लोग, जो भले ही अब साथ न सोते हों, एक ही ईश्वर को इतने विपरीत दृष्टिकोण से कैसे देख सकते थे?
सतर्क और आज्ञाकारी पेरी इन प्रतिशोधों की प्रत्यक्षदर्शी थी, वह देखती थी कि कैसे उसके प्रियजन एक-दूसरे को टुकड़े-टुकड़े कर देते थे। उसने शुरू में ही जान लिया था कि परिवार के झगड़े से ज्यादा कष्टदायक कोई झगड़ा नहीं होता, और ईश्वर को लेकर होने वाला झगड़ा तो और भी ज्यादा कष्टदायक होता है।

चाकू

इस्तांबुल, 2016
कुछ ही देर में पेरी की नज़र उन भिखारियों पर पड़ी जिन्होंने उसका पर्स छीन लिया था। हालाँकि वे जितनी तेज़ी से भाग सकते थे भागे, पेरी उनसे भी तेज़ थी। उसे अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था – अगर सच में किस्मत थी तो। वह उनके पीछे एक पथरीली गली में दौड़ पड़ी – जिसकी पत्थर की दीवारें अंधेरे से उभर रही थीं – हर साँस के साथ उसका सीना जल रहा था।
बच्चे वहाँ एक आदमी के दोनों ओर खड़े थे – वही आवारा औरत जिसने उसकी सिगरेट का बचा हुआ हिस्सा पी लिया था। पेरी उनकी ओर एक कदम बढ़ी, लेकिन कुछ बोल नहीं पाई। उसने बिना सोचे-समझे यह काम कर दिया था, और अब जब वह सोच रही थी, तो वह भ्रमित महसूस कर रही थी।
आवारा आदमी ने शांत भाव से मुस्कुराया, मानो वह उसका इंतज़ार कर रहा हो। पास से देखने पर वह अलग ही लग रहा था, उसकी गालों की हड्डियाँ एकदम समरूप थीं, उसकी गहरी काली आँखों में जवानी की चमक थी। अगर उसकी दयनीय हालत न होती, तो कोई कह सकता था कि उसमें एक फैशनेबल आदमी की झलक थी। उसने उसका हैंडबैग आदरपूर्वक अपनी गोद में रखा हुआ था, उसे ऐसे सहला रहा था जैसे किसी बिछड़े प्रेमी को।
'यह मेरा है,' पेरी ने कहा, उसकी आवाज कांप रही थी क्योंकि उसने गले में अटकी हुई गांठ को निगलने की कोशिश की।
यह देखकर उसने बैग का कुंडा खोला और उसे हवा में उठाकर उल्टा कर दिया। उसके अंदर की सारी चीज़ें बाहर बिखर गईं: घर की चाबियाँ, लिपस्टिक, आईलाइनर, एक पेन, परफ्यूम की एक छोटी बोतल, एक मोबाइल फोन, टिशू का एक पैकेट, धूप का चश्मा, हेयरब्रश, टैम्पोन… और एक चमड़े का बटुआ। उसने इसे सावधानी से उठाया। अंदर से उसने नोटों का एक बंडल, क्रेडिट कार्ड, एक महिला का गुलाबी पहचान पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस और परिवार की पसंदीदा यादों की तस्वीरें निकालीं। लगातार सीटी बजाते हुए उसने पैसे और फोन जेब में रख लिए, बाकी चीज़ों पर ध्यान नहीं दिया। उससे एक बेफिक्र, चहचहाती धुन निकल रही थी, जो किसी पुराने संगीत यंत्र की धुन जैसी लग रही थी। जैसे ही वह बटुआ फेंकने वाला था, उसकी नज़र किसी चीज़ पर पड़ी। एक पोलरॉइड कैमरा, जो एक डिब्बे से

थोड़ा बाहर निकल आया था, जहाँ उसे बड़ी सावधानी से छिपाकर रखा गया था। बीते ज़माने की एक निशानी।
भौंहें चढ़ाते हुए, उस आवारा ने पोलरॉइड तस्वीर को गौर से देखा। उसमें चार चेहरे थे: एक पुरुष और तीन युवतियाँ। एक प्रोफेसर और उनके छात्र। कोट, टोपी और स्कार्फ में लिपटे हुए, वे ऑक्सफोर्ड के बोडलियन पुस्तकालय की ओर पीठ करके खड़े थे, ठंड से बचने के लिए या आदतवश एक-दूसरे से सटकर, उस सर्दी के सबसे ठंडे दिनों में से एक में हमेशा के लिए फंसे हुए।
उस आवारा ने अपना सिर उठाया और पेरी की तरफ देखकर मुस्कुराया, मानो उसने ऑक्सफोर्ड को किसी फिल्म या अखबार की खबर में देखा हो। या शायद उसने यह भी देखा हो कि तस्वीर में दिख रही लड़कियों में से एक वही महिला थी जो अब उसके सामने खड़ी थी। उसका वजन बढ़ गया था और चेहरे पर झुर्रियां आ गई थीं, बाल छोटे और सीधे हो गए थे, लेकिन उसकी आंखें वैसी ही थीं, बस थोड़ी सी उदासी झलक रही थी। उसने तस्वीर को एक तरफ फेंक दिया।
पेरी ने कुछ सेकंड तक देखा - इससे ज़्यादा नहीं - पोलरॉइड तस्वीर हवा में उड़ी और फिर ज़मीन पर गिर पड़ी। वह ऐसे सहम गई मानो तस्वीर जीवित हो और गिरने से उसे चोट लग सकती हो।
घबराकर उसने उस आवारा को चिल्लाकर कहा कि लोग उसकी मदद के लिए आ रहे हैं: पुलिस, पुलिसकर्मी, उसका पति। उसने अपनी शादी की अंगूठी दिखाने के लिए हाथ हिलाया, उस पल उसे दर्दनाक रूप से एहसास हुआ कि जो लड़की वह कभी थी, वह इस वैवाहिक स्थिति के प्रतीक को ताबीज की तरह दिखाने पर उसका मज़ाक उड़ाती। लेकिन उस आदमी के उसकी बात पर विश्वास न करने के पर्याप्त कारण थे, खासकर उसकी आवाज़ में आई घबराहट। गली सुनसान थी, आसमान से उजाला कम हो रहा था। वह मुख्य सड़क से कितनी दूर भटक गई थी? उसे अभी भी वाहनों की आवाज़ सुनाई दे रही थी, लेकिन वह दबी हुई थी, मानो किसी कांच की दीवार के पीछे से आ रही हो। अचानक उसे डर लगने लगा।
वह आवारा आदमी एक अजीब क्षण के लिए स्थिर खड़ा रहा। हवा इतनी शांत थी कि पेरी को लगा जैसे पास के कूड़े के ढेर में एक चूहे की सरसराहट सुनाई दे रही हो, जो भाग रहा था, खाना ढूंढ रहा था और उसका दिल, जो पिस्ता से भी छोटा था, उसकी छोटी सी छाती में धड़क रहा था। वह गली इस्तांबुल की बिल्लियों की दुनिया से बाहर, शहर की सीमाओं से बाहर और उस पल, इस दुनिया से बाहर सी लग रही थी।

शांत भाव से उस आदमी ने अपनी कोट की जेब में कुछ ढूँढा और उसे बाहर निकाला। वह एक प्लास्टिक की थैली थी जिसमें एक छोटी सी विलायक की नली थी। उसने नली को निकाला और उसमें मौजूद सारा विलायक थैली में निचोड़ दिया। फिर उसने उसमें हवा भरी और एक छोटा गुब्बारा बना लिया। अपनी बनाई हुई चीज़ को देखकर वह मुस्कुराया, एक सुंदर बर्फ का गोला जिसमें गिरने वाला हर बर्फ का टुकड़ा या तो हीरा था या मोती। उसे अपनी नाक और मुँह पर रखकर उसने गहरी साँस ली; एक बार, दो बार, फिर तीसरी बार ज़्यादा देर तक। जब उसने अपना सिर फिर से उठाया, तो उसके चेहरे के भाव बदल गए थे, मानो वह वहाँ हो या न हो। पेरी समझ गई कि वह गोंद का आदी था। अब जाकर उसने उसकी आँखों की पुतलियों में टूटी हुई रक्त वाहिकाएँ देखीं, जैसे झुलसी हुई धरती पर दरारें हों। अंदर से एक आवाज़ ने उसे अपनी बेटी और अपनी कार के पास वापस जाने के लिए कहा, लेकिन वह इतनी स्थिर खड़ी रही जैसे मानो गोंद उसके पैरों पर गिर गया हो और उसे वहीं जमा दिया हो।
आवारा ने बच्चों में से एक को प्लास्टिक की थैली दी, जिसने उत्साह में आकर लगभग उसे उससे छीन ही लिया। वह ज़ोर-ज़ोर से साँस छोड़ रही थी, जबकि दूसरी लड़की अपनी बारी का इंतज़ार कर रही थी, अधीर और चिड़चिड़ी, क्योंकि वह सबसे आखिरी थी। गोंद, सड़क पर रहने वाले बच्चों और नाबालिग वेश्याओं का पसंदीदा भोजन; वह जादुई कालीन जो उन्हें पंखों की तरह हल्का करके छतों, गुंबदों और गगनचुंबी इमारतों के ऊपर से एक दूर के राज्य में ले जाता था, जहाँ न कोई डर था और न ही डरने का कोई कारण; न कोई दर्द, न कोई जेल, न कोई दलाल। वे उस स्वर्ग में तब तक रहे जब तक वे रह सकते थे, डंठलों से सुनहरे अंगूर चूसते, रसीले आड़ू खाते। भूख और ठंड से सुरक्षित, वे राक्षसों का पीछा करते, दानवों का मज़ाक उड़ाते और जिन्नों को उन्हीं बोतलों में वापस डाल देते जिनसे वे भागे थे।
सभी मीठे सपनों की तरह, इस सपने की भी एक कीमत चुकानी पड़ी। गोंद ने उनके मस्तिष्क की कोशिकाओं की झिल्ली को गला दिया, उनके तंत्रिका तंत्र पर हमला किया, उनके गुर्दे और यकृत को नष्ट कर दिया, और उन्हें धीरे-धीरे अंदर से खा गया।
पेरी ने जरूरत से ज्यादा जोर से चिल्लाते हुए कहा, 'मैं पुलिस को बुला रही हूँ।' उसने मन ही मन सोचा कि यह कहना ठीक नहीं है और फिर और भी जोर से बोली, 'मेरी बेटी पहले ही फोन कर चुकी है। वे किसी भी मिनट यहाँ पहुँच जाएँगे।'

जैसे ही उसे इशारा मिला, वह आवारा आदमी उठ खड़ा हुआ। उसकी चाल धीमी और सधी हुई थी, शायद उसे अपना मन बदलने के लिए पर्याप्त समय देने के लिए, या फिर यह स्पष्ट करने के लिए कि जो कुछ भी होने वाला था उसमें उसकी कोई गलती नहीं थी।
दोनों बच्चे कहीं नज़र नहीं आ रहे थे। वे कब गए और कहाँ चले गए, पेरी को इसका कोई अंदाज़ा नहीं था। वे उस आवारा के आदेशों का पालन कर रहे थे। वह गलियों का सल्तनत था, कूड़े-कचरे और खुले गटरों का बादशाह, हर अवांछित और त्यागी चीज़ का मालिक; हर चीज़ का उदार संग्राहक। उसकी शक्ल नहीं, बल्कि उसके हाव-भाव की गंभीरता पेरी को किसी की याद दिला रही थी – कोई ऐसा जिसे वह अतीत में दफ़न कर चुकी थी, कोई ऐसा जिसे उसने किसी और से ज़्यादा प्यार किया था।
उस आदमी से नज़रें हटाकर, एक पल के लिए पेरी ने ज़मीन पर पड़ी पोलरॉइड तस्वीर पर नज़र डाली। यह ऑक्सफ़ोर्ड में बिताए समय की उन गिनी-चुनी तस्वीरों में से एक थी जिसे उसने इतने सालों तक संभाल कर रखा था – और प्रोफ़ेसर अज़ूर की इकलौती तस्वीर थी। वह इसे खोना बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।
जब उसने पीछे मुड़कर देखा, तो वह यह देखकर चौंक उठी कि उस आवारा की नाक से खून बह रहा था। खून की मोटी-मोटी बूँदें उसकी छाती पर फैली हुई थीं, इतनी चटख लाल कि मानो पेंट हो। अभी भी उसकी ओर लड़खड़ाते हुए आ रहा वह व्यक्ति मानो इस बात से बेखबर था। पेरी ने एक कराहने की आवाज़ सुनी - जो उसके कानों के लिए अपरिचित थी - और तभी उसकी नज़र स्टील की एक चमक पर पड़ी।

खिलौना

इस्तांबुल, 1980 का दशक
वे शुक्रवार की देर रात आए। उल्लुओं की तरह, वे शाम के अंधेरे का इंतज़ार करते थे ताकि शहर पर काली चादर छा जाए, फिर अपने शिकार की तलाश करते थे। पेरी की माँ, जो आधी रात के बाद अपनी एक खास डिश - पुदीने की पत्तियों के साथ धीमी आँच पर भुना हुआ मेमना - बनाने के बाद सोई थीं, उन्होंने ही सबसे आखिर में अपने घर के दरवाजे पर दस्तक सुनी। जब तक सेल्मा उठीं, पुलिस घर के अंदर घुस चुकी थी और उनके बेटों के कमरे की तलाशी ले रही थी। इस छापेमारी के बाद, मानो खुद को माफ़ न कर पाने के कारण, सेल्मा को फिर कभी चैन की नींद नहीं आई - वह खुद भी रात में जागने वाली बन गईं।
पुलिस हर एक चीज़ की बारीकी से जाँच कर रही थी, फिर भी उनके व्यवहार से साफ़ था कि वे बड़े बेटे उमट के लिए आए थे। उन्होंने उसे एक कोने में अकेला खड़ा कर दिया और परिवार से नज़रें मिलाने तक से मना कर दिया। उसे इस हालत में देखकर सात साल की पेरी को ऐसा गहरा दुख हुआ जो निराशा की हद तक पहुँच गया था। उसने ये बात कभी ज़बान से नहीं कही थी, पर उमट उसका सबसे प्यारा भाई था। उसकी बड़ी-बड़ी भूरी आँखें हर मुस्कान पर किनारों से सिकुड़ जाती थीं, उसका चौड़ा माथा उसे उसकी उम्र से कहीं ज़्यादा समझदार दिखाता था। पेरी की तरह उसे भी आसानी से शर्म आ जाती थी। पेरी से अलग, वह हमेशा खुशमिजाज़ रहता था, जैसा कि उसके नाम - आशा - के अनुरूप था। उम्र के अंतर के बावजूद, उमट हमेशा पेरी के करीब रहा था, बिना किसी वजह के सिर्फ़ प्यार से उसके नादानी भरे खेलों में उसका साथ देता था; कभी समुद्री डाकुओं के जहाज़ पर सवार किसी अगवा राजकुमार का नाटक करता था तो कभी काफ़ पर्वत पर बैठे किसी शातिर जादूगर का - उस दिन की कहानी के हिसाब से।
विश्वविद्यालय में (रासायनिक अभियांत्रिकी की पढ़ाई करते हुए) उमट कुछ अंतर्मुखी हो गया था। उसने घनी, वालरस जैसी मूंछें बढ़ा ली थीं और अपनी दीवारों पर ऐसे लोगों की तस्वीरें लगा रखी थीं जिन्हें पेरी ने पहले कभी नहीं देखा था: एक सफेद दाढ़ी वाला दादा; गोल तार के चश्मे और खुले चेहरे वाला एक आदमी; बिखरे बालों और गहरे रंग की टोपी वाला एक और आदमी। एक महिला भी थी जिसके बाल बंधे हुए थे और उसने सफेद टोपी पहन रखी थी। जब पेरी ने

पूछा कि वे कौन हैं, तो उसके भाई ने समझाया, 'वह मार्क्स हैं, दूसरे ग्राम्स्की। टोपी वाला कॉमरेड चे है।'
‘ओह,’ पेरी ने कहा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या कह रहा है, लेकिन उसकी आवाज़ में मौजूद जोश से वह प्रभावित हुई। ‘उसके बारे में क्या ख्याल है?’ ‘रोजा।’
काश मेरा नाम रोजा होता।
उमुत मुस्कुराई। 'मानो, तुम्हारा नाम ज़्यादा सुंदर है, लेकिन अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें रोजा-पेरी कहूँगी। शायद तुम एक क्रांतिकारी बन जाओ।' क्रांतिकारी कौन होता है?
उमुत कुछ देर रुक गई, एक उपयुक्त उत्तर की तलाश में। 'कोई ऐसा व्यक्ति जो चाहता हो कि हर बच्चे के पास खिलौने हों और किसी भी बच्चे के पास बहुत ज्यादा खिलौने न हों।'
‘ठीक है…’ पेरी ने संशयपूर्वक कहा – उसे सुनी हुई बातों में से आधी पसंद आई थीं, आधी नापसंद। ‘कितनी संख्या बहुत ज़्यादा होती है?’
हंसते हुए उमट ने उसके बालों को सहलाया, उसका सवाल उन दोनों के बीच अनुत्तरित ही लटका रहा।
अब पुलिस उन्हीं पोस्टरों को दीवारों से फाड़ रही थी। जब फाड़ने के लिए कुछ नहीं बचा, तो उन्होंने किताबें जाँचीं, जो सभी उमट की थीं, क्योंकि हाकान पढ़ने का शौकीन नहीं था। कार्ल मार्क्स की कम्युनिस्ट घोषणापत्र, फ्रेडरिक एंगेल्स की इंग्लैंड में श्रमिक वर्ग की स्थिति, लियोन ट्रॉट्स्की की स्थायी क्रांति, जॉन स्टाइनबेक की चूहे और आदमी, थॉमस मोर की यूटोपिया, जॉर्ज ऑरवेल की कैटालोनिया को श्रद्धांजलि... झुंझलाहट और निराशा भरे चेहरे के साथ पन्ने पलटते हुए, वे निजी पत्रों और नोट्स की तलाश कर रहे थे। हालाँकि उन्हें कुछ नहीं मिला, फिर भी उन्होंने किताबें ज़ब्त कर लीं।
‘तुम ये सब बकवास क्यों पढ़ रहे हो?’ पुलिस प्रमुख ने ‘द किस ऑफ द स्पाइडर वुमन’ नाम की एक किताब उठाई और उमट की तरफ हिलाते हुए कहा, ‘तुम एक मुस्लिम तुर्क हो। तुम्हारे पिता मुस्लिम तुर्क हैं, तुम्हारी माँ मुस्लिम तुर्क हैं। सात पीढ़ियाँ, एक जैसी। तुम्हें इससे क्या लेना-देना है, भला, ये सब विदेशी बकवास?’

उमुत अपने नंगे पैरों को घूर रहा था - उसकी गोल और साफ उंगलियां एक-दूसरे से इस तरह चिपकी हुई थीं मानो सुरक्षा के लिए।
‘अगर उन्हें कोई समस्या है, तो ये पश्चिमी लोग, उनकी समस्या है,’ उस आदमी ने कहा। ‘हमारे देश में सब खुश हैं। हमारे यहाँ कोई वर्गभेद नहीं है। हमें तो इस शब्द का मतलब भी नहीं पता। क्या आपने कभी किसी को यह पूछते सुना है, “अरे, तुम्हारा वर्ग क्या है?” बिलकुल नहीं! हम सब मुसलमान हैं और हम सब तुर्क हैं। बस। एक ही धर्म, एक ही राष्ट्रीयता, सब कुछ एक ही। इसमें आपको क्या समझ नहीं आता?’
इंस्पेक्टर उमट के करीब आया और उसे सूंघने के अंदाज़ में आगे झुका। ‘इस देश में इस तरह की बकवास को खत्म करने के लिए तीन बार सैन्य तख्तापलट हुए। अब ये फिर से उभर रही है! आपको लगता है कि हम इसे बर्दाश्त करेंगे? आपकी किताबें झूठ से भरी हैं। उनमें ज़हर भरा है! शायद आपको ज़हर दिया गया है?’ उमुत ने कुछ नहीं कहा।
‘मैं तुमसे एक सवाल पूछ रहा हूँ, मूर्ख!’ उस आदमी ने नाक फुलाते हुए चिल्लाया। ‘मैंने कहा, क्या तुम्हें जहर दिया गया है!’
'नहीं,' उमट ने लगभग फुसफुसाते हुए जवाब दिया।
‘हम्म, मुझे लगता है कि आपने करवाया है,’ उस आदमी ने खुद से सहमति जताते हुए सिर हिलाया। ‘आप तो बिल्कुल वैसे ही दिखते हैं जैसे आपने करवाया हो।’ गद्दे, अलमारी, दराज, यहाँ तक कि लकड़ी के चूल्हे के अंदर भी... कोई कोना नहीं बचा, कोई दरार नहीं। वे जो भी खोज रहे थे, वह उन्हें नहीं मिल पा रहा था, जिससे उनका गुस्सा और बढ़ गया।
‘वे इसे छिपा रहे हैं। घर के बाकी हिस्सों की तलाशी लो,’ पुलिस प्रमुख ने आदेश दिया। वह एक के बाद एक सिगरेट पी रहा था और राख को फर्श पर झाड़ रहा था।
‘माफ़ कीजिए… आप क्या छुपा रहे हैं?’ मेन्सुर ने हिम्मत जुटाते हुए पूछा – उसके झड़ते बाल बिखरे हुए थे, धारीदार पायजामा अस्त-व्यस्त था और पैरों में चप्पलें थीं – कमरे के उस कोने से जहाँ परिवार के बाकी सदस्यों को इंतज़ार करने के लिए कहा गया था।
पुलिस प्रमुख ने जवाब दिया, 'जब हमें वह मिल जाएगा, तो मैं उसे तुम्हारी गांड में डाल दूंगा। जैसे कि तुम्हें पता ही नहीं है।'

शब्दों की कठोरता से दुखी होकर पेरी ने अपने पिता का हाथ थाम लिया। लेकिन उसकी निगाहें अपने भाई पर टिकी थीं। उसे उमट की चिंता सता रही थी, जिसका चेहरा ढलते चाँद की तरह पीला पड़ गया था।
पुलिस ने बाकी कमरों, बाथरूम, शौचालय और उस पेंट्री की तलाशी ली जहाँ उन्होंने भिंडी सुखाकर रखी थी और खीरे का अचार बनाया था। रसोई के अंदर से दराजें खुलने, डिब्बों में सामान ढूंढने और छुरी-कांटे इधर-उधर फेंकने की आवाजें आ रही थीं। जहाँ कभी लेस से सजी करीने से सजी अलमारियाँ थीं, अब वहाँ अव्यवस्था फैली हुई थी। एक घंटा बीत गया, शायद उससे भी ज्यादा। बाहर, धुंधले आसमान में हल्की सी रोशनी की एक लकीर फूट पड़ी, मानो किसी बच्चे का दांत कच्चे मांस को चीर रहा हो।
‘उस लड़की का क्या हुआ?’ पुलिस प्रमुख ने पूछा। उन्होंने सिगरेट का टुकड़ा कालीन पर फेंका और जूते की एड़ी से उसे कुचल दिया। ‘क्या तुमने उसके खिलौनों की जाँच की?’
सेल्मा की निगाहें उस कालीन पर टिकी हुई थीं जिसे उसने दिन में पहले साफ किया था।
उसने बीच में ही कहा, 'ज़रूर कोई गलतफहमी हुई होगी, भाई। हमारा परिवार सभ्य है। हम सब ईश्वर से डरने वाले लोग हैं।'
उस टिप्पणी को अनसुना करते हुए, उस आदमी ने पेरी की ओर मुड़कर कहा, 'तुम्हारा सामान कहाँ है, बच्ची? हमें दिखाओ।'
पेरी की आँखें चौड़ी हो गईं। आखिर हर कोई उसके खिलौनों में दिलचस्पी क्यों ले रहा था – वैसे उसके पास बहुत ज्यादा खिलौने थे भी नहीं – क्रांतिकारी, पुलिस? 'मैं तुम्हें नहीं बताऊंगी।'
मेंसुर, पेरी का हाथ पकड़े हुए, अपनी बेटी को पीछे खींचते हुए धीरे से बोला, 'चुप रहो। उन्हें देखने दो, हमें चिंता करने की कोई बात नहीं है।' फिर, किसी विशेष व्यक्ति को संबोधित किए बिना, उसने कहा, 'वह उन्हें अपने बिस्तर के नीचे एक संदूक में रखती है।'
कुछ मिनट बाद, जब पुलिस प्रमुख अपने आदमियों के साथ वापस आया, तो उसकी उंगलियों के बीच पकड़ी हुई वस्तु से कहीं अधिक उसके चेहरे के भाव ने पेरी को चिंतित कर दिया।
'अच्छा तो हमारे पास यहां क्या है?'

पेरी ने इससे पहले कभी बंदूक नहीं देखी थी। टीवी पर दिखाई जाने वाली बंदूकों के विपरीत, यह बंदूक इतनी छोटी और प्यारी लग रही थी कि एक पल के लिए उसे लगा कि कहीं यह चॉकलेट की तो नहीं बनी है।
‘पालने के अंदर छिपा हुआ। एक ट्रॉली के नीचे! कितना सुविधाजनक!’
'मैं पवित्र कुरान की कसम खाकर कहती हूं, हमें इसके बारे में कुछ नहीं पता,' सेल्मा ने कांपती हुई आवाज में कहा।
'बेशक तुम नहीं जानती, औरत, लेकिन तुम्हारा बेटा जानता है।'
उमुत ने लाल होते गालों के साथ कहा, 'यह मेरा नहीं है। उन्होंने मुझसे इसे कुछ दिनों के लिए रखने को कहा था। मैं इसे कल लौटाने वाला था।'
‘ये कौन हैं?’ पुलिस प्रमुख ने पूछा। उनकी आवाज़ में खुशी झलक रही थी। उमुत ने एक गहरी सांस ली और खामोशी में डूब गई।
बाहर पास की मस्जिद से मुअज्जिन की आवाज गूंज रही थी, 'अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर नहीं है। प्रार्थना नींद से बेहतर है।'
‘ठीक है, चलो चलते हैं,’ पुलिस प्रमुख ने आदेश दिया। ‘इसे अंदर ले जाओ।’ मेन्सुर, जिसका चेहरा बंदूक को देखकर जम गया था, ने कहा, 'कृपया, इसका कोई कारण जरूर होगा। मेरा बेटा एक अच्छा लड़का है। वह कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएगा।'
पुलिस प्रमुख, जो दरवाजे की ओर कुछ कदम बढ़ा चुका था, अचानक पीछे मुड़ गया। ‘हमेशा वही बकवास। तुम अपने बच्चों पर नज़र नहीं रखते; वे नास्तिक कम्युनिस्ट कमीनों के साथ घुलते-मिलते हैं, वे तरह-तरह की मुसीबतों में फंस जाते हैं। जब बहुत देर हो जाती है, तब तुम रोते-बिलखते हो। हाय रे हाय। अगर तुम बच्चों की देखभाल नहीं करोगे तो उन्हें पैदा क्यों करते हो, बेवकूफों? क्या तुम अपनी वासनाओं पर काबू नहीं रख सकते?’
अचानक ही पुलिस प्रमुख ने मेन्सुर के पायजामे का निचला हिस्सा पकड़कर उसके घुटनों तक नीचे खींच दिया, जिससे उसके साफ सफेद, हालांकि थोड़े पुराने, अंडरवियर दिखाई दिए। कुछ पुलिसकर्मी यह देखकर हंस पड़े। बाकी ने उदासीनता का दिखावा किया।
पेरी ने अपने पिता के हाथ की ऊर्जा को कम होते हुए महसूस किया; उनकी उंगलियां हल्की और रक्तहीन हो गईं, मानो किसी शव का हाथ चीर-फाड़ के लिए तैयार हो। उसके पिता की चुप्पी, उसके पिता की शर्म, उसके पिता जिन्हें उसने अपने पहले शब्द बोलने के दिन से ही प्यार, आदर, स्नेह और आदर्श माना था। जब

तक मेन्सुर कांपते हुए अपने पायजामे का निचला हिस्सा ऊपर खींच पाया, तब तक पुलिस अधिकारी उमट को अपने साथ लेकर दरवाजे से अंदर आ चुके थे।

परिवार सात सप्ताह तक उमुत से नहीं मिल सका, इस दौरान वह एकांत कारावास में रहा। एक अवैध कम्युनिस्ट संगठन की सदस्यता के आरोप में, उसने बंदूक रखने की बात कबूल की - उसे नंगा करके, आंखों पर पट्टी बांधकर, धातु के पलंग पर बांधकर बिजली के झटके दिए गए। जब उसके अंडकोषों पर इलेक्ट्रोड लगाए गए और वोल्टेज दोगुना कर दिया गया, तो उसने स्वीकार किया कि वह एक ऐसे गिरोह का नेता था जो सरकारी अधिकारियों की सिलसिलेवार हत्याओं की साजिश रच रहा था। जले हुए मांस की तीखी गंध, खून की तांबे जैसी गंध, पेशाब की खट्टी गंध और उसके मुख्य यातनादाता - 'होज' हसन नामक अधिकारी के च्युइंग गम की दालचीनी जैसी गंध, जिसे बगीचे की नली से यातना देने की उसकी अनोखी तकनीकों के कारण यह नाम दिया गया था।
उमुत के बेहोश होने पर उसे ठंडे पानी से होश में लाया जाता और नमक के पानी से बाल्टी भर-भरकर भिगोया जाता ताकि चालकता बढ़ जाए। सुबह के समय, वही पुलिस अधिकारी उसकी चोटों पर मरहम लगाते ताकि दोपहर में वे उस पर अत्याचार जारी रख सकें। उमुत के घावों पर मरहम मलते हुए होज़ हसन अपनी कम तनख्वाह और लंबे कार्य घंटों की शिकायत करता, और बताता कि उसकी बेटी एक अधेड़ उम्र के आदमी के साथ भाग गई थी, जो पहले से एक बच्चे का पिता और एक पत्नी का पति था। छह महीने बाद वे प्रेमी जोड़े पत्थर की तरह टूटे और डरे हुए लौटे थे। वह उन्हें वहीं मार सकता था; लेकिन उसने उनकी जान बख्श दी। कई पेशेवर यातना देने वालों की तरह, वह अपने रिश्तेदारों के प्रति दयालु, अपने वरिष्ठों के प्रति सम्मानजनक और बाकी सभी के प्रति क्रूर था।
सत्रों के बीच, उमट को अन्य कैदियों की चीखें सुनने के लिए मजबूर किया जाता था, ठीक वैसे ही जैसे उन्हें उसकी चीखें सुनने के लिए मजबूर किया जाता था। बार-बार लाउडस्पीकरों पर राष्ट्रगान बजता रहता था। एक बार, बिजली का झटका देते समय, वे उसके मुंह में तौलिया रखना भूल गए, एक छोटी सी चूक, और उसने अपनी जीभ काट ली, लगभग दो टुकड़ों में कट गई। लंबे समय तक खाना खाना उसके

लिए एक कष्टदायक अनुभव रहा; उसे भोजन का स्वाद तभी आता था जब वह उसे निगल लेता था।
1980 के तख्तापलट के बाद देश भर की जेलों, हिरासत केंद्रों और युवा अपराधी संस्थानों में यातनाएं बड़े पैमाने पर प्रचलित थीं। कहा जाता था कि तब तक ये कम हो गई थीं, लेकिन वास्तव में ये जारी रहीं। पुरानी आदतें आसानी से नहीं छूटतीं। ऐसा नहीं था कि कोई बदलाव नहीं आया था। पैरों के तलवों पर कोड़े मारने की प्रथा, जिसे फलाका कहते थे, की जगह ज्यादातर घंटों तक बांहों से लटकाकर यातनाएं दी जाने लगीं – यह एक साफ-सुथरा तरीका था जिससे कम निशान पड़ते थे। सिगरेट से जलाना और नाखून या स्वस्थ दांत निकालना भी अब अप्रचलित हो गए थे। बिजली के झटके देना त्वरित, प्रभावी और लगभग न के बराबर निशान छोड़ते थे। कैदियों को अपना मल खाने, एक-दूसरे का मूत्र पीने या घंटों तक सेप्टिक टैंक में बिताने के लिए मजबूर करना भी इसी तरह का तरीका था। दुर्व्यवहार के कोई प्रत्यक्ष संकेत नहीं दिखते थे। अगर अचानक कोई संकेत दिखाई भी दे तो जिज्ञासु पत्रकारों या पश्चिमी मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के लिए उसे पकड़ने के लिए कुछ भी नहीं था।
अंततः, उमट को बिना पैरोल के आठ साल और चार महीने की सजा सुनाई गई।
फैसला सुनाए जाने के बाद, नलबंतोग्लू परिवार इस्तांबुल के बाहरी इलाके में स्थित जेल में नियमित रूप से जाया करता था। वे दिन के हिसाब से अलग-अलग समूहों में आते थे – मेनसुर अपने छोटे बेटे के साथ, सेल्मा अपनी बेटी के साथ, मेनसुर अपनी बेटी के साथ, लेकिन मेनसुर और सेल्मा कभी एक साथ नहीं आते थे। दर्जनों अन्य लोगों के साथ वे एक चौड़ी, प्लास्टिक की मेज पर बैठते थे, जिसकी सतह पर सैकड़ों चिंताजनक और दर्दनाक मुलाकातों के निशान थे। निर्देशानुसार, वे अपने हाथों को दिखाई देने लायक रखते थे ताकि कोई भी बात न हो। इस स्थिति में, वे खामोशी के खालीपन को ऐसी मुस्कानों से भरने की कोशिश करते थे जो उनकी आँखों तक नहीं पहुँचती थीं और ऐसे शब्दों से जो उनके हाथों से फिसल जाते थे।
एक बार जब उमट जाने के लिए उठा, तो मेन्सुर ने अपने बेटे की जेल की वर्दी के निचले हिस्से पर खून का एक धब्बा देखा। एक धब्बा जो विलो के पत्ते के आकार का था। इसका एक नाम था, उस यातना विधि का नाम जिससे यह धब्बा लगा था - 'खूनी कोक'। पीटे जाने और कपड़े उतार दिए जाने के बाद, कैदियों को कोका-कोला की बोतल पर बैठने के लिए मजबूर किया जाता था। कहा जाता था कि यह एक 'कॉकटेल' था

ध्यान देती, तो शायद वह इस विपत्ति को रोक सकती थी। वहीं, शांत, उदास और नाराज़ सेल्मा ने अपने पति को ही ज़िम्मेदार ठहराया। मेनसुर ने ही उनके बेटे के मन में नास्तिकता के बीज बोए थे। भौतिकवाद और स्वतंत्र चिंतन पर उसके सारे भाषणों ने इस विपत्ति को जन्म दिया था।
वर्षों बीतने के साथ, मेन्सुर और सेल्मा का विवाह खोखले खोल की तरह कठोर हो गया था। अब वह खोल पूरी तरह से टूट गया और वे दरार के अलग-अलग किनारों पर आ गए। घर के अंदर की हवा घुटन भरी और भारी हो गई, मानो उसने अपने निवासियों के दुख को सोख लिया हो। युवा पेरी को ऐसा लगा जैसे मधुमक्खियाँ और पतंगे खुली खिड़कियों से अंदर आते ही घबराकर बाहर उड़ जाते थे। यहाँ तक कि वे लालची मच्छर भी अब नालबंतोग्लस का खून नहीं चूसते थे, क्योंकि उन्हें उनके दुख को निगलने का डर था। पेरी जिन कार्टूनों और फिल्मों को देखती थी, उनमें आम लोग मकड़ियों के काटने और ततैयों के डंक मारने के बाद सुपरहीरो बन जाते थे और रोमांचक जीवन जीते थे। उनके मामले में मामला उल्टा था। नालबंतोग्लस के संपर्क में आने के बाद पिस्सू और कीड़े-मकोड़े इंसानों जैसे बन गए, उन भावनाओं के बोझ तले दब गए जिनका उनके लिए कोई उपयोग नहीं था।
उन्हीं दिनों पेरी ने अल्लाह के साथ अपने रिश्ते को नए सिरे से परिभाषित करना शुरू किया। उसने सोने से पहले नमाज़ पढ़ना छोड़ दिया, जो उसकी माँ की सिखाई हुई परंपरा के विपरीत था, लेकिन उसने अपने पिता की सलाह के विरुद्ध सर्वशक्तिमान के प्रति उदासीन रहना भी नहीं चाहा। इसके बजाय, अपने माता- पिता के सामने कहने की हिम्मत न करने वाले सारे दुख और दर्द को उसने शब्दों के गोले में बदल दिया और सीधे आसमान की ओर फेंक दिया।
उसने भगवान से झगड़ा करना शुरू कर दिया।
पेरी हर बात पर उनसे बहस करती थी, ऐसे सवाल पूछती थी जिनके आसान जवाब उसे पता ही नहीं थे, और फिर भी धीमी आवाज़ में पूछती थी ताकि कोई सुन न सके। उन लोगों के साथ इतनी भयानक चीज़ें होने देना, जो इसके लायक नहीं थे, उनकी कितनी गैरजिम्मेदारी थी। क्या ईश्वर जेल की दीवारों और सलाखों के पार देख और सुन सकते थे? अगर नहीं, तो वे सर्वशक्तिमान नहीं थे। अगर वे देख और सुन सकते थे, और फिर भी ज़रूरतमंदों की मदद के लिए कुछ नहीं किया, तो वे दयालु नहीं थे। दोनों ही मामलों में, वे वैसे नहीं थे जैसा वे होने का दावा करते थे। वे ढोंगी थे।

पेरी का गुस्सा जो वह अपनी माँ और अपने गुरु उज़ुम्बाज़ एफ़ेंडी पर नहीं निकाल पाती थी, अपने पिता और उनकी शराब पीने की आदत के प्रति जो कुंठा वह दबा नहीं पाती थी, अपने बड़े भाई को जो दुःख वह व्यक्त नहीं कर पाती थी और अपने दूसरे भाई के प्रति जो ऊब वह महसूस करती थी, उन सबको उसने एक गाढ़े घोल में मिला दिया और उसे ईश्वर के बारे में अपने विचारों में उड़ेल दिया। वहाँ, उसके मन की भट्टी में, वह धीरे-धीरे पकता रहा, बीच में दरारें पड़ती रहीं और किनारों पर जलता रहा। जहाँ उसके दोस्त पतंगों की तरह सरल और खुशमिजाज लगते थे, गलियों में खेलते, स्कूल में मज़ाक करते और हर दिन को जैसे आता वैसे जीते, वहीं नाज़पेरी नलबंतोग्लू, एक असाधारण रूप से गंभीर और अंतर्मुखी बच्ची, ईश्वर की खोज में व्यस्त थी।
ईश्वर, एक सरल शब्द, लेकिन अस्पष्ट अर्थ वाला। ईश्वर इतना करीब है कि वह आपके हर काम को जानता है – या करने के बारे में सोचे गए हर काम को – फिर भी उस तक पहुंचना असंभव है। लेकिन पेरी ने कोई रास्ता ढूंढने का ठान लिया था। क्योंकि उसने अपने ही एक अजीब तर्क से यह मान लिया था कि अगर वह अपनी मां के रचयिता और अपने पिता के रचयिता को एक साथ ला सके, तो शायद वह अपने माता- पिता के बीच सामंजस्य स्थापित कर पाएगी। ईश्वर क्या है और क्या नहीं, इस बारे में किसी तरह की सहमति से, नलबंतोग्लू परिवार में, यहां तक कि पूरी दुनिया में भी, तनाव कम हो जाएगा।
ईश्वर एक ऐसी भूलभुलैया थी जिसका कोई नक्शा नहीं था, एक ऐसा वृत्त जिसका कोई केंद्र नहीं था; एक पहेली के टुकड़े जो कभी एक साथ फिट नहीं होते थे। काश वह इस रहस्य को सुलझा पाती, तो वह निरर्थकता को अर्थ दे पाती, पागलपन को तर्क दे पाती, अराजकता को व्यवस्था में बदल पाती, और शायद वह खुश रहना भी सीख पाती।

नोटबुक

इस्तांबुल, 1980 का दशक
एक दुर्लभ शाम जब मेन्सुर खाने की मेज पर अकेले थे, तो उन्होंने अपनी बेटी से कहा, 'आओ और मेरे साथ बैठो, मेरी प्यारी।'
पेरी ने तुरंत वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। उसे उसकी बहुत याद आ रही थी। हालांकि वे एक ही घर में थे, लेकिन उमट की गिरफ्तारी के बाद से वह दूर-दूर रहने लगा था, अपने ही विचारों में डूबा रहता था, मानो वह पहले जैसा इंसान नहीं रहा था।
‘मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ,’ मेन्सुर ने कहा। ‘इस्तांबुल में एक बांसुरी वादक रहता था; वह सूफी तो था, लेकिन अपने ही अंदाज़ का। जब भी उसे राकी या शराब की बोतल दिखती, वह अपने आस-पास के लोगों को डांटता। “क्या तुम्हें नहीं पता कि इस शराब की एक बूंद भी पाप है?” फिर वह बोतल खोलता, अपनी उंगली अंदर डालता, कुछ सेकंड रुकता और टपकती हुई उंगली बाहर निकाल लेता। “मैंने वह पापी बूंद निकाल दी,” वह कहता। “अब हम शांति से पी सकते हैं।”’
मेंसुर ने अपने ही शब्दों पर हल्की, उदास हंसी हंसी।
पेरी ने अपने पिता को गौर से देखा, उनके प्रश्न में उसे एक अकेला विद्रोह झलक रहा था, लेकिन किसके या किससे? संकोच से उसने पूछा, 'बाबा, क्या मैं इसे चख सकती हूँ?'
‘क्या? तुम राकी पीना चाहते हो?’
पेरी ने सिर हिलाया। उसने पहले कभी इस बारे में सोचा भी नहीं था, लेकिन अब जब उसने अपनी इच्छा ज़ाहिर कर दी है, तो वह सचमुच ऐसा चाहती है। यह उसके पिता के साथ संबंध मज़बूत करने का एक तरीका था।
मेंसुर ने सिर हिलाया। 'तुम तो सिर्फ सात साल के हो। बिलकुल नहीं!'
‘आठ,’ पेरी ने उसे सुधारते हुए कहा। ‘मैं इस महीने आठ साल की हो जाऊंगी।’ ‘खैर, मैंने तो हमेशा यही कहा है कि शराब का पहला घूंट घर पर माता-पिता के साथ पीना, छुप-छुप कर बाहर पीने से बेहतर है। अठारह साल की उम्र से पहले तो शराब पीनी ही नहीं चाहिए,’ मेन्सुर ने सोचा। ‘तब तक तो पता नहीं, धार्मिक कट्टरपंथियों की वजह से इसकी इजाज़त भी रहेगी या नहीं। शायद कहीं एक-दो

बोतलें प्रदर्शनी में रख दें। पतित वस्तुओं की प्रदर्शनी! बिल्कुल नाज़ियों और आधुनिक कला की तरह, है ना? हाँ, शायद तुम्हें बहुत देर होने से पहले एक घूंट पी लेना चाहिए।’
इतना कहकर मेंसुर ने एक गिलास में पानी भरा और उसमें काफी मात्रा में राकी मिला दी। पेरी जब पानी में शराब को घुलते हुए देख रही थी, तब उसके पिता उसे स्नेह भरे भाव से देख रहे थे।
‘ये बूँदें देखो? ये मैं और मेरे साथी हैं। हम एक सागर में विलीन हो जाते हैं।’
अज्ञानता।’ मेन्सुर ने अपना गिलास उठाया और कहा, ‘शेरेफे!’*
एक वयस्क की तरह व्यवहार किए जाने से रोमांचित होकर पेरी मुस्कुराई। 'शेरेफे!'
'अगर तुम्हारी मां ने हमें देख लिया तो वो मेरी खाल उतार देगी।'
जल्दी में पेरी ने एक घूंट लिया। उसका चेहरा तुरंत घृणा से भर गया। यह भयानक था। उसने आज तक जो कुछ भी चखा था, उससे भी बदतर। सौंफ का तीखापन, उसकी गंध से भी ज़्यादा तेज़, उसकी जीभ को जला रहा था, नाक में गुदगुदी कर रहा था और उसकी आँखों में आँसू ला रहा था। उसके पिता हर शाम इतने चाव से यह भयानक चीज़ कैसे पी लेते थे?
‘मुझसे वादा करो,’ मेन्सुर ने अपनी बेटी की प्रतिक्रिया पर ध्यान न देते हुए कहा। ‘कभी भी पुरानी कहावतों पर विश्वास मत करना, अगर तुम समझ रही हो कि मेरा क्या मतलब है।’
‘हां, हां,’ पेरी ने एक गिलास पानी गटकने और मुंह का स्वाद मिटाने के लिए रोटी का एक टुकड़ा निगलने के बाद कहा। ‘जैसे कहते हैं, बच्चे के ऊपर से मत कूदो, उसका बढ़ना रुक जाएगा। उंगलियां चटकाने से फरिश्ते के पंख टूट जाएंगे। अंधेरे में सीटी बजाने से शैतान आ जाएगा। कुछ इसी तरह की बातें।’ “हाँ, बिल्कुल सही, ये सब बकवास है। सुनो, एक नियम है जिसका मैं सम्मान करता हूँ और मैं तुम्हें भी यही सलाह देता हूँ। जिस बात को तुमने अपनी आँखों से न देखा हो, अपने कानों से न सुना हो, अपने हाथों से न छुआ हो और अपने दिमाग से न समझा हो, उस पर कभी विश्वास न करो। वादा?”
अपने पिता को प्रसन्न करने की चाह में पेरी ने चहकते हुए कहा, 'मैं वादा करती हूँ, बाबा।'

प्रसन्न होकर, मेन्सुर ने अपनी तर्जनी उंगली हवा में पटककर अपने शब्दों पर ज़ोर दिया। ‘शिक्षा ही हमें बचाएगी! यही आगे बढ़ने का एकमात्र रास्ता है। तुम्हें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय में जाना चाहिए।’ वह यह सोचने के लिए कुछ देर रुके कि वह कौन सा विश्वविद्यालय हो सकता है। ‘मेरे बच्चों में से तुम ही इकलौते हो जो यह कर सकते हो। खूब मेहनत करो। खुद को अज्ञानता से बचाओ, इससे बड़ा वादा क्या हो सकता है?’
‘बड़ा वादा।’
‘लेकिन एक समस्या है,’ मेन्सुर ने कहा। ‘पुरुष नहीं चाहते कि महिलाएं बहुत बुद्धिमान या बहुत शिक्षित हों। मैं नहीं चाहूंगी कि तुम कुंवारी मर जाओ।’ ‘कोई बात नहीं, मैं कभी शादी नहीं करने वाली। मैं तुम्हारे साथ ही रहूंगी।’ मेंसुर जोर से हंस पड़ा। 'मेरा यकीन मानो, तुम ऐसा नहीं करना चाहोगे। बस अपना दिल ऐसे किसी को मत देना जिसे विज्ञान... ज्ञान की परवाह न हो। सबसे बड़ा वादा?'
‘सबसे बड़ा वादा।’ पेरी अपनी कुर्सी पर थोड़ा नीचे खिसक गई, तभी उसके मन में एक नया विचार आया। ‘भगवान के बारे में क्या? हम उन्हें देख नहीं सकते, सुन नहीं सकते, छू नहीं सकते… लेकिन क्या हमें फिर भी उन पर विश्वास करना चाहिए?’
मेंसुर उदास दिख रहा था। 'मैं आपको एक राज़ बताता हूँ। जब सर्वशक्तिमान की बात आती है, तो बड़े लोग बच्चों से कम भ्रमित नहीं होते।'
‘लेकिन क्या भगवान सचमुच मौजूद है?’ पेरी ने जोर देकर पूछा।
‘उसे होना ही चाहिए। जब मैं परलोक में उससे मिलूंगा, तो इससे पहले कि वह मुझ पर गुस्सा करे, मैं उससे पूछूंगा कि वह इतने समय से कहां था। उसने हमें बहुत लंबे समय तक अपने हाल पर छोड़ दिया है!’ मेन्सुर ने पनीर का एक टुकड़ा मुंह में डाला और जोर-जोर से चबाने लगा।
‘बाबा… अल्लाह ने उमूत की मदद क्यों नहीं की? उसने यह सब क्यों होने दिया?’ 'मुझे नहीं पता, मेरी आत्मा,' मेन्सुर ने कहा, उनका कंठ ऊपर-नीचे हिल रहा था। वे चुप हो गए। पेरी ने अपने पैर की उंगलियों को मोड़ा और चप्पल पहने पैरों को कालीन पर दबाया, उसे लगा कि विषय बदलना ही बेहतर होगा। उसके बड़े भाई का ज़िक्र पहले से ही उदास माहौल को और भी गहरा कर गया था, जैसे फीके चाँद पर कोई बादल छा जाता है। 'स्वर्ग और नरक का क्या?' नरक की यातनाएँ और कष्ट उसकी पूरी शिक्षा के दौरान लगातार चर्चा का विषय रहे थे। यह सोचकर ही वह भयभीत

हो जाती थी कि कहीं उसके पिता को खौलते कड़ाहे, कष्टदायी ज्वालाओं और ज़बानियों नामक काले फरिश्तों वाले शापित लोक में न पा लिया जाए।
खैर, मैं स्वर्ग जाने लायक तो नहीं हूँ, है ना? दो संभावनाएं हैं: अगर भगवान में हास्यबोध नहीं है, तो मेरा तो बुरा हाल होगा। सीधे नरक की ट्रेन। अगर उनमें हास्यबोध है, तो उम्मीद है, शायद मैं भी तुम्हारे साथ स्वर्ग में पहुँच जाऊँ। कहते हैं वहाँ बेहतरीन शराब से भरी नदियाँ बहती हैं!
पेरी के मन में अचानक डर की लहर दौड़ गई। उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'लेकिन अगर अल्लाह उतना ही कठोर हो जितना माँ हमेशा कहती हैं तो?'
‘चिंता मत करो, हमारे पास प्लान बी है,’ मेन्सुर ने कहा। ‘मेरी कब्र में एक कुल्हाड़ी जरूर रख देना। मैं जहां भी पहुंचूं, वहां से सुरंग खोदकर निकल जाऊंगा!’
पेरी की आंखें चौड़ी हो गईं। 'नरक इतना गहरा है कि अगर आप उसमें एक छोटा पत्थर फेंकें तो उसे तल तक पहुंचने में सत्तर साल लग जाते हैं। मां ने मुझे यही बताया था।'
‘मुझे यकीन है उसने किया होगा।’ एक खामोश आह। ‘अच्छी बात ये है: धरती पर एक साल परलोक में बस एक मिनट के बराबर होता है। किसी भी तरह, मैं आकर तुम्हें ढूंढ लूंगा।’ उसका चेहरा खिल उठा। ‘ओह, मैं लगभग भूल ही गया था। मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ है!’
मेन्सुर ने अपने चमड़े के थैले से एक लिपटा हुआ पैकेट निकाला - एक चांदी का डिब्बा जो सुनहरे रिबन से बंधा हुआ था।
‘मेरे लिए?’ पेरी ने पैकेज को गौर से देखा।
क्या तुम इसे नहीं खोलोगे?
अंदर एक नोटबुक थी। एक खूबसूरत, हाथ से सिली हुई फ़िरोज़ी रंग की नोटबुक, जिसके कवर पर सीक्वेंस और एक दर्पणयुक्त मोज़ेक बना हुआ था।
‘मुझे पता है कि तुम ईश्वर के बारे में जानने को उत्सुक हो,’ मेन्सुर ने सोच-विचार करते हुए कहा। ‘मैं तुम्हारे सभी सवालों के जवाब नहीं दे सकता। सच कहूँ तो, कोई भी नहीं दे सकता, तुम्हारी माँ और उसका वो सनकी उपदेशक भी नहीं।’ उसने अपनी बची हुई राक़ी एक ही घूँट में पी ली। ‘मुझे धर्म या धार्मिक लोगों से कोई हमदर्दी नहीं है, लेकिन तुम जानते हो कि मैं अब भी ईश्वर को क्यों पसंद करता हूँ?’
पेरी ने अपना सिर हिलाया।

‘क्योंकि वह अकेला है, पेरिसिम, मेरी तरह… तुम्हारी तरह,’ मेन्सुर ने उत्तर दिया। ‘ऊपर कहीं बिल्कुल अकेला, बात करने वाला कोई नहीं – ठीक है, शायद कुछ फ़रिश्ते हों, लेकिन उन देवदूतों के साथ कितना मज़ा आ सकता है? अरबों लोग ईश्वर से प्रार्थना करते हैं, “हे मुझे विजय दो, मुझे धन दो, मुझे फरारी दो, यह करो-वह करो…” वही शब्द बार-बार दोहराए जाते हैं, लेकिन शायद ही कोई उसे जानने की कोशिश करता है।’
मेंसुर ने अपना गिलास भरा, उसकी आँखों में उदासी की एक झलक थी। ‘सोचो लोग सड़क पर दुर्घटना देखकर कैसी प्रतिक्रिया देते हैं। वे तुरंत कहते हैं, “हे भगवान! ऐसा न हो।” यकीन मानिए! उनकी पहली प्रतिक्रिया खुद के बारे में सोचना होती है, पीड़ितों के बारे में नहीं। कितनी ही प्रार्थनाएँ एक जैसी होती हैं। मेरी रक्षा करो, मुझसे प्यार करो, मेरा साथ दो, सब कुछ मेरे बारे में ही होता है… लोग इसे धार्मिकता कहते हैं; मैं इसे स्वार्थ का छिपा हुआ रूप कहता हूँ।’
यह सुनकर पेरी ने अपना सिर एक तरफ झुकाया, वह अपने पिता को सांत्वना देना चाहती थी, पर उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे दे। घर में ऐसी खामोशी छा गई कि हवा का एक हल्का सा झोंका भी उसे हिला सकता था। पेरी सोचने लगी कि क्या उसकी माँ, दीवारों के पीछे और अपने बिस्तर से, यह बातचीत सुन रही है और अगर सुन रही है, तो उसके मन में क्या चल रहा होगा।
'अब से जब भी आपके मन में ईश्वर के बारे में या अपने बारे में कोई विचार आए, तो उसे अपनी नोटबुक में लिख लें।'
‘जैसे डायरी?’
‘हां, लेकिन यह एक खास डायरी होगी,’ मेन्सुर ने उत्साहित होकर कहा। ‘जीवन भर की डायरी!’
लेकिन पन्ने पर्याप्त नहीं होंगे।
‘बिल्कुल, एकमात्र उपाय है पिछली लिखी बातों को मिटाना। समझे? लिखो और मिटाओ, मेरी आत्मा। मैं तुम्हें बुरे विचारों से बचना नहीं सिखा सकता। मैं खुद भी इसे कभी नहीं समझ पाया।’ मेन्सुर रुका। ‘लेकिन मुझे उम्मीद थी कि तुम कम से कम उन्हें मिटा तो सकते हो।’
'ताकि मेरे मन में नए बुरे विचार आ सकें?'
'हाँ, बिल्कुल... नए बुरे विचार पुराने बुरे विचारों से बेहतर होते हैं।'

उसी रात, बिस्तर पर उठते हुए पेरी ने अपनी डायरी खोली और उसमें अपनी पहली प्रविष्टि लिखी: मुझे लगता है कि ईश्वर अनेक रूपों और रंगों में प्रकट होता है। मैं एक शांत, सर्वव्यापी प्रेममय ईश्वर की छवि बना सकती हूँ। या मैं एक क्रोधित, दंड देने वाले ईश्वर की छवि बना सकती हूँ। या शायद मैं कुछ भी न बनाऊँ। ईश्वर एक लेगो सेट की तरह है।
खड़ा करना और गिराना। लिखना और मिटाना। विश्वास करना और संदेह करना। क्या उसके पिता का यही मतलब था? अंततः इससे कोई फर्क नहीं पड़ा, क्योंकि पेरी ने वर्षों बाद उस दिन को याद करते हुए यही निष्कर्ष निकाला कि उसने यही सुना था। उसके पिता की शिक्षा ने उसके बारे में उसके पहले से मौजूद संदेह को और पुख्ता कर दिया: कि जहाँ कुछ लोग कट्टर विश्वासी होते हैं और कुछ कट्टर अविश्वासी, वहीं वह हमेशा बीच में फंसी रहेगी।

[redacted]

[redacted], 2016

[redacted]

[redacted]

[redacted]

आत्मा’, लेकिन इसके बजाय उसने कहा ‘तुम्हारी हड्डियाँ’। ‘मेरा यकीन मानो, वे ऐसा ही करेंगे।’
आवारा आदमी ने दांत किटकिटाते हुए कहा, 'वेश्या। तुम खुद को क्या समझती हो?'
इससे पहले किसी ने भी पेरी को वेश्या नहीं कहा था और यह शब्द उसे बर्फ के टुकड़े की तरह चुभ गया। उसने सुलह का रास्ता अपनाते हुए एक और प्रयास किया। 'बैग रख लो, ठीक है? तुम अपने रास्ते जाओ, मैं अपने रास्ते जाती हूँ।' ‘वेश्या!’ उसने शपथ के भीतर फंसे हुए दोहराया।
उसका चेहरा गंभीर हो गया; उसकी आँखें चेहरे पर पतली दरारों जैसी हो गईं। उसने गहरी साँस ली, अपने ही विचारों से उत्तेजित होकर। गली के उस पार, एक कार खुले रास्ते की ओर आ रही थी, उसकी हेडलाइट्स ने पल भर के लिए भागने का एक रास्ता बना दिया। पेरी मदद के लिए चिल्लाना चाहती थी, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। कार गायब हो गई थी। वे फिर से अँधेरे में डूब गए। उसने एक कदम पीछे लिया।
पेरी की गर्दन पकड़कर उस आवारा ने उसे धक्का देकर नीचे गिरा दिया। उसके बाल खुल गए; जूड़े को बांधने वाली पिन ज़मीन पर उछल पड़ी। एक हल्की सी धातु जैसी आवाज़ आई। पीछे की ओर गिरने पर उसका सिर ज़मीन से टकराया। हैरानी की बात यह थी कि उसे चोट नहीं लगी। नीचे से आसमान बहुत दूर और कांसे की चादर जैसा लग रहा था, स्थिर, ठोस, ठंडा। उसने उठने की कोशिश की, उसके हाथ के निशान खून से सने हुए थे। पलक झपकते ही वह उसके ऊपर था, उसकी पोशाक फाड़ने की कोशिश कर रहा था। उसके मुंह से एक खट्टी गंध आ रही थी - भूख, सिगरेट, रसायनों की। यह सड़न की दुर्गंध थी। पेरी को उल्टी आने लगी। उसके शरीर में घुसने की कोशिश कर रहा मांस एक लाश का था।
सात पहाड़ियों, दो महाद्वीपों, तीन समुद्रों और पंद्रह मिलियन लोगों को समाहित करने वाले इस शहर में यह सब हर समय होता था। यह बंद दरवाजों के पीछे और खुले आंगनों में होता था; सस्ते मोटल कमरों और पांच सितारा आलीशान सुइट्स में; रात के अंधेरे में या दिन के उजाले में। इस शहर के वेश्यालय अनगिनत कहानियाँ सुना सकते थे, अगर उन्हें सुनने को तैयार कान मिल जाते। कॉल गर्ल्स, रेंट बॉयज़ और उम्रदराज वेश्याओं को ग्राहकों द्वारा पीटा, गाली दी और धमकाया जाता था, जो अपना आपा खोने के लिए छोटे से छोटे बहाने की तलाश में रहते थे। ट्रांसजेंडर जो कभी पुलिस के पास नहीं जाते थे क्योंकि

उसकी आँखों में एक चमक थी – आधी भ्रमित, आधी अविश्वास से भरी। उसके चेहरे पर थोड़ी सी हेकड़ी झलक रही थी। वह उसे डराने में कामयाब हो गया था और अपने पिछले अनुभवों से जानता था कि किसी को भी, उसके ऊँचे पद से नीचे गिराने के लिए डर ही काफी होता है। वह थोड़ा पीछे हटा – बस एक या दो इंच।
पेरी ने अपनी पूरी ताकत से उस आदमी पर हमला कर दिया। अचानक हुए इस हमले से वह पीछे की ओर लुढ़क गया और पीठ के बल गिर पड़ा। फुर्तीली और चुस्त पेरी ने उछलकर उसके गुप्तांग पर लात मारी। वह घायल जानवर की तरह कराह उठा। पेरी को कुछ भी महसूस नहीं हुआ - न दया, न क्रोध। इंसान हमेशा दूसरों से सीखता है। कुछ लोग सुंदरता सिखाते हैं, तो कुछ क्रूरता। वह यह नहीं बता सकती थी कि क्या यह उस मादक पदार्थ के कारण था जिसे उसने पहले सूंघा था और जो उसके शरीर में अपना असर दिखा रहा था, उसे कमजोर कर रहा था, या फिर किसी जंगली और अज्ञात ऊर्जा से मजबूत हो रही थी, लेकिन उसे शक्तिशाली महसूस हो रहा था। बेकाबू। खतरनाक।
उसने अपना पैर उसके चेहरे पर ज़ोर से मारा, उसकी सारी ताकत उसी एक वार में केंद्रित थी। एक भयानक आवाज़ गूंजी – नाक टूटने की आवाज़। इस बार बहुत सारा खून देखकर वह डरने के बजाय और ज़ोर से मारने लगी। देखते ही देखते, वह उसे हर जगह लात-घूंसे मार रही थी।
आवारा ने अपना पेट पकड़ रखा था, उसका कोट ऊपर की ओर मुड़ा हुआ था, जिससे उसके नीचे का दुबला-पतला शरीर दिखाई दे रहा था। सुस्त और बेजान सा वह मार को ऐसे सह रहा था मानो वह पीछा करने, चोरी करने, संघर्ष करने और इन सब तुच्छ बातों से थक चुका हो।
पेरी ने धीमी आवाज़ में कहा, 'तू कमीना है!' इतने सालों में उसने कभी ज़ोर से गाली नहीं दी थी, ऑक्सफ़ोर्ड के बाद से भी नहीं, और पिछली बार की तरह, यह उसे आश्चर्यजनक रूप से आसान और सुखद लगा।
धुंध में शिशु धीरे-धीरे गुजर गया। फुसफुसाहट की तरह क्षणभंगुर; रेशम और जालीदार कपड़े से बनी एक सुंदर मूर्ति। वह अब मुस्कुरा नहीं रहा था; शहद जैसे रंग की मोम से तराशी गई उसकी आकृति भावहीन थी। न ही वह आस-पास की घटनाओं को समझ पा रहा था। वह इन सब बातों से परे था, इस लोक से बाहर का। तेजी से, और एक बार फिर पेरी की मदद करके, वह गायब हो गया। धुंध शाम के बढ़ते अंधेरे में बिना कोई निशान छोड़े विलीन हो गई।

अचानक, पेरी ने आवारा को मारना बंद कर दिया। एक तेज़ हवा ने उसके बालों को हिला दिया, एक चीखती हुई सीगल - शायद किसी दूसरी सीगल की दूर की वंशज जिसने युगों पहले किसी कवि की जीभ निगल ली हो - ऊपर चक्कर लगा रही थी, भीड़ और कंक्रीट के इस शहर में किसी बात या किसी व्यक्ति पर क्रोधित।
वह आदमी हांफ रहा था, हर सांस सिसकी जैसी थी। उसके चेहरे पर खून लगा हुआ था और उसका ऊपरी होंठ फट गया था।
मुझे माफ़ करना, पेरी ने मन ही मन सोचा और लगभग बोल ही दिया, शब्द उसके गले में अटक गए। उसी क्षण, मानो आदत बन चुकी हो, उसे एक आवाज़ याद आई, जो एक साथ प्यार भरी और डांटने वाली थी। क्या तुम अब भी सबसे माफ़ी मांग रही हो, मेरी प्यारी?
अगर प्रोफ़ेसर अज़ूर इस्तांबुल पहुँच गए होते, तो शायद आज वो उससे यही कहते। ये कितना अजीब था कि अतीत ठीक उसी समय उमड़ पड़ा जब वर्तमान की अव्यवस्था चरम पर पहुँच गई। बेतरतीब यादें, दबी हुई चिंताएँ, अनकहे राज़ और अपराधबोध, बहुत सारा अपराधबोध। उसकी सारी इंद्रियाँ मंद पड़ गईं, दुनिया धुंधली पृष्ठभूमि बन गई। एक तरह की शांति, एक सुन्नता, ने उसे हर चीज़ से अलग कर दिया, यहाँ तक कि उसके शरीर के उस हिस्से के दर्द से भी जिसे वो पहचान नहीं पा रही थी। पेरी को अपने जीवन की वो बातें याद आईं जिन्हें उसने हमेशा के लिए पीछे छोड़ दिया था।
आवारा लड़का रोने लगा। गलियों का बादशाह, भिखारी, नशेड़ी, चोर, बलात्कारी... ये सब उसकी भूमिकाएँ थीं। उसकी सारी भूमिकाएँ छिन चुकी थीं, और उसकी जगह एक लड़का अंधेरे में रो रहा था, उस स्पर्श के लिए तरस रहा था जो कभी नहीं मिलेगा। अब जब गोंद का असर पूरी तरह खत्म हो चुका था, तो मतिभ्रम की जगह शारीरिक दर्द ने ले ली थी।
पेरी उसके पास पहुंची, उसके कानों में खून की धड़कन तेज़ हो रही थी, उसे अपने किए पर बहुत पछतावा हो रहा था। अगर उसकी बेटी ठीक उसी समय न आ जाती तो वह उसकी मदद करने के लिए ज़रूर आगे बढ़ती।
‘माँ, क्या हुआ?’
पेरी तीर की तरह तेज़ी से पीछे मुड़ी। उसने खुद को संभाला और अपने विचारों को समेटने की पूरी कोशिश की। 'मेरे प्यारे... तुमने कार में इंतज़ार क्यों नहीं किया?'

‘मैं और कितनी देर इंतज़ार कर सकती थी?’ डेनिज़ ने कहा, लेकिन उसके मन में जो भी डांट-फटकार थी, वह तुरंत गायब हो गई। ‘हे भगवान, तुम्हें खून बह रहा है। आखिर हुआ क्या? क्या तुम ठीक हो?’
पेरी ने कहा, 'मैं ठीक हूँ। हमारी थोड़ी-बहुत कहा-सुनी हो गई थी।'
अब एकदम शांत खड़ा वह आवारा आदमी लड़खड़ाते हुए उठा और एक कोने में जाकर बैठ गया, उसने उनमें कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। माँ और बेटी ने हैंडबैग और उसमें बिखरी हुई जितनी भी चीज़ें उन्हें मिलीं, उन्हें उठा लिया।
'मुझे बाकी सब की तरह एक सामान्य मां क्यों नहीं मिल सकती?' डेनिज़ ने जमीन से क्रेडिट कार्ड उठाते हुए खुद से बुदबुदाया।
यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब पेरी नहीं दे सकती थी, और इसलिए उसने कोशिश भी नहीं की।
‘चलो चलते हैं,’ डेनिज़ ने कहा।
‘बस एक पल।’ पेरी की निगाहें पोलरॉइड कैमरे को ढूंढने के लिए चारों ओर घूमने लगीं, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह गायब हो गया है।
‘अरे!’ डेनिज़ चिल्लाई। ‘तुम्हें क्या हुआ है!’
गली से निकलते ही वे जल्दी से अपनी कार की ओर भागे। मोंटे कार्लो ब्लू रेंज रोवर चमत्कारिक रूप से चोरी होने से बचकर उनका इंतजार कर रही थी।
बाकी का सफर खामोशी में बीता: बेटी अपने नाखूनों को कुरेद रही थी, माँ की निगाहें सड़क पर टिकी थीं। पेरी को बाद में याद आया कि उन्हें उसका मोबाइल फोन नहीं मिला। शायद आवारा ने उसे अपनी जेब में रखा हो; शायद हाथापाई के दौरान वह गिर गया हो, और उस गली में कहीं उसकी बत्ती जल रही हो और बज रही हो
– इस्तांबुल में अनसुनी रह गई एक और पुकार।

बगीचा

इस्तांबुल, 1980 का दशक
पेरी ने पहली बार जब 'धुंध में शिशु' को देखा, तब वह आठ साल की थी। इस घटना ने उसके जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया, और एक नन्हे पेड़ से लिपटी बेल की तरह उसके जीवन में रच-बस गई। यह उन अनुभवों की एक श्रृंखला की शुरुआत भी थी, जो समानता के कारण परिचित होते हुए भी, वर्षों बीतने के साथ-साथ उतने ही भयावह होते चले गए।
आस-पास के अधिकांश घरों के विपरीत, नलबंतोग्लस का घर चारों ओर से हरे-भरे बगीचे से घिरा हुआ था। वे अपना अधिकांश समय घर के पिछले हिस्से में बिताते थे। वहीं वे लाल मिर्च, बैंगन और भिंडी को रस्सियों पर टांगकर धूप में सुखाते थे, तरह-तरह की टमाटर की चटनी तैयार करते थे और ईद-उल-अधा पर बड़े- बड़े बर्तनों में भेड़ के सिर पकाते थे। पेरी भेड़ की खुली और बिना पलक झपकाए आँखों को न देखने की पूरी कोशिश करती थी। यह सोचकर उसका गला सूख जाता था कि जो भी उन आँखों को खाएगा, वह उस भयावह दृश्य को भी निगल जाएगा जिसे उसने वध से कुछ ही क्षण पहले देखा था। यह विचार और भी परेशान करने वाला था, क्योंकि वह जानती थी कि उसी शाम उसके पिता ही अपनी राकी की मेज पर उस स्वादिष्ट व्यंजन का सेवन करेंगे।
यहीं पर वे कच्ची ऊन का ढेर लगाते थे; फिर उसे हवा में सुखाते, धोते और डंडियों से पीटते थे, उसके बाद गद्दों में भरते थे। कभी-कभी, ऊन का एक छोटा सा टुकड़ा बाकियों से अलग होकर किसी के कंधे पर ऐसे गिर जाता था जैसे गोली लगने से कबूतर का पंख गिर गया हो।
जब पेरी ने अपने पिता से कहा कि कच्ची ऊन उसे मरते हुए पक्षियों की याद दिलाती है और भेड़ों की आँखें उसे दोषारोपण भरी निगाहों से घूरती हैं, तो मेन्सुर मुस्कुराया और उसके गाल पर एक चुंबन दिया। 'इतनी संवेदनशील मत बनो, कैनिमिन'
‘içi,* जीवन को ज्यादा गंभीरता से मत लो’ – मानो वह खुद कोई अलग व्यक्ति हो। लकड़ी की एक बिना रंगी बाड़ – जिसके खंभे इतने दूर-दूर लगे थे कि वह टूटे दांतों वाले मुंह जैसी दिखती थी – उनके घर को बाहरी दुनिया से अलग करती थी।

बगीचे में होने वाली सभी गतिविधियों में, पेरी को अन्य बच्चों के साथ खेले जाने वाले खेलों के बाद सबसे ज़्यादा पसंद था सामूहिक रूप से कालीन धोने का दिन। वह उस दिन का बेसब्री से इंतज़ार करती थी, जो हर कुछ महीनों में आता था। मौसम सुहावना होना चाहिए था – न ज़्यादा सूखा और न ज़्यादा गीला, कालीन पर्याप्त रूप से गंदे होने चाहिए थे, और सभी का मूड अच्छा होना चाहिए था।
एक दिन, सारे कालीन और गलीचे लपेटकर बाहर खींच लाए गए और घास पर एक-दूसरे के बगल में बिछा दिए गए। हाथ से बुने हुए, सपाट बुनाई वाले या कारखाने में बने, धोने के लिए लगभग बारह कालीन थे। सममित गांठों, केंद्रीय पदकों और छिपे हुए प्रतीकों की दुनिया में प्रवेश करते ही, मूक कवि गली के बच्चे खिलखिलाते हुए उछल-कूद करने लगे, मानो अपने उड़ते हुए कालीनों पर सवार होकर समुद्रों को पार करते हुए बंदरगाहों की ओर जा रहे हों।
इसी बीच, एक अलग कोने में, एक खुला लोहे का कड़ाहा खुली आग पर उबल रहा था। उसमें से पानी के कटोरे निकालकर कालीनों पर डाले जाते थे ताकि कपड़ा नरम हो जाए। फिर हर कालीन को साबुन से धोया जाता, ब्रश किया जाता, रगड़ा जाता और फिर पानी से साफ किया जाता। बार-बार यही प्रक्रिया दोहराई जाती थी। सभी महिलाएं इस मेहनत में हिस्सा नहीं लेती थीं। पेरी की मां, उदाहरण के लिए, एक तरफ खड़ी रहती थीं, क्योंकि उन्हें यह काम बहुत थकाऊ और गंदा लगता था। दूसरी ओर, कुछ बहादुर और मेहनती महिलाएं, अपने सलवार और स्कर्ट ऊपर कर चुकी थीं, उनके चेहरे अपने काम की अहमियत से लाल थे, उनके बाल अब उनके सिर के स्कार्फ में बंधे नहीं थे, उनके नंगे पैर कालीनों के घने रेशों को ऐसे रौंद रहे थे मानो वे जौ के खेत में चल रही हों।
अगले कुछ घंटों में बच्चों ने मिट्टी के महल बनाए; जैम लगी माचिस की डिब्बियों से मक्खियाँ पकड़ीं; खुबानी खाई (और गुठलियाँ मसल दीं) और तरबूज खाया (और बीज सुखा दिए); चीड़ की पत्तियों से मालाएँ बनाईं; और एक भूरी बिल्ली का पीछा किया जो या तो मोटी थी या गर्भवती थी। फिर उनके पास करने के लिए कुछ नहीं बचा, लेकिन अब तक केवल एक तिहाई कालीन ही अच्छी तरह से साफ हो पाए थे। पेरी के दोस्त एक-एक करके घर चले गए, और दिन में बाद में वापस आने वाले थे। यह उसका बगीचा था, उसका घर था, इसलिए वह वहीं रुकी रही।
वह एक खूबसूरत दिन था, धूप खिली हुई और गर्म। पानी के छलकने और छपछपाने की आवाज़ से हवा गूंज रही थी। औरतें गपशप कर रही थीं, हंस रही थीं और गा रही

थीं। किसी ने अश्लील चुटकुले सुनाए, जो पेरी को समझ नहीं आए, लेकिन अपनी माँ के चेहरे पर दिख रही नाराज़गी से उसने अंदाज़ा लगा लिया कि वे शरारती होंगे।
दोपहर में कालीन साफ करने वालों ने दोपहर का भोजन करने के लिए विराम लिया। वे पहले से तैयार किया हुआ भोजन लेकर आए – भरवां पत्ता गोभी, फेटा पनीर के साथ बोरेक, अचार वाले खीरे, कुटी हुई बुलगुर सलाद, ग्रिल्ड मीटबॉल, सेब के कुकी रोल… एक बड़ी गोल ट्रे लाई गई जिस पर प्रत्येक व्यंजन को फ्लैट ब्रेड के ढेर और गिलासों के बीच रखा गया था।
आयरन*, सफेद और झागदार, जैसे किसी उदार देवता के हाथों से गिरे बादल के गुच्छे।
भूख से बेहाल पेरी ने थाली से एक बोरेक (एक प्रकार का सूप) उठा लिया। उसने मुश्किल से एक निवाला ही खाया था कि एक चीख हवा में गूंज उठी। उसकी माँ जल्दबाजी और व्याकुलता में उबलते हुए बर्तन से टकरा गई थी, लेकिन चमत्कारिक रूप से बर्तन को खुद पर गिरने से बचा लिया। हालांकि, उसकी बाईं बांह कोहनी से लेकर उंगलियों तक जल गई थी। बाकी सभी महिलाएं अपना काम छोड़कर सेल्मा की मदद के लिए दौड़ पड़ीं।
किसी ने कहा, 'उसके हाथ पर ठंडा पानी डालो।'
‘टूथपेस्ट! इसे जले हुए स्थान पर अच्छी तरह लगाओ।’
किसी और ने कहा, 'सिरके से हमने मेरी चाची के जलने के घाव ठीक किए। उनके घाव ज़्यादा गंभीर थे।'
जब सब लोग सेल्मा की देखभाल के लिए अपने-अपने तरीके से अंदर चले गए, तो पेरी बगीचे में अकेली रह गई। सूरज की एक किरण उसके चेहरे पर पड़ी; पास ही एक कीड़ा भिनभिनाता हुआ जा रहा था। सड़क के दूसरी ओर अंजीर के पेड़ के नीचे उसने भूरी बिल्ली को देखा, जिसकी हरी आँखें सिकुड़ी हुई थीं। उसे लगा कि उसे जानवर को कुछ खिलाना चाहिए। एक मीटबॉल लेकर वह बाड़ फांद कर बाहर निकल गई। पलक झपकते ही वह बाहर थी।
‘तुम्हारा नाम क्या है, नन्ही बच्ची?’
पेरी ने मुड़कर देखा तो उसे लाल और सफेद चेक वाली कमीज़ और नीली जींस पहने एक युवक दिखाई दिया, जो देखने में मानो कभी धुली ही न हो। उसके सिर पर बंधी टोपी मानो फिसलने ही वाली थी। उसने पहले तो कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि वह अजनबियों से बात करने से बचती थी। लेकिन वह वहाँ से गई भी नहीं। उस टोपी ने

उसे उत्सुक कर दिया, उमट के कमरे में लगे पोस्टर की याद दिला दी। शायद यह अजनबी कोई क्रांतिकारी हो। शायद उसने उसके भाई के बारे में और उसके अंजाम के बारे में सुना हो। उसने सोचा कि अगर वह उसे सच नहीं बताएगी, तो यह उसे जानकारी देने जैसा होगा। इसलिए उसने कहा, 'मैं रोज़ा हूँ।'
‘अरे, मैंने तो पहले कभी रोजा नाम की किसी लड़की को नहीं देखा,’ उसने सूरज की ओर चेहरा झुकाते हुए कहा। ‘और इतनी खूबसूरत भी। बड़ी होकर तुम सबका दिल जीतोगी।’
पेरी ने कुछ नहीं कहा, हालांकि उसके भीतर कुछ हलचल हुई, कामुकता का एक छोटा सा उभार, एक ऐसी शक्ति जो अभी तक जागृत नहीं हुई थी, प्रशंसा से आधी रोमांचित, आधी विचलित।
‘मुझे लगता है कि आपको बिल्लियाँ पसंद हैं,’ उसने कहा।
उसकी आवाज़ धीमी और कर्कश थी। बाद में, हालांकि उस समय नहीं, पेरी ने उसकी तुलना उस बीज से की जिसे वह खिड़की के किनारे नम रुई में लपेटकर रखती थी। ठीक उसी बीज की तरह, अजनबी की आवाज़ भी छुपी हुई थी, बदल रही थी, अंकुरित हो रही थी।
उन्होंने कहा, 'मैंने कोने में एक बिल्ली का बच्चा देखा। उसने पांच बिल्ली के बच्चों को जन्म दिया है। वे बहुत प्यारे और नन्हे हैं, बिल्कुल चूहों जैसे। उनकी आंखें गुलाबी हैं।'
उदासीनता का दिखावा करते हुए, पेरी ने बिल्ली को मीटबॉल का आखिरी टुकड़ा दिया।
वह आदमी एक कदम और करीब आया: उससे तंबाकू, पसीने और नम मिट्टी की गंध आ रही थी। वह नीचे झुक गया और उसे देखकर मुस्कुराया। अब वे एक ही स्तर पर थे। 'यह दुख की बात है कि उनकी माँ उन्हें डुबो देगी।'
पेरी ने अपनी सांस रोक ली। खेत में, जहाँ आवारा कुत्ते घूमते थे और कुछ बकरियाँ चरती थीं, वहाँ एक जलाशय था जिसका कोई उपयोग नहीं करता था क्योंकि जब भी तीन इंच से अधिक बारिश होती थी तो वह गंदे पानी से दूषित हो जाता था। उसने उस दिशा में देखा, उसे आधा आभास था कि शायद पानी पर बिल्लियों के शव तैरते हुए दिखाई देंगे।
‘बिल्लियाँ ऐसा करती हैं,’ उस आदमी ने आह भरते हुए कहा।
पेरी ने पूछे बिना नहीं रह सकी, 'लेकिन क्यों?'

‘उन्हें गुलाबी आँखें पसंद नहीं हैं,’ उसने जवाब दिया। उसकी अपनी आँखें हल्के भूरे रंग की थीं, जिनके नीचे की त्वचा धंसी हुई थी और उसके नुकीले चेहरे पर पास-पास थीं। ‘उन्हें डर है कि उन्होंने लोमड़ी के बच्चों जैसे अजीबोगरीब जीव पैदा कर दिए हैं। इसलिए वे उन्हें मार देते हैं।’
पेरी सोच रही थी कि क्या लोमड़ी के बच्चों की आँखें गुलाबी होती हैं और अगर हाँ, तो उनकी माँएँ इस बारे में क्या सोचती होंगी। उसके परिवार में हरी आँखों वाली वह अकेली थी और उसे इस बात का सौभाग्य प्राप्त था कि अब तक किसी ने इसे समस्या नहीं माना था।
उस आदमी ने उसकी हैरानी देखकर बिल्ली के सिर पर हाथ फेरा और फिर खड़ा हो गया। 'मुझे जाकर बिल्ली के बच्चों को देखना चाहिए। उनकी देखभाल करनी है। क्या आप मेरे साथ आना चाहेंगी?'
‘कौन? मैं?’ उसने कहा – सिर्फ इसलिए क्योंकि उसे और कुछ कहना नहीं आता था। उसने अपने होंठ सिकोड़ लिए और जवाब देने में थोड़ा समय लिया, मानो उसी ने उसके साथ आने का सुझाव दिया हो। 'अगर तुम चाहो तो आ सकती हो। लेकिन वे बहुत छोटे हैं। क्या तुम वादा करोगी कि उन्हें चोट नहीं पहुँचाओगी?'
‘वादा करती हूँ,’ उसने बेपरवाही से कहा।
कहीं से एक खिड़की खुली; एक महिला हवा में चिल्लाई, अपने बेटे को धमकी देते हुए कि अगर वह अभी दोपहर के खाने के लिए घर नहीं आया तो वह उसकी दोनों टांगें तोड़ देगी। आदमी अचानक घबरा गया और इधर-उधर देखने लगा। उसका चेहरा सिकुड़ गया और उसने कहा, 'हमें साथ नहीं दिखना चाहिए। मैं आगे चलूंगा, तुम मेरे पीछे रहना।'
‘बिल्ली के बच्चे। वे कहाँ हैं?’
‘वे ज़्यादा दूर नहीं हैं, लेकिन बेहतर होगा कि हम गाड़ी से चलें। मेरी कार यहीं पास में खड़ी है।’ उसने अस्पष्ट इशारा किया और फिर तेज़ी से कदम बढ़ा दिए।
पेरी उस आदमी के पीछे चलने लगी, जो लंगड़ाकर चल रहा था। हालाँकि उसके मन में अपने इस कदम को लेकर कुछ शंकाएँ थीं, लेकिन यह पहला फैसला था जो उसने अपने माता-पिता के बिना लिया था, और इसी के ज़रिए उसे आज़ादी का सबसे ज़्यादा एहसास हुआ था।
कुछ ही देर में, उसने कंधे पर से एक अप्रत्यक्ष नजर डालते हुए अपनी कार तक पहुंचा और ड्राइवर की सीट पर बैठकर उसका इंतजार करने लगा।

पेरी रुक गई, किसी ऐसी चीज़ से सचेत होकर जो सहज ज्ञान से परे थी, बल्कि शारीरिक रूप से प्रकट हुई थी। वह कंपकंपी से कांप उठी जैसे किसी बर्फीली हवा ने उसकी नंगी त्वचा को छू लिया हो। लेकिन जिस चीज़ ने उसे सबसे ज़्यादा चौंकाया, वह था अचानक छा जाने वाला कोहरा। कोहरे का एक पर्दा – धूसर रंग की परतें, जैसे किसी कपड़े की दुकान में कपड़े के रोल खोल दिए गए हों। कोहरे ने उसे क्षण भर के लिए भ्रमित कर दिया कि वह कहाँ जा रही है और क्यों। वह पास में एक पेड़ की धुंधली आकृति देख सकती थी, लेकिन उसके आगे की दुनिया अब दिखाई नहीं दे रही थी – यहाँ तक कि वह आदमी भी, जो उससे कुछ ही फीट दूर था। धूसर धुंध के बीच, पेरी ने एक विचित्र दृश्य देखा: एक शिशु – उसका चेहरा गोल, खुला और विश्वास से भरा हुआ था। एक गाल से लेकर जबड़े तक बैंगनी रंग का धब्बा फैला हुआ था। उसके मुंह के कोने से कुछ तरल पदार्थ टपक रहा था, मानो उसने अभी-अभी थोड़ी उल्टी की हो।
‘पेरी, तुम कहाँ हो?’ उसकी माँ की घबराहट भरी आवाज़ खट्टे चेरी के रंग के घर से सुनाई दी।
वह जवाब नहीं दे सकी। धुंध में बच्चे को देखकर उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसने हैरानी से पलकें झपकाईं। उसे लगा, ज़रूर कोई आत्मा होगी, कोई जिन्न। उसने उनके बारे में सुना था – बिना धुएँ वाली आग से बने जीव। वे आदम और हव्वा के स्वर्ग से गिरने से बहुत पहले से यहाँ थे; इसलिए, ऐतिहासिक रूप से, धरती उन्हीं की थी। इंसान तो बाद में आए, आक्रमणकारी थे। जिन्न दूरदराज के इलाकों में रहते थे – बर्फीले पहाड़ों, अंधेरी गुफाओं, बंजर ज़मीनों में – लेकिन वे अक्सर शहरों में घुसकर बदबूदार शौचालयों, गंदे तहखानों और बदबूदार तहखानों में रहने लगते थे। क्योंकि वे आज़ादी से घूमते थे, इसलिए संभलकर चलना पड़ता था; गलती से भी उन पर पैर रख देना बुरा अंजाम होता था, शायद लकवा भी हो जाता था। शायद उसके साथ भी यही हुआ था। वह मुश्किल से हिल-डुल पा रही थी।
‘पेरी! मुझे जवाब दो!’ सेल्मा चिल्लाई।
धुंध में छिपा बच्चा मानो आवाज पहचान गया हो, वैसे ही पीछे हट गया।
धुंधलापन छंटने लगा। और बच्चा भी धीरे-धीरे गायब होने लगा, ठीक वैसे ही जैसे उगते सूरज की किरणों के नीचे सुबह की धुंध छंट जाती है।
‘यहाँ, माँ!’ पेरी मुड़ी और जितनी तेज़ी से हो सके अपने बगीचे की ओर भागी।

बाद में उसने आस-पड़ोस में लोगों से पूछा कि क्या किसी को गुलाबी आंखों वाली बिल्ली के बच्चे के बारे में पता है। किसी को नहीं पता था।

बाद में, जीवन के बहुत बाद में, पेरी को समझ आया कि वह बाल-बाल अखबार में छपने से बच गई। गुमनाम, केवल उसके छपे हुए नाम के पहले अक्षर, एन. एन.; उसकी तस्वीर जिस पर उसकी आँखों पर काली पट्टी बंधी होती। वह वहाँ हो सकती थी, इस्तांबुल में एक माफिया नेता पर हुए घातक हमले की खबरों के साथ; दक्षिण-पूर्वी सीमा पर स्थित एक कस्बे में तुर्की सेना और कुर्द अलगाववादियों के बीच हुई झड़प और हेनरी मिलर की रचना 'ट्रॉपिक ऑफ कैप्रिकॉर्न' पर प्रतिबंध लगाने के अदालती फैसले के साथ। पूरा देश उसके अपहरण का ब्यौरा पढ़ता, भगवान को कोसता, सिर हिलाता, जीभ चटकाता, और ईश्वर का शुक्र अदा करता कि यह किसी और का बच्चा था, उनका नहीं।
उसने अपने रक्षक को 'धुंध में छिपा बच्चा' कहा और बात वहीं खत्म कर दी, वह यह समझने में असमर्थ और अनिच्छुक थी कि यह कहाँ से आया था। लेकिन यह दृश्य उसके जीवन भर अप्रत्याशित अंतरालों पर लौटता रहा। यह न केवल खतरे के समय प्रकट होता था, बल्कि सामान्य क्षणों में भी। घर के अंदर हो या बाहर, सुबह हो या रात, धुंध कभी भी और कहीं भी छा सकती थी, उसे चारों ओर से घेर लेती थी, मानो वह चाहती हो कि वह हमेशा के लिए यह स्वीकार कर ले कि वह वास्तव में कितनी अकेली है।
कई साल बाद, जब उन्नीस साल की उम्र में वह पहली बार ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय गई, तो यही राज़ वह अपने सूटकेस में छिपाकर ले गई। यूरोपीय देशों के बाहर से इंग्लैंड में मांस या दुग्ध उत्पाद लाना मना था, लेकिन किसी ने यह नहीं कहा कि आप अपने बचपन के डर और आघातों को साथ नहीं ला सकते।

होजा

इस्तांबुल, 1980 का दशक
एक हफ्ते बाद पेरी ने हिम्मत जुटाकर अपने पिता को अपना रहस्य बता दिया। ‘क्या तुम यही कह रहे हो कि तुम्हें भ्रम हो रहा है?’ मेन्सुर ने अपनी गोद में अखबार का क्रॉसवर्ड रखे हुए पूछा।
‘कोई चीज़ नहीं, बाबा। बस एक चीज़,’ पेरी ने कहा। ‘एक शिशु।’
‘यह शिशु आखिर कहाँ है?’
पेरी शरमा गई। 'हवा में, मानो तैर रही हो।'
एक पल के लिए, उनके चेहरे पर कोई भाव नहीं झलका। अंत में उन्होंने कहा, 'तुम मेरी चतुर बेटी हो। क्या तुम अपनी माँ जैसी बनना चाहती हो? अगर हाँ, तो बनो, अपने दिमाग को मूर्खता से भर लो। मुझे तुमसे बेहतर की उम्मीद थी।'
उसका दिल बैठ गया। उसे कभी निराश न करने का पक्का इरादा करके, वह मान गई। यह इतना मुश्किल नहीं था। आख़िरकार, उसने उस प्रेत को छुआ नहीं था, और भले ही उसने उसे देखा था, और बाद में उसकी आवाज़ भी सुनी थी, लेकिन उस अजीब अनुभव को देखते हुए वह अपनी इंद्रियों पर भरोसा नहीं कर सकती थी। उसके पिता के नियम के अनुसार, धुंध में मौजूद बच्चा असल में था ही नहीं। उसने निष्कर्ष निकाला कि यह सब उसके दिमाग की उपज थी, लेकिन यह सब उसके दिमाग की उपज क्यों थी, इसका उसे कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण नहीं सूझ रहा था। ‘पेरिसिम, सभ्य दुनिया निराधार मान्यताओं पर नहीं बनी थी। यह विज्ञान, तर्क और प्रौद्योगिकी पर बनी थी। आप और मैं उसी दुनिया का हिस्सा हैं।’ ‘मुझे पता है, बाबा।’
'अच्छा। इस विषय को यहीं छोड़ दो। और अपनी माँ से कभी भी इसका ज़िक्र मत करना।'
यह तो होना ही था। अगर उसके पिता के भौतिकी के सार्वभौमिक नियम थे, तो मानव मनोविज्ञान के भी थे। जैसे ही किसी को चालीसवें दरवाजे से अंदर न जाने या किसी संदूक में झाँकने से मना किया जाता है, वह दरवाजा खुल ही जाता है, वह संदूक खोलना ही पड़ता है। सच कहें तो, पेरी ने जहाँ तक हो सका अपना वादा

निभाया, लेकिन अगली बार जब धुंध में बच्चा दिखाई दिया, तो वह मदद के लिए अपनी माँ के पास दौड़ पड़ी।
‘आपने मुझे पहले क्यों नहीं बताया?’ सेल्मा ने चिंता से माथे पर शिकन लिए कहा।
पेरी ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात कही। 'मैंने पापा को बता दिया।' ‘तुम्हारे पिता? उन्हें क्या पता?’ सेल्मा ने कहा। ‘सुनो, ये तो किसी जिन्न का काम लग रहा है। कुछ अच्छे स्वभाव के होते हैं, कुछ एकदम दुष्ट। कुरान हमें इस खतरे से आगाह करता है। वे किसी भी इंसान को, खासकर किसी लड़की को, अपने वश में करने के लिए कुछ भी कर सकते हैं। औरतें उनके हमलों के लिए विशेष रूप से असुरक्षित होती हैं; हमें सावधान रहना चाहिए।’
सेल्मा आगे झुकी और अपनी बेटी के बालों की एक लट को उसके कान के पीछे कर दिया। इस सरल और स्नेहपूर्ण हावभाव ने पेरी के भीतर कोमलता का सैलाब ला दिया। उसने पूछा, 'मुझे क्या करना चाहिए?'
‘दो बातें। पहली बात तो यह कि हमेशा सच बोलो। अल्लाह हर झूठ को देख लेता है। और माता-पिता धरती पर अल्लाह की आंखें हैं। दूसरी बात, हमें एक तांत्रिक ढूंढना होगा।’
अगली सुबह वे दोनों एक ऐसे होजा (जादूगर) से मिलने गए जो बुरी आत्माओं के प्रभाव को दूर करने की अपनी शक्तियों के लिए प्रसिद्ध था। वह एक मोटे- ताज़े आदमी थे जिनकी छोटी-छोटी काली मूंछें थीं और आवाज़ भारी थी। उनके हाथ में एक काले पत्थर की माला थी जिसे वे धीरे-धीरे उंगलियों से घुमा रहे थे। उनका चौड़ा सिर उनके बाकी शरीर के अनुपात में नहीं था – मानो जल्दबाजी में, बाद में जोड़ा गया हो; और उनकी कमीज़ पूरी तरह से बंद थी, इतनी कसकर कि उसकी गर्दन उसमें समा गई थी।
पेरी को ध्यान से देखते हुए, उन्होंने उससे खाने-पीने, खेलने, पढ़ने, सोने और शौच की आदतों के बारे में सवाल पूछे। उनकी पैनी नज़रों के कारण बच्ची थोड़ी असहज हो गई, लेकिन वह अपनी कुर्सी पर बैठी रही और पूरी ईमानदारी से जवाब देने की कोशिश करती रही। उन्होंने उससे पूछा कि क्या उसने हाल ही में कोई मकड़ी, इल्ली, छिपकली, तिलचट्टा, टिड्डा, लेडीबग, ततैया या चींटी मारी है। आखिरी सवाल पर पेरी हिचकिचा गई; कौन जानता है, शायद उसने किसी चींटी पर पैर रख दिया हो - या इससे भी बुरा, किसी चींटी के टीले पर। होजा ने पुष्टि की कि जिन्न, जो पकड़ में नहीं आते, कीड़ों का रूप ले सकते हैं, और अगर कोई

अल्लाह का नाम लिए बिना उन्हें कुचल दे, तो वह तुरंत जिन्न के वश में हो जाएगा।
इतना कहकर होजा ने सेल्मा की ओर मुड़कर कहा, ‘क्या बच्चे ने न जाने की सीख ली थी?’
अगर फातिहा पढ़े बिना बाहर निकल जाती, तो ऐसा नहीं होता। मेरे पाँच बच्चे हैं, उनमें से किसी को भी कभी जिन्नों ने परेशान नहीं किया। क्यों? सीधा सा कारण है, क्योंकि वे जानते हैं कि अपनी रक्षा कैसे करनी है। क्या तुमने उसे कुछ नहीं सिखाया, बहन?
सेल्मा की निगाहें उस आदमी से अपनी बेटी और फिर वापस उस आदमी पर घूमती रहीं। 'मैं कोशिश करती हूँ, लेकिन वह सुनती नहीं है। उसके पिता का उस पर बुरा प्रभाव है।'
पेरी ने विरोध करते हुए कहा, 'इसका उससे कोई लेना-देना नहीं है...' फिर धीरे से बोली, 'अब क्या होगा?'
जवाब न मिलने पर, तांत्रिक ने बच्ची को कंधों से पकड़ लिया, उसके चेहरे के पास झुककर, मानो अनंत काल तक, फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम्हारा जो भी नाम हो, मैं पता लगा लूंगा। फिर तुम मेरी गुलाम बन जाओगी। मैं जानता हूं कि तुम अपवित्रों में से एक हो। तुम दुष्ट, दुष्ट प्राणी हो। इस मासूम बच्ची को छोड़ दो। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं!'
पेरी ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं। उस आदमी की उंगलियाँ उसके कंधों से ढीली पड़ गईं। उसने उसके सिर पर गुलाबजल छिड़का और बुरी शक्तियों को दूर भगाने के लिए प्रार्थनाएँ पढ़ीं। उसने उसे अरबी अक्षरों वाले छोटे-छोटे कागज़ निगलने को कहा, जिनकी स्याही से उसकी जीभ इतनी चमकदार नीली हो गई कि वह कई दिनों तक बनी रही। कुछ नहीं हुआ। उस रात, होजा के निर्देशों और उसकी माँ के आग्रह पर, पेरी ने एक घंटा अकेले बगीचे में बिताया, हर छोटी सी आवाज़ से सहम जाती, सड़क के लैंप की हल्की रोशनी में डर की एक परछाईं सी लग रही थी। अगली सुबह उन्होंने उसे आवारा कुत्तों के झुंड का पीछा करने के लिए भेजा। लेकिन कुत्ते ही उसका पीछा करने लगे।
जब वे दूसरी बार तांत्रिक से मिलने गए, तो उसने कहा, ‘हे जिन्न, मैं तुम्हें एक आखिरी मौका देता हूँ।’ उसके हाथ में सूखी विलो की शाखा से बनी एक लंबी छड़ी थी। ‘या तो तुम स्वेच्छा से बाहर आ जाओ, वरना मैं तुम्हारी जमकर पिटाई करूँगा।’

पेरी को अपनी सुनी हुई बात समझ आने से पहले ही उस आदमी ने उसकी पीठ पर ज़ोर से मारा। बच्ची चीख पड़ी।
सेल्मा का चेहरा पीला पड़ गया। 'क्या यह ज़रूरी है, मेरे दोस्त?'
‘यही एकमात्र इलाज है। जिन्न को डराना होगा। वह जितनी देर उसके शरीर में रहेगा, उतना ही शक्तिशाली होता जाएगा।’
‘हां, लेकिन… मैं इसकी इजाज़त नहीं दे सकती,’ सेल्मा ने अपने होंठों को एक पतली रेखा में सिकोड़ते हुए कहा। ‘हमें यहां से निकलना होगा।’
होजा ने सपाट स्वर में कहा, 'तुम्हारी मर्ज़ी। बहन, मैं तुम्हें चेतावनी देना चाहता हूँ। यह बच्ची अंधकार की ओर आकर्षित है। अगर तुम इस जिन्न से अभी छुटकारा पा भी लो, तो भी कोई दूसरा जिन्न उसे आसानी से अपने वश में कर सकता है। उस पर नज़र रखना।'
मां और बेटी, किसी भी जिन्न से ज्यादा भूत भगाने वाले से डरी हुई थीं, जल्दी से घर से बाहर निकल गईं - हालांकि इससे पहले सेल्मा ने एक मोटी रकम चुका दी थी।
बस स्टॉप पर पहुँचते ही पेरी ने कहा, ‘चिंता मत करो, मैं ठीक हूँ।’ उसने अपनी माँ का हाथ पकड़ लिया और मन ही मन दोषी महसूस करने लगी। ‘माँ, जब उसने कहा कि मुझमें उदासी छा जाती है, तो उसका क्या मतलब था?’
सेल्मा परेशान लग रही थी, अपनी बेटी के सवाल से ज़्यादा अपनी खुद की असमर्थता से। 'कुछ लोग जन्म से ही ऐसे होते हैं। शायद इसी वजह से तुमने बचपन में ऐसी हरकतें कीं -' वह रुक गई, उसकी आँखों में आँसू आ गए।
अपनी माँ का मतलब न समझ पाने के कारण, पेरी को डर था कि उसने ज़रूर कुछ बहुत बड़ी गलती कर दी होगी। 'मैं अच्छी बच्ची बनूँगी, वादा करती हूँ।'
एक और वादा जिसे वह उस दिन से पूरी लगन से निभाएगी। आज्ञाकारी होकर, वह अपने कर्तव्यों का पालन करेगी, जहाँ से वह नियमित दिनचर्या से भटकी थी, वहाँ वापस लौटेगी, इस बात का पूरा ध्यान रखते हुए कि कोई अप्रत्याशित घटना न हो। वह यथासंभव सामान्य और गैर-खतरनाक बनी रहेगी।
सेल्मा ने उसके माथे पर चुंबन किया। ‘कनिम, उम्मीद है कि यह सब खत्म हो गया है, लेकिन सावधान रहो! यह फिर से लौट सकता है। और अगर ऐसा हुआ, तो मुझे जरूर बताना। जिन्न प्रतिशोधी होते हैं।’
यह घटना फिर से लौट आई, लेकिन अपने अनुभव से सबक लेते हुए पेरी ने इसके बारे में किसी से बात नहीं की। उसकी माँ बहुत अंधविश्वासी थी और पिता बहुत

तर्कसंगत, इसलिए इस अवास्तविक मामले में उनमें से कोई भी उसकी मदद नहीं कर सकता था। ज़रा सी भी अजीबोगरीब बात, चाहे वह कितनी भी असामान्य क्यों न हो, सेल्मा उसे धार्मिक कारण मानती थी; और मेन्सुर उसे सरासर पागलपन समझ लेता था। पेरी ने अपनी ओर से इनमें से किसी भी बात को मानने से इनकार कर दिया। पेरी जैसे-जैसे अपने विकल्पों पर विचार करती गई, वैसे-वैसे उसे यकीन होता गया कि उसे अपने दृश्यों को अपने तक ही सीमित रखना होगा। हालांकि वे दृश्य उसे बेहद परेशान करते थे, फिर भी उसने उन्हें जीवन की एक विचित्रता के रूप में स्वीकार कर लिया, जैसे आँखों में तैरता हुआ कोई धब्बा, जो कभी गायब नहीं होता और केवल तभी परेशान करता है जब वह उसके प्रति सचेत होती है, जिससे उसके पास इसके साथ जीना सीखने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। इस प्रकार धुंध में छिपा हुआ बच्चा - चाहे वह जिन्न हो या कुछ और - उसके मन के भीतरी हिस्सों में एक अनसुलझी पहेली बनकर रह गया।
कई साल बाद, ऑक्सफ़ोर्ड जाने से कुछ समय पहले, उन्होंने अपनी 'ईश्वर-डायरी' में लिखा: क्या सचमुच कोई दूसरा रास्ता नहीं है, कोई दूसरी जगह नहीं है उन चीज़ों के लिए जो न तो आस्था के दायरे में आती हैं और न ही अविश्वास के - न तो शुद्ध धर्म के और न ही शुद्ध तर्क के? क्या मुझ जैसे लोगों के लिए कोई तीसरा रास्ता है? हममें से उन लोगों के लिए जो द्वैतवाद को बहुत कठोर मानते हैं और उसके अनुरूप नहीं ढलना चाहते? क्योंकि ज़रूर ऐसे और भी लोग होंगे जो मेरी तरह महसूस करते हैं। ऐसा लगता है जैसे मैं एक नई भाषा की खोज कर रही हूँ। एक ऐसी मायावी भाषा जिसे मेरे अलावा कोई नहीं बोलता...

मछलीघर

इस्तांबुल, 2016
शाम के पौने नौ बजे माँ और बेटी समुद्र किनारे स्थित कोनाक (पारंपरिक मंगोलियाई हवेली) पहुँचीं। लोहे की बालकनियाँ, सफेद संगमरमर की सीढ़ियाँ, मोज़ेक वाले फव्वारे, अत्याधुनिक सुरक्षा कैमरे, बिजली के गेट और कांटेदार तारों की बाड़। यह हवेली किसी घर से ज़्यादा एक द्वीप जैसी लग रही थी, एक आलीशान किला जिसने खुद को शहर से अलग कर लिया था, भले ही शहर ने उसे अलग-थलग कर लिया हो। सुरक्षा के हर लिहाज़ से हर संभव उपाय किया गया था ताकि कोई फेरीवाला, कोई चोर, कोई अपराधी या कोई अवांछित जीवनशैली इसकी दहलीज पार न कर सके।
पेरी ने अपने घायल दाहिने हाथ को सीने से लगाकर रखा था और बाएं हाथ से स्टीयरिंग व्हील पकड़े हुए थी। रास्ते में वे एक दवा की दुकान पर रुके और वहां मौजूद फार्मासिस्ट, जो एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति था और जिसकी मूंछें हल्की-हल्की घनी थीं, से अपने घाव का इलाज करवाया। जब उसने पूछा कि यह कैसे हुआ, तो पेरी ने फुर्ती से कहा, 'सब्जियां काटते समय। जल्दी में खाना बनाते समय यही होता है।'
वह हँस पड़ा था। इस्तांबुल के फार्मासिस्ट बड़े समझदार थे। वे न तो झूठ को छिपाते थे और न ही असहज सच्चाइयों का पर्दाफाश करते थे। ग्राहकों, दलालों या खुद को चोट पहुँचाने वाली वेश्याएँ; पतियों द्वारा पीटी गई महिलाएँ; दूसरे ड्राइवरों द्वारा पीटे गए ड्राइवर – ये सभी दवा की दुकानों में जाकर बेझिझक झूठ बोल सकती थीं, इस बात से बेफिक्र कि भले ही उन पर विश्वास न किया जाए, कम से कम उनसे सवाल तो नहीं किए जाएँगे।
पेरी ने पट्टी को देखा और जाली से रिसते हुए खून के धब्बे को देखकर उसका चेहरा बिगड़ गया। वह पार्टी में प्रवेश करने से पहले इसे उतार देना चाहती थी ताकि मुश्किल सवालों से बचा जा सके, लेकिन दर्द, खून और संक्रमण के खतरे ने उसका इरादा बदल दिया।
जैसे ही वे गेट पर रुके, गहरे रंग के सूट में, चेहरे पर आफ्टरशेव की महक लिए एक हट्टा-कट्टा सुरक्षा गार्ड प्रकट हुआ। जब वह कार पार्क कर रहा था, पेरी

और डेनिज़ लताओं से ढके सुंदर बगीचे से गुज़रे। हल्की हवा से चिनार के पेड़ों के पत्ते लहरा रहे थे।
‘डार्लिंग, मुझे उस आदमी का पीछा नहीं करना चाहिए था। मैं क्या सोच रही थी?’ पेरी ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा। अपने सही हाथ से उसने अपनी बेटी को बड़े हल्के से छुआ, मानो वह बहुत नाज़ुक हो, उसका गुस्सा कांच का बना हो। वे कभी बहुत करीब थीं; अतीत में उनके अपने ही नियम थे। अब यह विश्वास करना मुश्किल था कि यह वही बच्ची है जो उसके बेतुके चुटकुलों पर खिलखिलाकर हंसती थी और डिज्नी के किसी किरदार के आंसू बहाने पर उसका हाथ थाम लेती थी। वह प्यारी बच्ची गायब हो गई थी, उसकी जगह एक अजनबी आ गई थी। यह बदलाव – क्योंकि उसके पास इसके लिए कोई और शब्द नहीं था – पेरी को बिल्कुल भी तैयार नहीं कर पाया था, हालांकि उसने इस बारे में कई लेख पढ़े थे कि किशोरावस्था पहले से जल्दी शुरू हो जाती है – खासकर लड़कियों में। वह हमेशा से अपनी बेटी के साथ अपनी माँ के साथ अपने रिश्ते से कहीं बेहतर रिश्ता रखना चाहती थी। आखिरकार, क्या जीवन में पूरा करने लायक एकमात्र सच्ची आकांक्षा यही नहीं थी: अपने माता-पिता से बेहतर काम करना, ताकि हमारे बच्चे हमसे बेहतर माता-पिता बन सकें? लेकिन अक्सर हम यह पाते हैं कि हम अनजाने में पिछली पीढ़ी की ही गलतियों को दोहराते हैं। पेरी यह भी जानती थी कि गुस्सा अक्सर डर का पर्दा होता है। उसने धीरे से कहा, 'अगर मैंने आपको डरा दिया हो तो मुझे माफ कर दीजिए।'
‘माँ, तुमने मुझे सच में डरा दिया था,’ डेनिज़ ने कहा। ‘तुम्हारी जान भी जा सकती थी!’
उसकी बेटी सही थी। उस गली में वह उस आवारा के हाथों अपनी जान गंवा सकती थी। लेकिन डेनिज़ को यह नहीं पता था कि इसका ठीक उल्टा भी उतना ही सच था, बल्कि उससे भी ज़्यादा सच था – वह उस आवारा को मार भी सकती थी।
घर की सीढ़ियों पर पहुँचते ही पेरी ने कहा, 'मैं फिर कभी ऐसा नहीं करूंगी।' 'वादा करना?'
'वादा करती हूँ, प्यारी। बस अपने पिता को कुछ मत बताना; इससे उन्हें चिंता होगी।'
डेनिज़ कुछ पल के लिए रुकी - एक पल की झिझक जो जितनी जल्दी आई उतनी ही जल्दी गायब भी हो गई। उसने अपना सिर हिलाया। 'उसे जानने का पूरा अधिकार है।'

पेरी कुछ जवाब देने ही वाली थी कि तभी फूलों और पत्तियों की नक्काशी से सजा विशाल ओक का दरवाज़ा अंदर से खुल गया। काले स्कर्ट और सफेद शिफॉन ब्लाउज पहने एक नौकरानी दरवाजे पर मुस्कुराती खड़ी थी। उसके पीछे से एक शानदार डिनर पार्टी की आवाज़ें और खुशबू आ रही थी।
'स्वागत है, कृपया अंदर आइए।'
नौकरानी एक विशिष्ट लहजे में बोलती थी - संभवतः मोल्डावियन या जॉर्जियन या यूक्रेनी, इस्तांबुल के घरों में काम करने वाली कई विदेशी महिलाओं में से एक, जबकि उनके अपने घरों में उनके बच्चों का पालन-पोषण रिश्तेदारों और दोस्तों द्वारा किया जाता था, और उनके पति मासिक भुगतान आने का इंतजार करते थे।
‘तुम मुझे यहाँ क्यों लाए?’ डेनिज़ ने गुस्से से फुफकारा।
मैंने तुमसे कहा था, तुम्हारा दोस्त यहाँ आने वाला है। चलो, शाम का आनंद लें।
जैसे ही उन्होंने अंदर कदम रखा, पेरी ने देखा कि उसका पति मेहमानों को चीरते हुए उनकी ओर बढ़ रहा है, उसके चेहरे पर चिंता और चिड़चिड़ाहट का मिलाजुला भाव था। स्लिम-कट अखरोटी भूरे रंग की जैकेट, साफ सफेद कमीज, नीले और हल्के भूरे रंग की टाई, शीशे की तरह चमकते जूते - अदनान ने अपने पहनावे का पूरा ध्यान रखा था। एक मेहनती शख्स, उसने साधारण शुरुआत से संपत्ति विकास के जरिए दौलत जमा की थी। वह अक्सर कहता था कि उसकी सफलता का श्रेय सिर्फ सर्वशक्तिमान अल्लाह को जाता है। पेरी, हालांकि वह अपने पति की मेहनत और व्यापारिक सूझबूझ का सम्मान करती थी, लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि ईश्वर ने उसे दूसरों से ज्यादा क्यों चुना। अदनान पेरी से सत्रह साल बड़ा था, लेकिन उसे लगता था कि उम्र का अंतर तब सबसे ज्यादा साफ दिखाई देता था जब वह परेशान होता था और उसके माथे की झुर्रियां गहरी हो जाती थीं - जैसा कि अभी हो रहा था।
‘तुम कहाँ थे? मैंने तुम्हें पचास बार फोन किया!’
पेरी ने अपनी पूरी कोशिश करते हुए नरमी से कहा, 'माफ़ करना, डार्लिंग, मेरा फ़ोन खो गया। लंबी कहानी है, अभी इसके बारे में बात नहीं करते।'
‘पापा, आपको पता है हमें देर क्यों हो गई?’ डेनिज़ ने अपने पिता को देखकर चमकती आँखों से कहा। ‘क्योंकि मम्मी चोरों का पीछा करने में व्यस्त थीं!’ 'क्या?'

डेनिज़ ने अपने बालों की एक लट को आँखों से हटाया। उसकी नाक अपने पिता जैसी लंबी और थोड़ी उभरी हुई थी, और आत्मविश्वास भी उन्हीं जैसा था। 'उससे पूछो,' उसने कहा और अपनी हमउम्र एक लड़की की ओर चल पड़ी, जो बड़े मेहमानों के बीच ऊबी हुई लग रही थी।
लेकिन समझाने का समय नहीं था। हवेली का मालिक, एक जाने-माने पत्रकार से अपनी बातचीत बीच में ही रोककर, उनकी ओर बढ़ा। वह चौड़े कंधों वाला, गठीला शरीर, सिर मुंडा हुआ और शराब पीने की वजह से लालिमा लिए हुए आदमी था। उसके चेहरे पर एक भी झुर्री नहीं थी, मानो उसने बुढ़ापा रोकने के लिए नवीनतम उपचार करवाए हों। जब वह मुस्कुराता था, तो उसके चेहरे के भाव एकदम स्थिर रहते थे, बस होठों के कोनों पर हल्की सी हलचल होती थी।
‘तुमने कर दिखाया!’ व्यापारी ने गरजते हुए कहा। शरारत से चमकती उसकी नीली आँखों ने उसे गौर से देखा। ‘तुम्हारे हाथ को क्या हुआ? क्या किसी ने तुम्हें अगवा करने की कोशिश की? ये तुम्हारी गलती है। तुम्हें इतना खूबसूरत नहीं होना चाहिए था!’
पेरी मुस्कुराई, हालाँकि उस मज़ाक से उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसे उम्मीद थी कि न तो वह और न ही कोई और उसकी पोशाक की हालत पर टिप्पणी करेगा: जो किनारे से फटी हुई थी और उस पर फ्रैपुचिनो के छींटे पड़े थे। शुक्र है, खून के धब्बे असमान भूरे धब्बों के रूप में छिपे हुए थे। उसने कहा, 'यहाँ आते समय हमारा एक छोटा सा हादसा हो गया।'
अदनान की भौंहें चिंता से सिकुड़ गईं। 'क्या यह कोई दुर्घटना थी?'
‘कुछ खास नहीं, यकीन मानिए,’ पेरी ने अपने पति की कोहनी छूते हुए कहा – यह इशारा था कि आगे कुछ न पूछा जाए। फिर वह सौहार्दपूर्ण ढंग से उस व्यवसायी की ओर मुड़ी और बोली, ‘आपका घर कितना खूबसूरत है!’
“धन्यवाद, मेरी प्यारी। दुर्भाग्य से, हमारे पास यह संदेह करने के पर्याप्त कारण हैं कि हम पर बुरी नज़र लगी है। एक के बाद एक विपत्तियाँ आती जा रही हैं। पहले, हमारे पाइप फट गए। निचला तल हमारे टखनों तक पानी से भर गया। फिर बिजली गिरी, एक पेड़ हमारी छत पर गिर गया, कल्पना कीजिए? ये सब पिछले कुछ महीनों में हुआ है।”
‘तुम्हें एक नज़र बोनकुगु खाना चाहिए,’* अदनान ने सुझाव दिया।
‘अच्छा, हमारे पास इससे भी बेहतर कुछ है। आज रात हमने एक ज्योतिषी को आमंत्रित किया है!’

‘अरे, सच में?’ पेरी ने पूछा, इसलिए नहीं कि उसे इस विषय में दिलचस्पी थी, बल्कि इसलिए कि वह जानती थी कि उससे कुछ कहने की उम्मीद की जा रही है। उसे लग रहा था कि हाल ही में माध्यमों और ज्योतिषियों में लोगों की दिलचस्पी बहुत बढ़ गई है। शायद यह कोई संयोग नहीं था कि जिस देश में अस्थिरता आम बात थी, वहाँ भविष्यवाणियों और पूर्वानुमानों का इतना क्रेज था – जो ज्यादातर महिलाओं द्वारा व्यक्त किए जाते थे, हालांकि यह दोनों लिंगों के लिए प्रासंगिक था। लगातार राजनीतिक अस्पष्टता और पारदर्शिता की कमी के बीच, चाहे नकली हों या असली, भविष्य बताने वाले लोग अनिश्चितता को कुछ हद तक निश्चितता में बदलकर एक सामाजिक भूमिका निभा रहे थे।
‘सब कहते हैं कि वो कमाल का है,’ व्यापारी ने कहा। ‘ये आदमी सिर्फ जिन्नों से बात ही नहीं करता, बल्कि उन्हें हुक्म भी देता है। लगता है, वो जो भी करने को कहता है, वो मान लेते हैं। उसके पास जिन्न पत्नियां हैं – पूरा हरम!’ आखिरी शब्द पर उसने नाक सिकोड़ी, लेकिन पेरी को चुप देखकर उसने अपनी निगाहें उस पर टिका दीं। ‘क्या हुआ? तुम तो खुद किसी भूत-प्रेत को देखकर हैरान लग रही हो।’
पेरी सहज ही पीछे हट गई। कई बार उसे यह हैरानी होती थी कि क्या लोग उसके चेहरे के भाव पढ़कर जान जाते हैं कि उसे ऐसी दृष्टियाँ आती हैं जो वे देख नहीं सकते। सौभाग्य से, उस व्यवसायी को अपनी आवाज़ के अलावा किसी और की बात सुनने की कोई इच्छा नहीं थी। 'मैं ऐसे दलालों को जानता हूँ जो शेयर खरीदने से पहले इस आदमी से सलाह लेते हैं। अजीब है ना? भविष्यवक्ता और शेयर बाजार।' वह हँसा। 'मेरी पत्नी का विचार है। उसे दोष मत दो। बेचारी, मंदी के बाद उसका मानसिक संतुलन थोड़ा बिगड़ गया था।'
यह खबर हर जगह छाई हुई थी। लगभग छह महीने पहले, सिएरा लियोन के झंडे तले चल रहा 335 फीट लंबा एक मालवाहक जहाज तट से टकराकर सीधे समुद्र तट पर स्थित एक आवास में जा घुसा था। इसने समुद्री दीवार और दक्षिण की ओर मुख वाली भव्य बालकनी को नष्ट कर दिया था, जो ओटोमन साम्राज्य की पिछली शताब्दी की थी। इसी बालकनी में कैसर विल्हेम द्वितीय ने एक ऐसे पाशा के साथ चाय पी थी जो अपनी महत्वाकांक्षाओं और जर्मन संस्कृति एवं सैन्य शक्ति के प्रति अपने सम्मान के लिए प्रसिद्ध थे। उसी पाशा ने बाद में यह अफवाह फैलाई कि कैसर मुसलमान थे, और जन्म के समय, यहाँ तक कि माँ की गोद में आने से पहले ही, उनके कान में कुरान की पहली पंक्तियाँ फुसफुसाई गई थीं: उनका असली नाम हाजी

विल्हेम था, जो जीवन भर इस्लाम के मित्र और कट्टर संरक्षक रहे – यह नाम उस समय बहुत काम आया जब ओटोमन साम्राज्य ने जर्मनी के पक्ष में युद्ध में प्रवेश किया।
इसी ऐतिहासिक बालकनी पर एक युवा तुर्की उत्तराधिकारी, जो बोल्शेविक क्रांति के बाद इस्तांबुल भाग आई एक श्वेत रूसी नर्तकी के प्यार में पागल था – अपने परिवार को अपनी प्रेमिका को स्वीकार करने के लिए राजी करने में असफल रहने के बाद – ने अपने सिर पर पिस्तौल रखकर खुद को गोली मार ली थी। गोली उसके मस्तिष्क से गुजरते हुए खोपड़ी को चकनाचूर कर गई और उसके बाएं कान के पीछे से निकलकर पीछे की दीवार में जा लगी, जहां वह तीन दशकों तक किसी को नहीं मिली।
अपने तूफानी इतिहास में इस हवेली ने नायकों को उठते और गिरते देखा है, साम्राज्यों को उठते और ढहते देखा है, नक्शों को फैलते और सिकुड़ते देखा है, सपनों को धूल में बदलते देखा है। लेकिन इससे पहले कभी किसी जहाज ने इसे टक्कर नहीं मारी थी। जहाज का अगला हिस्सा दीवार को चीरता हुआ निकल गया, फाहरेलनिस्सा ज़ीद की एक पेंटिंग को चकनाचूर कर दिया और चमत्कारिक रूप से मुरानो झूमर से कुछ ही दूरी पर रुक गया। अब, उस दिन की याद में, उसी झूमर से एक छोटा सा खिलौना जहाज लटका हुआ है, जो मेजबानों को बार-बार उस कहानी को दोहराने का मौका देता है।
‘अरे, तुम यहाँ हो! हमने सोचा था कि तुम कभी नहीं आओगे,’ उनके पीछे से एक आवाज आई।
वह उस व्यापारी की पत्नी थी। उसने पेरी को रसोई से निकलते हुए देखा था, जब वह रसोइए को आदेशों की बौछार करने के बाद बाहर निकली थी। उसने पन्ना-हरे रंग की डिज़ाइनर कॉकटेल ड्रेस पहनी हुई थी, जिसका कॉलर ऊंचा था और पीठ खुली हुई थी, कमर पर कसी हुई थी। उसकी उंगली में उसी रंग की एक अंगूठी चमक रही थी, जिसका पत्थर अबाबील के अंडे जितना बड़ा था। उसके होंठ चटख लाल रंग से रंगे हुए थे और उसके बाल इतने कसकर जूड़े में बंधे थे कि पेरी को वह जूड़ा बकरी की खाल की याद दिला रहा था।
दारबुका.*
‘ट्रैफिक…’ पेरी ने अपनी मेजबान के दोनों गालों पर चुंबन लेते हुए कहा। यही एक बहाना था जिससे चाहे कितनी भी देर हो जाए, माफ़ी मिल जाती थी। एक बार ये शब्द बोल दिया जाए तो बाकी कोई भी स्पष्टीकरण बेकार हो जाता था।

पेरी ने अपने मेज़बानों के चेहरों को देखा और राहत की सांस ली कि ये बहाना कारगर साबित हुआ। वे आश्वस्त लग रहे थे, हालांकि उसका पति स्पष्ट रूप से आश्वस्त नहीं था – लेकिन उससे निपटना बाद में पड़ेगा।
'चिंता मत करो, प्यारी; हम सब जानते हैं कि यह कैसा लगता है,' मेजबान ने पेरी की पोशाक को ध्यान से देखते हुए कहा, और उस पर लगे हर फटे और दाग को गौर से देखा।
पेरी ने कहा, 'मेरे पास कपड़े बदलने का समय नहीं था।' यह सच था कि वह सबकी निगाहों के सामने खुद को बेबस महसूस कर रही थी, लेकिन डिजाइनर बैग और महंगी पोशाकों से भरी उस पार्टी में सबको थोड़ा सा चौंका देने से उसे एक अजीब सी संतुष्टि भी मिल रही थी।
मेजबान ने कहा, 'चिंता मत कीजिए, आप दोस्तों के बीच हैं। क्या आप मेरी कोई ड्रेस उधार लेना चाहेंगी?'
पेरी के मन में यह ख्याल आया कि आज शाम के अपने अब तक के प्रदर्शन को देखते हुए, शायद वह महिला की पोशाक पर टमाटर की चटनी गिरा देगी। उसने सिर हिलाया। 'मैं ठीक हूँ; पेशकश के लिए धन्यवाद।'
‘अच्छा, तो फिर आओ और खाओ, तुम्हें बहुत भूख लगी होगी,’ महिला ने कहा।
‘मैं आपके लिए क्या पीने को लाऊं? रेड वाइन? व्हाइट वाइन?’ व्यापारी ने पूछा।
'आपकी दयालुता के लिए धन्यवाद, लेकिन मुझे पहले महिलाओं के शौचालय का उपयोग करना होगा,' पेरी ने कहा।
वह एक नौकरानी के पीछे-पीछे हवेली के अंदरूनी हिस्से में चली गई, और इस दौरान उसे लगातार महसूस हो रहा था कि उसके पति की निगाहें उसकी पीठ पर गड़ी हुई हैं।

बाथरूम के अंदर, पेरी ने दरवाजा बंद किया, टॉयलेट का ढक्कन लगाया और बैठ गई। गहरी सांस लेते हुए, उसने थकान से चूर होकर अपनी एक कनपटी को उंगलियों से सहलाया। उसके पास बाहर जाकर उन सभी लोगों का सामना करने की न तो ऊर्जा

जहाँ उन्हें पुराने दोस्त और रिश्तेदार मिलें जो उसी पानी में ऊब चुके थे और अपरिवर्तित थे।
नए आए जीव दूसरी मछलियों को बताते कि समुद्र के ऊपर बने उस विशाल महल में रहना कैसा लगता है, जहाँ वे नीले आसमान की विशालता को त्यागकर अगले भोजन की चिंता से मुक्ति पा लेते हैं। जल्द ही ये भगोड़े जीव बड़े शिकारी जीवों का शिकार बन जाते, क्योंकि एक अमीर आदमी के एक्वेरियम के आरामदायक वातावरण में पलने-बढ़ने वाली मछलियाँ खतरनाक पानी में कैसे जीवित रह सकती थीं? फिर भी, वे कैद में बिताए सालों के बदले आज़ादी का एक पल भी नहीं छोड़ना चाहती थीं।
काश उसे एक हथौड़ा मिल जाता... कभी-कभी उसका अपना दिमाग ही उसे डरा देता था।

नाश्ते की मेज

इस्तांबुल, 1990 का दशक
उमुत की कैद, अंधेरे कोनों में रोशनी करने वाली मशाल की तरह, नालबंतोग्लस परिवार की उन कमजोरियों और कमियों को उजागर कर गई जिन्हें वे खुद से और दूसरों से भी छिपा रहे थे। उन्हें देखने वाला कोई भी व्यक्ति उनके जीवन में उमुत की अनुपस्थिति से पैदा हुए खालीपन को महसूस कर सकता था, लेकिन उन्होंने उस खालीपन को अनदेखा करने का विकल्प चुना। यह महज़ एक संयोग था कि मेन्सुर ने अधिक शराब पीना शुरू कर दिया; यह भी एक संयोग था कि प्रार्थना की रातों के बाद नींद की कमी और उपवास के दिनों के बाद उचित भोजन न मिलने के कारण सेल्मा के गाल पीले पड़ गए।
पेरी के सपने दिन-ब-दिन और भी भयावह होते गए, उसकी चीखें तेज़ होती गईं। वह रात में बत्ती जलाकर सोती थी और अपने बिस्तर के पास एक अंबर का हार रखती थी, क्योंकि उसने पढ़ा था कि अंबर बुरी आत्माओं को भगाता है। लेकिन कुछ भी काम नहीं आया। सपनों में उसे स्कूल जेल जैसे दिखाई देते थे, और जेलर उसकी माँ या पिता से अजीब तरह से मिलते-जुलते थे। सपने में वह खुद को कीड़ों और मल से ढका हुआ पाती थी, उसके बाल सिर तक मुंडे हुए होते थे, उसे गिरफ्तार कर लिया जाता था और एक ऐसे अपराध के लिए जेल में डाल दिया जाता था जिसके बारे में उसे पता ही नहीं था कि उसने किया है। इन बुरे सपनों से जागने पर उसका दिल ज़ोर से धड़कता था, और उसे होश में आने में कई सेकंड लग जाते थे। मेंसुर बदल चुका था। वह व्यक्ति जो पुराने गीतों की गर्माहट और जीवंत राजनीतिक बहसों में अपने दोस्तों के साथ कुछ घूंट पीता था, अब गायब हो चुका था। अब वह अकेले पीना पसंद करता था, मानो खामोशी ही उसका वफादार साथी हो। लंबे समय तक उसका मजबूत और तंदुरुस्त शरीर, आँखों के नीचे पड़े काले घेरों को छोड़कर, किसी भी तरह की कमजोरी का संकेत नहीं दिखा रहा था, मानो फीके आसमान में काले घेरे हों।
फिर वही हुआ जिसका डर था। सुबह-सुबह मेन्सुर पसीने से तरबतर और दर्द से कराहते हुए उठते, थके-हारे से ऐसे लगते जैसे नींद में पत्थर तोड़ रहे हों। उन्हें अक्सर उलझन और मतली होती थी। अपने शरीर में उमड़ रही कंपकंपी को छिपाने की पूरी कोशिश करते हुए, वे चुपचाप खड़े रहते या फिर बेकाबू होकर

माथे पर हाथ मारकर और 'सम्मान', 'निष्ठा' और 'धर्म' जैसे बड़े-बड़े शब्दों का इस्तेमाल करके करते थे। उनकी संगति में हाकान ने जल्दी ही सब कुछ सीख लिया। उसके नए समूह का व्यंग्य और निराशावाद उसे रास आया। 'भाइयों' की मदद से उसे एक अति-राष्ट्रवादी अखबार में नौकरी मिल गई। व्याकरण और वर्तनी के मामले में वह बेशर्मी से लापरवाह था, फिर भी शब्दों का उसे अच्छा ज्ञान था और भड़काऊ भाषण देने की प्रतिभा थी। एक छद्म नाम से उसने कॉलम लिखना शुरू किया, जिनके संदेश धीरे-धीरे तीखे और गुंडागर्दी भरे होते गए। हर हफ्ते वह राष्ट्र के गद्दारों का पर्दाफाश करता था – उन सड़े हुए सेबों का, जिन्हें अगर संभाला न गया तो पूरी टोकरी सड़ सकती थी: यहूदी, अर्मेनियाई, यूनानी, कुर्द, अलेवी… एक भी ऐसा जातीय समूह नहीं था जिस पर एक तुर्क, दूसरे तुर्क के अलावा, भरोसा कर सके। राष्ट्रवाद, एक खास सूट की तरह, उसके मिजाज पर खरा उतरता था। राष्ट्रवाद उसे आश्वस्त करता था कि वह एक श्रेष्ठ राष्ट्र, एक बेहतर नस्ल में पैदा हुआ है और महान कार्य करने के लिए नियत है, न कि अपने लिए, बल्कि अपनी प्रजा के लिए। इस पहचान से युक्त होकर वह खुद को मजबूत, सिद्धांतवादी और अजेय महसूस करता था। अपने भाई के इस परिवर्तन को देखकर पेरी को समझ में आया कि विशुद्ध निस्वार्थता के भ्रम से प्रेरित किसी उद्देश्य से बढ़कर अहंकार को और कुछ नहीं बढ़ाता।
“तुम्हें क्या लगता है कि जेल में तुम्हारा सिर्फ एक ही बेटा है? इस घर में मैं भी उतना ही कैदी हूँ,” हकान ने नाश्ते के बाद एक और झगड़े के बाद अपने पिता पर चिल्लाते हुए कहा। “उमुत खुशकिस्मत है, उसे हर दिन तुम्हारी खरी- खोटी नहीं सुननी पड़ती।”
‘तुम अपने भाई को भाग्यशाली कहते हो, तुम नीच दुष्ट?’ मेन्सुर चिल्लाया, उसकी आवाज उसके हाथों से भी ज्यादा कांप रही थी।
पेरी सिर झुकाए, कंधे समेटे सुन रही थी। परिवार में होने वाले झगड़े में एक अजीब सी खामोशी छा जाती थी, मानो कोई भयानक आपदा आने वाली हो: एक गलत शब्द भी इतना भयंकर रूप ले सकता था कि सबको तबाह कर दे।
'उसे रहने दो। वह अभी जवान ही है,' सेल्मा ने अपने पति से धीरे से कहा।
'एक गैरजिम्मेदार युवक जो अपने पिता के पैसों पर जीता है,' मेंसुर ने कहा। ‘ओह, आप नहीं चाहते कि मैं आपका खाना खाऊं, है ना? ठीक है, अब से मैं नहीं खाऊंगा।’ हाकान ने खाली रोटी की टोकरी दीवार पर फेंक दी, जो रबर की गेंद की

तरह उछली और उसके टुकड़े चारों ओर बिखर गए। ‘वैसे भी, एक शराबी की रोटी कौन खाना चाहेगा?’
इससे पहले ऐसा शब्द कभी बोला ही नहीं गया था। अकल्पनीय। अपरिवर्तनीय। घर के मुखिया को शराबी कहना एक अपूरणीय घटना थी, और फिर भी ऐसा कर दिया गया। हाकान, इसके बाद छाई चुप्पी को सहन न कर पाने के कारण, गुस्से में बाहर निकल गया।
सेल्मा रोने लगी। सिसकियों के बीच, उसकी आवाज़ विलाप भरी स्वर-पुकार में ऊपर-नीचे होती रही। 'हम पर श्राप लगा है। पूरे परिवार पर! हाँ... यह एक श्राप है।'
उन्होंने कहा कि अपने बड़े बेटे की बदकिस्मती में उन्हें अल्लाह की ओर से सजा और चेतावनी दिखाई दी। उन्होंने कहा कि चूंकि उन्होंने अल्लाह के संदेश पर ध्यान नहीं दिया था, इसलिए उन्हें यकीन था कि आगे और भी कष्ट सहने पड़ेंगे।
‘मैंने इससे ज़्यादा बेवकूफी भरी बात कभी नहीं सुनी,’ मेन्सुर ने कहा। ‘भगवान नलबंतोग्लस को क्यों नष्ट करना चाहेंगे? मुझे यकीन है कि उनके पास इससे भी बेहतर काम होंगे।’
‘अल्लाह हम पर कई तरह से प्रभाव डालता है। वह हमें सिखाना चाहता है... तुम्हें सबक सिखाना चाहता है।’
और इससे क्या सबक मिलता है?
‘अपनी गलतियों को समझो,’ सेल्मा ने कहा। ‘जब तक तुम इसे नहीं समझोगे, हममें से किसी को भी शांति नहीं मिलेगी।’
मेंसुर अपनी कुर्सी पर अकड़कर बैठ गया। 'अगर तुम सचमुच मानती हो कि उमुत के साथ जो हुआ वो ईश्वर की मर्ज़ी है, और ईश्वर को अपने उपदेशों को पूरा करने के लिए जेलों और यातना देने वालों की ज़रूरत है, तो हे स्त्री, तुममें कुछ गड़बड़ है, या फिर, धिक्कार है, तुम्हारे ईश्वर में ही कुछ गड़बड़ है।' 'पश्चाताप करो, पश्चाताप करो...' सेल्मा ने धीरे से कहा।
अल्लाह के क्रोध को शांत करने के लिए, सेल्मा कई दिनों, कभी-कभी हफ्तों तक बिना कुछ खाए रहती थी; रोटी, दही, खजूर और पानी से ही संतुष्ट रहती थी। ये सब उसकी मन्नतें थीं; सर्वशक्तिमान से उसका गहरा संवाद। रातों को वह बहुत कम सोती थी, अपना सारा समय केवल दो कामों में बिताती थी जिनसे उसका मन शांत होता था: प्रार्थना और सफाई। अपने बिस्तर से ही वह हर फर्नीचर पर जमी बारीक

धूल की परत देख सकती थी; वह दीमकों को लकड़ी की अलमारियों को कुतरते हुए सुनती थी – बाकी लोग उन्हें क्यों नहीं सुन पाते थे? पिसी हुई एस्पिरिन, सफेद सिरका, नींबू का रस, बेकिंग सोडा। वह रगड़ती, धोती, ब्रश करती, पॉलिश करती और पोंछती थी। सुबह परिवार डिटर्जेंट की गंध से जाग उठता था।
सेल्मा अपने हाथ इतनी बार और इतनी ज़ोर से धोती थी कि उनसे हर समय एंटीसेप्टिक की गंध आती रहती थी। त्वचा फट गई थी और जगह-जगह से खून बह रहा था, जिससे उसे संक्रमण का डर और बढ़ गया और वह उन्हें और भी ज़ोर से धोने लगी। अपने हाथों की इस हालत को छिपाने के लिए उसने हिजाब के साथ काले दस्ताने और एक लंबा, गहरा, ढीला कोट पहनना शुरू कर दिया जो लगभग उसकी एड़ियों तक पहुँचता था। एक शाम, जब सेल्मा और पेरी बाज़ार से लौट रही थीं, पेरी ने पीछे मुड़कर देखा और एक पल के लिए वह अपनी माँ को नहीं देख पाई - वह रात के अंधेरे में इतनी घुलमिल गई थी।
अपनी पत्नी के पहनावे से शर्मिंदा होकर मेन्सुर उसके साथ दिखना नहीं चाहता था। वह अकेले ही खरीदारी करने गया; उसकी पत्नी भी। उसका पहनावा उन सभी चीजों का प्रतीक था जिनसे वह मध्य पूर्व में हमेशा घृणा करता रहा था, नफरत करता रहा था और जिनका सामना करता रहा था। धार्मिक लोगों का अज्ञान। यह धारणा कि उनके तरीके ही सबसे अच्छे हैं - केवल इसलिए कि वे इस संस्कृति में पैदा हुए थे और जो कुछ भी उन्हें सिखाया गया था, उसे बिना किसी सवाल के स्वीकार कर लिया था। वे अपने सत्यों की श्रेष्ठता के बारे में इतने आश्वस्त कैसे हो सकते हैं, जबकि वे अन्य संस्कृतियों, अन्य दर्शनों, अन्य विचार-पद्धतियों के बारे में बहुत कम, या बिल्कुल भी नहीं जानते थे? सेल्मा के लिए, मेन्सुर का व्यवहार उन सभी बातों का प्रतीक था जो उसे बेचैन कर देती थीं: उसकी आँखों में तिरस्कार, उसकी आवाज़ में दृढ़ता, और उसके चेहरे पर झुके हावभाव में झलकता हुआ धार्मिक भाव। धर्मनिरपेक्ष आधुनिकतावादियों का अहंकार। वह आडंबरपूर्ण और दिखावटी सहजता जिससे वे खुद को समाज से बाहर और ऊपर समझते थे, सदियों पुरानी परंपराओं को नीचा देखते थे। वे खुद को प्रबुद्ध कैसे कह सकते थे जब वे अपनी संस्कृति, अपने धर्म के बारे में इतना कम, या कहें तो बिल्कुल भी नहीं जानते थे?
बातचीत करने के डर से सहमे हुए पति-पत्नी एक-दूसरे को छुए बिना चुपचाप एक-दूसरे के पास से गुजर गए। उनमें प्रेम की कमी थी, जिसे उन्होंने नाराजगी से पूरा किया।

इसी बीच, पेरी को साहित्य में सुकून मिला। लघु कथाएँ, उपन्यास, कविताएँ, नाटक... स्कूल की सीमित लाइब्रेरी में जो कुछ भी मिलता, वो उसे पढ़ डालती। जब कुछ और नहीं मिलता, तो वो विश्वकोश पढ़ती। आर्डवार्क से लेकर ज़ॉम्बी तक, सब कुछ पढ़ते हुए, उसे ऐसी चीज़ों के बारे में पता चला, जिनका उसके जीवन में फिलहाल कोई उपयोग नहीं था, लेकिन उसे उम्मीद थी कि शायद भविष्य में कभी काम आ जाएँ। लेकिन भले ही उनका कभी कोई उपयोग न हो, ज्ञान की प्यास से प्रेरित होकर वो पढ़ती ही रहेगी।
किताबें उसे आज़ादी देती थीं, जीवन से भरपूर थीं। उसे अपनी मातृभूमि से ज़्यादा कहानियों की दुनिया में रहना पसंद था। सप्ताहांत में अपने कमरे से बाहर निकलने से इनकार करते हुए, सेब और सूरजमुखी के बीज चबाते हुए, वह एक के बाद एक उधार ली गई उपन्यासें खत्म करती रहती थी। उसने पाया कि बुद्धि, एक मांसपेशी की तरह, अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने के लिए बढ़ते तनाव के साथ व्यायाम की ज़रूरत होती है। स्कूल में रटने वाली पढ़ाई से असंतुष्ट होकर, उसने जानकारी संग्रहित करने के लिए अपने स्वयं के मौखिक और दृश्य तरीके विकसित किए - लैटिन में पौधों के नाम; अंग्रेजी में कविताओं की पंक्तियाँ; युद्धों, शांति संधियों और अन्य युद्धों की तारीखें, जो ओटोमन इतिहास में बहुत अधिक थे। वह साहित्य से लेकर गणित तक, भौतिक विज्ञान से लेकर रसायन विज्ञान तक, हर विषय में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए दृढ़ संकल्पित थी। वह विभिन्न विषयों की कल्पना उष्णकटिबंधीय पक्षियों के रूप में करती थी जिन्हें अगल-बगल अलग-अलग पिंजरों में रखा गया हो। क्या होगा अगर वह तार की जाली में छेद कर दे और पक्षी अगले पिंजरे में और फिर अगले में उड़ सकें? वह गणित को साहित्य के साथ, भौतिक विज्ञान को दर्शनशास्त्र के साथ देखना चाहती थी। आख़िर किसने तय किया था कि वे आपस में मिल नहीं सकते?
पेरी समझती थी कि पढ़ाई के प्रति उसका जुनून उसे अपने साथियों से अलग रखता था और उनकी ईर्ष्या और दुश्मनी का कारण बनता था। उसे इससे कोई आपत्ति नहीं थी। सभी नालबंतोग्लस की तरह, उसे भी अकेले रहना स्वाभाविक लगता था। उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि दूसरे बच्चे उसे टीचर की चहेती कहते थे; उसे इस बात से भी कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उसे लोकप्रिय लड़कियों की जन्मदिन पार्टियों में आमंत्रित नहीं किया जाता था या लोकप्रिय लड़के उसे फिल्म देखने के लिए नहीं बुलाते थे। जीवन का अर्थ ज्ञान, आदर्श या प्रेम है

- यह बात उसे समझ आती थी। लेकिन मौज-मस्ती - वह तो उसकी पसंद की चीज कभी नहीं थी।
हर बहिष्कृत व्यक्ति की तरह, उसे भी जल्द ही पता चल गया कि वह अकेली नहीं है। हर कक्षा में कुछ ऐसे लोग होते थे जो विभिन्न कारणों से बाकियों से अलग-थलग पड़ जाते थे। वे एक-दूसरे को तुरंत पहचान लेते थे। एक बहिष्कृत व्यक्ति दूसरे बहिष्कृत व्यक्ति को पहचानता था: एक कुर्द लड़का जिसका लहजे के कारण उपहास उड़ाया जाता था; दाढ़ी वाली एक लड़की; निचली कक्षा की एक और लड़की जो परीक्षा के दौरान घबराहट होने पर पेशाब पर नियंत्रण नहीं रख पाती थी; एक लड़का जिसकी माँ के बारे में अफवाह थी कि वह एक चरित्रहीन महिला है... इन सबके साथ उसकी अच्छी दोस्ती हो गई। लेकिन उसके सच्चे साथी हमेशा किताबें ही थीं। कल्पना ही उसका घर, उसकी मातृभूमि, उसका आश्रय, उसका निर्वासन थी।
इसलिए वह पढ़ती-पढ़ती रही और हर सत्र में अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करती रही। जब भी उसके आत्मविश्वास को बढ़ाने की आवश्यकता होती, वह अपने पिता के पास दौड़ पड़ती। और मेन्सुर हमेशा उसे एक ही सलाह देते: 'शिक्षा, मेरी आत्मा। शिक्षा ही हमें बचाएगी। तुम हमारे उदास परिवार का गौरव हो, लेकिन मैं चाहता हूँ कि तुम पश्चिम में शिक्षा प्राप्त करो। यूरोप में बहुत से अच्छे विद्यालय हैं, लेकिन तुम्हें ऑक्सफोर्ड जाना चाहिए! तुम अपना मस्तिष्क ज्ञान से भर लोगी और फिर वापस आ जाओगी। केवल तुम जैसे युवा ही इस थके-हारे बूढ़े देश का भाग्य बदल सकते हैं।'
अपनी जवानी में मेंसुर की मुलाकात ऑक्सफोर्ड के एक छात्र से हुई थी, जो बैकपैकर था, एक गोरे रंग का हिप्पी जिससे उन्हें तुरंत अपनापन महसूस हुआ था। वह आदमी अकेले ही साइकिल पर तुर्की की यात्रा करने की योजना बना रहा था। उसने शेखी मारी थी कि वह जेबकतरों और होटल चोरों से बचने के लिए अपने सारे पैसे मोजे में रखता है। इस भोले-भाले विदेशी के साथ कुछ हो जाने की आशंका से चिंतित मेंसुर ने उसके साथ जाने की जिद की। दोनों ने अनातोलिया प्रायद्वीप को पार किया, जिसके बाद वह गोरा ब्रिटिश व्यक्ति ईरान चला गया। उसके साथ क्या हुआ, मेंसुर को नहीं पता। लेकिन एक पश्चिमी व्यक्ति की नजरों से अपने देश को देखकर जो हैरानी हुई थी, उसे वह कभी नहीं भूल पाए। यह पहली बार था जब उन्हें एहसास हुआ कि जो उनके लिए सामान्य था, जरूरी नहीं कि वह बाहरी लोगों के लिए भी सामान्य हो। यह पहली बार था जब उन्हें एहसास हुआ

कि एक 'बाहरी दुनिया' भी है। अब वह चाहते थे कि उनकी बेटी वहीं पढ़े। यह उनकी सबसे बड़ी इच्छा थी। पेरी - और पेरी जैसे सैकड़ों युवा - एक शिक्षित, आदर्शवादी, प्रगतिशील सोच वाले स्नातक बनेंगे जो इस देश को इसके पिछड़ेपन से बाहर निकालेंगे।
पेरी यह बात समझती और स्वीकार करती थी कि कुछ बेटियाँ एक मिशन के साथ पैदा होती हैं: अपने पिता के सपनों को पूरा करना। ऐसा करके वे अपने वतन का उद्धार भी करेंगी।

अज़राएल के साथ टैंगो

इस्तांबुल, 1990 का दशक
जिस गर्मी में पेरी ग्यारह साल की हुई, उसकी माँ ने अपने एक लंबे समय से देखे सपने को पूरा करते हुए सऊदी अरब की तीर्थयात्रा की। उसका बड़ा भाई अभी भी जेल में था, दूसरा भाई न जाने किसके घर में रह रहा था, इसलिए पेरी और उसके पिता को घर की ज़िम्मेदारी सौंपी गई। उन्होंने अपना खाना खुद बनाया (दोपहर के खाने में कोफ्ते और चिप्स, रात के खाने में कोफ्ते और स्पेगेटी), बर्तन धोए (सिर्फ़ पानी से धोकर) और मनपसंद टीवी कार्यक्रम देखे। यह छुट्टी पर होने जैसा था, बल्कि उससे भी बेहतर।
स्थानीय बाज़ार वाले दिन, पेरी बेचैनी महसूस करते हुए उठी। उसने अपना पेट पकड़ लिया और उसे लगा कि शायद कोफ्ते और स्पेगेटी का असर उस पर हो ही गया है। उसे अपने पिता को मेनू बदलने के लिए कहना पड़ेगा। लेकिन बाथरूम में उसका इंतज़ार एक चौंकाने वाली बात कर रही थी: उसकी अंडरवियर पर दाग। गहरे रंग के थे, फिर भी वह जानती थी कि ये खून है। उसकी माँ ने उसे पहले ही चेतावनी दी थी कि ऐसा होगा और जब ऐसा होगा, तो उसे लड़कों से और भी ज़्यादा सावधान रहना होगा। उन्हें तुम्हें छूने मत देना। अभी बहुत जल्दी थी! स्कूल में, उसने बड़ी लड़कियों को इसके बारे में शिकायत करते हुए सुना था: 'मेरी आंटी वापस आ गई हैं!' वे बेपरवाही से कहतीं। 'क्या आप मेरी पीठ देख सकते हैं?' वे जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाते हुए एक-दूसरे से पूछतीं। उसकी कक्षा में एक लड़की थी जिसने दावा किया कि उसे मासिक धर्म हुआ है, जबकि सभी जानते थे कि यह झूठ था। इस तरह पेरी अपने साथियों में पहली ऐसी लड़की बन गई जिसे मासिक धर्म हुआ। पिछले साल वह बहुत तेज़ी से बड़ी हो गई थी, चाहे उसने इसे कितना भी छिपाने की कोशिश की हो। उसे इतनी बार कहा गया था कि वह सुंदर है, इसलिए वह समझ गई थी कि लोग उसके बारे में यही सोचते हैं। लेकिन खुद के बारे में उसकी सोच बिल्कुल अलग थी। काश उसके बाल रात जैसे काले होते, हल्के भूरे की जगह; उसके नए-नए उभरते हुए कर्व्स की जगह आत्मविश्वास से भरी सपाट काया होती। वह नलबंतोग्लस परिवार के तीसरे बेटे के रूप में जन्म लेना चाहती थी। अगर वह लड़का होती तो क्या जीवन आसान नहीं होता?

उसे एक साफ पुरानी चादर मिली, उसने उसे पट्टियों में काट लिया। अगर वह इसका इस्तेमाल सोच-समझकर और समझदारी से करती, तो उसे अपनी माँ को कुछ भी बताने की ज़रूरत नहीं पड़ती। वह उन्हें धोकर, सुखाकर दोबारा इस्तेमाल कर सकती थी, जैसा कि वह जानती थी कि इस देश में कई औरतें करती हैं। इस तरह, वह लगभग चौदह साल की उम्र तक, यानी जिस उम्र को वह अपने पहले मासिक धर्म के लिए सही मानती थी, सच्चाई छिपा सकती थी। ईश्वर ने अपनी गणना में गलती की थी। वह उसे सुधारने के लिए दृढ़ संकल्पित थी।
दो सप्ताह बाद सेल्मा धूप से झुलसी हुई और दुबली-पतली होकर लौटी। वह सोफे पर बैठ गई और मक्का की अपनी यात्रा का वृत्तांत सुनाने लगी, उसके शब्द इतनी तेज़ी से बह रहे थे मानो उसके चीनी मिट्टी के घोड़े दौड़ रहे हों, मानो उनमें जान हो।
उन्होंने बताया, ‘पिछले साल पवित्र शहर में एक पैदल सुरंग के अंदर भगदड़ मचने से एक हजार से अधिक तीर्थयात्रियों की मौत हो गई थी। अब सऊदी अरब के लोग सतर्क हैं। लेकिन वे बीमारियों को रोक नहीं सकते। मैं इतनी बीमार हो गई थी कि मुझे लगा कि मैं मरने वाली हूँ। बिल्कुल वहीं!’
‘ओह, मुझे खुशी है कि आपने ऐसा नहीं किया,’ मेन्सुर ने कहा। ‘आपको वापस देखकर अच्छा लगा।’
‘अल्लाह का शुक्र है, मैं घर आ गई,’ सेल्मा ने आह भरते हुए कहा। ‘अगर मैं बच नहीं पाती, तो मुझे मदीना में पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति हो) के पास दफनाया जाता।’
‘इस्तांबुल के कब्रिस्तानों का नज़ारा ज़्यादा अच्छा है,’ मेन्सुर ने चुटकी लेते हुए कहा। ‘हमें ताज़ी समुद्री हवा मिलती है। मदीना में दफ़न होते तो खजूर के पेड़ के लिए खाद बन जाते। इस्तांबुल में, आप मास्टिक, लिंडन, मेपल के पेड़ों को खाद दे सकते हैं… चमेली भी बढ़िया रहेगी। आप साल भर खुशबू में नहाए रहेंगे।’
सेल्मा अपने पति के शब्दों से ऐसे सिमट गई मानो वे आग से निकले हुए गर्म अंगारे हों। कहीं फिर से झगड़ा न हो जाए, इस डर से पेरी बीच में बोल पड़ी, 'माँ, आपके सूटकेस में क्या है? क्या आप हमारे लिए कुछ लाई हैं?'
जवाब आया, ‘मैं तुम्हारे लिए पूरा मक्का लेकर आया हूँ!’

पेरी और मेन्सुर के चेहरे खिल उठे, मानो वे दोनों बच्चों की तरह उत्साहित हों। एक-एक करके पैकेट खोले गए: खजूर, शहद, मिसवाक, इत्र, नमाज़ की चटाई, कस्तूरी, माला, स्कार्फ और छोटी बोतलों में ज़मज़म।
‘आपको कैसे पता कि यह पवित्र जल है – क्या किसी ने इसकी प्रामाणिकता की जाँच की है?’ मेन्सुर ने बोतल हिलाते हुए पूछा। ‘ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने आपको नल का पानी ही बेच दिया हो।’
इस पर सेल्मा ने बोतल पकड़ी, उसे खोला और एक ही घूंट में पी गई। 'यह तो शुद्ध ज़मज़म है, लेकिन तुम्हारा दिमाग गंदा है!'
‘ठीक है।’ मेन्सुर ने कंधे उचका दिए।
एक डिब्बे की ओर इशारा करते हुए पेरी ने पूछा, 'यह क्या है, माँ?'
वह एक मस्जिद के आकार की कांस्य की दीवार घड़ी निकली – 20 × 18 इंच – जिसमें झूलता हुआ पेंडुलम और दोनों ओर मीनारें बनी हुई थीं। सेल्मा ने बताया कि इसे दुनिया भर के एक हजार शहरों में नमाज़ का समय दिखाने के लिए प्रोग्राम किया जा सकता है। फिर उसने उसे बैठक में किबला की दिशा में, अतातुर्क के चित्र के सामने एक कील पर टांग दिया।
'मैं अपने घर में मस्जिद नहीं बनवा रहा हूं,' मेंसुर ने कहा।
‘ओह, सच में? लेकिन मुझे तो अपने नीचे एक काफ़िर के साथ रहना पड़ता है,’ सेल्मा ने पलटवार किया।
‘खैर, अभी मेरे आधे पाप तुम्हारे हैं। अगर तुमने वह चीज़ न खरीदी होती, तो मैंने कभी ईश्वर की निंदा न की होती। इसे हटा दो!’
‘मैं ऐसा नहीं करूंगी,’ सेल्मा चिल्लाई। ‘मैंने इसे चुना, इसके लिए पैसे दिए, पवित्र भूमि से इसे यहाँ तक ढोकर लाई। मैं वहाँ बीमार पड़ गई, लगभग मर ही गई थी। मैं एक हाजी हूँ, मुझे कुछ सम्मान दिखाओ!’
पेरी ने पहली बार अपनी माँ को अपने पिता पर चिल्लाते सुना। एक ऐसी महिला से, जिसका वर्षों से मुख्य विद्रोह या तो मौन रहना या धीमी आवाज़ में तीखे शब्द बोलना रहा था, यह आवाज़ किसी धमाके जैसी लगी। दीवार पर लगी घड़ी अपनी जगह पर ही रही, हालांकि उसकी आवाज़ धीमी हो गई थी – यह समझौता दोनों पक्षों को खुश नहीं कर पाया।
दिन भर मेन्सुर गहरे गम में डूबा रहा। उसी शाम कई घंटों तक बिजली गुल रही। मेन्सुर अतातुर्क और नमाज़ की घड़ी के बीच, रसद की मेज पर हमेशा की तरह जल्दी बैठ गया; जलती हुई मोमबत्ती की रोशनी में उसका पीला चेहरा छाया हुआ

था; उसने कहा कि उसकी तबीयत ठीक नहीं है। मानो किसी अदृश्य शक्ति को प्रणाम करते हुए उसने अपना हाथ अपने हृदय पर रखा, फिर अपना सिर एक तरफ झुकाया और गिर पड़ा।
यह दिल का दौरा था।
पेरी जब तक जीवित रही, वह कभी नहीं भूल पाई कि कैसे रात पल-पल और गहरी होती जा रही थी। उसने भय से देखा कि उसके पिता एक बेजान पुतले की तरह गिर पड़े, उनका माथा मेज से टकराया; सेल्मा की चीखें सुनकर पड़ोसी आए और उन्होंने उन्हें उठाकर सोफे पर लिटाया। फिर, जब उन्हें स्ट्रेचर पर लिटाया गया, एम्बुलेंस में डाला गया, आपातकालीन विभाग में ले जाया गया और चारों ओर मशीनों की बीप के बीच ऑपरेशन थिएटर में ले जाया गया, तो उसके मन में बार-बार यही सवाल आ रहा था कि क्या यह ईश्वर की ओर से कोई दंड है। यह सवाल इतना डरावना था कि इसे ज़ुबान से कहना मुश्किल था; इसे मन में ही दबा लेना पड़ा। वह अपनी माँ से, जो उसके पास रो रही थी, पूछना चाहती थी, लेकिन सेल्मा के जवाब से डर गई। क्या यही अल्लाह का तरीका है? पहले उसने तुम्हें बिना किसी रोक-टोक के अपशब्द बोलने और मज़ाक करने की इजाज़त दी। फिर, उसने तुम्हें इसकी कीमत चुकाने पर मजबूर किया? ऐसा लग रहा था मानो वह आपके पाप करने का इंतज़ार कर रहा हो ताकि वह आपको अपने क्रोध से दंडित कर सके। क्या ईश्वर का तरीका छलावरण का था, एक सुनियोजित प्रतिशोध को छुपाने की चाल?
एक और विचार उसे लगातार परेशान कर रहा था। पेरी को अपने मन में पक्का यकीन था कि उसके पिता का दिल का दौरा, ब्रह्मांड में किसी पेचीदा कारण-कार्य संबंध के चलते, उसके मासिक धर्म के कारण ही हुआ था। उसे इतनी जल्दी और माँ की अनुपस्थिति में मासिक धर्म क्यों शुरू हो गया था? घर की ज़िम्मेदारी संभालने की कोशिश करना उसकी गलती थी। और इसलिए भी, क्योंकि अब उसे लग रहा था कि वह जितनी तेज़ी से बड़ी होगी, उसके पिता की मृत्यु उतनी ही जल्दी हो सकती है।
अस्पताल के प्रतीक्षालय में पेरी और सेल्मा पुराने सोफे पर बैठी थीं। खिड़कियों से चांदनी की किरणें अंदर आ रही थीं, लेकिन फ्लोरोसेंट लैंप की चकाचौंध में समा गईं। टीवी चल रहा था, लेकिन उसमें कोई आवाज नहीं थी। स्क्रीन पर लाल सीक्वेंस वाली पोशाक पहने एक महिला भाग्य का पहिया घुमा रही थी और 'दिवालिया' पर रुकने से निराश हो रही थी। ड्यूटी पर मौजूद

केयरटेकर, घनी मूंछों वाला एक हट्टा-कट्टा आदमी, जो कार्यक्रम देख रहा एकमात्र व्यक्ति था, खुशी से हंस रहा था।
‘मैं जाकर प्रार्थना करूंगी,’ सेल्मा ने कहा।
'क्या मुझे आपके साथ आने की इजाज़त है?'
सेल्मा अपनी बेटी को घूर रही थी, उसे इस सवाल की आधी उम्मीद थी। 'दरअसल, यह अच्छा होगा। अल्लाह बच्चों की दुआएं सुनता है।'
पेरी ने आज्ञाकारी बेटी की तरह सिर हिलाया। स्कूल में रटी-रटाई कुछ दुआओं को छोड़कर, उसने कभी नमाज़ नहीं पढ़ी थी, क्योंकि वह धर्म से जुड़े सभी मामलों में अपने पिता का साथ देना चाहती थी। मेंसुर, अपनी पत्नी के विपरीत, अपनी नमाज़ को संक्षिप्त और औपचारिक नहीं रखते थे। वे शायद ही कभी 'अल्लाह' शब्द का प्रयोग करते थे, बल्कि अधिक धर्मनिरपेक्ष लगने वाले 'तनरी' शब्द को पसंद करते थे। अब पेरी अपनी माँ के तरीके अपनाने को तैयार थी। वह अपने पिता की जान बचाने के लिए कुछ भी कर सकती थी, यहाँ तक कि उन्हें धोखा भी दे सकती थी।
शौचालय के अंदर उन्होंने स्नान किया – मुँह धोया, चेहरा, हाथ और पैर साफ किए। पानी ठंडा था, लेकिन पेरी ने कोई शिकायत नहीं की, क्योंकि वह इस रस्म को ईश्वर से संवाद की शुरुआत मान रही थी। अस्पताल के इस हिस्से में कोई प्रार्थना कक्ष नहीं था, इसलिए उन्होंने प्रतीक्षा कक्ष के एक कोने का इस्तेमाल किया – टीवी अभी भी चल रहा था, और लाल सीक्वेंस वाली पोशाक पहने महिला अभी भी जीतने के लिए दृढ़ संकल्पित थी।
प्रार्थना के लिए चटाई न होने के कारण, उन्होंने अपने कार्डिगन ज़मीन पर बिछा दिए। उसकी माँ जो भी करती, पेरी उसकी नकल करती, मानो प्रतिध्वनि हो। इस प्रकार, जैसे सेल्मा अपने हाथों को अपनी छाती पर जोड़ती, वैसे ही पेरी भी करती। सेल्मा झुकती, खड़ी होती और फिर साष्टांग प्रणाम करती, उसका माथा ज़मीन को छूता; पेरी भी ऐसा ही करती। हालाँकि, एक महत्वपूर्ण अंतर था। उसकी माँ के होंठ लगातार हिल रहे थे, जबकि पेरी के होंठ स्थिर थे। उसे लगा कि यह शायद भगवान को पसंद न आए। मौन प्रार्थना एक ऐसे लिफाफे के समान थी जिसके अंदर कुछ भी न हो। चूंकि कोई भी, यहाँ तक कि सृष्टिकर्ता भी, ऐसे लिफाफे को स्वीकार नहीं करेगा, इसलिए उसने सोचा कि उसे कुछ कहना होगा। और कुछ विचार-विमर्श के बाद, बच्ची ने ये कहा:
अल्लाह मिया,

माँ कहती हैं, आप हर समय मुझे देखते रहते हैं, जो अच्छा लगता है, धन्यवाद; लेकिन यह थोड़ा डरावना भी है क्योंकि कभी-कभी मैं अकेला रहना चाहती हूँ।
माँ कहती हैं, आप सब कुछ सुनते हैं - यहाँ तक कि जब मैं खुद से बात करती हूँ। मेरे मन के विचार भी। आप सब कुछ देखते भी हैं। क्या आप धुंध में बच्चे को देख सकते हैं? मेरे अलावा कोई उसे नहीं देखता, हालाँकि मुझे यकीन है कि आप भी देखते हैं।
खैर, मैं सोच रहा था कि हमारी आंखें छोटी होती हैं और पलक झपकाने में हमें लगभग एक सेकंड लगता है।
अब, आपकी आंखें बहुत बड़ी होंगी, इसलिए आपको अपनी पलकें बंद करने में कम से कम एक घंटा लगता होगा, और शायद उस समय में आप मेरे पिता को देख भी नहीं पाएंगे।
जब मैं किसी पर गुस्सा हो जाता हूँ, तो पिताजी मुझसे कहते हैं, 'तुम छोटे बच्चे नहीं हो, तुम माफ कर सकते हो।'
यदि आप मेरे पिता से नाराज़ हैं, तो कृपया उन्हें क्षमा कर दीजिए और उन्हें फिर से स्वस्थ कर दीजिए। वे एक अच्छे इंसान हैं। अब से, जब भी मेरे पिता कोई पाप करें, तो कृपया आप पलक झपका लीजिए?
मैं वादा करता हूँ कि मैं फिर से प्रार्थना करना शुरू करूँगा। मैं जीवन भर हर रात प्रार्थना करूँगा।
साथ
पेरी, अपने कार्डिगन पर बैठी हुई, अपनी माँ को अपना सिर दाएं और बाएं घुमाते हुए और अपने हाथों को अपने चेहरे पर मलते हुए देख रही थी, इस प्रकार प्रार्थना समाप्त हो रही थी, जिसका उसने अनुकरण किया और अपने गोपनीय पत्र को सील कर दिया।
अगली सुबह मेन्सुर तकियों के सहारे बिस्तर पर लेटा हुआ था, अपने मेहमानों को चिढ़ा रहा था, और कुछ दिनों बाद वह एक भारी-भरकम बिल और दिल में बैटरी से चलने वाले पेसमेकर के साथ अस्पताल से बाहर आया। उसे शराब छोड़ने और तनाव से दूर रहने की सलाह दी गई थी – मानो तनाव कोई अप्रिय रिश्तेदार हो जिसे आप बस खाना खाने पर बुलाना बंद कर दें। खैर, मेन्सुर ने किसी की बात नहीं मानी। मृत्यु के दूत अज़राएल के साथ टैंगो नृत्य करने के बाद, उसने दावा किया कि अब उसे किसी बात से डरने की ज़रूरत नहीं है।

□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ - □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

कविता

इस्तांबुल, 2016
समुद्र किनारे बने आलीशान घर के बाथरूम में पेरी खड़ी रही, सजे-धजे दर्पण में खुद को निहारती रही। अपनी बेटी के सामने उसने जो संयम बनाए रखा था, वह अब गायब हो चुका था, उसकी जगह बेचैनी ने ले ली थी। मछलीघर में मछलियों का अकेलापन उसे कार्टूनों के उन किरदारों की याद दिला रहा था, जो किसी सुनसान द्वीप पर फंसे हुए हैं, फिर भी भागने का कभी नहीं सोचते। क्या वह तैरकर वहां से निकल सकती थी? रोज़मर्रा की आदतें बदल गईं, व्यक्तित्व बदल गया, निष्ठाएं त्याग दी गईं, दोस्ती टूट गई, यहां तक कि लतों को भी छोड़ दिया गया, लेकिन इस जीवन में सबसे मुश्किल चीज किसी जगह से लगाव को बदलना था। दरवाजे के दूसरी तरफ से हंसी की एक लहर दौड़ गई। व्यापारी कोई चुटकुला सुना रहा था, उसकी आवाज़ शोरगुल में भी गूंज रही थी। पेरी चुटकुले का अंत नहीं समझ पाई, जो प्रतिक्रिया से स्पष्ट रूप से भद्दा और अश्लील था।
'अरे, तुम मर्द!' एक महिला की आवाज सुनाई दी, जो आधी फटकार और आधी मजाक कर रही थी।
पेरी ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। वह उन महिलाओं में से कभी नहीं थी जो सबके सामने खुलकर कह सकें, और निश्चित रूप से इतने नखरे भरे लहजे में तो बिल्कुल नहीं, 'ओह, तुम मर्दो!'
चाहे पुरुष हों या महिलाएँ, हमेशा ऐसे लोग ही उसे आकर्षित करते थे जिनका अतीत कठिन रहा हो, जिनकी आँखों में अनिश्चितता झलकती हो और जिनकी आत्मा में अनछुए घाव हों। अपना समय उदारतापूर्वक देने वाली और अटूट निष्ठा के साथ, वह इन चुनिंदा लोगों से अटूट प्रतिबद्धता और प्रेम से मित्रता करती थी। लेकिन बाकी सभी लोगों के साथ, जो लगभग बहुमत में थे, उसकी रुचि शीघ्र ही ऊब में बदल जाती थी। और जब वह ऊब जाती थी, तो वह बस भाग जाना चाहती थी - उस व्यक्ति से, उस बातचीत से, उस पल से खुद को मुक्त करना चाहती थी। उसे आभास था कि आज रात, इस भव्य भोज में ऊब ही उसका साथी होगी, और इससे निपटने के लिए उसने खुद से वादा किया कि वह कुछ छोटे-मोटे खेल खेलेगी, केवल अपनी आँखों के लिए मनोरंजन के साधन ढूंढेगी।

जल्दी से उसने अपने चेहरे पर पानी के छींटे मारे। अगर उसकी लिपस्टिक कुचली न गई होती और आईशैडो पैलेट गली में खो न गया होता, तो वह अपना मेकअप ठीक करना चाहती। अपने बालों को उंगलियों से जल्दी से संवारते हुए, उसने एक बार फिर आईने में खुद को देखा। आईने में दिख रहा चेहरा पीला और बेचैन था – मानो कोई व्याकुल आत्मा अनजाने में उसके भीतर से गुज़र गई हो। उसने दरवाज़ा खोला। उसे आश्चर्य हुआ कि उसकी बेटी बाहर इंतज़ार कर रही थी।
‘पिताजी सोच रहे थे कि तुम कहाँ हो।’
‘मुझे थोड़ा हाथ-मुँह धोना था।’ पेरी थोड़ी देर रुकी। ‘तुमने उसे क्या बताया?’
पेरी ने डेनिज़ की आँखों में स्नेह की एक झलक देखी, फिर उदासीनता छा गई। 'कुछ नहीं,' उसने कहा।
'धन्यवाद, मेरी जान। चलो वापस चलते हैं।'
'रुको, तुम यह भूल गई,' डेनिज़ ने अपने हाथ में कुछ दिखाते हुए कहा।
पेरी को ध्यान से देखने की ज़रूरत नहीं थी, वह जानती थी कि यह पोलरॉइड फोटो है। उसने उस हवा रहित गली में हर जगह इसे ढूंढा था। लेकिन डेनिज़ ने इसे पहले देखा होगा और चुपके से अपनी जेब में रख लिया होगा। अब उसकी बेटी ने पूछा, 'मैंने इसे पहले कभी क्यों नहीं देखा?'
उस तस्वीर में चार लोग थे। प्रोफेसर और उनके छात्र। खुश, आशावान, दुनिया बदलने के लिए तैयार, और कल के बारे में बेखबर। पेरी को वह दिन याद था जब तस्वीर खींची गई थी। ऑक्सफोर्ड में दशकों की सबसे भीषण सर्दी। उसे सब कुछ याद था - हड्डियां जमा देने वाली सुबहें, जमे हुए पाइप, बर्फ के ढेर, और प्यार में पड़ने का मदहोश कर देने वाला एहसास जो उसके शरीर में दौड़ रहा था। उसने पहले कभी इतना जीवंत महसूस नहीं किया था।
‘ये लोग कौन हैं, माँ?’
शांत रहते हुए—बहुत ज्यादा शांत रहते हुए— पेरी ने कहा, 'यह एक पुरानी तस्वीर है।'
‘क्या इसीलिए तुम इसे अपने पर्स में रखती हो? अपने बच्चों की तस्वीरों के बगल में?’ डेनिज़ ने अविश्वास और जिज्ञासा से भरी आवाज़ में कहा। ‘तो ये कौन हैं?’

पेरी ने एक लड़की की ओर इशारा किया। उसने मैजेंटा रंग का स्कार्फ बड़े करीने से पगड़ी की तरह बांध रखा था और उसकी भूरी आँखों में गाढ़ा काजल लगा था जो भौंहों तक फैला हुआ था। 'यह मोना है। एक मिस्र-अमेरिकी छात्रा।' एकाग्रचित्त और मौन भाव से, डेनिज़ ने उस लड़की का अवलोकन किया।
पेरी ने कहा, 'दूसरी लड़की शिरीन है।' उसकी निगाह घने काले बालों, भरपूर मेकअप और ऊँची एड़ी वाले चमड़े के बूट पहने एक आकर्षक महिला पर पड़ी। 'उसका परिवार ईरान से था, लेकिन वे इतना घूमते-घूमते रहे थे कि उसे कहीं भी अपनापन महसूस नहीं होता था।'
‘आप उनसे कैसे मिले?’
पेरी ने जवाब देने में कुछ क्षण का समय लिया। 'विश्वविद्यालय के दोस्त। हम एक ही घर में रहते थे, एक ही कॉलेज में पढ़ते थे। हमने एक ही सेमिनार में भाग लिया था, लेकिन हम सभी ने एक ही समय में नहीं।'
सेमिनार किस बारे में था?
पेरी ने हल्की सी मुस्कान बिखेरी, वह याद उसके चेहरे की हर रेखा में बसी हुई थी। 'यह... भगवान के बारे में था।'
‘वाह,’ डेनिज़ ने कहा, जो आमतौर पर उन चीज़ों पर उसकी प्रतिक्रिया होती थी जिनमें उसकी कोई दिलचस्पी नहीं होती थी। उसने बीच में खड़े लंबे आदमी की ओर उंगली से इशारा किया। उसके भूरे-सुनहरे बाल बिखरे हुए और इतने लंबे थे कि घुंघराले हो सकते थे; उसकी आँखें टोपी के नीचे से चमकती हुई प्रतीत हो रही थीं; उसकी ठुड्डी मजबूत और सुस्पष्ट थी; उसका चेहरा शांत था, हालांकि पूरी तरह से शांत नहीं था।
'कौन है ये?'
पेरी के चेहरे पर बेचैनी की एक हल्की सी झलक दिखाई दी, इतनी सूक्ष्म कि लगभग ध्यान देने योग्य नहीं। 'वह हमारे प्रोफेसर थे।'
'सच में? वह तो किसी विद्रोही छात्र जैसा दिखता है।'
‘वह एक विद्रोही प्रोफेसर थे।’
‘क्या ऐसा कुछ होता है?’ डेनिज़ ने पूछा। ‘उसका नाम क्या था?’
हमने उसे अज़ूर नाम दिया।
‘यह तो अजीब नाम है। आखिर यह जगह है कहाँ?’
‘इंग्लैंड… ऑक्सफोर्ड।’

‘क्या? तुमने मुझे कभी क्यों नहीं बताया कि तुम ऑक्सफोर्ड गए थे?’ डेनिज़ ने आखिरी शब्द को अतिरंजित लहजे में कहा।
पेरी हिचकिचाई, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसे अंदाज़ा था कि उसने यह बात अपने बच्चों समेत किसी से क्यों नहीं साझा की, लेकिन यह बताने का न तो सही समय था और न ही सही जगह। "बस थोड़ी देर के लिए," उसने धीमी आवाज़ में कहा। "मैंने बात पूरी नहीं की।"
‘तुम अंदर कैसे आए?’
उसकी आवाज़ में प्रशंसा झलक रही थी, लेकिन पेरी को उसकी बातों में ईर्ष्या और नाराज़गी का भाव भी महसूस हुआ। उसकी बेटी विश्वविद्यालय की परीक्षाओं को लेकर तनाव में थी, हालांकि परीक्षाएं अभी कई साल दूर थीं। युवाओं को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाने के उद्देश्य से बनाई गई शिक्षा प्रणाली पेरी जैसी छात्राओं के लिए तो ठीक हो सकती थी, लेकिन डेनिज़ जैसी आज़ाद ख्यालों वाली लड़कियों के लिए यह घोर पीड़ादायक थी।
आपको शायद यकीन न हो, लेकिन स्कूल में मेरे हमेशा से ही टॉप ग्रेड थे। पिताजी हमेशा से चाहते थे कि मुझे यूरोप में सबसे अच्छी शिक्षा मिले।
उन्होंने आवेदन में मेरी मदद की और मैंने सभी शर्तें पूरी कर लीं।
'दादाजी?' डेनिज़ ने पूछा, उसके मन में बसी उस लड़खड़ाते बूढ़े व्यक्ति की छवि को बदलाव के इस सशक्त सूत्रधार के साथ मिलाना उसके लिए मुश्किल हो रहा था।
पेरी मुस्कुराई। 'हां, उन्हें मुझ पर गर्व था।'
‘दादी नहीं थीं?’ डेनिज़ ने विरोधाभास भांपते हुए पूछा।
‘उन्हें चिंता थी कि मैं किसी विदेशी देश में खो जाऊंगी। यह पहली बार था जब मैं घर छोड़ रही थी। एक माँ के लिए यह आसान नहीं होता।’ पेरी ने गहरी सांस ली, अपने ही बयान पर हैरान थी, इस बात पर हैरान थी कि वह अपनी माँ की भावनाओं को समझ पा रही थी।
डेनिज़ ने इस बारे में कुछ सोचा। 'यह सब कब हुआ था?'
'लगभग 9/11 के आसपास, अगर इसका आपके लिए कोई मतलब है।'
‘मुझे पता है 9/11 क्या था,’ डेनिज़ ने कहा। एक नई समझ से उसका चेहरा खिल उठा और उसने कहा, ‘तो यह सब आपके पिताजी से मिलने से पहले हुआ था। आपने ऑक्सफ़ोर्ड की पढ़ाई छोड़ दी, इस्तांबुल लौट आईं, शादी कर ली, अपनी पढ़ाई

त्याग दी, एक के बाद एक तीन बच्चे पैदा किए और गृहिणी बन गईं। कितना अनोखा है, वाह!’
पेरी ने कहा, 'मैं कुछ नया करने की कोशिश नहीं कर रही थी।'
उस टिप्पणी को अनसुना करते हुए, डेनिज़ ने अपने निचले होंठ को चबाया। 'तुम क्यों चले गए?'
पेरी उस एक सवाल का जवाब देने के लिए तैयार नहीं थी। सच बहुत दर्दनाक था। 'मेरे लिए यह बहुत मुश्किल था: कक्षाएं, परीक्षाएं...'
बिना कुछ कहे, डेनिज़ ने अपनी माँ को तिरछी नज़र से देखा, उसकी हैरानी साफ़ झलक रही थी। पहली बार उसके मन में यह ख्याल आया कि जिस औरत ने उसे जन्म दिया था, जिस औरत को उसने अपनी पूरी ज़िंदगी हर दिन देखा था और जिससे हर ज़रूरत और इच्छा पूरी होने की उम्मीद की थी, वह उसके और उसके भाइयों के जन्म से पहले शायद कोई और ही रही हो। यह एक असहज विचार था। आज तक उसकी माँ उसके लिए एक अनजानी दुनिया थी, जहाँ डेनिज़ हर खूबसूरत घाटी, हर शांत झील और हर बर्फीले पहाड़ को जानती थी। उसे यह सोचकर डर लग रहा था कि उस महाद्वीप के कुछ हिस्से अभी भी अननक्श हों।
‘क्या मैं अब फोटो ले सकती हूँ?’ पेरी ने पूछा।
'एक सेकंड रुको।'
छत पर लगे लैंप की रोशनी से उसकी पलकें जगमगा रही थीं। डेनिज़ ने पोलरॉइड को अपने चेहरे के करीब लाया और लगभग तिरछी नज़रों से देखा, मानो उसमें कोई गुप्त कोड ढूंढने की उम्मीद कर रही हो। अचानक ही उसने तस्वीर को पलटा और पीछे की तरफ लिखा हुआ देखा, जो किसी के साफ-सुथरा लिखने की कोशिश में अटपटी लिखावट में था: शिरिन से पेरी को बहनचारे के साथ / याद रखना, माउस, 'मैं अब खुद को न तो पुरुष कह सकती हूँ, न स्त्री, न देवदूत और न ही पवित्र आत्मा।' 'माउस कौन है?' डेनिज़ ने हंसते हुए कहा।
'शिरिन मुझे इसी नाम से पुकारती थी।'
'मैं तुम्हें कभी भी इस उपनाम से नहीं पुकारूंगा!'
‘खैर, मुझे लगता है मैं बदल गई हूँ,’ पेरी ने कहा। ‘चलो, हमें चलना चाहिए।’ डेनिज़ अब भी असमंजस में थी। 'इस "अब न तो पुरुष, न स्त्री, न देवदूत..." का क्या मतलब है? यह किस तरह की बकवास है?'
‘बस एक कविता… प्रियतम, मुझे वह तस्वीर वापस दे दो।’

ड्राइंग रूम से तालियों और जयकारों की आवाज़ गूंज उठी। किसी को चिढ़ाया जा रहा था या कुछ करने की चुनौती दी जा रही थी। उत्सुकतावश, डेनिज़ ने थोड़ी देर हिचकिचाहट के बाद तस्वीर अपनी माँ को वापस दी और पार्टी में लौट गई। गलियारे में अकेली खड़ी पेरी ने पोलरॉइड को कसकर पकड़ रखा था और उससे निकलने वाली गर्माहट को महसूस करके हैरान थी, मानो वह जीवित हो। ज़रा सोचिए, यह कितना अजीब था कि पल मिट जाते हैं, दिल कठोर हो जाते हैं, शरीर बूढ़े हो जाते हैं, वादे टूट जाते हैं और यहाँ तक कि सबसे मज़बूत विश्वास भी फीके पड़ जाते हैं, लेकिन एक तस्वीर, वास्तविकता और झूठ का एक द्वि- आयामी चित्रण, अपरिवर्तित और सदा वफादार बनी रहती है।
उसने पोलरॉइड को अपने पर्स में रख लिया, तस्वीर में किसी के भी चेहरे को देखे बिना, अतीत की निगाहों से बचते हुए, उस युवा पेरी के उस फैसले से बचते हुए जो उसने अपने बारे में सोचा था। उसने अपनी कमर सीधी की, बाकी मेहमानों से मिलने के लिए तैयार, जिनमें से कई तो सचमुच अजनबी ही थे, और धीरे-धीरे पार्टी की ओर वापस चल पड़ी।

प्रतिज्ञापत्र

इस्तांबुल, 1990 का दशक
माध्यमिक विद्यालय में पेरी आस्था और संदेह के दौर से गुज़री। उसके पिता को पता नहीं था कि वह ईश्वर से ली गई शपथ के प्रति वफ़ादार रही थी। हर रात सोने से पहले, सोच-समझकर चुने हुए शब्दों में, अत्यंत भाव से, वह प्रार्थना करती थी। उसने बहुत कोशिश की। उसे उम्मीद थी कि अगर वह प्रेम की वेदी पर अपने अविश्वास का बलिदान कर दे और इस्तांबुल के आसमान के नीचे प्रचार करने वाले उन सभी धर्म प्रचारकों की तरह पवित्र हो जाए, तो अल्लाह उसके परिवार से अधिक प्रसन्न होगा और उसके पिता के प्रति कम कठोर होगा। यह एक तर्कहीन प्रतिज्ञा थी, बेशक, लेकिन क्या सर्वशक्तिमान के साथ की गई हर प्रतिज्ञा ऐसी ही नहीं होती?
प्रार्थना में समस्या यह थी कि वह शुद्ध और एकरस होनी चाहिए। शुरू से अंत तक एक ही आवाज़। लेकिन जब वह ईश्वर से बात करती, तो उसका मन अनेकों वक्ताओं में बँट जाता, कुछ सुनते, कुछ व्यंग्य करते, और कुछ आपत्ति जताते। इससे भी बुरा यह था कि अवांछित छवियाँ उसके मन में उमड़ पड़तीं - मृत्यु, अंधकार, हिंसा, नरसंहार, और विशेष रूप से यौन संबंध। वह आँखें बंद करती, खोलती, अपनी कल्पना में तड़पते नग्न शरीरों को मिटाने के लिए संघर्ष करती। अपने मस्तिष्क पर नियंत्रण न कर पाने से दुखी और इस चिंता में कि ये विचार उसकी प्रार्थना को दूषित कर रहे हैं, वह बार-बार प्रार्थना शुरू करती, ताकि अशुद्ध विचार फिर से हावी होने से पहले वह प्रार्थना पूरी कर ले। प्रार्थना की तैयारी करना ऐसा था जैसे ईश्वर के आने से पहले अपने मन के घर में सारा कबाड़ और अव्यवस्था ठूंस देना। हालाँकि वह सबसे अच्छी दिखना चाहती थी, फिर भी वह इस बात से पूरी तरह सचेत थी कि उसने ईश्वर की दृष्टि से क्या छिपा रखा है।
उसने सोचा कि अगर वह घर पर अकेले प्रार्थना करने के बजाय सामूहिक प्रार्थना करे, तो शायद उसके मन में उठ रही आवाज़ें शांत हो जाएँगी। कुछ हमख्याल दोस्तों के साथ, उसे स्थानीय मस्जिदों में जाने की आदत पड़ गई। उसे ऊँची, मेहराबदार खिड़कियों से आने वाली भरपूर रोशनी, झूमर, सुलेख और

सिनान की वास्तुकला बेहद पसंद थी। हालाँकि, उसे इस बात से परेशानी होती थी कि महिलाओं के लिए अलग-थलग, छोटे और एकांत स्थान पर बने हुए थे, या फिर ऊपर पर्दों के पीछे।
एक मोहल्ले में एक अधेड़ उम्र का आदमी उनके पीछे-पीछे मस्जिद में घुस गया और फिर आंगन में चला गया।
'लड़कियों को घर पर प्रार्थना करनी चाहिए,' उसने कहा, उसकी निगाहें उनके स्तनों की आकृति पर घूम रही थीं।
पेरी ने कहा, 'यह अल्लाह का घर है, यह सबके लिए है।'
वह उसकी ओर एक कदम बढ़ा, अपनी छाती फुलाते हुए। उसका शरीर एक याद दिला रहा था, एक चेतावनी दे रहा था, एक सीमा का प्रतीक था। 'यह मस्जिद काफी बड़ी नहीं है। पुरुषों को भी फुटपाथ पर उतरना पड़ता है। यहां स्कूली लड़कियों के लिए कोई जगह नहीं है।'
‘तो क्या मस्जिदें सिर्फ पुरुषों की होती हैं?’ पेरी ने कहा।
वह हँस पड़ा, मानो उसे आश्चर्य हो रहा हो कि वह इसे किसी और तरह से कैसे सोच सकती थी। पेरी निराश थी कि इमाम, जिसने बातचीत को अनजाने में सुन लिया था, ने उनके बचाव में कुछ नहीं कहा।
एक बार उस्कुदार में, ऊपर महिलाओं के भाग में, उन्होंने पर्दे खोल दिए ताकि नमाज़ पढ़ते समय वे मस्जिद की सुंदरता देख सकें। तुरंत ही, सिर से पैर तक काले कपड़े पहने एक बुजुर्ग महिला ने गुस्से में बड़बड़ाते हुए पर्दे वापस खींच लिए। ऐसा नहीं था कि केवल पुरुष ही महिलाओं को नज़र से दूर रखना चाहते थे। कुछ महिलाएं भी यही सोचती थीं।
हाँ, उसने कोशिश तो की थी। लेकिन उसके और उसके गुलाबी पहचान पत्र पर छपे धर्म के रीति-रिवाजों के बीच हमेशा एक दूरी बनी रही। आखिर पहचान पत्रों पर धर्म का बॉक्स रखने का विचार किसका था? नवजात शिशु मुसलमान है, ईसाई है या यहूदी, यह कौन तय करता है? निश्चित रूप से शिशु तो नहीं।
अगर पेरी को धर्म वाले बॉक्स में खुद लिखने की इजाज़त होती, तो शायद वह 'अनिर्धारित' लिखती। यह ज़्यादा सच होता। अगर उसकी माँ को स्वर्ग और पिता को नरक में जाना था, तो उसका ठिकाना कहीं बीच में स्थित यातनास्थल होना चाहिए था।
वह धार्मिक लोगों से इन मुद्दों पर बात करने से बचती थी, क्योंकि जैसे ही वे उसे संदेह और आस्था के बीच डगमगाते देखते, वे उसे अपने पक्ष में करने की

कोशिश करने लगते। जिन कुछ नास्तिकों से वह मिली थी, वे भी कुछ ऐसे ही थे। चाहे ईश्वर के नाम पर हो या विज्ञान के नाम पर, किसी को अपने पक्ष में परिवर्तित करने से बढ़कर अहंकार को कोई और संतुष्टि नहीं मिलती थी। लेकिन पेरी को धर्म परिवर्तन की कोई इच्छा नहीं थी। क्या ये लोग नहीं समझते थे कि वह उनके विश्वासों के बारे में कोई निर्णय नहीं लेना चाहती थी? वह बस आगे बढ़ना चाहती थी। अगर वह किसी एक पक्ष का साथ देती, तो उसे डर था कि वह किसी और में बदल जाएगी और उसका अंत हो जाएगा।
उसने अपनी 'ईश्वर-डायरी' में लिखा: मैं हमेशा असमंजस में रहती हूँ। शायद मैं एक साथ बहुत सी चीजें चाहती हूँ, लेकिन किसी भी चीज के लिए मेरे मन में उतनी शिद्दत नहीं है।

जिस दिन पेरी ने अपनी कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करके स्कूल से स्नातक की उपाधि प्राप्त की, उस दिन उसने और उसके पिता ने साथ मिलकर नाश्ता बनाया। टमाटर काटते, अजमोद बारीक काटते, अंडे फेंटते हुए, उन्होंने इतना तीखा मेनेमेन बनाया कि हर निवाला उनकी जीभ जला देता। वे कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रहे थे, उनके काम में तालमेल था, सहजता थी। पेरी अपने पिता को प्याज काटते हुए देख रही थी और उसने राहत की सांस ली कि उनके हाथों का कंपन कुछ कम हो गया था। लेकिन उन्हें बहुत पसीना आ रहा था, उनके माथे पर पसीने की एक पतली परत जमी हुई थी। वह जानती थी कि अगर वे रसोई में अकेले होते तो अब तक अपने लिए एक गिलास पानी भर चुके होते।
इसके बाद, मेनसुर अपनी बेटी को एक शैक्षिक एजेंसी ले गए जो तुर्की के छात्रों को विदेशों में स्कूलों में आवेदन करने में मदद करती थी। पिछले कुछ महीनों में वे कई बार उस घुटन भरे, कम रोशनी वाले कार्यालय में जा चुके थे, जहाँ वे आशा से भरे किशोरों के साथ कतार में खड़े होते थे और पश्चिमी विश्वविद्यालयों के ब्रोशरों में चमकते चेहरों से अपनी नज़रें नहीं हटा पाते थे। उन चमकदार पन्नों से छात्रों की एक अद्भुत विविधता उभरती थी - मानो एक संयुक्त राष्ट्र हो - और सभी छात्र एक साथ खुश दिखते थे।

रास्ते में, वे एक ऐसे ओटोमन मस्जिद के पास ट्रैफिक सिग्नल पर रुके जो समुद्र पर बने होने के लिए प्रसिद्ध थी। गुंबद के चारों ओर सीगल पक्षी मोतियों की माला की तरह बैठे हुए थे।
‘बाबा, आप कभी धार्मिक क्यों नहीं थे?’ पेरी ने मस्जिद की ओर देखते हुए पूछा।
‘मैंने बहुत सारे फर्जी उपदेश सुने हैं, बहुत सारे नकली गुरुओं को देखा है।’
‘भगवान के बारे में क्या? मेरा मतलब है, क्या आप अब भी मानते हैं कि वह मौजूद है?’
‘हाँ, बिल्कुल,’ मेन्सुर ने कुछ बेमन से कहा। ‘लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि मैं समझता हूँ कि वह क्या कर रहा है।’
एक पर्यटक जोड़ा – देखने में यूरोपीय लग रहे थे – मस्जिद के प्रांगण में तस्वीरें ले रहे थे। महिला ने प्रवेश द्वार पर रखे लंबे स्कार्फ में से एक से अपना सिर ढका हुआ था। किसी राहगीर ने शायद उसे चेतावनी दी होगी कि उसकी पोशाक बहुत छोटी है; उसने घुटनों के ऊपर के पैरों को ढकने के लिए कमर के चारों ओर एक और स्कार्फ बांध लिया था। इसके विपरीत, पुरुष ने सैंडल और बरमूडा शॉर्ट्स पहने हुए थे, जिसे देखकर किसी को कोई आपत्ति नहीं हुई। दंपति की ओर इशारा करते हुए मेन्सुर ने टिप्पणी की, 'अगर मैं एक महिला होती, तो मैं धर्म की दोगुनी आलोचना करती।'
‘क्यों?’ पेरी ने पूछा, हालांकि उसे जवाब का अंदाजा था।
क्योंकि ईश्वर एक पुरुष है... उन सभी धर्मपरायण लोगों ने हमें ऐसा विश्वास दिलाया है।
उनके बगल में एक कार आकर रुकी, जिसमें सैंटाना का एक गाना पूरी आवाज़ में बज रहा था।
‘देखो, मेरी आत्मा,’ मेन्सुर ने आगे कहा। ‘मुझे बेकताशी, मौलवी या मेलामी सूफी परंपराएं बहुत पसंद हैं, जिनमें मानवतावाद और हास्य का भाव है। रिंद हर तरह के पूर्वाग्रह और असहिष्णुता से मुक्त थे – आज कितने लोग उन्हें याद करते हैं? वह प्राचीन दर्शन इस देश से लुप्त हो गया है। सिर्फ यहीं नहीं। पूरे मुस्लिम जगत में। दबा दिया गया, खामोश कर दिया गया, मिटा दिया गया। किसलिए? धर्म के नाम पर वे ईश्वर की हत्या कर रहे हैं। अनुशासन और सत्ता के नाम पर वे प्रेम को भूल जाते हैं।’

लाइट हरी हो गई। कुछ सेकंड पहले ही – बाद में नहीं – उनके पीछे वाली कारों ने हॉर्न बजाना शुरू कर दिया था। मेन्सुर ने एक्सीलरेटर पर पैर दबाया और मन ही मन बुदबुदाया: 'ये बेवकूफ अपनी मां के गर्भ में कैसे इंतजार करते रहे!'
‘बाबा, क्या धर्म आपको सुरक्षा की भावना नहीं देता – जैसे कोई सुरक्षात्मक दस्ताना?’
शायद, लेकिन मुझे अतिरिक्त त्वचा नहीं चाहिए। मैं आग को छूता हूँ, मैं जल जाता हूँ; मैं बर्फ को पकड़ता हूँ, मुझे ठंड लगती है। दुनिया जैसी है वैसी ही है। हम सब मरेंगे। भीड़ में सुरक्षा का क्या मतलब? हम अकेले पैदा होते हैं, अकेले ही मरते हैं।
पेरी आगे झुकी, कुछ कहने ही वाली थी कि उसके पिता की आवाज़ जारी रही। 'जब तुम छोटी थी, तुमने मुझसे पूछा था कि क्या मुझे नरक से डर लगता है।'
और तुमने मुझसे कहा था कि तुम सुरंग खोदकर इससे बाहर निकल जाओगे।
मेंसुर के चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान खिल उठी। 'तुम्हें पता है कि मुझे स्वर्ग में जाने की इतनी इच्छा क्यों नहीं है?'
'मुझे बताओ।'
मैं उन लोगों को देखता हूँ जो वहाँ जाते हैं, जो प्रार्थना करते हैं, उपवास रखते हैं और वो सब कुछ करते हुए दिखते हैं जो उन्हें करना चाहिए। उनमें से कितने ढोंग से भरे हैं! मैं खुद से कहता हूँ, अगर ये लोग स्वर्ग जा रहे हैं, तो क्या मैं सचमुच वहाँ जाना चाहता हूँ? मैं तो अपनी ही नरक में शांति से जलना पसंद करूँगा। वह नरक गर्म तो है, लेकिन कम से कम वहाँ पाखंड तो नहीं है।
‘ओह बाबा, मुझे उम्मीद है कि आप दूसरों के सामने इस तरह से बात नहीं करेंगे। आप खुद को मुसीबत में डाल लेंगे।’
‘चिंता मत करो, मेरी ज़बान तभी खुलती है जब मैं तुम्हारे पास होता हूँ। या फिर कुछ ड्रिंक्स पीने के बाद। वो कट्टरपंथी लोग मेरे साथ कभी भी राक़ी (एक तरह का पेय) की मेज़ पर नहीं बैठेंगे। मैं सुरक्षित हूँ।’ वह हँस पड़ा। कुछ देर में वे विजय मेहराबों और घंटाघर वाले डोलमाबाहचे महल पहुँच गए। मेनसुर ने पूछा, 'क्या आप काली मछली की कहानी जानते हैं?'
उन्होंने बताया कि यहीं से कुछ ही दूरी पर एक तूफानी रात को सुल्तान मुराद चतुर्थ महान कवि नेफी की व्यंग्य कविताओं का संग्रह 'दुर्भाग्य के तीर'

पढ़ने बैठे थे। उन्होंने अभी पढ़ना शुरू ही किया था कि महल के बगीचों में लगे एक शाहबलूत के पेड़ पर बिजली गिरी - यह निश्चित रूप से एक अपशगुन था। अत्यंत व्याकुल होकर सुल्तान ने न केवल पुस्तक को समुद्र में फेंक दिया, बल्कि एक पत्र पर हस्ताक्षर भी कर दिए जिसमें नेफी के शत्रुओं को उन्हें किसी भी प्रकार से दंडित करने की अनुमति दी गई थी। कुछ दिनों बाद, कवि को फंदे से गला घोंटकर उसी जल में डुबो दिया गया जिसमें उनकी कविताएँ एक-एक करके बिखर गई थीं।
‘देखो, अज्ञानता और सत्ता कितना घातक मिश्रण है। दुनिया ने धार्मिक लोगों के हाथों में मुझसे कहीं अधिक कष्ट झेला है – चाहे आप मेरे जैसे लोगों को जो भी अजीब नाम दें!’
पेरी खिड़की से बाहर दोपहर की धूप में चमकती चांदी जैसी लहरों को देख रही थी, इस उम्मीद में कि शायद उसे सतह पर एक-दो मछलियाँ दिख जाएँ। कवि के भाग्य के बारे में जानने के बाद, वह जानती थी कि वह इस कहानी को कभी नहीं भूलेगी। वह दूसरों के दुखों को अपने ही दुखों की तरह अपने गले में लटका लेती थी, ठीक वैसे ही जैसे बचपन में चीड़ की पत्तियों से बने हार। वे उसकी त्वचा में चुभते और दर्द देते, लेकिन वह उन्हें तब तक नहीं उतारती जब तक वे सूखकर धूल के समान बारीक कणों में न बदल जाएँ।
मेंसुर ने उसकी निगाहों का पीछा किया। 'इसीलिए बोस्फोरस के इस हिस्से में मछलियाँ काली हैं। उन्होंने बहुत ज़्यादा स्याही पी ली है। बेचारी, वे अब भी कविताओं के शब्दों और कवियों के शरीर की तलाश में हैं... ज़रा सोचिए, बात तो एक ही है।'
पेरी को अपने पिता की कहानियाँ बहुत पसंद थीं। वह बचपन से ही उन्हें सुनती आ रही थी। फिर भी, उनमें समाई उदासी उसकी आत्मा को भेदती थी, मानो त्वचा के नीचे कोई कांटा चुभ गया हो जो उसका अभिन्न अंग बन गया हो। कभी-कभी उसे लगता था कि उसके पूरे शरीर में, और उसके मन की गहराइयों में भी, कांटे चुभे हुए हैं।
'मैं इन सब बातों के बारे में बात क्यों कर रहा हूँ?' मेन्सुर ने नए जोश के साथ कहा। 'क्या आप ऑक्सफोर्ड को लेकर उत्साहित नहीं हैं?'
उन्होंने यूरोप, अमेरिका और कनाडा के कई विश्वविद्यालयों में आवेदन किया था। ऐसे स्थान जिनके नाम इतने अजीब थे कि उन्हें बोलना किसी के लिए भी संभव

नहीं था। लेकिन मेन्सुर लगातार ऑक्सफोर्ड के बारे में ही बात करता रहता था।
'यह निश्चित नहीं है कि मैं जा रहा हूँ।'
‘ओह, आप हैं,’ मेन्सुर ने कहा। ‘आपकी अंग्रेजी सबसे अच्छी है। आपने इसे सही करने के लिए कड़ी मेहनत की है। आपने परीक्षा पास कर ली, साक्षात्कार दे दिया और अब आपको नौकरी का प्रस्ताव मिल गया है।’
‘बाबा, हम इसका खर्च कैसे उठाएँगे…’ पेरी ने कहा। उसकी आवाज़ धीमी पड़ गई। 'चिंता करना बंद करो, मैंने इसका ख्याल रख लिया है।'
वह उनकी कार के साथ-साथ उनकी इकलौती संपत्ति भी बेच रहा था – एजियन सागर से कुछ ही दूरी पर स्थित एक खेत, जहाँ उसने भविष्य में जैतून के पेड़ लगाने की योजना बनाई थी। पेरी के मन पर यह बात बहुत भारी पड़ रही थी कि उसके पिता उसके लिए अपने सपने छोड़ रहे हैं। फिर भी, जब उनकी नज़रें मिलीं और दोनों में समझदारी झलक रही थी, तो वह मुस्कुराई। हालाँकि उसने इस बारे में बात न करने की कोशिश की, लेकिन सच्चाई यह थी कि वह इंग्लैंड जाने के लिए बेताब थी।
‘बाबा, क्या आपको यकीन है कि माँ को इससे कोई आपत्ति नहीं होगी? मेरा मतलब है, क्या आपने उनसे बात की है?’
‘अभी नहीं,’ मेन्सुर ने कहा। ‘मैं कभी न कभी जरूर करूँगा। भला वो अपनी बेटी को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालय में जाते हुए क्यों नहीं देखना चाहेगी? वो तो बेहद खुश होगी!’
पेरी ने सिर हिलाया, हालाँकि वह जानती थी कि वह झूठ बोल रहा है। उनमें से कोई भी सेल्मा को उसकी बेटी के जाने के बारे में नहीं बताएगा, आखिरी समय तक तो बिल्कुल नहीं।

पिछले खाना

इस्तांबुल, 2016
विशाल भोजन कक्ष में प्रवेश करते ही पेरी ने देखा कि सभी लोग मेज पर बैठे अलग-अलग बातचीत में मशगूल थे। अदनान एक पारिवारिक मित्र, एक वैश्विक निवेश बैंक के सीईओ से बातचीत कर रहा था। उनके चेहरों के भावों से लग रहा था कि वे या तो राजनीति या फुटबॉल के बारे में बात कर रहे थे - ये दो ऐसे विषय हैं जिनमें पुरुष दूसरों की उपस्थिति में खुलकर अपनी भावनाएं व्यक्त करते हैं। मेज के दोनों सिरों पर मेजबानों में से एक बैठा था। अपने आस-पास के लोगों को वह व्यवसायी छुट्टियों का एक किस्सा बड़े आत्मविश्वास से सुना रहा था, मानो उसे सुनने की आदत हो, जबकि उसकी पत्नी दूर से उदासीनता से देख रही थी। पेरी ने एक कदम आगे बढ़ाया, यह जानते हुए कि पल भर में सबकी निगाहें उसकी ओर मुड़ जाएंगी। एक पल के लिए उसने सोचा कि वह दबे पांव बगल से खिसक कर ओक के दरवाजे तक पहुंच जाए, जहां से वह भाग सकती थी।
‘डार्लिंग, तुम वहाँ क्यों खड़ी हो?’ व्यापारी की पत्नी ने उसे देख लिया था। ‘आओ और हमारे साथ बैठो।’
पेरी ने अपने लिए आरक्षित खाली कुर्सी पर बैठते हुए जबरदस्ती मुस्कुरा दी। जब वह बाथरूम में थी, तब तक लगभग सभी मेहमानों को उस दुर्घटना के बारे में पता चल चुका था। अब हर कोई सहानुभूति और जिज्ञासा से उसकी ओर देख रहा था, सब कहानी सुनने के लिए उत्सुक थे।
‘क्या आप ठीक हैं?’ एक पीआर एजेंसी चलाने वाली महिला ने पूछा। उसके बाल एक बड़े से चमकीले पिन से बंधे हुए थे, जिसे देखकर पेरी को कबाब की सींक की याद आ गई। इससे महिला का चेहरा खतरनाक सा लग रहा था। ‘हमें आपकी चिंता हो रही थी।’
‘जी हां, तुम्हें क्या हुआ, प्रिय?’ सीईओ ने पूछा।
पेरी की निगाहें अदनान की ओर मुड़ीं, और उसने अपने पति की आमतौर पर स्नेहपूर्ण निगाहों में थोड़ी चिंता देखी। उसके सामने एक खाली सूप का कटोरा और पानी का गिलास रखा था। वह शराब नहीं पीता था - स्वास्थ्य और धार्मिक दोनों कारणों से। अदनान एक सच्चा आस्तिक था।

'इतनी खूबसूरत मेज पर कुछ भी खास बताने लायक नहीं है,' पेरी ने सीईओ की ओर मुड़ते हुए कहा। 'मुझे उस विषय में अधिक रुचि है जिसके बारे में आप इतनी जोश से बात कर रहे थे।'
‘ओह, प्रीमियर लीग में रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार!’ सीईओ ने कहा। ‘कुछ टीमें तो जानबूझकर मैच हारना चाहती हैं। अगर मुझे इसके बारे में ज्यादा जानकारी न होती, तो मैं कहता कि उन्हें जानबूझकर ऐसा करने के लिए पैसे दिए जा रहे हैं।’ उन्होंने अपने मेजबान की ओर शरारती नज़र डाली।
‘बकवास,’ व्यापारी ने कहा। ‘अगर तुम मेरी टीम को नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे हो, तो मैं तुम्हें यकीन दिलाता हूँ, मेरे दोस्त, हम अपनी कड़ी मेहनत से जीतेंगे।’
पेरी राहत की सांस लेते हुए पीछे बैठ गई, क्योंकि उसने बातचीत को खुद से दूर कर लिया था, हालांकि वह यह नहीं बता सकती थी कि यह राहत कब तक रहेगी। बाकी लोग अपना सूप खत्म कर चुके थे, तभी एक नौकरानी पेरी के लिए एक कटोरा लेकर आई – चुकंदर और गाजर का शोरबा जिसमें थोड़ा सा बकरी का पनीर मिला हुआ था। किसी ने बिना पूछे ही उसका गिलास भर दिया। नापा वैली, लाल रंग का सूप। उसे अपने होठों तक ले जाने से पहले, उसने अपने पिता की आत्मा को मौन श्रद्धांजलि अर्पित की।
पेरी ने धीरे-धीरे खाना शुरू करते हुए कमरे में चारों ओर नज़र डाली। इतालवी फर्नीचर, अंग्रेजी झूमर, फ्रांसीसी पर्दे, फ़ारसी कालीन और ओटोमन डिज़ाइन वाले ढेरों सजावटी सामान और कुशन; यह घर – हालांकि औसत से कहीं अधिक आलीशान था – इस्तांबुल के कई अन्य घरों की तरह ही सजा हुआ था, आधा प्राच्य और आधा यूरोपीय। दीवारों पर मध्य पूर्व के जाने-माने और उभरते कलाकारों की पेंटिंग लगी थीं, जिनमें से कई के बारे में पेरी का अनुमान था कि उनकी कीमत कम या ज़्यादा रही होगी, क्योंकि इस क्षेत्र का कला जगत, शायद राजनीति की तरह ही, अभी भी अस्थिरता के दौर से गुजर रहा था।
पहले पेरी अनगिनत डिनर पार्टियों में जा चुकी थी, जहाँ रूढ़िवादी मुसलमानों को उदार शराब पीने वालों के साथ घुलने-मिलने में कोई बुराई नहीं दिखती थी। वे शिष्टाचार से पानी के गिलास उठाकर टोस्ट करते और इस भाव में शामिल हो जाते। दुनिया के इस हिस्से में धर्म एक तरह का मिश्रण था। साल भर शराब पीना और क़द्र की रात को पश्चाताप करना कोई असामान्य बात नहीं थी, जब सच्चे मन से पश्चाताप करने वाले के सारे पाप माफ हो जाते थे। रमज़ान में

रोज़ा रखने वाले भी बहुत से लोग थे, एक तो आस्था को मज़बूत करने के लिए और दूसरा वज़न कम करने के लिए। पवित्र और अपवित्र का मेल था। इस मिश्रित संस्कृति में, सबसे समझदार लोग भी जिन्न पर विश्वास करते थे और अपने पास नीले रंग का एक ताबीज रखते थे - जिसे पूरे देश में बुरी नज़र से बचाने वाला माना जाता था। वहीं, सबसे धर्मनिष्ठ लोग भी नए साल का स्वागत टीवी देखते हुए और बेली डांसर की धुन पर ताली बजाते हुए करते थे। थोड़ा यह, थोड़ा वह। आधुनिक मुसलमान।
लेकिन बीते वर्षों में हालात नाटकीय रूप से बदल गए थे। रंग काले-सफेद में तब्दील हो गए थे। ऐसे विवाहों की संख्या लगातार कम होती जा रही थी जिनमें – उसके माता-पिता के विवाह की तरह – एक जीवनसाथी धर्मनिष्ठ और दूसरा नास्तिक होता था। आजकल समाज अदृश्य बस्तियों में बँटा हुआ था। इस्तांबुल एक महानगर से ज़्यादा अलग-थलग समुदायों के शहरी ताने-बाने जैसा लगता था। लोग या तो 'कट्टर धार्मिक' थे या 'कट्टर धर्मनिरपेक्ष'; और जो किसी तरह दोनों पक्षों में संतुलन बनाए हुए थे, ईश्वर और समय के साथ समान उत्साह से तालमेल बिठा रहे थे, वे या तो गायब हो गए थे या रहस्यमय ढंग से शांत हो गए थे। इसलिए आज की सभा इस मायने में असामान्य थी कि इसमें विपरीत विचारधाराओं के लोग एक साथ आए थे। भव्य और आलीशान, पेरी ने इस माहौल की तुलना पुनर्जागरण काल की किसी पेंटिंग से की। अगर वह कलाकार होती, तो इसे 'तुर्की बुर्जुआ वर्ग का अंतिम भोज' कहती। उसने मेज के चारों ओर बैठे लोगों को गिना। वाकई, खुद समेत तेरह लोग थे।
‘अरे, वो तो सुन ही नहीं रही,’ पीआर महिला ने कहा।
यह समझते हुए कि वे उसके बारे में बात कर रहे हैं, पेरी मुस्कुराई। 'आप लोग क्या कह रहे थे?'
‘आपकी बेटी ने मुझे बताया कि आप ऑक्सफोर्ड गए थे।’
पेरी का चेहरा भावहीन हो गया। उसकी आँखें डेनिज़ को ढूँढ रही थीं, लेकिन वह बगल वाले कमरे में अपनी सहेली के साथ खाना खा रही थी।
‘सच में, प्रिय, तुम तो बिल्कुल चुप रहते हो!’ व्यापारी की पत्नी ने कहा। ‘तुमने हमें क्यों नहीं बताया?’
पेरी ने कहा, 'शायद इसलिए क्योंकि मैंने स्नातक की उपाधि प्राप्त नहीं की...'

‘किसे परवाह है?’ पत्रकार ने चुटकी लेते हुए कहा। ‘आपको दिखावा करने का पूरा अधिकार है।’
‘मेरा भाई ऐसा करता है!’ पीआर महिला ने कहा। ‘जब मैं ऑक्सफोर्ड में था…’ वह लोगों को सबसे पहले यही बताता है।’ उसने पेरी की ओर मुड़कर पूछा, ‘तुम वहाँ किस-किस साल में थी?’
लगभग 2001 के आसपास।
‘अरे, बिल्कुल मेरे भाई जैसा!’
पेरी को बेचैनी का गहरा एहसास होने लगा, जो तब और बढ़ गया जब उसने अपने पति को भी इसमें शामिल होते सुना: 'डेनिज़ ने बताया था कि तुम्हारे पास एक तस्वीर है; तुम उन्हें क्यों नहीं दिखाती?'
पेरी समझ गई थी कि वह जानबूझकर ऐसा कर रहा था, दूसरों के सामने उसे उकसा रहा था और भड़का रहा था। यह जानकर उसे बहुत दुख हुआ कि वह अभी भी उस पोलरॉइड को अपने पास रखती है। बेशक, वह सब कुछ जानता था। सब कुछ नहीं, लेकिन कहानी का अधिकांश हिस्सा। आखिरकार, ऑक्सफोर्ड छोड़ने के बाद तो उसी ने ही तो सब कुछ संभाला था।
‘चलो, हमें दिखाओ!’ किसी ने उत्साह से कहा।
पेरी ने विषय बदलने की लाख कोशिश की, लेकिन इस बार यह कारगर नहीं हुआ। वे यह देखने के लिए दृढ़ थे कि विश्वविद्यालय के दिनों में वह कैसी दिखती थी और तब से उसमें कितना बदलाव आया था।
उसने अपने बैग से पोलरॉइड कैमरा निकाला और मेज पर रख दिया। मोमबत्ती की रोशनी में चार आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं, बीते हुए कल के मुस्कुराते चेहरे, बोडलियन पुस्तकालय के बर्फ से ढके पुराने स्कूल के चौक में खड़े थे; उनके पीछे प्रवेश द्वार के टावर की छत से बर्फ की बूंदें लटक रही थीं। प्रत्येक अतिथि ने तस्वीर को ध्यान से देखा और टिप्पणी किए बिना उसे अगले को दे दिया।
‘अरे, तुम तो बहुत छोटे थे!’
‘वाह, देखो तो ज़रा बाल। क्या तुमने इन्हें पर्म करवाया है?’
जब तस्वीर जनसंपर्क अधिकारी के पास पहुंची, तो उसने चश्मा लगाया। उसने तस्वीर को ध्यान से देखा। 'रुको' - उसने भौंहें चढ़ाते हुए कहा - 'यह आदमी जाना-पहचाना लग रहा है।'
पेरी तनावग्रस्त हो गई।

‘मैं हर साल अपने भाई से मिलने जाता था। मुझे यकीन है कि उसने मुझे इस आदमी की तस्वीर दिखाई थी… वो कहाँ थी…’
पेरी के चेहरे पर भावहीनता छा गई।
‘ओह, हाँ, अब याद आया! यह एक अखबार में था। यह आदमी एक मशहूर प्रोफेसर था… उसे बदनामी झेलनी पड़ी… ऑक्सफोर्ड से इस्तीफा देने के लिए मजबूर होना पड़ा! हर कोई उसके बारे में बात कर रहा था। एक घोटाला हुआ था।’ उसने पेरी की ओर देखा। ‘ज़रूर, तुमने इसके बारे में सुना होगा?’
पेरी चुपचाप बैठी रही, झूठ गढ़ने में असमर्थ, सच बोलने की अनिच्छा से। उसे अपार राहत मिली जब नौकरानियाँ उसी वक्त स्टार्टर्स लेकर अंदर आईं। स्वादिष्ट खुशबू हवा में फैल गई। खाना परोसे जाने के दौरान पेरी ने किसी तरह अपना पोलरॉइड कैमरा निकाल लिया। जब तक उसने उसे वापस अपने बैग में रखा, उसके हाथ इतने कांप रहे थे कि उसे उन्हें मेज के नीचे छिपाना पड़ा।

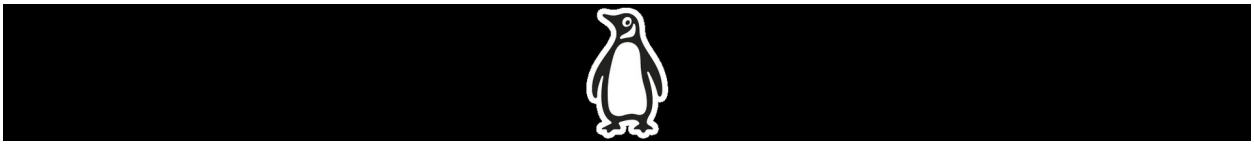

□□□ □□

विश्वविद्यालय

ऑक्सफोर्ड, 2000
स्कूल से निकलने के तुरंत बाद जब नाज़पेरी नलबंतोग्लू ऑक्सफ़ोर्ड पहुँचीं, तो उनके साथ उनके चिंतित पिता और उनसे भी ज़्यादा चिंतित माँ थीं। उनके माता-पिता की योजना थी कि वे पूरा दिन साथ बिताएँगे; बेटी को नए जीवन में व्यवस्थित होते देख, वे शाम को ट्रेन से लंदन वापस लौट जाएँगे। वहाँ से वे इस्तांबुल के लिए विमान लेंगे, जहाँ उन्होंने अपने बत्तीस वर्षों के अस्थिर वैवाहिक जीवन का अधिकांश समय बिताया था, एक पुरानी सीढ़ी की तरह जो जर्जर होने के बावजूद समय के प्रकोप के सामने खड़ी थी। लेकिन हालात उम्मीद से कहीं ज़्यादा पेचीदा निकले। सेल्मा दो बार फूट-फूटकर रोईं, उनका मिजाज बेचैनी, आत्म-दया और गर्व के चक्रों में झूलता रहा। बीच-बीच में, वह अपने सिर पर बंधे दुपट्टे का एक सिरा पकड़ लेतीं, मानो चेहरा पोंछ रही हों, लेकिन असल में आँसू पोंछ रही होतीं। उनका एक हिस्सा अपनी बेटी की उपलब्धि से खुश था। उनके पूरे परिवार में किसी को भी किसी विदेशी विश्वविद्यालय में दाखिला नहीं मिला था, ऑक्सफ़ोर्ड तो दूर की बात है। यह संभावना उनके मन में कभी आई ही नहीं थी, क्योंकि 'यहाँ' और 'वहाँ' के बीच बहुत ही दूर का फासला था।
लेकिन उनके मन का एक दूसरा हिस्सा यह बात स्वीकार नहीं कर पा रहा था कि उनकी सबसे छोटी बच्ची, एक लड़की, एक महाद्वीप दूर, अकेले, एक ऐसी जगह पर रहेगी जहाँ सब कुछ अनजान होगा। पेरी ने उनकी जानकारी या सहमति के बिना आवेदन किया था, इस बात से उन्हें गहरा दुख हुआ। उन्हें इस सब के पीछे अपने पति का साया महसूस हो रहा था। उन दोनों ने उन्हें तभी बताया जब सब कुछ तय हो चुका था, और वह बस हल्की सी आपत्ति जता सकीं, कहीं ऐसा न हो कि उनकी बेटी उनसे जीवन भर के लिए दूर हो जाए। वह चाहती थीं कि इस अनजान शहर में उनका कोई रिश्तेदार हो, या किसी रिश्तेदार का रिश्तेदार, कोई भी हो - बस वो मुसलमान, सुन्नी, तुर्की भाषा बोलने वाला, ईश्वर से डरने वाला, कुरान पढ़ने वाला और फोन पर आसानी से संपर्क करने योग्य हो - जिसके भरोसे वह पेरी को सौंप सकें। लेकिन उन्हें ऐसा कोई नहीं मिला जो इन विवरणों से मेल खाता हो।

मेंसुर, हालांकि अपनी बेटी को पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते देखना चाहते थे, फिर भी उसे खोने के गम से कम दुखी नहीं थे। बाहरी तौर पर शांत दिखते हुए, वे रुक-रुक कर, बेतरतीब ढंग से बोलते थे, ठीक उसी लहजे में जैसे किसी दूर के भूकंप के बारे में बात करते हों: स्वीकार तो कर रहे थे, लेकिन दर्द की एक अंतर्धारा भी थी। पेरी अपने माता-पिता की बेचैनी को समझती थी, और कुछ हद तक उसे महसूस भी करती थी। इससे पहले वे कभी अलग नहीं हुए थे; इससे पहले वह कभी अपने परिवार, घर और जन्मभूमि से दूर नहीं रही थी।
‘देखो, यहाँ कितना सुंदर है,’ पेरी ने कहा। सीने में उठ रहे दबाव के बावजूद, वह उत्साहित महसूस कर रही थी, मानो उसका जीवन नई ऊँचाइयों पर पहुँचने वाला हो।
बादलों के बीच से सूरज की गर्म किरणें निकल रही थीं, जिससे ऐसा लग रहा था मानो गर्मी लौट आई हो, हालांकि बीच-बीच में पतझड़ की ठंडी हवा के झोंके भी आ रहे थे। अपनी पथरीली सड़कों, कंगूरेदार मीनारों, गलियारों, बड़ी खिड़कियों और नक्काशीदार बरामदों के साथ ऑक्सफोर्ड किसी बच्चों की चित्रपुस्तक के दृश्य जैसा लग रहा था। उनकी नज़र में हर चीज़ इतिहास की महक लिए खड़ी थी – इतनी महकी कि कॉफी शॉप और डिपार्टमेंट स्टोर भी इस सदियों पुरानी विरासत का हिस्सा लग रहे थे। इस्तांबुल में, भले ही वह शहर कितना भी प्राचीन क्यों न हो, अतीत को ऐसे मेहमान की तरह माना जाता था जो ज़रूरत से ज़्यादा समय तक वहाँ रुका हो। लेकिन ऑक्सफोर्ड में, अतीत स्पष्ट रूप से सम्माननीय अतिथि था।
नालबंतोग्लस परिवार ने सुबह का शेष समय टहलते हुए, समय के साथ जर्जर हो चुकी, बेलों से ढकी चौकों की दीवारों के भीतर बसे बगीचों की सुंदरता निहारते हुए बिताया। उनके पैर बजरी पर धीरे-धीरे चल रहे थे, क्योंकि उन्हें यह पता नहीं था कि उन्हें इन जगहों में प्रवेश करने की अनुमति है या नहीं, और पूछने के लिए कोई था भी नहीं। कस्बे के कुछ हिस्से इतने सुनसान लग रहे थे कि प्राचीन गलियों के किनारे बनी चूना पत्थर की उखड़ती दीवारें मानो इंसानी ध्यान के लिए तड़प रही थीं।
थके-हारे और भूख से बेहाल, उन्हें अल्फ्रेड स्ट्रीट पर एक पब नज़र आया, जिसकी छत नीची थी, लकड़ी के फर्श चरमरा रहे थे और लोग शोर मचा रहे थे। झिझकते हुए, वे खिड़की के पास एक छोटी सी मेज पर बैठ गए। हर कोई बड़े-बड़े गिलासों में बीयर पी रहा था। जब वेट्रेस आई, जिसके निचले होंठ में

पियर्सिंग थी, तो मेन्सुर ने सबके लिए फिश एंड चिप्स और एक-एक बोतल व्हाइट वाइन मंगवाई।
‘ज़रा सोचो, यह जगह सदियों पुरानी है…’ मेन्सुर ने कहा। वह ओक की लकड़ी की पट्टियों को ऐसे घूर रहा था मानो उनमें कोई गुप्त गूढ़ रहस्य छिपा हो जिसे वह काफी कोशिश करने पर समझ सके।
सेल्मा ने सिर हिलाया – हालांकि, आसपास देखते हुए उसने कुछ और चीजें भी देखीं: एक कोने में छात्र बीयर गटक रहे थे, एक महिला बेहद छोटी ड्रेस पहने थी जो मानो कमीज़ ही थी, एक टैटू वाला आदमी अपनी प्रेमिका को सहला रहा था, जिसकी छाती सेल्मा और उसके पति के बीच की दरार से भी गहरी थी… वह पेरी को इन लोगों के बीच अकेला कैसे छोड़ सकती थी? पश्चिमी लोग विज्ञान, शिक्षा और प्रौद्योगिकी में भले ही उन्नत हों, लेकिन उनके नैतिक मूल्यों का क्या? उसे इस बात से चिढ़ हो रही थी कि उसे अपने विचार अपने तक ही रखने पड़ रहे थे, कहीं उसके पति और बेटी नाराज़ न हो जाएं। उसका मुंह नीचे की ओर झुका हुआ था, मानो वह अपने अंदर दबी हुई तीखी टिप्पणियों को रोक रही हो। हर समय सिद्धांतवादी और उबाऊ अभिभावक बने रहना अन्यायपूर्ण था।
अपनी पत्नी की चिंताओं से अनभिज्ञ, लेकिन उसके विचारों से पूरी तरह अनजान नहीं, मेन्सुर ने कहा, 'हमें तुम पर गर्व है, पेरिसिम।'
पेरी दूसरी बार अपने पिता से यह सुन रही थी और उसे यह उतना ही अच्छा लग रहा था जितना पहली बार। सीमित संसाधनों के बावजूद, उन्होंने पेरी की शिक्षा पर अपनी क्षमता से कहीं अधिक निवेश किया था। पेरी ने ठान लिया था कि वह उन्हें निराश नहीं करेगी।
जैसे ही उनकी शराब पहुंची, मेन्सुर ने घोषणा की, 'हमें जश्न मनाना चाहिए! हमारी प्रतिभाशाली बेटी के लिए!'
सेल्मा का चेहरा उतर गया। 'आप जानते हैं कि अल्लाह मुझे आपके साथ शामिल होने से रोकता है।'
‘ठीक है,’ मेन्सुर ने कहा। ‘मैं पापी बनूंगा। जब मैं मर जाऊं, तो मुझे स्वर्ग से एक पास भेज देना।’
‘काश यह इतना आसान होता,’ सेल्मा ने कहा। ‘आपको अल्लाह की नजरों में ऊपर उठने के लिए मेहनत करनी पड़ेगी।’
मेंसुर ने कुछ देर तक अपने मुंह के अंदरूनी हिस्से को चबाया। अपनी पत्नी के सधे हुए शब्दों को सुनना उसके लिए वैसा ही असर कर रहा था जैसे करीने से

खड़ी डोमिनोज़ की कतार देखना। वह उनमें से एक को गिराने की इच्छा को दबा नहीं पा रहा था। 'तुम ऐसे बोलती हो जैसे तुम्हें अल्लाह के विचार सीधे-सीधे पता हों। क्या तुमने उसके मन में झाँका है? तुम्हें कैसे पता कि वह क्या देखता है?'
'क्योंकि कुरान में हमें यही बताया गया है, अगर आप पढ़ने की जहमत उठाएं,' सेल्मा ने कहा।
‘अरे, क्या तुम दोनों एक दिन के लिए झगड़ा बंद नहीं कर सकते?’ पेरी ने विनती की। बात बदलने और तनाव कम करने के लिए उसने आगे कहा, ‘मैं शादी के लिए जल्द ही इस्तांबुल वापस आ रही हूँ।’
हाकान की शादी होने ही वाली थी। उमुत, जो जेल से रिहा होने के बाद भूमध्य सागर के किनारे बसे एक कस्बे में रहने लगा था, अभी भी अविवाहित था, फिर भी हाकान ने परिवार के आदेश का उल्लंघन करते हुए अपनी बारी का इंतजार करने से इनकार कर दिया था। पहले तो सभी को शक था कि उसकी इस बेसब्री के पीछे कोई शर्मनाक बात हो सकती है, कोई ऐसी बात जो दुल्हन के लिए छुपाना मुश्किल हो, लेकिन बाद में यह स्पष्ट हो गया कि इस जल्दबाजी का एकमात्र कारण होने वाले दूल्हे का व्यक्तित्व था।
उन्होंने अपना बचा हुआ दोपहर का भोजन लगभग चुपचाप ही समाप्त किया।
बिल का इंतजार करते हुए सेल्मा ने अपनी बेटी का हाथ पकड़ा और कहा, 'बुरे लोगों से दूर रहो।'
'हां, मुझे पता है, मां।'
'शिक्षा महत्वपूर्ण है, लेकिन एक लड़की के लिए इससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण कुछ और भी है, समझ रहे हो? अगर तुम उसे खो देती हो, तो कोई भी डिग्री तुम्हें वापस नहीं दिला सकती। लड़कों के पास खोने के लिए कुछ नहीं होता। लड़कियों को अतिरिक्त सावधानी बरतने की जरूरत है।'
‘ठीक है…’ पेरी ने अपनी नजरें हटाते हुए कहा।
कौमार्य, वह रूढ़िवादी धारणा जिसका केवल संकेत ही दिया जा सकता था, खुलकर नहीं। यह माताओं और बेटियों, चाचियों और भतीजियों के बीच होने वाली अनेक बातचीत में एक अहम विषय था। एक ऐसा विषय जिसके इर्द-गिर्द दबे पांव चलना पड़ता था, मानो कमरे के बीचोंबीच कोई उदास सोया हुआ व्यक्ति हो जिसे कोई परेशान करने की हिम्मत न करता हो।

'मुझे अपनी बेटी पर भरोसा है,' मेन्सुर ने कहा, जिसने अधिकांश शराब अकेले ही पी ली थी और अब वह थोड़ा नशे में लग रहा था।
'मैं भी ऐसा ही सोचती हूं,' सेल्मा ने कहा। 'बाकी लोगों से मैं सहमत नहीं हूं।'
'यह कहना बेवकूफी है,' मेन्सुर ने कहा। 'अगर आपको उस पर भरोसा है, तो दूसरों की इतनी परवाह क्यों करते हैं?'
सेल्मा के होंठ सिकुड़कर एक विकृत भाव में बदल गए। 'जो व्यक्ति हर दिन शराब पीकर खुद को मौत के घाट उतारता है, वह खुद के अलावा किसी और को मूर्ख नहीं कह सकता।'
अपने माता-पिता को फिर से झगड़ते हुए सुनकर, उनकी अनसुलझी लड़ाइयाँ, अनसुलझा हिसाब-किताब, पेरी बस खिड़की से बाहर उस कस्बे को देखती रही जो कम से कम अगले तीन सालों के लिए उसका विश्वविद्यालय, उसका आश्रय, उसका घर बनने वाला था। उसके पेट में डर का साया उमड़ रहा था। उसके मन में बुरे ख्याल घूम रहे थे। उसे इस्तांबुल के बाज़ारों में नाजुक कांच की नलियों में बिकने वाला महंगा केसर याद आया – नकली मसाला नहीं, बल्कि असली केसर। उसका आशावाद भी सीमित, बंधा हुआ और क्षणभंगुर था।

वो नक्शा

ऑक्सफोर्ड, 2000
उनके कॉलेज के सामने वाले लॉज में पहुँचने के कुछ ही सेकंड बाद, उनके पीछे से एक आवाज़ आई, 'हैलो!' जहाँ उन्हें कॉलेज घुमाने के लिए नियुक्त एक द्वितीय वर्ष का छात्र इंतजार कर रहा था।
पीछे मुड़कर देखने पर उन्होंने एक लंबी, युवती को देखा, जिसका हावभाव किसी दूसरे युग या देश की सुल्ताना जैसा था। उसने गुलाबी रंग की स्कर्ट पहनी थी, ठीक उसी गुलाबी रंग की जिस रंग की गुलाबजल वाली मिठाई पेरी बचपन में बहुत पसंद करती थी। उसके काले बाल घुंघराले होकर उसकी पीठ पर बिखरे हुए थे, जिन्हें उसने एकदम सीधा रखा हुआ था। उसने अपने होंठों पर चमकीला लाल रंग लगाया था और गालों पर रूज लगाया था। लेकिन सबसे आकर्षक उसकी गहरी, दूर-दूर स्थित आंखें थीं, जिनकी रूपरेखा बैंगनी पेंसिल से बनाई गई थी और उनमें चमकीले फ़िरोज़ी रंग की शेडिंग थी। उसका मेकअप किसी अस्थिर देश के झंडे जैसा था, जो न केवल उसकी स्वतंत्रता बल्कि उसकी अनिश्चितता को भी दर्शाता था।
"ऑक्सफ़ोर्ड में आपका स्वागत है," उसने मुस्कुराते हुए कहा और अपना सँवारा हुआ हाथ आगे बढ़ाया। "मेरा नाम शिरीन है।" उसने अपने नाम का उच्चारण यथासंभव अधिक स्वरों के साथ किया: शी-रीन।
अपनी बड़ी, धनुषाकार नाक और उभरी हुई ठुड्डी के कारण वह पारंपरिक रूप से सुंदर तो नहीं थी, लेकिन उसके व्यक्तित्व में एक ऐसा आकर्षण था कि वह सुंदर प्रतीत होती थी। पेरी उसकी सुंदरता से इतनी मोहित हो गई कि मुस्कुराते हुए वह लड़की की ओर बढ़ी।
‘हाय, मैं पेरी हूँ – और ये मेरे माता-पिता हैं।’ उसने मन ही मन सोचा, हम एक दिन के लिए एक सामान्य परिवार होने का नाटक करेंगे।
‘आप सभी से मिलकर बहुत खुशी हुई। मैंने सुना है आप तुर्की के हैं। मेरा जन्म तेहरान में हुआ था, लेकिन मैं कभी वापस नहीं गई,’ शिरीन ने हाथ हिलाते हुए सहजता से कहा, मानो ईरान बस कोने में ही हो और इंतज़ार कर रहा हो। ‘शायद

इसीलिए उन्होंने मुझे आपको घुमाने के लिए कहा। वे हम सबको एक साथ जोड़कर देखना पसंद करते हैं। क्या आप घूमने के लिए तैयार हैं?’
पेरी और मेन्सुर ने उत्साहपूर्वक सिर हिलाया। सेल्मा ने लड़की की छोटी स्कर्ट, ऊँची एड़ी के जूते और गाढ़े मेकअप को नापसंदगी से देखा। उसकी नज़र में शिरीन एक छात्रा जैसी नहीं लग रही थी। और वह निश्चित रूप से ईरानी भी नहीं लग रही थी।
‘यह किस तरह की छात्रा है?’ सेल्मा ने तुर्की भाषा में बुदबुदाते हुए कहा। पेरी को यह सोचकर एक अतार्किक चिंता सताने लगी कि ब्रिटिश-ईरानी लड़की शायद तुर्की भाषा समझती हो, और उसने फुसफुसाते हुए जवाब दिया, 'माँ, कृपया।' ‘चलो चलें!’ शिरीन ने उत्साह से कहा। ‘आम तौर पर हम अपने कॉलेज से शुरुआत करते हैं और फिर बाकी शहर घूमते हैं। लेकिन मैं कभी भी कोई काम क्रम से नहीं करती। यह मेरे स्वभाव के खिलाफ है। तो मेरे पीछे आओ, सब लोग!’
यह कहते हुए, शिरिन ने ऑक्सफोर्ड के इतिहास पर एक लंबा भाषण शुरू कर दिया। अपनी बकबक के साथ, वह उन्हें पुराने शहर की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में और अंदर ले गई। जीवंत और हंसमुख स्वभाव की शिरिन इतनी तेज़ी से बोल रही थी कि उसके शब्द एक उग्र धारा की तरह बह रहे थे, जिसे नालबंतोग्लू परिवार को समझना मुश्किल हो रहा था – खासकर सेल्मा को, जिसे वर्षों पहले स्कूल में सीखी हुई व्याकरण-आधारित अंग्रेज़ी और अभी सुनाई दे रही बेतुकी बातों में कोई समानता नहीं दिख रही थी। उसकी मदद करने के लिए, पेरी ने अनुवादक की भूमिका निभाई – हालांकि कुछ हद तक ढीले ढंग से। उसने बातों को नरम किया, शब्दों को फिर से लिखा और जहाँ ज़रूरत पड़ी, वहाँ उसने अपनी माँ को नाराज़ करने वाली किसी भी बात को स्पष्ट किया।
इसी बीच, शिरिन ने समझाया कि ऑक्सफ़ोर्ड के सभी कॉलेज स्वायत्त, स्वशासित संस्थाएँ हैं जो अपने मामलों का स्वयं प्रबंधन करती हैं - यह तथ्य मेन्सुर को उलझन भरा लगा। 'लेकिन अध्यक्ष तो होना ही चाहिए, जो हर चीज़ से ऊपर हो,' उसने अपनी टूटी-फूटी अंग्रेज़ी में आपत्ति जताई और चारों ओर देखा, मानो उसे डर हो कि शहर अराजकता में डूब सकता है।
'मैं असहमत हूं,' शिरिन ने कहा। 'मेरे अनुभव में, अधिकार लहसुन की तरह है: जितना अधिक आप इसका उपयोग करते हैं, उतनी ही तीव्र गंध आती है।'
मेन्सुर, जिन्होंने अपने वयस्क जीवन का अधिकांश समय एक ऐसे केंद्रीय प्राधिकरण की चाह में बिताया था जो धार्मिक कट्टरवाद के उदय को रोकने के

लिए पर्याप्त रूप से मजबूत, स्थिर और धर्मनिरपेक्ष हो, चिंता से ऊपर देखने लगे। उनके लिए सत्ता एक बंधनकारी तत्व थी – वह गारा जो समाज के टुकड़ों को पूर्ण व्यवस्था में जोड़े रखता था। इसके बिना, ईंटें गिर जाएँगी, संरचना बिखर जाएगी।
‘निश्चित रूप से सभी सत्ता बुरी नहीं होती,’ मेन्सुर ने जोर देकर कहा। ‘महिलाओं के अधिकारों के बारे में क्या? जब कोई सशक्त नेता महिलाओं का बचाव करता है तो आप क्या कहते हैं?’
‘ठीक है, मैं कहूंगा, बहुत-बहुत धन्यवाद, मैं अपने अधिकारों की रक्षा स्वयं बखूबी कर सकता हूं। इसके लिए हमें किसी उच्च अधिकारी की आवश्यकता नहीं है!’
ये शब्द कहते हुए शिरिन ने सेल्मा की ओर देखा, उसके सिर पर बंधे दुपट्टे और लंबे, बेढंगे कोट पर गौर किया। पेरी, जो दूसरों की नकारात्मकता के प्रति हमेशा संवेदनशील थी, समझ गई कि शिरिन के प्रति उसकी माँ की नापसंदगी दोनों तरफ से थी। ब्रिटिश-ईरानी लड़की को सिर ढकने वाली महिलाओं से घृणा थी - एक ऐसी घृणा जिसे वह छिपाने की ज़रा भी ज़रूरत महसूस नहीं करती थी।
‘आओ, माँ।’ पेरी ने धीरे से सेल्मा को बांह से खींच लिया – उस बांह से जिस पर जलने का निशान था, जो कई साल पहले कालीन धोने के दिन की निशानी थी। दोनों पीछे रह गईं।
एशमोलियन संग्रहालय के प्रवेश द्वार की सीढ़ियों पर, माँ और बेटी ने एक जोड़े को एक-दूसरे को प्यार से चूमते हुए देखा। पेरी का चेहरा शर्म से लाल हो गया, मानो वह खुद उस लड़के की बाहों में आ गई हो। उसने तिरछी नज़र से सेल्मा को गुस्से से घूरते हुए देखा। यह वही औरत थी जिसने उसे यौन संबंध के बारे में कुछ भी नहीं सिखाया था। उसे आज भी याद है जब एक दिन हमाम में, बचपन में उसने एक लड़के के पैरों के बीच लटकती हुई चीज़ के बारे में पूछा था। सेल्मा ने गुस्से में लड़के की माँ की ओर रुख किया और उस पर जमकर चिल्लाई। संगमरमर के फव्वारों से बहते पानी की आवाज़ में उसकी आवाज़ भले ही पूरी तरह सुनाई न दी हो, लेकिन उसके हाव-भाव से लग रहा था कि वह बहुत कठोर थी।
पेरी को बहुत शर्मिंदगी और अपराधबोध महसूस हुआ, क्योंकि वह उस चीज़ के बारे में जानने के लिए उत्सुक थी जिसके बारे में जानने का उसे कोई अधिकार नहीं था।

समय बीतने के साथ-साथ जिज्ञासा एक बार फिर उस पर हावी हो गई। उसने एक बार अपनी माँ से पूछा कि क्या उन्होंने कभी गर्भपात कराने के बारे में सोचा था, क्योंकि सेल्मा की पहली और आखिरी गर्भावस्था के बीच कई वर्षों का लंबा अंतराल था। शायद उसके माता-पिता ने सोचा होगा कि उनका परिवार पहले से ही पूरा हो चुका है और इसलिए उन्होंने उसे जन्म न देने का फैसला किया होगा। 'खैर, यह शर्मनाक था। जब तुम आए तब मैं चौवालीस साल की थी,' सेल्मा ने कहा था।
‘आपने इसे समाप्त क्यों नहीं किया?’ पेरी ने जोर देकर पूछा।
‘उस समय यह गैरकानूनी था। हालांकि इसके कई तरीके हो सकते थे। लेकिन निश्चित रूप से यह पाप होता। मैंने मन ही मन सोचा, अल्लाह की नजरों में पाप करना पड़ोसियों की नजरों में शर्मिंदगी से कहीं ज्यादा बुरा है, इसलिए मैंने यह काम जारी रखा।’
पेरी ने अपनी माँ को कभी नहीं बताया था कि उसे यह जवाब कितना बुरा लगा था। उसे उम्मीद थी कि उसकी माँ कुछ नरमी से कहेगी। "मैंने कभी गर्भपात के बारे में नहीं सोचा; मैं तुमसे पहले से ही बहुत प्यार करती थी" या "मैंने किसी ऐसी महिला से मिलने का इंतज़ाम किया था जो मेरी मदद कर सकती थी, लेकिन पिछली रात मैंने तुम्हें सपने में देखा, हरी आँखों वाली एक छोटी बच्ची..." लेकिन, हालात ऐसे थे कि पेरी ने यही निष्कर्ष निकाला कि वह पाप और शर्म के बीच फंसी एक बच्ची थी: अभिशाप की दो परतें।

साथ में वे उस कॉलेज गए जहाँ पेरी को रहना था। उसका कमरा सामने के चौक में था, एक शानदार प्रथम श्रेणी की सूचीबद्ध इमारत में, जो नालबंतोग्लस की नज़र में छात्रावास से ज़्यादा एक संग्रहालय जैसी लग रही थी। ऊँची छतों, ओक की लकड़ी की पैनलिंग और परंपरा की शाश्वतता से पेरी जितनी प्रभावित थी, उतनी ही वह अपने कमरे के आकार और सादगी से मन ही मन निराश भी थी। एक सिंक, एक अलमारी, एक दराज, एक बिस्तर, एक मेज, एक आरामकुर्सी और एक अलमारी। बस इतना ही - भव्य बाहरी हिस्से के साथ एक आश्चर्यजनक विरोधाभास - लेकिन फिर पहली बार अकेले रहने की रोमांचक आज़ादी भी थी।

संकरी सीढ़ियों से नीचे उतरते हुए, दूसरे छात्रों को रास्ता देते हुए, शिरिन ने पेरी की ओर मुड़कर आँख मारी। 'अगर तुम जल्दी दोस्त बनाना चाहती हो, तो अपना दरवाजा खुला छोड़ दो। इस तरह लोग खुद ही आकर 'हैलो' कहेंगे। बंद दरवाजे का मतलब है, 'दूर रहो, मैं परेशान नहीं होना चाहती।'
‘सच में?’ पेरी ने फुसफुसाते हुए कहा, वह नहीं चाहती थी कि उसके माता-पिता को कुछ पता चले। ‘लेकिन मैं बीच-बीच में रुकावटों के साथ पढ़ाई कैसे कर सकती हूँ?’
शिरिन ऐसे खिलखिलाकर हंसी जैसे पढ़ाई का जिक्र उस दिन सुनी गई सबसे मजेदार बात हो।
दोपहर के शेष समय में, शिरिन ने नालबंतोग्लस को गोलाकार रेडक्लिफ कैमरा, शेल्डोनियन थिएटर और प्रारंभिक वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित विज्ञान इतिहास संग्रहालय दिखाया। उनका अगला पड़ाव बोडलियन पुस्तकालय था। शिरिन ने बताया कि 'बोड', जैसा कि छात्र और प्रोफेसर इसे कहते थे, में सौ मील से अधिक लंबी भूमिगत अलमारियाँ थीं। एक समय था जब किताबें न चुराने की शपथ लेनी पड़ती थी। कुछ कॉलेज पुस्तकालयों में आज भी मध्ययुग की तरह जंजीरों से बंधी किताबें थीं।
मेंसुर ने दीवार पर बने राजचिह्न पर लिखे एक शिलालेख की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'इसका क्या मतलब है?'
‘डोमिनस इलुमिनेटियो मेआ, “प्रभु मेरा प्रकाश है”,’ शिरिन ने अपनी आँखें आकाश की ओर करते हुए कहा, अनजाने में या उपहासपूर्वक, यह कहना मुश्किल था। शब्दों से ज़्यादा हावभाव को समझते हुए, सेल्मा ने अपने पति की पसलियों में कोहनी मारी। 'देखो, अगर किसी तुर्की विश्वविद्यालय की दीवार पर अल्लाह के बारे में ऐसा ही कोई चिन्ह होता, तो तुम भड़क उठते। तुम उसे कट्टरपंथियों का अड्डा समझते! आत्मघाती हमलावरों का आतंकी शिविर समझते! लेकिन यहाँ तुम्हें धार्मिक शिलालेखों से कोई समस्या नहीं है!'
'ऐसा इसलिए है क्योंकि यूरोप में धर्म का स्वरूप अलग है,' मेन्सुर ने उपेक्षापूर्ण लहजे में कहा।
‘ऐसा क्यों?’ सेल्मा ने कहा। ‘धर्म तो धर्म ही होता है।’
‘यह सच नहीं है। कुछ लोग ज़्यादा धार्मिक हैं,’ मेन्सुर ने कहा, और उनकी आवाज़, यहाँ तक कि खुद उनके कानों को भी, एक चिड़चिड़े बच्चे जैसी लग रही

थी। ‘देखो, यूरोप में धर्म हर चीज़ और हर किसी पर हावी होने की कोशिश नहीं करता। विज्ञान स्वतंत्र है!’
‘अल-अंदालुस में विज्ञान का विकास हुआ,’ सेल्मा ने कहा। ‘उज़ुम्बाज़ एफ़ेंडी ने हमें इसके बारे में समझाया, अल्लाह उनकी आत्मा को शांति दे। आपके विचार से बीजगणित का आविष्कार किसने किया? या पवनचक्की का? या टूथब्रश का? कॉफ़ी का? टीकाकरण का? शैम्पू का? मुसलमानों ने! जब यूरोपीय लोग मुश्किल से खुद को धोते थे, तब हमारे पास गुलाबजल से सुगंधित शानदार हमाम थे। हमने ही पश्चिमी लोगों को स्वच्छता सिखाई, अब वे इसे हमें ही बेच रहे हैं।’
‘हजार साल पहले किसने क्या आविष्कार किया, इससे किसे फर्क पड़ता है?’ मेन्सुर ने कहा। ‘हे स्त्री, खुद से पूछो, विज्ञान का सबसे अधिक लाभ किसने उठाया है!’
'पापा, मम्मी, बस करो,' पेरी ने धीरे से कहा, उसे इस बात से बहुत शर्म आ रही थी कि एक अजनबी उसके माता-पिता के बीच हो रही बहस को देख रहा था।
शिरिन ने, चाहे उसने तनाव को भांप लिया हो और आग में घी डालना चाहती हो, या फिर महज़ संयोगवश, यह बताना शुरू कर दिया कि ऑक्सफ़ोर्ड के कई सबसे पुराने कॉलेज ईसाई मठों की नींव से विकसित हुए हैं। पेरी ने अपनी माँ के लिए इनमें से किसी भी बात का तुर्की में अनुवाद नहीं किया।
बोडलियन पुस्तकालय की सीढ़ियाँ चढ़ते हुए पेरी पीतल की तख्ती पर खुदे हुए संरक्षकों के नाम पढ़ने के लिए रुक गई। अनादि काल से, बिना किसी रुकावट के, धनी और शक्तिशाली लोगों ने इस शानदार संग्रह का समर्थन किया था। यह सोचकर उसे दुख हुआ कि अगर यह पुस्तकालय इस्तांबुल में, लगभग उसी समय के आसपास, बनाया गया होता, तो शायद इसे कई बार ध्वस्त कर दिया गया होता और हर बार इसे अलग-अलग स्थापत्य शैली और उस समय की प्रचलित विचारधारा के अनुसार नए नाम से पुनर्निर्मित किया गया होता – जब तक कि एक दिन इसे सैन्य बैरक में और फिर, संभवतः, एक शॉपिंग सेंटर में परिवर्तित नहीं कर दिया गया होता। उसने एक गहरी आह भरी।
'क्या तुम ठीक हो?' शिरीन ने उसके ठीक बगल में खड़े होकर पूछा।
'हां, काश तुर्की में भी ऐसी ही खूबसूरत लाइब्रेरी होतीं,' पेरी ने कहा। ‘बहन, बस उम्मीद करती रहो। यूरोप में तो मध्य युग से ही किताबें छपती आ रही हैं। मुझे ठीक से नहीं पता कि मध्य पूर्व में यह कब शुरू हुआ, लेकिन मुझे

यह पक्का पता है कि हम सब बर्बाद होने वाले हैं – मतलब, ईरान, तुर्की, मिस्र। ठीक है, मैं समझती हूँ, समृद्ध संस्कृति, मनमोहक संगीत, बढ़िया खाना। लेकिन किताबें ज्ञान हैं, ज्ञान ही शक्ति है, है ना? इस खाई को भला कैसे भरा जा सकता है?’
'दो सौ सत्तासी साल,' पेरी ने धीमी आवाज़ में कहा।
'क्या?'
‘माफ़ कीजिए,’ पेरी ने कहा। ‘गुटेनबर्ग का प्रिंटिंग प्रेस लगभग 1440 का है। 1500 के दशक में इटली में कुछ अरबी पुस्तकें प्रकाशित हुईं। लेकिन मुसलमानों ने भारी सेंसरशिप के तहत, ओटोमन साम्राज्य में मुतेफेरिका के साथ ही छपाई शुरू की। खैर, कुल मिलाकर लगभग 287 वर्षों का अंतर है।’
शिरिन ने कहा, 'तुम एक अजीब इंसान हो। तुम ऑक्सफोर्ड में ज़रूर कामयाब हो जाओगे।'
‘क्या तुम्हें ऐसा लगता है?’ पेरी मुस्कुराई।
प्यास लगने पर वे पास के ही ढके हुए बाज़ार में कॉफ़ी पीने के लिए रुक गए। पेरी और शिरिन मेज़ ढूंढने लगीं, जबकि मेन्सुर और सेल्मा शौचालय की तलाश में एक-दूसरे से अलग-अलग चलने लगीं।
‘अंतरों की बात करें तो, आपके माता-पिता के बीच काफी बड़ा अंतर दिखाई देता है,’ शिरिन ने अचानक कहा। ‘आपके पिता कुछ हद तक वामपंथी हैं, है ना? और आपकी माँ –’
‘मैं उन्हें वामपंथी तो नहीं कहूँगी, लेकिन हाँ, वे धर्मनिरपेक्ष हैं… अगर आपको तुर्की के बारे में कुछ भी पता हो तो कह सकते हैं कि वे केमालिस्ट हैं। और माँ…’ शिरिन की तरह, उसने भी वाक्य अधूरा छोड़ दिया। धीरे से, पेरी ने अपनी आस्तीन से एक अदृश्य रुई का टुकड़ा उठाया और उसे अपनी उंगलियों के बीच घुमाया। उसने कभी किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात नहीं की थी जो इतना बेबाक और दखल देने वाला हो, लेकिन उसे उतना बुरा नहीं लगा जितना उसे लगना चाहिए था। फिर भी, उसने विषय बदल दिया। ‘तो आपका जन्म तेहरान में हुआ था?’ हां, चार बेटियों में सबसे बड़ी। बेचारे बाबा! उन्हें एक बेटा चाहिए था, लेकिन शैतान चुपके से उनके बिस्तर में घुस आया। बाबा बहुत सिगरेट पीते थे और बहुत कम खाते थे। वो कहते थे, "ये मुझे मार रहा है।" उनका मतलब शासन से था, हमसे नहीं। आखिरकार, उन्हें एक रास्ता मिल गया। मदार्जन जाना नहीं

चाहती थी, लेकिन प्यार के कारण मान गई। हमें चुपके से स्विट्जरलैंड ले जाया गया। क्या आप कभी वहां गए हैं?
'नहीं, यह पहली बार है जब मैं इस्तांबुल से बाहर गई हूं,' पेरी ने कहा। “खैर, स्विट्जरलैंड बहुत अच्छा है, हद से ज़्यादा अच्छा, पिघले हुए कारमेल में नहाने जैसा अच्छा, अगर आप समझ रहे हैं कि मेरा क्या मतलब है। मैंने अपने जीवन के चार साल शांत सियोन में बिताए। मानो या न मानो, एक बार मैंने एक लड़की को अपने पिता से शिकायत करते हुए सुना कि सुपरमार्केट में उसकी पसंदीदा किस्म की बेरीज़ नहीं मिल रही हैं! मतलब, दुनिया में उथल-पुथल मची है, बर्लिन की दीवार गिर चुकी है, और तुम बेरीज़ की बात कर रही हो? हालाँकि मैं बच्चा था, फिर भी मुझे महसूस हो रहा था कि कुछ रोमांचक होने वाला है। मुझे दीवारें गिरते देखना बहुत अच्छा लगता है। ठीक है, स्विट्जरलैंड में जीवन अच्छा था, लेकिन मेरी पसंद के हिसाब से थोड़ा धीमा था। तब से मैं बीते हुए समय की भरपाई करने के लिए भागदौड़ कर रहा हूँ।”
पेरी ने ध्यान से सुना, उसके चेहरे के भाव जिज्ञासा से प्रसन्नता में बदल गए।
उसके बाद हम पुर्तगाल चले गए। मुझे वहाँ अच्छा लगा, लेकिन बाबा को नहीं। अभी भी सिगरेट पीते थे, शिकायत करते रहते थे। लिस्बन में दो साल, जब मैंने पुर्तगाली भाषा सीखनी ही शुरू की थी, तभी अचानक! बच्चों, सामान पैक करो, हम इंग्लैंड जा रहे हैं, महारानी इंतज़ार कर रही हैं! मैं चौदह साल की थी, भगवान के लिए! जब आप चौदह साल के होते हैं, तो आपको अपनी समस्याओं से निपटना चाहिए, न कि अपने परिवार की। खैर, जिस साल हम पहुँचे, उसी साल बाबा का निधन हो गया। डॉक्टर ने कहा कि उनके फेफड़े कोयले जैसे हो गए थे। क्या आपको नहीं लगता कि एक डॉक्टर के लिए रूपक का इस्तेमाल करना थोड़ा अजीब है - क्या वह खुद को कवि समझता है या क्या?’ शिरीन ने मेज पर उंगलियाँ थपथपाईं और अपने मैनीक्योर को देखा। ‘इंग्लैंड बाबा का सपना था, मेरा नहीं, और मैं यहाँ एक गुड़ की टार्ट की तरह ब्रिटिश हूँ, लेकिन खजूर के केक की तरह बेमेल!’
पेरी ने कहा, 'तुम्हारे लिए घर का मतलब क्या है?'
‘घर?’ शिरीन ने नापसंदगी जताते हुए दांत किटकिटाए। ‘मैं तुम्हें एक सार्वभौमिक नियम बताती हूँ: घर वही है जहाँ तुम्हारी दादी रहती हैं।’ पेरी मुस्कुराई। 'यह तो अच्छा है। तुम्हारा कहाँ है?'

'दफ़न। उनका निधन पाँच साल पहले हुआ था। वह मुझे, अपने पहले पोते/पोती को, बहुत प्यार करती थीं। पड़ोसियों ने बताया कि अपनी आखिरी साँस तक उन्हें उम्मीद थी कि हम वापस आएँगे। यही तो मेरा घर है! तेहरान में मामानी के साथ दफ़न। तो, तकनीकी रूप से, मैं बेघर हूँ।'
'मैं... उह... क्षमा चाहती हूं,' पेरी ने कहा, अपनी ही झिझक में बहिर्मुखी लोगों के साथ तालमेल बिठाने में असमर्थता को महसूस करते हुए, जिनमें से शिरिन स्पष्ट रूप से एक थी।
‘पता है उस कब्रिस्तान को क्या कहते हैं? ज़हरा का स्वर्ग। बढ़िया है ना? सभी कब्रिस्तानों का नाम “स्वर्ग” ही होना चाहिए। कयामत के दिन, खौलते कड़ाहे, पतले पुलों और ऐसी ही दूसरी चीज़ों से सर्वशक्तिमान को परेशान करने की कोई ज़रूरत नहीं। मरते हो, सीधे स्वर्ग जाते हो, बात खत्म!’
पेरी वहीं खड़ी रह गई, मानो मंत्रमुग्ध और हैरान भी हो। उसे ऐसा लग रहा था कि उसकी नई दोस्त, जो उससे हमउम्र थी, उससे दुगनी उम्र जी चुकी थी और उसने दुनिया को उसके पूरे परिवार से भी ज़्यादा देखा था। पेरी ने कभी किसी को परलोक के बारे में इस तरह बात करते नहीं सुना था। यहाँ तक कि अपने पिता को भी नहीं, जो अक्सर धर्म से जुड़ी हर बात से नफ़रत करते थे।
कुछ देर में मेंसुर और सेल्मा लौट आए। अब तक, दंपति को आखिरकार एक बात पर सहमति बन गई थी: शिरीन। अलग-अलग कारणों से, लेकिन समान तीव्रता से, उस लड़की ने उन दोनों को ही परेशान कर रखा था। वे दोनों अलग-अलग अपनी बेटी को उस ब्रिटिश-ईरानी लड़की से दूर रहने के लिए कहने की योजना बना रहे थे। निश्चित रूप से, वह उस पर बुरा प्रभाव डालेगी।

लगभग एक घंटे बाद, चक्कर लगाते-लगाते वे ऑक्सफोर्ड यूनियन के सामने अपना भ्रमण समाप्त करने पहुँचे। विदा होते समय, शिरिन ने पेरी को ऐसे गले लगाया जैसे वे बहुत दिनों से बिछड़ी दोस्त हों। उसका परफ्यूम इतना तेज़ और कस्तूरी जैसा था कि एक पल के लिए पेरी को चक्कर आने लगा, उसका सिर चकराने लगा।
शिरिन ने कहा कि अंग्रेज, हालांकि विनम्र और शिष्ट होते हैं, लेकिन एक नए देश में अकेले विदेशी के लिए बहुत अधिक आरक्षित और सतर्क हो सकते हैं, और

पेरी के लिए अन्य अंतरराष्ट्रीय छात्रों या मिश्रित सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले लोगों के साथ समय बिताना बेहतर होगा - जैसे कि वह खुद।
‘तो, मुझे लगता है कि हम फिर मिलेंगे?’ पेरी ने कहा।
उसने ये बात सचमुच कही थी। क्योंकि, भले ही वो शिरीन के व्यक्तित्व से थोड़ी घबराई हुई थी, फिर भी वो उसकी अंतहीन बकबक, आत्मविश्वास और दिलेरी से आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकी। इंसान हमेशा उस चीज़ की चाह रखता है जो उसके पास नहीं होती।
‘मुझसे फिर मिलेंगे?’ शिरिन ने सेल्मा और मेन्सुर के गालों पर चुंबन करते हुए कहा, हालांकि वे दोनों सख्ती से खुद को संभाले हुए थीं। ‘ज़रूर मिलेंगे! बताना भूल गई थी, हम एक ही क्लास में हैं।’
‘सचमुच?’ पेरी ने पूछा।
‘जी हाँ।’ शिरीन के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। ‘असल में, तुम मेरे ठीक सामने हो। और अगर तुमने शोर मचाने की हिम्मत की, तो मैं हंगामा मचा दूँगी… मज़ाक कर रही हूँ। तुर्की और ईरान, पड़ोसी, बिल्कुल नक्शे की तरह। हम अच्छे दोस्त बनेंगे। या फिर बड़े दुश्मन। शायद हम युद्ध शुरू कर दें। तीसरा विश्व युद्ध! क्योंकि तुम जानती हो कि यही होने वाला है, है ना? एक और भयानक युद्ध होगा क्योंकि मध्य पूर्व पूरी तरह से बर्बाद हो चुका है – उफ़, मेरे शब्दों के लिए माफ़ करना।’
फिर, पेरी के चौंके हुए माता-पिता की ओर मुड़कर और उनके उपनाम का गलत उच्चारण करते हुए, शिरिन ने घोषणा की, 'श्रीमान और श्रीमती नावाम्त्लो, आप अपनी बेटी के बारे में चिंता न करें। वह सुरक्षित हाथों में है। अब से, मेरा काम उस पर नज़र रखना होगा।'

खामोशी

ऑक्सफोर्ड, 2000
माता-पिता के स्टेशन जाने के बाद, पेरी अकेलेपन की गहरी अनुभूति के साथ अपने कॉलेज के सामने वाले चौक की सीढ़ियों पर लौट आई। उनके झगड़ों और कहा- सुनी से एक बार के लिए मुक्त होना रोमांचक तो था, लेकिन कम से कम वे उसके लिए परिचित तो थे, और उनकी अनुपस्थिति में उसे एक बेचैनी महसूस हो रही थी, मानो उसके पैरों तले से कालीन खींच लिया गया हो और उसे ऊबड़-खाबड़ ज़मीन पर चलने के लिए मजबूर किया गया हो। अब जब दिन का गर्व और उत्साह थम चुका था, तो वह एक गहरी बेचैनी से घिर गई। उसे एहसास हुआ कि वह अपने जीवन के अगले बड़े पड़ाव के लिए उतनी तैयार नहीं थी जितना उसने सोचा था। इस्तांबुल की दोपहर की नमकीन हवा के विपरीत, खुद को हवा के झोंके से बचाते हुए, उसने एक गहरी साँस ली और धीरे से छोड़ी। उसकी नाक परिचित गंधों को तलाश रही थी - तले हुए मसल्स, भुने हुए शाहबलूत, तिल के बैगेल, भुनी हुई भेड़ की आंतें, बसंत में जूडास के पेड़ों की सुगंध और सर्दियों में डैफ्ने के पौधों की खुशबू। जैसे कोई पागल जादूगरनी अपने जादुई नुस्खों के नुस्खे भूल गई हो, इस्तांबुल ने एक ही बर्तन में अजीबोगरीब सुगंधों को मिला दिया था: बासी और मीठी; पेट खराब करने वाली और मुंह में पानी लाने वाली। लेकिन यहाँ ऑक्सफोर्ड में, हवा में फैली राल जैसी गंध अटल और स्थिर लग रही थी।
वह अंधेरी लकड़ी की सीढ़ियों से चढ़कर अपने कमरे में गई, जहाँ उसने अपने सूटकेस खोले, कपड़े निकाले और अलमारी में टांगे, दराजों को व्यवस्थित किया और मेज पर परिवार की तस्वीरें सजाईं। उसने अपनी डायरी बिस्तर के बगल में रख दी।
वह अपने साथ अपनी कुछ पसंदीदा किताबें लाई थीं, कुछ तुर्की भाषा में, कुछ अंग्रेजी में - सादेघ हेदयेत की 'द ब्लाइंड आउल', एलिस मुनरो की 'द लव ऑफ अ गुड वुमन', जैडी स्मिथ की 'व्हाइट टीथ', माइकल कनिंघम की 'द आवर्स', अरुंधति रॉय की 'द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स', ओ ǧuz अताय की 'तुतुनमायनलर', इटालो कैल्विनो की 'इनविजिबल सिटीज', काज़ुओ इशिगुरो की 'एन आर्टिस्ट ऑफ द फ्लोटिंग वर्ल्ड'।

'तुम हमेशा पश्चिमी लेखकों को ही क्यों पढ़ती हो?' उसके इकलौते प्रेमी ने एक बार उससे पूछा था।
उस समय वह स्कूल में अपने अंतिम वर्ष में थी, और उससे तीन साल बड़ा वह लड़का विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र की पढ़ाई कर रहा था। प्रश्न में छिपे आरोप ने उसे चौंका दिया था। सच तो यह है कि पेरी स्थानीय और विश्व साहित्य दोनों पढ़ती थी। उसकी प्रवृत्ति किसी भी ऐसी किताब में खो जाने की थी जो उसकी कल्पना को आकर्षित करे और उसकी जिज्ञासा को जगाए, चाहे लेखक किसी भी देश का हो। फिर भी, अपने प्रेमी की तुलना में, जिसकी अलमारियों में तुर्की की किताबें थीं - और कुछ रूसी और दक्षिण अमेरिकी उपन्यास भी थे, जिनके बारे में वह कहता था कि वे शुद्ध हैं क्योंकि वे सांस्कृतिक साम्राज्यवाद के विकृत नजरिए से नहीं लिखे गए थे - उसकी पढ़ने की सूची बहुत यूरोपीय थी।
उन्होंने कहा था, 'जब मैं तुम्हें देखता हूं, तो मुझे एक विशिष्ट प्राच्य बुद्धिजीवी के रूप में उभरता हुआ नजर आता है। यूरोप से प्रेम करने वाला, लेकिन अपनी जड़ों से विरोधाभास रखने वाला।'
पेरी को यह बात कभी समझ नहीं आई कि जड़ों को शाखाओं या पत्तियों की तुलना में इतना महत्व क्यों दिया जाता है। पेड़ों में कई शाखाएँ और तंतु होते हैं जो धरती की प्राचीन मिट्टी के नीचे और ऊपर, हर दिशा में फैले होते हैं। अगर जड़ें भी एक जगह स्थिर नहीं रह सकतीं, तो इंसानों से असंभव की उम्मीद क्यों की जाए?
फिर भी, उसके प्रति आसक्त होते हुए भी, पेरी को अपराधबोध का अनुभव हुआ। हालाँकि वह उससे कहीं अधिक उत्साही पाठक थी, फिर भी ऐसा लग रहा था मानो उसने किताबों के शहर की गलियों और संकरी सड़कों पर घूमते हुए, वहाँ के आकर्षण और स्वादों से प्रभावित होकर अपना समय व्यर्थ ही व्यतीत किया हो। उसने कुछ समय के लिए पश्चिमी पुस्तकों पर पैसे खर्च न करने का प्रयास किया था, लेकिन उसका यह संकल्प जल्दी ही टूट गया। एक अच्छी किताब अच्छी किताब होती है और बस यही मायने रखता है। इसके अलावा, वह पढ़ने के प्रति इस रूढ़िवादी रवैये को बिल्कुल भी नहीं समझ पा रही थी। दुनिया के कई हिस्सों में, आप वही होते हैं जो आप कहते हैं, जो आप करते हैं और जो आप पढ़ते हैं; तुर्की में, पहचान के सवालों से घिरे सभी देशों की तरह, आप मुख्य रूप से वही होते हैं जिसे आप अस्वीकार करते हैं। ऐसा लगता था कि लोग किसी लेखक के

बारे में जितना अधिक बोलते हैं, उतनी ही कम संभावना होती है कि उन्होंने उनकी किताबें पढ़ी हों।
अंततः, उनका रिश्ता, साहित्य में उनकी भिन्न रुचियों से कहीं अधिक अंतरंगता के प्रति उनके अलग-अलग दृष्टिकोणों के कारण, टूट गया। मध्य पूर्व में एक खास तरह के प्रेमी होते हैं जो यौन प्रस्तावों को ठुकराने पर चिढ़ जाते हैं; लेकिन साथ ही, जैसे ही आप उनकी इच्छाओं का भावुकता से जवाब देने लगती हैं, उनकी नज़रों में आपकी अहमियत कम हो जाती है। चाहे आप 'ना' कहें या 'हाँ', दोनों ही स्थितियों में आपका रिश्ता खत्म हो जाता है। किसी भी तरह से, यह एक ऐसी स्थिति थी जिसमें जीतना नामुमकिन था।
अपना कमरा सजाने के बाद, पेरी ने शीशे वाली खिड़की खोली जो कॉलेज के बगीचे के हरे-भरे लॉन की ओर खुलती थी। हवा में एक खालीपन छाया हुआ था, जिससे दूर-दूर तक दिखाई देने वाली हर आकृति धुंधली हो रही थी। पास के पेड़ों की छायाओं को देखते हुए, वह सिहर उठी, मानो कोई आत्मा या जिन्न, उसकी तरस खाकर, उसके अकेलेपन को सहला रहा हो। क्या यह धुंध में छिपा बच्चा हो सकता है? उसे ऐसा नहीं लगा। उसने उसे बहुत समय से नहीं देखा था। शायद कोई अंग्रेज़ भूत। ऑक्सफ़ोर्ड एक ऐसी जगह लगती थी जहाँ भूत, बेरोक-टोक और ज़रूरी नहीं कि डरावने हों, अपनी मर्ज़ी से घूम सकते हैं।
ऑक्सफ़ोर्ड में पेरी को सबसे पहले जो बात हैरान कर गई, वह थी शांति। यही एक ऐसी विचित्रता थी, और आने वाले कई महीनों तक उसके लिए यही बनी रही, जिससे तालमेल बिठाना उसके लिए मुश्किल था - शोर का अभाव। इस्तांबुल दिन-रात बेशर्मी से शोरगुल से भरा रहता था; यहाँ तक कि जब कोई खिड़कियाँ गिरा देता, पर्दे खींच लेता, कान में इयरप्लग लगा लेता और कंबल को ठुड्डी तक ओढ़ लेता, तब भी शोर, मुश्किल से कम होता हुआ, दीवारों से होकर नींद में खलल डालता था। सड़क विक्रेताओं की आखिरी चीखें, देर रात ट्रकों की गड़गड़ाहट, एम्बुलेंस के सायरन, बोस्फोरस पर नावों की आवाज, प्रार्थनाएँ और गालियाँ, जो आधी रात के बाद और भी बढ़ जाती थीं, हवा में गूंजती रहती थीं, मानो छंटने का नाम ही न लेती हों। इस्तांबुल, प्रकृति की तरह, खालीपन से नफरत करता था। अपने बिस्तर पर बैठी पेरी को सीने में एक अजीब सी बेचैनी महसूस हुई। उसके माता-पिता की चिंता उस पर भी हावी हो गई थी, हालांकि इसके पीछे उसके अपने कारण थे। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह एक ढोंगी हो। उसे डर था कि वह यहाँ कभी सफल नहीं हो पाएगी, उन छात्रों के बीच जो उससे कहीं अधिक शिक्षित और

वाक्पटु थे। स्कूल में सीखी और स्वयं के द्वारा रात भर पढ़ने से निखरी हुई अंग्रेज़ी शायद दर्शनशास्त्र, राजनीति और अर्थशास्त्र की डिग्री के कुछ उन्नत पाठ्यक्रमों के लिए पर्याप्त न हो। हालाँकि उसने इसे यथासंभव छिपाने की पूरी कोशिश की, पेरी को असफलता का गहरा डर था। उसका गला सूख गया। उसे आश्चर्य हुआ कि उसकी आँखों में इतनी जल्दी आँसू कैसे आ गए। जब आँसू आए, तो वे गर्म और परिचित से महसूस हुए और किसी तरह उनमें उदासी का कोई भाव नहीं था।
एक दस्तक ने उसे चौंकाते हुए वर्तमान क्षण में वापस ला दिया। जवाब का इंतजार किए बिना, दरवाजा खुल गया और शिरीन अंदर आ गई।
‘नमस्ते पड़ोसी!’
पेरी ने अनजाने में ही सूंघा और खुद को संभालने की कोशिश करते हुए मुस्कुराई।
‘मैंने तुमसे कहा था कि दरवाजा खुला छोड़ देना।’ शिरीन कमरे के बीचोंबीच खड़ी थी, हाथ कमर पर रखे हुए। ‘क्या लड़का है?’
'क्या?'
‘तुम रो रही हो। क्या तुम्हारा अपने बॉयफ्रेंड से ब्रेकअप हो गया?’ 'नहीं।'
'अच्छा, तुम्हें किसी आदमी के लिए कभी आंसू नहीं बहाने चाहिए। फिर क्या हुआ? तुमने अपनी गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप कर लिया?'
‘क्या? नहीं!’
‘ठीक है, आराम से,’ शिरिन ने बनावटी माफी मांगते हुए हाथ ऊपर उठाते हुए कहा। ‘मैं देख सकती हूँ कि तुम बिल्कुल सीधे-सादे हो। मैं तो ताज़ा पास्ता खाने वाली टाइप की हूँ।’
पेरी की आंखें चौड़ी हो गईं।
शिरिन ने सिर झुकाते हुए कहा, 'अगर ये आंसू किसी प्रेमी के लिए नहीं हैं, तो तुम्हें घर की याद सता रही होगी।' 'कितने भाग्यशाली हो तुम!'
'मैं भाग्यशाली हूँ?'
'हां, अगर आपको घर की याद आ रही है, तो इसका मतलब है कि आपका कहीं न कहीं एक घर तो है ही।'

शिरिन मेज के पास वाली कुर्सी पर बैठ गई और अपनी जेब से नेल पॉलिश की एक बोतल निकाली - इतनी चटख लाल कि ऐसा लग रहा था मानो इसे बनाने में कई जानवरों की बलि दी गई हो। 'क्या आपको कोई आपत्ति है?'
एक बार फिर, जवाब का इंतजार किए बिना, उसने अपनी चप्पलें उतार दीं और अपने पैरों के नाखूनों पर नेल पॉलिश लगाने लगी। हवा में एक तीखी रासायनिक गंध फैल गई।
‘तो अब जब आपके माता-पिता चले गए हैं, तो क्या मैं आपसे कुछ सवाल पूछ सकती हूँ?’ शिरीन ने कहा। ‘क्या आप धार्मिक हैं?’
‘मैं? सच में नहीं…’ पेरी ने बड़ी मुश्किल से कहा, मानो वह कोई ऐसी बात बता रही हो जिसे समझने में उसे काफी समय लगा हो। ‘लेकिन मुझे भगवान की परवाह है।’
‘हम्म। मुझे इससे ज़्यादा जानकारी चाहिए। जैसे, उदाहरण के लिए, क्या आप सूअर का मांस खाते हैं?’
'नहीं!'
‘वाइन के बारे में क्या? क्या आप पीते हैं?’
'हां, कभी-कभी, अपने पिता के साथ।'
'अहा, मुझे भी यही लगा था। तुम आधे-आधे हो।'
पेरी ने भौंहें चढ़ा लीं। 'तुम्हारा क्या मतलब है?'
लेकिन शिरीन अब और सुन नहीं रही थी। ऐसा लग रहा था कि वह अपनी जेबों में कुछ और ढूंढ रही है। जब वह उसे नहीं मिली, तो उसने नाक सिकोड़ी, खड़ी हुई और सीढ़ियों के उस पार अपने कमरे की ओर चल पड़ी, अपनी ऊँची एड़ी के बल लड़खड़ाते हुए ताकि उसके नए रंगे हुए नाखूनों पर दाग न लगे।
जिज्ञासा और थोड़ी झुंझलाहट के साथ पेरी, शिरिन के पीछे-पीछे उसके कमरे में गई, जिसका दरवाज़ा खुला हुआ था। अंदर फैली अव्यवस्था देखकर वह एकदम रुक गई। मेकअप किट, फेस क्रीम, लेस के दस्ताने, परफ्यूम की बोतलें, आधे खाए हुए सेब, मिठाई के रैपर, खाली चिप्स के पैकेट, कुचले हुए कोक के डिब्बे, किताबें और पत्रिकाओं के फटे हुए पन्ने इधर-उधर बिखरे पड़े थे। इनमें से कुछ पन्ने दीवारों पर चिपकाए गए थे, कोल्डप्ले के पोस्टर और काले बालों वाली एक आकर्षक महिला की ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर के बगल में, जिस पर 'फोरूघ फर्रोखज़ाद' लिखा था। कमरे के दूसरे छोर पर नीत्शे का एक विशाल पोस्टर, अपनी घनी मूंछों के साथ, उसे घूर रहा था। उसके बगल में एक फारसी

लघुचित्र की बड़ी, रंगीन फोटोकॉपी जैसी कोई चीज़ थी, जिसका फ्रेम सोने की तरह चमक रहा था। उसके नीचे शिरिन खड़ी थी, अपने बैग में कुछ ढूंढ रही थी।
‘तुम्हारा मतलब क्या था?’ पेरी ने दोहराया।
आधा मुसलमान, आधा आधुनिक। सूअर का मांस देखना भी पसंद नहीं, लेकिन शराब से संतुष्ट – या वोदका या टकीला से… आप समझ ही गए होंगे। रमज़ान के मामले में थोड़ा ढीला-ढाला, कभी-कभार रोज़ा रखता है, लेकिन बीच के दिनों में खाता है।
धर्म नहीं छोड़ेगा, क्योंकि कौन जानता है कि मृत्यु के बाद जीवन है या नहीं, सावधानी बरतना ही बेहतर है। अपनी आज़ादी भी नहीं छोड़ना चाहता। थोड़ा यह, थोड़ा वह। समय का महान मिश्रण: मुस्लिमस मॉडर्नस।
‘अरे, मुझे बुरा लगा,’ पेरी ने कहा।
‘बेशक, तुम करती हो। एक आधुनिक मुस्लिम हमेशा करता है।’ इतना कहकर शिरीन ने अपने बैग से एक पारदर्शी बोतल निकाली – नाखूनों के लिए टॉपकोट – और खुशी से बोली, ‘मिल गया!’
पेरी ने शिरिन को घूरकर देखा। 'अगर मैं वही हूं जो तुम कहती हो, तो तुम क्या हो?'
‘ओह, बहन, मैं तो बस एक घुमक्कड़ हूँ,’ शिरीन ने कहा। ‘मेरा कहीं कोई ठिकाना नहीं है।’
अपने पैर के नाखूनों पर टॉपकोट लगाते हुए, शिरिन कट्टरपंथियों, पाखंडियों, रूढ़िवादी सोच वाले लोगों और जिन्हें वह अज्ञानी कहती थी, उन पर जमकर बरस पड़ी। उसके विचार नदी की तरह बह रहे थे, शब्द तरल, उग्र, छलकते और खोजते हुए। उसने कहा कि जो लोग सच्चे दिल से विश्वास करते हैं या नहीं करते, वे उसकी नज़र में समान रूप से सम्मान के पात्र हैं। वह उन लोगों को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी जो सोचते नहीं थे। उसने उन्हें नकलची कहा।
उसके बाद छाई खामोशी में पेरी दो विपरीत दिशाओं में खिंची चली गई। उसका एक हिस्सा शिरीन के तर्क-वितर्क करने के अकड़ भरे अंदाज़ को नापसंद कर रहा था। वह लड़की के गुस्से को महसूस कर सकती थी, लेकिन किस बात पर - अपनी मातृभूमि पर, अपने पिता पर, अपने धर्म पर, ईरान के मुल्लाओं पर - वह निश्चित नहीं थी। दूसरा हिस्सा शिरीन को सुनना पसंद कर रहा था, उसकी बातों में उसे अपने पिता की आवाज़ की गूंज सुनाई दे रही थी। किसी भी तरह, घर से दूर अपनी पहली शाम को वह इस तरह की बातचीत में शामिल होने की उम्मीद नहीं कर रही थी। वह कक्षाओं, प्रोफेसरों, कॉफी पीने की जगहों, सबसे अच्छे सैंडविच मिलने की

जगहों और ऑक्सफोर्ड में रोज़मर्रा की ज़िंदगी की बारीकियों के बारे में बात करना चाहती थी।
बारिश शुरू हो गई; कमरे में हल्की, लगातार बूँदों की आवाज़ गूँज उठी। इस आवाज़ का शिरीन पर ज़रूर सुकून देने वाला असर हुआ होगा, क्योंकि जब उसने दोबारा बोलना शुरू किया, तो उसकी आवाज़, भावनाओं से भरी होने के बावजूद, पहले से ज़्यादा शांत थी। 'माफ़ करना, मैंने तुम्हें अपनी निजी बातों से परेशान कर दिया। यह तुम्हारी मर्ज़ी है कि तुम किस पर विश्वास करो, इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है। पता नहीं क्यों मैं उस तरह बहक गई।'
पेरी ने कहा, 'कोई बात नहीं। मुझे बस इस बात की खुशी है कि मेरी मां यहां नहीं है।'
शिरिन खिलखिलाकर हंसी - एक हल्की-फुल्की हंसी, लगभग बचकानी।
पेरी ने कहा, 'मुझे बाकी छात्रों के बारे में बताओ। क्या वे सभी बहुत होशियार हैं?'
‘तुम्हें क्या लगता है कि ऑक्सफोर्ड में हर कोई आइंस्टीन है?’ शिरिन ने आखिरी शब्द पर नाक सिकोड़ते हुए कहा। ‘देखो, छात्र मिल्कशेक की तरह होते हैं, उनमें कई स्वाद होते हैं। मेरे हिसाब से यहाँ लगभग छह तरह के छात्र हैं।’
सबसे पहले, सामाजिक-पर्यावरणीय-न्याय के समर्थक थे। शिरिन ने बताया कि वे बातूनी, गंभीर, तीखे स्वभाव के और बोर्नियो के वर्षावनों को बचाने या नेपाल में सताए गए बौद्ध भिक्षुओं के लिए चलाए जा रहे अभियानों में डूबे रहते थे। उन्हें पहचानना आसान था, उनके ढीले स्वेटर, मोतियों के हार, बेतरतीब हेयरकट, मुड़ी हुई जींस, गंभीर भाव-भंगिमाएं और हमेशा हस्ताक्षर इकट्ठा करने के लिए तैयार बॉलपॉइंट पेन और पैड। वे रात में धरना-प्रदर्शन करते थे, दिन में हर जगह पर्चे लगाते थे और एक के बाद एक गरमागरम बहसों में उलझ जाते थे। उन्हें आपको इस बात का दोषी महसूस कराना अच्छा लगता था कि आप अपने तुच्छ जीवन से कहीं अधिक बड़े और सार्थक काम का हिस्सा नहीं हैं। दूसरे थे यूरोट्रैश। ये अमीर यूरोपीय परिवारों से आते थे, जो किसी न किसी तरह एक-दूसरे को जानते थे; छुट्टियों में वे एक ही रिसॉर्ट में स्कीइंग करने जाते और वापस आकर अपनी टैनिंग दिखाते और तस्वीरें दिखाते। एक परिष्कृत प्रकार के अंतर्विवाह का पालन करते हुए, वे केवल अपने ही परिवार के सदस्यों से मिलते-जुलते थे। लंबे नाश्ते में वे मक्खन से लदी ब्रेड

खाते थे और फिर भी पतले बने रहते थे। उन्हें शिकायत करना पसंद था कि क्रोइसैन बासी हैं और कैपुचीनो नकली हैं, और वे मौसम के बारे में बात करना कभी बंद नहीं करते थे।
तीसरा, सरकारी स्कूलों के छात्र। ये लोग चुनिंदा सामाजिकता पसंद करते हैं। वे बहुत जल्दी अपने समूह बना लेते थे, और अपने दोस्तों का चुनाव ज्यादातर उनके पढ़े हुए स्कूलों के आधार पर करते थे। भरपूर ऊर्जा और आत्मविश्वास के साथ, वे कई तरह की पाठ्येतर गतिविधियों में जुट जाते थे। वे नाव चलाते, डोंगी चलाते, तलवारबाजी करते, अभिनय करते; क्रिकेट, गोल्फ, टेनिस, रग्बी, वाटर पोलो खेलते और खाली समय में ताई ची या कराटे का अभ्यास करते थे। इन सब गतिविधियों से उन्हें प्यास जरूर लगती होगी, क्योंकि वे 'शराब पीने की सभाओं' में इकट्ठा होते थे, जहाँ वे काले टाई पहनकर खूब शराब पीते थे और उन लोगों को बाहर रखते थे जिनका सामाजिक स्तर उनके क्लबों का सदस्य बनने के लिए उपयुक्त नहीं होता था। क्लब में शामिल होने के लिए नामांकन आवश्यक था, और किसी भी संभावित उम्मीदवार को बाहर किया जा सकता था।
फिर अंतर्राष्ट्रीय छात्र थे: भारतीय, चीनी, अरब, इंडोनेशियाई, अफ्रीकी… इनमें से अधिकांश दो उपसमूहों में बँटे हुए थे। एक वे जो चुंबक की तरह एक-दूसरे की ओर आकर्षित होते थे और परिचित माहौल की तलाश में रहते थे। वे ऐसे समूहों में भोजन करते, पढ़ाई करते, धूम्रपान करते और समय बिताते थे जहाँ वे अपनी मातृभाषा बोल सकें। और दूसरे वे जो ठीक इसके विपरीत करते थे, अपने हमवतन लोगों से यथासंभव दूरी बनाए रखने का प्रयास करते थे। बाद वाले छात्रों के लहजे सबसे अस्थिर थे, जो ब्रिटिश या कभी-कभी अमेरिकी लहजे में बोलने की कोशिश में नाटकीय रूप से बदल जाते थे।
पांचवा वर्ग था वे विलक्षण प्रतिभा के धनी छात्र। गंभीर, अध्ययनशील, बुद्धिमान, जिज्ञासु, सम्मान के पात्र, लेकिन जिनसे मित्रता करना असंभव था। गणित, भौतिकी, दर्शनशास्त्र में वे जंगली मशरूम की तरह उग आते थे, खुली धूप के बजाय अपने शांत, छायादार कोनों को पसंद करते थे। वे अपने विषयों का अध्ययन ऐसे जुनून से करते थे जो सनक की हद तक पहुँच जाता था। आप उन्हें भीड़ के बीच भी पहचान सकते थे, पुस्तकालय से अपने ट्यूटोरियल की ओर तेज़ी से चलते हुए, गलियारों में प्रोफेसरों के साथ मुद्दों पर चर्चा करने के लिए उत्सुक, लेकिन अन्यथा अपने एकांत में पूरी तरह संतुष्ट; वास्तव में, वे

कॉलेज बार या जूनियर कॉमन रूम में अपने साथियों के साथ रहने की तुलना में अपनी किताबों के साथ अधिक सहज महसूस करते थे।
जैसे-जैसे पेरी शिरिन की बातें सुनती गई, उसे घबराहट के साथ-साथ उत्साह भी महसूस हुआ। वह इस नई दुनिया को जानने के लिए तैयार भी थी और डरी हुई भी, जिसमें कदम रखने के लिए उसे हिम्मत की ज़रूरत थी। 'तुम्हें यह सब कैसे पता?'
शिरिन हंस पड़ी। 'क्योंकि मैंने हर ग्रुप के लड़कों और लड़कियों को डेट किया है।'
‘क्या आपने … लड़कियों को डेट किया?’
'ज़रूर। मैं एक औरत से प्यार कर सकता हूँ, मैं एक मर्द से प्यार कर सकता हूँ। मुझे नामों या लेबल से कोई फ़र्क नहीं पड़ता।'
‘ओह,’ पेरी ने बेचैनी से कहा। ‘अच्छा…उह, छठी श्रेणी के बारे में क्या?’ ‘आहा!’ शिरीन बोली, उसकी गहरी आँखों में सुनहरी चमक आ गई। ‘ये वे लोग हैं जो यहाँ एक रूप में आते हैं और फिर बिल्कुल कुछ और बन जाते हैं। वे खूब तरक्की करते हैं। बदसूरत बत्तखें हंस बन जाती हैं; कद्दू रथ बन जाते हैं; सिंड्रेला नायिका बन जाती हैं। कुछ छात्रों के लिए ऑक्सफोर्ड एक जादुई छड़ी की तरह काम करता है, यह आपको छूता है और बस! आप मेंढक से राजकुमार बन जाते हैं।’
पेरी ने सिर हिलाया। 'ऐसा कैसे?'
'खैर, ऐसा कई तरीकों से होता है, लेकिन आमतौर पर यह किसी की बदौलत होता है... शायद किसी ट्यूटर की वजह से। कोई ऐसा व्यक्ति जो आपको चुनौती देता है और आपको खुद को वैसे ही देखने में मदद करता है जैसे आप वास्तव में हैं।' शिरिन के लहजे में कुछ ऐसा था जिसने पेरी को उत्सुक कर दिया। 'क्या यह तुम्हारा भी अनुभव है?'
‘जी हां, आपने सही समझा! मैं टाइप सिक्स हूं,’ शिरिन ने कहा। ‘एक साल पहले तो आप मुझे पहचान ही नहीं पाते। मैं गुस्से का पुतला थी।’
और फिर क्या हुआ?
शिरिन ने कहा, 'प्रोफेसर अज़ूर की वजह से ही ऐसा हो पाया! उन्होंने मेरी आंखें खोल दीं। उन्होंने मुझे आत्मनिरीक्षण करना सिखाया। आज मैं पहले से कहीं अधिक शांत हूं।'

अगर यह उसका शांत स्वभाव था, तो पेरी यह जानना भी नहीं चाहती थी कि दूसरी शिरिन कैसी रही होगी। उसने पूछा, 'प्रोफेसर अज़ूर कौन हैं?'
‘तुम्हें नहीं पता?’ शिरिन ने होंठों को ऐसे चटकाया जैसे उसकी जीभ पर कुछ मीठा लगा हो। ‘अज़ूर यहाँ चलता-फिरता किंवदंती है!’
'वह क्या पढ़ाता है?'
शिरिन के चेहरे पर एक मुस्कान सी दौड़ गई। 'हे भगवान!'
'वास्तव में?'
‘सचमुच,’ शिरिन ने कहा। ‘वह तो मानो स्वयं भगवान के समान हैं। उन्होंने नौ पुस्तकें प्रकाशित की हैं, और वे हमेशा किसी न किसी पैनल चर्चा या सम्मेलन में उपस्थित रहते हैं। वाकई, वे एक मशहूर हस्ती हैं। पिछले साल टाइम पत्रिका ने उन्हें दुनिया के सौ सबसे प्रभावशाली लोगों में शामिल किया था।’
बाहर तेज हवा चल रही थी, जिससे इमारत में कहीं कोई खिड़की बार-बार खुल और बंद हो रही थी।
‘उनकी छात्रा होना बहुत मुश्किल था!’ शिरिन ने आगे कहा। ‘अरे यार, वो हमें इतना कुछ पढ़ने को देते थे! ये तो पागलपन था! हर तरह की अजीबोगरीब चीजें: कविता, दर्शन, इतिहास। मतलब मुझे ये सब पसंद हैं, गलत मत समझिए, अगर मुझे ये पसंद नहीं होते तो मैं मानविकी में क्यों होती? लेकिन वो ऐसे ग्रंथ ढूंढ निकालते थे जिनके बारे में किसी को कुछ पता नहीं होता था और हमसे उन पर बहस करने को कहते थे। फिर भी, मज़ा तो आया। जब मैंने पढ़ाई पूरी की तो मैं बिल्कुल बदल चुकी थी।’
पेरी ने गौर किया कि शिरिन के बोलना शुरू करते ही वह लगातार बोलती जा रही थी, मानो कोई गाड़ी जिसकी ब्रेक खराब हो गई हो और जो रुक न सके, जब तक कि कोई बाहरी ताकत उसे रोक न दे। अब वह कह रही थी, 'तुम्हें उसके सेमिनार में शामिल होने के बारे में सोचना चाहिए। खैर... अगर अज़ूर तुम्हें इजाज़त दे तो। उसे मनाना मुश्किल है। ऊंट को खाई पार करवाना तो बहुत आसान है।'
पेरी मुस्कुराई। 'तुर्की में भी यही कहावत प्रचलित है। उनके सेमिनार में प्रवेश पाना इतना मुश्किल क्यों है?'
‘आपको योग्य होना होगा। इसका मतलब है कि आपको अपने अकादमिक सलाहकार से इस बारे में चर्चा करनी होगी, इत्यादि। अगर वह मंजूरी दे देते हैं, तो आप

अज़ूर जा सकते हैं। यह थोड़ा पेचीदा है। उस आदमी को खुश करना मुश्किल है। वह आपसे सबसे अजीब सवाल पूछता है।’
'के बारे में?'
‘ईश्वर… अच्छाई और बुराई… विज्ञान और आस्था… जीवन और मृत्यु…’ शिरिन ने भौंहें चढ़ाते हुए और शब्द खोजने की कोशिश की। ‘सब कुछ। यह एक अकादमिक ऑडिशन जैसा है। मुझे कभी समझ नहीं आया कि वह क्या खोज रहा है। अंत में, वह केवल कुछ ही लोगों को चुनता है।’
'ऐसा लगता है कि तुम दो बार चुने गए हो,' पेरी ने कहा, बिना किसी कारण के उसके गले में ईर्ष्या जैसी कोई चीज अटक रही थी।
'बिल्कुल सही,' शिरीन ने कहा। उसकी आवाज़ में गर्व साफ झलक रहा था।
कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा।
‘मैं अब भी उनसे हफ्ते में कम से कम एक बार सलाह लेने जाती हूँ,’ शिरीन बड़बड़ाने लगी, एक मिनट से ज्यादा चुप नहीं रह पा रही थी। ‘सच कहूँ तो, मैं उनके लिए थोड़ी दीवानी हूँ। वो हद से ज्यादा हैंडसम हैं। नहीं, सिर्फ हैंडसम नहीं। वो बेहद आकर्षक हैं!’
पेरी अपनी कुर्सी पर अकड़कर बैठी रही, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या प्रतिक्रिया दे। ऊपरी तौर पर देखा जाए तो दोनों मुस्लिम देशों से थीं, जिनकी संस्कृति मिलती-जुलती थी। फिर भी, यह लड़की उससे कितनी अलग थी, जो हर तरह से अपने आप से और अपनी कामुकता से पूरी तरह सहज प्रतीत होती थी।
‘वाह, ऐसा लगता है कि तुम्हें अपने प्रोफेसर पर क्रश है,’ पेरी ने कहा। उसने बिना सोचे-समझे कहा, ‘क्या यह गलत नहीं है?’
शिरिन ने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और जोर से हंस पड़ी। 'ओह, यह तो बहुत ही गलत है। महारानी की इच्छा अनुसार मुझे हिरासत में रखिए!'
अपनी नासमझी पर शर्मिंदा होकर पेरी ने कंधे उचका दिए। 'खैर... सेमिनार तो बढ़िया लग रहा है। लेकिन मुझे दूसरी चीजों पर ध्यान देना है।'
'तुम्हारा मतलब है कि तुम नश्वर होने में बहुत व्यस्त हो,' शिरिन ने अपनी नई सहेली पर तीखी निगाहें गड़ाते हुए कहा। 'भगवान को इंतजार करना होगा।' हालांकि यह एक मज़ाक था, शिरिन की टिप्पणी इतनी अप्रत्याशित और तीखी थी कि पेरी विचलित हो गई। उसने खिड़की की ओर देखा और आसमान के धुंधले रंग में डूबता चला गया, जहाँ से आखिरी रोशनी गायब हो रही थी। हवा, बारिश, खिड़की के शटर की खटखटाहट, हवा में सर्दियों की ठंडक - भले ही यह पतझड़ की शुरुआत ही

थी - वह इन सब को आने वाले कई वर्षों तक याद रखेगी। यह उसके जीवन का एक निर्णायक क्षण था, हालांकि वह इसे तब तक नहीं समझ पाएगी जब तक यह बीत नहीं जाता।

मनोरंजन

इस्तांबुल, 2016
शेफ की जमकर तारीफों के बीच स्टार्टर्स तुरंत गायब हो गए। स्मोक्ड बैंगन प्यूरी, लहसुन और अखरोट के साथ सर्कसियन चिकन, ब्रॉड बीन्स के साथ आर्टिचोक, भरवां तोरी के फूल, नींबू मक्खन सॉस में ग्रिल्ड ऑक्टोपस। जब पेरी ने ऑक्टोपस देखा, तो उसके चेहरे पर उदासी छा गई। उसने ऑक्टोपस को भोजन मानना बहुत पहले ही छोड़ दिया था और उसने उसे कांटे से हल्के से दूर धकेल दिया।
फुटबॉल जगत की पेचीदगियों पर चर्चा करने के बाद, मेहमानों ने इस्तांबुल में होने वाले रात्रिभोज के एक और पसंदीदा विषय, राजनीति पर बातचीत शुरू की। और जब भी तीन से अधिक तुर्क एक साथ आते, तो वही सवाल अनिवार्य रूप से पूछा जाता था: 'हम किस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं?'
पेरी को लगा कि दुनिया के इस हिस्से में पूंजीवादी वर्ग में कुछ पाखंड है। बाहर से वे रूढ़िवादी और यथास्थितिवादी होने का दिखावा करते थे; लेकिन अंदर ही अंदर वे क्रोध और हताशा से उबल रहे थे। सार्वजनिक और निजी जीवन में उनका कोई खास मेल नहीं था, अभिजात वर्ग – विशेषकर व्यावसायिक अभिजात वर्ग
– जीवन भर सतर्क रहता था। पेरी देख सकती थी कि सार्वजनिक रूप से वे अपने विचार अपने तक ही सीमित रखते थे, राजनीति पर बात करने से बचते थे – जब तक कि मजबूरी न हो, और अगर ज़रूरत पड़ती भी थी तो वे कुछ मामूली टिप्पणियाँ कर बैठते थे, बस इतना ही। वे समाज में उदासीनता का भाव लिए घूमते थे, जैसे ग्राहक बिना किसी रुचि के दुकानों के पास से गुजर रहे हों। जब उन्हें कोई ऐसी बात दिखती जो उन्हें परेशान करती, जो अक्सर होता था, तो वे अपनी आँखें बंद कर लेते, कान बंद कर लेते, मुँह बंद कर लेते। लेकिन अपने घरों की चारदीवारी के अंदर, उनकी बेफिक्री का मुखौटा उतर जाता था; और उनका रूप बदल जाता था। उनकी उदासीनता बेशर्मी में बदल जाती थी, उनकी बड़बड़ाहट चीखों में, और उनका विवेक जल्दबाज़ी में। निजी पार्टियों में, इस्तांबुल के बुर्जुआ वर्ग के लोग राजनीति के बारे में जमकर बातें करते थे, मानो बाहर की चुप्पी की भरपाई करने के लिए ऐसा कर रहे हों।

धावक

ऑक्सफोर्ड, 2000
ऑक्सफ़ोर्ड में छात्रा होने का नाज़पेरी नालबंतोउलू पर दो तात्कालिक प्रभाव पड़े। पहला प्रभाव सिनेमाई था। अपने प्राचीन प्रांगणों और शांत उद्यानों, ऊँची मीनारों और कंगूरेदार प्राचीरों, औपचारिक भोजन कक्षों और गरिमामय गिरजाघरों के साथ, ऑक्सफ़ोर्ड ने खुलेपन, सुंदरता और उद्देश्य की भावना को जगाया, मानो हर विवरण एक सुव्यवस्थित परिदृश्य का हिस्सा हो - एक फिल्मी कहानी, जिसमें वह, एक नई छात्रा, मुख्य भूमिका में थी। उत्साह की अनुभूति। यह उम्मीद कि उसके केंद्र में रहते हुए कुछ महत्वपूर्ण घटित होने वाला है।
कई सुबह पेरी उत्साह से भरी, ऊर्जा और महत्वाकांक्षा से लबालब जागती थी, मानो अगर वह पूरी लगन से प्रयास करे तो कुछ भी असंभव नहीं था। स्नातक होने के बाद, उसने शिक्षा जगत में रहने या किसी शीर्ष अंतरराष्ट्रीय संस्थान में नौकरी पाने की योजना बनाई थी। वह खूब पैसा कमाएगी और अपने माता-पिता के लिए समुद्र किनारे एक बड़ा घर खरीदेगी - वे दोनों एक-एक मंजिल पर रहेंगे और उन्हें कभी झगड़ा नहीं करना पड़ेगा। अपने पिता को गौरवान्वित करने के लिए दृढ़ संकल्पित, वह पहले से ही अपनी डिग्री का प्रमाण पत्र फ्रेम में तराशकर, चमकाकर अपने बैठक कक्ष की दीवार पर, अतातुर्क के चित्र के बगल में टंगा हुआ देख सकती थी। शाम को, जब मेन्सुर राष्ट्रीय नायक को श्रद्धांजलि अर्पित करते, तो वे अपनी बेटी की उपलब्धियों को भी सलाम करते।
ऑक्सफोर्ड का पेरी पर दूसरा प्रभाव पहले प्रभाव के बिल्कुल विपरीत था। यह घुटन भरा था। एक तरह से खुद को अंदर समेट लेना, मानो टालमटोल करना; वह जगह इतनी विशाल थी कि उसे समझना मुश्किल था और उसे टुकड़ों-टुकड़ों में ही समझा जा सकता था। ऐसी सुबहों में पेरी अंतर्मुखी हो जाती, अपने ही विचारों में खो जाती, अपने ट्यूटोरियल की कठिनाई या प्रोफेसरों के तौर-तरीकों और उस औपचारिकता से भयभीत हो जाती जिसे वे अकादमिक अध्ययन के लिए आवश्यक बताते थे।
उसे जल्द ही पता चल गया कि विश्वविद्यालय का नाम छपे हुए स्वेटशर्ट और टेडी बियर रखना फैशन में नहीं था; ये तो सिर्फ पर्यटकों के लिए थे, फिर भी

वह एक मग खरीदने से खुद को रोक नहीं पाई। जब वह अपने भाई की शादी के लिए घर गई, तो उसने इसे अपने साथ ले जाने और अपनी माँ को उपहार में देने की योजना बनाई। सेल्मा शायद इसे अपनी अलमारी में, चीनी मिट्टी के घोड़ों और इस्लामी प्रार्थनाओं की किताबों के बगल में सजाकर रखती।
एक सुबह, आसमान में चाँद अभी भी ऊँचा था, पेरी ने अपनी खिड़की से एक छात्रा को देखा - कान में इयरफ़ोन लगाए, गाल लाल - वह मैदान में दौड़ रही थी। उसने खुद भी इस्तांबुल में कुछ बार ऐसा करने की कोशिश की थी, शहर की तमाम बाधाओं के बावजूद। यहाँ यह एक तरह का सौभाग्य था, टूटे फुटपाथों, सड़कों पर गड्ढों, यौन उत्पीड़न, और पैदल यात्री क्रॉसिंग पर भी धीमी न होने वाली कारों की चिंता न करना। उसी दिन, उसने अपने लिए एक जोड़ी स्पोर्ट्स शूज़ खरीदे।
कुछ कोशिशों और गलतियों के बाद उसे अपना आदर्श रास्ता मिल गया। वह मैग्डेलन ब्रिज के पास हाई स्ट्रीट पार करती, मर्टन फील्ड के किनारे दौड़ती, क्राइस्ट चर्च मीडो से गुज़रती और अपनी सहनशक्ति के अनुसार एडिसन वॉक से वापस आती। कभी-कभी ऐसा लगता था मानो पत्थर उसके पैरों के नीचे से फिसल रहे हों और उसे ऐसा महसूस होता था कि उन छोटी-छोटी गलियों में से किसी एक के अंत में उसे किसी दूसरी सदी का द्वार मिल जाएगा। लय में आना सबसे मुश्किल काम था, लेकिन एक बार लय बन जाने पर वह लगभग एक घंटे तक दौड़ सकती थी। काफी देर तक दौड़ने के बाद, उसके बाल गीले होकर उसकी गर्दन से चिपक जाते, उसका दिल दर्द की हद तक धड़कता, तब उसे ऐसा लगता जैसे वह किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गई हो, जीवित और मृत के बीच की दहलीज पर। उसे इस बात का एहसास था कि इतनी कम उम्र में वह मृत्यु के बारे में बहुत ज्यादा सोचती है। ऑक्सफ़ोर्ड में कई लोग दौड़ने जाते थे – शिक्षाविद, छात्र, कर्मचारी। यह आसानी से पहचाना जा सकता था कि कौन व्यायाम के लिए दौड़ता था और कौन इसे बोझ समझता था, केवल इसलिए दौड़ता था क्योंकि उन्होंने किसी से – अपने डॉक्टर या साथी से – खुद को पहले से ज़्यादा फिट दिखाने का वादा किया था। पेरी उन धावकों से ईर्ष्या करती थी जो उससे कहीं बेहतर थे, लेकिन ज़्यादातर वह अपने प्रदर्शन से संतुष्ट थी – सप्ताहांत और कार्यदिवसों में वह बिना किसी चूक के दौड़ती थी। जब उसे सुबह काम करना होता था, तो वह शाम ढलने के बाद दौड़ती थी। अगर शामें व्यस्त होतीं, तो वह सूर्योदय के समय खुद को बिस्तर से उठने के लिए मजबूर करती थी। कभी-कभी, इतनी अनियमित रूप से

कि यह आदत नहीं बन पाई, वह देर रात दौड़ने जाती थी ताकि उसका दिमाग शांत हो जाए, रात इतनी शांत होती थी कि उसे दौड़ते समय अपने फेफड़ों की खरखराहट के अलावा कुछ भी सुनाई नहीं देता था, जब वह शहर के बीचोंबीच पूरी रफ्तार से दौड़ती थी। उसने खुद को यकीन दिलाया कि इस तरह का कठोर आत्म-अनुशासन न केवल शारीरिक रूप से बल्कि भावनात्मक रूप से भी उसके लिए अच्छा होगा।
कभी-कभी, जब वह किसी दूसरे धावक के साथ तालमेल बिठा लेती, तो वह सोचती कि वह क्या सोच रहा होगा। शायद कुछ भी नहीं। पेरी के लिए, यही एकमात्र समय था जब वह अपनी चिंताओं को शांत कर सकती थी और अपने डर को दूर कर सकती थी। घास के मैदानों में तेज़ी से दौड़ते हुए, नम हवा में सांस लेते हुए, जो किसी भी क्षण बारिश में बदल सकती थी, उसे एक ऐसी हल्कापन महसूस हुआ जो उसने पहले कभी अनुभव नहीं किया था, मानो उसने - पेरी, नाज़पेरी, रोज़ा - इन वर्षों में अपनी चिंताओं को उस तरह सहेज कर नहीं रखा था जैसे दूसरे लोग सोने के लिफाफे और विदेशी डाक टिकटें इकट्ठा करते हैं; वह एक प्रसन्न आत्मा की तरह महसूस करती थी, मानो उसका कोई अतीत न हो और अतीत की कोई स्मृति न हो।

मछुआ

ऑक्सफोर्ड, 2000
इसे फ्रेशर्स वीक कहा जाता था। अक्टूबर में माइकलमास सत्र शुरू होने से पहले ही, कुछ ही दिनों में ढेर सारे सामाजिक कार्यक्रम और मौज-मस्ती का आयोजन किया गया था ताकि नए स्नातक छात्र विश्वविद्यालय, शहर और उसके आसपास के माहौल से परिचित हो सकें, नए दोस्त बना सकें - और शायद दुश्मन भी - और अपनी घबराहट को उतनी ही तेज़ी से दूर कर सकें जितनी तेज़ी से पाला पड़ने पर जिन्को का पेड़ अपने पत्ते गिरा देता है। बारबेक्यू, शिक्षकों से मुलाकात, खाना पकाने और खाने की प्रतियोगिताएं, दोपहर की चाय, नृत्य, कराओके और एक फैंसी ड्रेस पार्टी... अपनी फ्रेशर टी-शर्ट पहने पेरी यूं ही इधर-उधर घूम रही थी और छात्रों और स्टाफ सदस्यों से बातचीत कर रही थी। जैसे-जैसे वह लोगों से बात करती गई, उसे यकीन होता गया कि हर कोई जानता है कि वे क्या कर रहे हैं, सिवाय उसके।
पेरी को पता चला था कि विश्वविद्यालय – जो कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों तक सीमित अपनी छवि को बदलने और प्रवेश तथा वातावरण में विविधता लाने के लिए प्रतिबद्ध है – ने हाल ही में वंचित पृष्ठभूमि के उम्मीदवारों को आवेदन करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु एक छात्रवृत्ति योजना की घोषणा की है। अब उसने अपने आसपास के चेहरों पर नजर डाली, जिनमें विभिन्न जातीयताओं और राष्ट्रीयताओं के लोग मौजूद थे – लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति को समझना कठिन था।
उसने गौर किया कि शोरगुल के बीच, निगाहों का एक सूक्ष्म आदान-प्रदान चल रहा था। एक लड़का विशेष रूप से उसमें दिलचस्पी दिखा रहा था। लंबा, मजबूत जबड़े वाला, छोटे-छोटे सुनहरे बालों वाला, मजबूत कंधों वाला और विजयी मुद्रा वाला - शायद तैराकी या नाव चलाने से - वह पेरी को देखकर ऐसे मुस्कुराया जैसे कोई पारखी किसी अनोखे व्यंजन को देखकर मुस्कुराता है।
'उससे दूर रहो,' एक आवाज पेरी के कान में सुनाई दी।
पल भर में पेरी पीछे मुड़ी। उसने सिर पर दुपट्टा बांधे एक लड़की को देखा, जिसकी भौहें धनुषाकार थीं और आँखों में गहरा काजल लगा हुआ था। उसने चांदी के छोटे से अर्धचंद्र के आकार की नथ पहनी हुई थी।

लड़की ने कहा, 'यूनिवर्सिटी बोट क्लब बेहद लोकप्रिय है। वह नए सिरे से मछली पकड़ने का शौकीन है।'
'माफ़ करें?'
'वो आदमी, लगता है वो हर साल यही करता है। फिर वो एक हफ्ते में पकड़ी गई मछलियों की संख्या के बारे में डींगें मारता फिरता है। किसी ने मुझे बताया कि वो पिछले साल का अपना रिकॉर्ड तोड़ने की कोशिश कर रहा है।'
‘तुम्हारा मतलब है, मछलियाँ… लड़कियाँ हैं?’
“हाँ, विडंबना तो यही है कि कुछ लड़कियों को सजी-धजी, चमकीली मछलियों की तरह व्यवहार किए जाने में कोई आपत्ति नहीं होती।” उनकी आवाज़ में एक शरारती लहजा आ गया। “जब हममें से कुछ को जंजीरों में जकड़े रहना पसंद है, तो उन्हें तोड़ना मुश्किल है।”
पेरी की आंखें चौड़ी हो गईं जब उसने यह कल्पना करने की कोशिश की कि जंजीरों में जकड़ी मछली कैसी दिख सकती है।
‘यहाँ के लोगों से पूछो, नारीवाद की किसे ज़रूरत है?’ लड़की ने आगे कहा। ‘वे कहेंगे, “ओह, पाकिस्तान, नाइजीरिया, सऊदी अरब की महिलाओं को, लेकिन ब्रिटेन में नहीं, हम तो इससे ऊब चुके हैं! ऑक्सफ़ोर्ड को तो ज़रूर नहीं, है ना?” लेकिन हकीकत अलग है। क्या आपको पता है कि यहाँ महिला छात्राएँ परीक्षा में बहुत कमज़ोर प्रदर्शन करती हैं? परीक्षा परिणामों में लैंगिक असमानता बहुत ज़्यादा है। ऑक्सफ़ोर्ड में पढ़ने वाली एक नई छात्रा को नारीवाद की उतनी ही ज़रूरत है जितनी मिस्र के ग्रामीण इलाके में रहने वाली एक किसान माँ को! अगर आप मेरे साथ हैं, तो हमारी याचिका पर हस्ताक्षर करें।’ उसने एक कलम और एक कागज़ दिया जिस पर ऊपर ‘ऑक्सफ़ोर्ड फेमिनिस्ट स्क्वाड’ लिखा था। ‘हम्म… और आप नारीवादी हैं?’ पेरी ने सावधानी से पूछा, क्योंकि उसे लड़की के दृष्टिकोण के साथ इस शब्द का मेल बिठाना मुश्किल लग रहा था।
‘हाँ, बिल्कुल,’ लड़की ने कहा। ‘मैं एक मुस्लिम नारीवादी हूँ और अगर कुछ लोगों को लगता है कि यह असंभव है, तो यह उनकी समस्या है, मेरी नहीं।’
पेरी ने जैसे ही अपने हस्ताक्षर किए, उसे तुर्की में रहने वाले अपने पूर्व प्रेमी की अचानक याद आ गई। वह न केवल यूरोपीय साहित्य पढ़ने का विरोधी था, बल्कि हर तरह की पश्चिमी विचारधारा का भी विरोधी था, जिसके बारे में उसका कहना था कि नारीवाद सबसे बड़ा खतरा है। यह हमारी बहनों को असली मुद्दे यानी वर्ग संघर्ष से भटकाने का एक हथकंडा है। महिलाओं के लिए अलग आंदोलन

की कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि आर्थिक शोषण के अंत से हर तरह का भेदभाव अपने आप खत्म हो जाएगा। महिलाओं की मुक्ति सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के साथ ही आएगी।
‘धन्यवाद,’ लड़की ने कलम और कागज वापस लेते हुए कहा। ‘वैसे, मेरा नाम मोना है। आपका नाम क्या है?’
‘पेरी।’
'आपसे मिलकर अच्छा लगा,' मोना ने कहा। उसकी मुस्कान बेहद मनमोहक थी।
पेरी को पता चला कि मोना मिस्र-अमेरिकी थी। न्यू जर्सी में जन्मी मोना लगभग दस साल की उम्र में अपने परिवार के साथ काहिरा चली गई थी। उसके पिता ने कहा था, 'बच्चों का पालन-पोषण मुस्लिम संस्कृति में होना चाहिए।' कई साल बाद, जब उन्हें पता चला कि मिस्र में जीवन उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक कठिन था - या फिर उन्हें एहसास हुआ कि वे वास्तव में सच्चे अमेरिकी हैं - तो वे वापस अमेरिका लौट आए। ऑक्सफोर्ड में यह उसका दूसरा साल था और वह दर्शनशास्त्र पर ध्यान केंद्रित करने के लिए अपना विषय बदल रही थी। उसने बताया कि उसकी माँ हिजाब पहनती थी, लेकिन उसकी बड़ी बहन नहीं। 'हमने जीवन में अलग-अलग विकल्प चुने हैं।'
नारीवाद का समर्थन करने के अलावा, मोना कई स्वयंसेवी गतिविधियों में भी शामिल थीं: बाल्कन सहायता संस्था, फिलिस्तीन मित्र संस्था, सूफी अध्ययन संस्था, प्रवासन अध्ययन संस्था; और ऑक्सफोर्ड इस्लामिक संस्था, जहाँ वे प्रमुख सदस्यों में से एक थीं। संगीत के प्रति अपने प्रेम के कारण वे एक 'हिप-हॉप संस्था' शुरू करने की भी तैयारी में थीं। विभिन्न संस्कृतियों के साथ अपने अनुभवों से प्रेरित होकर, उन्होंने गीत लिखे, इस उम्मीद में कि एक दिन कोई उन्हें रैप के रूप में प्रस्तुत करेगा।
‘वाह, इन सब चीजों के लिए आपको समय कैसे मिल जाता है?’ पेरी ने पूछा।
मोना ने सिर हिलाया। 'यह समय निकालने की बात नहीं है। यह तो बस समय प्रबंधन की बात है। इसीलिए अल्लाह ने हमें दिन में पांच नमाज़ें दी हैं - ताकि हम अपने जीवन को व्यवस्थित कर सकें।'
पेरी, जिसने कभी पांचों नमाज़ों का पालन नहीं किया था - एक का भी नहीं, यहां तक कि अपने पिता के दिल का दौरा पड़ने के बाद के धार्मिक दौर में भी नहीं - ने अपने होंठ सिकोड़कर धीरे से कहा, 'आप धर्म के साथ सहज प्रतीत होती हैं।'

मोना ने घड़ी देखते हुए कहा, 'मुझे लगता है कि मैं जैसी हूं, उससे संतुष्ट हूं। मुझे जाना होगा, लेकिन मुझे यकीन है कि हम फिर मिलेंगे। मैं हमेशा किसी न किसी नेक काम के लिए लोगों के हस्ताक्षर इकट्ठा करती रहती हूं।' विदा होने से पहले उन्होंने मजबूती से हाथ मिलाया - यही मोना का अंदाज था। उसी रात पेरी ने अपनी डायरी में लिखा: कुछ लोग दुनिया बदलना चाहते हैं; कुछ अपने जीवनसाथी या दोस्तों को। जहाँ तक मेरी बात है, मैं भगवान को बदलना चाहूँगी। यह वाकई कुछ खास होगा। क्या इससे दुनिया के सभी लोगों को फायदा नहीं होगा?

इस्तांबुल में, पेरी ने अक्सर असफल रूप से बहिर्मुखी होने का दिखावा किया था, जबकि वह ऐसी नहीं थी, और उसने अपनी इच्छा से कहीं अधिक सामाजिक मेलजोल किया था। ऑक्सफ़ोर्ड में, सांस्कृतिक दबाव से मुक्त होकर, उसने एकांत का आनंद लिया, बल्कि उसे संजो कर रखा। अंतर्मुखी होना ही एकमात्र कारण नहीं था कि उसने फ्रेशर्स वीक की अधिकांश चहल-पहल से दूरी बनाए रखी। उसे पता चला कि कुछ कार्यक्रम (छात्रों के कॉमन रूम में चाय पार्टी, प्रोफेसरों के साथ मुलाकातें) तो मुफ़्त थे, लेकिन अन्य (शाकाहारी कपकेक, हलाल मार्शमैलो, शाकाहारी पिज्जा) के लिए पैसे लगते थे। शोर-शराबे से दूर रहना ही उसके सीमित बजट के लिए बेहतर होता। इसके बजाय, उसने अपनी कार्यसूची पर ध्यान केंद्रित किया: छात्र पहचान पत्र बनवाना; पाठ्यपुस्तकें खरीदना, यदि संभव हो तो पुरानी; छात्र बैंक खाता खोलना। सबसे सस्ते तरीके से गुज़ारा करने के लिए दृढ़ संकल्पित होकर, उसने दुकानों और सुपरमार्केट में कीमतों की तुलना की।
पेरी शायद उन कुछ छात्रों में से एक थी जो मौज-मस्ती से भरे सप्ताह के समाप्त होने पर बेहद खुश थी। सत्र तुरंत शुरू हो गया। राहत महसूस करते हुए, वह व्याख्यानों, ट्यूटोरियल, पठन सामग्री और निबंधों की दिनचर्या में रम गई। उसके लिए बिल्कुल नए माहौल में, पढ़ाई उसके लिए एक मजबूत सहारा थी और उसने पूरी लगन से पढ़ाई की।

काला कैवियार

इस्तांबुल, 2016
मुख्य व्यंजन – जंगली मशरूम रिसोट्टो और केसर और शहद-पुदीने की चटनी के साथ भुना हुआ मेमना – बड़े चांदी के थालियों में परोसा गया, जिनके किनारों पर ग्रिल्ड सब्जियां सजी हुई थीं। कड़क वर्दी पहने नौकरानियों का अंदर आना और भाप निकलते मांस के ढेरों से पर्दा उठाना इतना नाटकीय दृश्य था कि उपस्थित लोगों में से कुछ ने खुशी से तालियां बजाईं। स्वादिष्ट व्यंजनों और शराब से उनका मन प्रसन्न हो गया, मेहमान और भी खुश हो गए और जोर-जोर से बोलने लगे।
‘सच कहूँ तो, मुझे लोकतंत्र पर विश्वास नहीं है,’ क्रू कट हेयरस्टाइल और करीने से संवारी दाढ़ी वाले एक आर्किटेक्ट ने कहा। उनकी कंपनी ने शहर भर में निर्माण परियोजनाओं से भारी मुनाफा कमाया था। ‘सिंगापुर को ही ले लीजिए, लोकतंत्र के बिना सफलता। चीन को ही लीजिए। वही हाल है। यह एक तेजी से बदलती दुनिया है। फैसले बिजली की गति से लागू होने चाहिए। यूरोप छोटी- मोटी बहसों में समय बर्बाद करता है जबकि सिंगापुर तेजी से आगे बढ़ता है। क्यों? क्योंकि वे लक्ष्य केंद्रित हैं। लोकतंत्र समय और धन की बर्बादी है।’
आर्किटेक्ट की मंगेतर और भावी तीसरी पत्नी, इंटीरियर डिजाइनर ने कहा, 'वाह! मैं हमेशा कहती हूं कि मुस्लिम दुनिया में लोकतंत्र की कोई जरूरत नहीं है। यहां तक कि पश्चिम में भी यह एक सिरदर्द है, यह मानना पड़ेगा, लेकिन यहां तो यह बिल्कुल ही अनुपयुक्त है!'
व्यापारी की पत्नी सहमत हो गई। ‘ज़रा सोचिए, मेरे बेटे के पास व्यवसाय में स्नातकोत्तर की डिग्री है। मेरे पति हज़ारों लोगों को रोज़गार देते हैं। लेकिन हमारे परिवार में सिर्फ़ तीन वोट हैं। हमारे ड्राइवर के भाई के गाँव में आठ बच्चे हैं। मुझे नहीं पता कि उन्होंने कभी कोई किताब पढ़ी भी है या नहीं; उनके पास तो दस वोट होंगे! यूरोप में जनता शिक्षित है। लोकतंत्र से कोई नुकसान नहीं हो सकता। मध्य पूर्व की कहानी अलग है! अज्ञानी लोगों को समान वोट देना किसी छोटे बच्चे को माचिस थमा देने जैसा है। घर जल सकता है!’

अपनी तर्जनी उंगली के जोड़ से ठुड्डी के बालों को सहलाते हुए वास्तुकार ने कहा, 'ठीक है, मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि हमें मतदान प्रणाली को छोड़ देना चाहिए। हम पश्चिम को यह समझा नहीं सकते। एक नियंत्रित लोकतंत्र बिल्कुल ठीक है। एक कुशल और सशक्त नेता के नेतृत्व में नौकरशाहों और प्रौद्योगिकीविदों का एक दल। जब तक शीर्ष पर बैठा व्यक्ति जानता है कि वह क्या कर रहा है, मुझे सत्ता से कोई आपत्ति नहीं है। विदेशी निवेशक और कैसे आएंगे?'
सबकी निगाहें मेज पर बैठे इकलौते विदेशी पर टिक गईं – एक अमेरिकी हेज-फंड मैनेजर जो शहर घूमने आया था। वह बीच-बीच में कान में फुसफुसाए जा रहे अनुवादों की मदद से बातचीत को समझने की कोशिश कर रहा था। अचानक सबकी नज़रें उस पर टिक गईं और वह अपनी कुर्सी पर बेचैनी से हिलने-डुलने लगा। 'कोई भी अस्थिर क्षेत्र नहीं चाहता, यह तो पक्का है। आप जानते हैं वाशिंगटन में लोग मध्य पूर्व को क्या कहते हैं? गड़बड़ पूर्व! माफ कीजिए दोस्तों, लेकिन यह एक बुरी हालत में है।'
कुछ मेहमान हँसे, कुछ ने मुँह बनाया। गड़बड़ तो थी, लेकिन ये उनकी गड़बड़ थी। वे जी भर कर इसकी आलोचना कर सकते थे, लेकिन एक अमीर अमेरिकी की नहीं। नकारात्मक ऊर्जा को भांपते हुए, हेज-फंड मैनेजर ने अपने होंठ सिकोड़ लिए। ‘मेरी थीसिस का समर्थन करने का यह और भी बड़ा कारण है,’ वास्तुकार ने रिसोट्टो के निवाले लेते हुए कहा। कई वर्षों तक राजनीति से दूर रहने वाले और हालांकि वंश से आधे कुर्द थे, हाल ही में उनमें कट्टरपंथी प्रवृत्ति दिखाई देने लगी थी।
बैंक के सीईओ ने स्वीकार किया, 'खैर, पूरा क्षेत्र इसी बात को समझ रहा है। अरब स्प्रिंग की विफलता के बाद, कोई भी समझदार व्यक्ति मजबूत नेतृत्व और स्थिरता के लाभों को पहचान लेगा।'
‘लोकतंत्र का युग बीत चुका है! मुझे पता है कि यह कुछ लोगों को चौंकाने वाला लग सकता है, लेकिन ऐसा ही सही,’ वास्तुकार ने अपने विचारों को स्वीकार्यता मिलते देखकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा। ‘मैं तो परोपकारी तानाशाही का समर्थक हूँ।’
इस्तांबुल में क्लिनिक चलाने वाले लेकिन स्टॉकहोम में रहने वाले एक प्लास्टिक सर्जन ने कहा, 'लोकतंत्र की समस्या यह है कि यह बेलुगा कैवियार की तरह एक विलासिता है। मध्य पूर्व में यह अफोर्डेबल नहीं है।'

पत्रकार ने मेमने के मांस के एक टुकड़े में कांटा चुभोते हुए कहा, 'अब तो यूरोप भी इस पर विश्वास नहीं करता। यूरोपीय संघ की हालत बहुत खराब है।' “जब रूस यूक्रेन में शेर बन गया, तो उन्होंने बिल्ली की तरह बर्ताव किया,” अब अपने वैभव में डूबे वास्तुकार ने कहा। “चाहे आप मानें या न मानें, यह शेरों की सदी है। बेशक, अगर आप शेर हैं तो वे आपसे प्यार नहीं करेंगे, लेकिन वे आपसे डरेंगे, और यही मायने रखता है।”
‘व्यक्तिगत तौर पर, मुझे खुशी है कि हमें यूरोपीय संघ में शामिल होने की अनुमति नहीं मिली। अच्छा हुआ,’ जनसंपर्क अधिकारी ने मन ही मन सोचा। ‘वरना हम ग्रीस जैसे हो सकते थे।’ उसने धीरे से अपने कान की लोब खींची, ‘त्स्क-त्स्क’ की आवाज़ निकाली और मेज पर दो बार खटखटाया।
‘यूनानी? वे तो ओटोमन साम्राज्य की वापसी के लिए तरस रहे हैं, जब हम उन पर राज करते थे तब वे ज़्यादा खुश थे…’ वास्तुकार ने हंसते हुए कहा, लेकिन पेरी के हावभाव देखकर उनकी हंसी रुक गई। उन्होंने अदनान की ओर मुड़कर आँख मारी और कहा, ‘मुझे लगता है तुम्हारी पत्नी को मेरे चुटकुले पसंद नहीं आए।’ इस पर अदनान, जो एक हाथ ठुड्डी के नीचे रखकर सुन रहा था, ने मुस्कुरा दिया - आधा गंभीर, आधा सहानुभूतिपूर्ण। 'मुझे यकीन है कि यह सच नहीं है।'
पेरी की नज़र अपनी प्लेट में जमे हुए रिसोट्टो पर पड़ी। वह उन टिप्पणियों को नज़रअंदाज़ कर सकती थी; ठीक वैसे ही जैसे दूसरों के सिगार का धुआँ, अवांछित लेकिन कुछ हद तक सहनीय। लेकिन उसने वर्षों पहले, ऑक्सफ़ोर्ड छोड़ने के तुरंत बाद, खुद से वादा किया था कि वह फिर कभी चुप नहीं रहेगी। सिर हिलाते हुए उसने अपने पति से कहा, “पर यह सच है कि मुझे इस तरह की बातें पसंद नहीं हैं। लोकतंत्र को काले कैवियार की तरह, राज्यों को बाघों की तरह…” चूंकि वह काफी समय बाद बोल रही थी, इसलिए सभी का ध्यान उसकी ओर गया और उसने भी उनकी ओर देखा। “देखिए, परोपकारी तानाशाही जैसी कोई चीज नहीं होती।”
‘क्यों नहीं?’ वास्तुकार ने पूछा।
क्योंकि कोई भी भगवान छोटा नहीं होता। एक बार कोई भगवान बनने की कोशिश करने लगे, तो देर-सवेर हालात बेकाबू हो ही जाते हैं।
इस पूरे समय उसके मन में प्रोफेसर अज़ूर के बारे में विचार उमड़ रहे थे। वह तो मानो स्वयं भगवान के समान हैं। अगर उन्होंने यह स्वीकार कर लिया होता

कि वे भी अपने छात्रों की तरह ही एक इंसान हैं, तो क्या हालात इतने बिगड़ने से बच जाते?
आर्किटेक्ट ने बीच में टोकते हुए कहा, 'हकीकत को समझो! यह कोई आलीशान ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय नहीं है! हम असल राजनीति की बात कर रहे हैं। हमारे पड़ोसी सीरिया, ईरान, इराक हैं। फिनलैंड, नॉर्वे, डेनमार्क नहीं। मध्य पूर्व में आपको कभी भी स्कैंडिनेवियाई शैली का लोकतंत्र नहीं मिलेगा।'
'शायद नहीं,' पेरी ने कहा। 'लेकिन आप मुझे इसकी कामना करने से नहीं रोक सकते। आप हम सभी को उस चीज़ की चाहत रखने से नहीं रोक सकते जो हमें नहीं मिलती।'
‘इच्छा! क्या शब्द है!’ वास्तुकार ने आगे झुकते हुए, अपनी हथेलियों को मेज पर सपाट रखते हुए कहा। ‘अब आप खतरनाक रास्ते पर चल रहे हैं।’
पेरी ने सिर हिलाया, उसे पता था कि पितृसत्ता पर आधारित 'एडवांस्ड लर्नर्स गाइड' के अनुसार, सभ्य तुर्की महिलाओं के क्लब की सदस्य सार्वजनिक रूप से 'इच्छा' के गुणों का बचाव नहीं कर सकतीं। लेकिन वह अपनी सदस्यता रद्द करना चाहती थी – और अगर वह इस्तीफा नहीं दे सकती, तो उसे बर्खास्त कर दिया जाना चाहिए। उसने शिरीन के बारे में सोचा। उसकी तेजतर्रार दोस्त ने ज़रूर इस आदमी को खरी-खोटी सुनाई होती। इसी विचार से प्रेरित होकर पेरी ने धीरे से कहा, 'अगर आप मुझसे कह रहे हैं कि मुझे चीज़ों को वैसे ही स्वीकार कर लेना चाहिए जैसे वे हैं... कि राष्ट्रों को, आज्ञाकारी अच्छी पत्नियों की तरह, अपने सपनों... अपनी कल्पनाओं... को भी त्याग देना चाहिए... तो अंतरराष्ट्रीय संबंधों – और महिलाओं के मामले में भी – आपकी समझ मेरी सोच से कहीं कमज़ोर है।'
कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया, ऐसा लग रहा था जैसे किसी को समझ नहीं आ रहा हो कि क्या कहें। उस सन्नाटे में, व्यापारी ने अपनी ठुड्डी ऊपर उठाई, कंधे सीधे किए, ताली बजाई, मानो कोई फ्लेमेंको नर्तक मंच पर आने वाला हो, और पहले की तरह ही हंसमुख होकर जोर से बोला, 'अब हमारा अगला भोजन क्या है?' रसोई और भोजन कक्ष के बीच का झूलता हुआ दरवाजा धक्का देकर खोला गया और नौकर भागते हुए अंदर आ गए।

उत्सव

ऑक्सफोर्ड, 2000
शिरिन का बीसवाँ जन्मदिन था, जिसे वह टर्फ टैवर्न में मना रही थी – यह सदियों पुराना, लकड़ी से बना पब था जो पुराने शहर की दीवारों के नीचे एक संकरी गली में स्थित था। पेरी, जो पार्टी में देर से पहुँची थी, अपनी बगल में एक उपहार दबाए हुए आत्मविश्वास से चल रही थी। अपनी दोस्त को क्या उपहार दे, इस पर काफी सोच-विचार करने के बाद, उसने वह चीज़ चुनी जो शिरिन को ज़रूर पसंद आएगी: चमकीले रंग के मोतियों से जड़ी एक जींस जैकेट। इस पर उसका काफी पैसा खर्च हो गया था।
जब पेरी ओक की लकड़ी से बने पब में दाखिल हुई, तो नीची छत के नीचे शराब और हंसी की उमस भरी गर्माहट ने उसे घेर लिया। शिरीन की लोकप्रियता को देखते हुए, उसने बड़ी भीड़ की उम्मीद की थी, और ऐसा ही हुआ। दोस्तों का एक शोरगुल भरा समूह जन्मदिन मनाने वाली लड़की को घेरे हुए था, जिसका नया प्रेमी उसके बगल में बैठा था, उसका हाथ उसके कंधे पर था। शिरीन के अनुसार, उसका पिछला प्रेमी - भौतिकी का द्वितीय वर्ष का छात्र, होशियार और दयालु - उनकी मुलाकातों की इतनी योजना बनाता था कि वह चिढ़ जाती थी। 'मैंने उसका साप्ताहिक कार्यक्रम देखने के बाद उसे छोड़ने का फैसला किया।' सुबह के व्याख्यान, पुस्तकालय के घंटे, जिम, ट्यूटोरियल, सब कुछ बुक था। शाम 4.15 से 5.15 बजे का समय उसके लिए आरक्षित था। शुक्रवार शाम को भी उसके लिए एक और समय आरक्षित था। 'क्या तुम विश्वास कर सकती हो, माउस, उसने मुझे शाम 7.30 से 10.30 बजे के बीच में जगह दी है? डिनर, फिल्म, सेक्स।'
शिरिन की तेज़ आवाज़ ने पेरी को उसके विचारों से जगा दिया। 'अरे, ये रही मेरी पड़ोसी। हाय!'
मोती और सीक्वेंस से सजे टॉप और सफेद, टाइट-फिटिंग, लो-स्लंग जींस में बेहद खूबसूरत लग रही शिरीन ने अपना तोहफा उठाया और पेरी को गले लगाकर चूमा। 'तुम कहाँ थी? तुमने खास मेहमान को मिस कर दिया। वो अभी-अभी गए हैं।'
'कौन?'

‘अज़ूर,’ शिरिन ने चमकती आँखों से कहा। ‘वह यहाँ था। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वह आया। कितना बढ़िया! वह बस थोड़ी देर के लिए आया, टोस्ट दिया और चला गया।’
शिरिन कुछ और कहना चाहती थी, लेकिन किसी ने उसका हाथ पकड़कर केक पर लगी मोमबत्तियाँ बुझा दीं। पेरी ने चारों ओर देखा, उसे शिरिन के मिलनसार दोस्तों में से किसी को जानने की उम्मीद नहीं थी, जो खड़े होकर पी रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे। लेकिन तभी उसे एक जाना-पहचाना चेहरा दिखा: मोना। नारंगी रंग की लंबी आस्तीन वाली ट्यूनिक और उसी रंग के स्कार्फ में, वह लड़की एक कोने की मेज पर बैठी कोला पी रही थी।
‘हाय, मोना।’
‘तुम्हें देखकर बहुत खुशी हुई,’ मोना ने कहा, किसी से बात करने का मौका मिलने पर उसे राहत महसूस हो रही थी।
पेरी ने उसके बगल में बैठते हुए कहा, 'मुझे नहीं पता था कि तुम शिरीन की दोस्त हो।'
‘खैर, हम पक्के दोस्त तो नहीं हैं, लेकिन उसने मुझे आमंत्रित किया और मैंने सोचा…’ मोना ने कहा, उसकी आवाज धीमी पड़ गई।
पेरी को समझ आ गया कि लड़की ने क्या नहीं कहा। कॉलेज की सबसे लोकप्रिय छात्राओं में से एक का निमंत्रण ठुकराना आसान नहीं होता। इसलिए मोना - जो मिलनसार और आत्मविश्वासी थी - आ गई थी, यह जाने बिना कि उसे क्या उम्मीद करनी चाहिए। अब, दर्जनों बेफिक्र, मौज-मस्ती करने वाले पार्टी में शामिल लोगों के बीच, जो एक ऐसी धुन पर झूम रहे थे जिसे केवल वे ही सुन सकते थे, उसे एक बेचैनी महसूस हो रही थी जिसे वह दिखाने की हिम्मत नहीं कर पा रही थी। जन्मदिन के केक के टुकड़े खाते हुए वे दोनों बातचीत में मग्न हो गए, जबकि शिरीन और उसके दोस्त जमकर मस्ती कर रहे थे।
पेरी ने कहा, 'क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूँ?' 'जब हम पहली बार मिले थे, तब आपने कहा था कि आपने और आपकी बहन ने जीवन में अलग-अलग विकल्प चुने हैं। तो क्या इसका मतलब यह है कि... आप अपना सिर ढकना पसंद करती हैं?'
‘बिल्कुल। मेरे माता-पिता ने हमेशा मुझे विकल्प दिया। हिजाब मेरा निजी फैसला है, मेरी आस्था का प्रतीक है। इससे मुझे शांति और आत्मविश्वास मिलता है।’ मोना का चेहरा उदास हो गया। ‘भले ही इसके लिए मुझे लगातार धमकाने का सामना करना पड़ा हो।’

'आपके पास?'
“हाँ, बिल्कुल, लेकिन इसने मुझे रोका नहीं। अगर मैं अपने हिजाब से रूढ़ियों को चुनौती नहीं दूंगी, तो कौन देगा? मैं बदलाव लाना चाहती हूँ। लोग मुझे ऐसे देखते हैं जैसे मैं पुरुष प्रधान सत्ता की निष्क्रिय, आज्ञाकारी शिकार हूँ। लेकिन मैं ऐसी नहीं हूँ। मेरी अपनी सोच है। मेरे हिजाब ने मेरी स्वतंत्रता में कभी बाधा नहीं डाली।”
पेरी उत्सुकता से सुन रही थी, उसे उस लड़की में अपनी माँ का छोटा रूप नज़र आ रहा था। वही बेबाक विद्रोही स्वभाव, वही दृढ़ संकल्प। यह एक ऐसा एहसास था जिसे वह बखूबी जानती थी। वह लोगों को जोश और आत्मविश्वास से भरी बातें करते सुनने की आदी थी। उसके अंदर ऐसी क्या बात थी जो दूसरों को अपनी भावनाएँ व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती थी, यह उसकी समझ से परे था। उसके जैसी दुविधाग्रस्त स्वभाव वाली व्यक्ति का दूसरों के आत्मविश्वास और जुनून से अभिभूत हो जाना उसे अजीब लग रहा था।
‘तुम्हारे ये हिप-हॉप गाने के बोल... क्या ये धर्म के बारे में हैं?’
मोना हंस पड़ी। 'हिप-हॉप प्यार के बारे में है। कविता के बारे में है। शायद अन्याय और असमानता के खिलाफ थोड़ा गुस्सा भी। यह सशक्त बनाता है।' पृष्ठभूमि से आती हंसी की एक तेज़ आवाज़ ने शिरीन के जवाब को बीच में ही रोक दिया। किसी ने शिरीन के प्रेमी को एक बड़े गिलास में बीयर भरने की चुनौती दे दी थी। एक दो फुट ऊंचे गिलास में, जिसके एक सिरे पर एक बड़ा सा बल्ब लगा था, बीयर भरी हुई थी, जिसे लड़का अब तेज़ी से गटक रहा था। उसने किसी तरह गिलास खत्म कर दिया, उसके चेहरे पर एक बनावटी मुस्कान थी और उसकी कमीज़ पूरी तरह भीगी हुई थी। भीड़ की तालियों के बीच, उसने शिरीन को एक लंबा, गीला, खुशी भरा चुंबन दिया, लेकिन अचानक उल्टी करने की तीव्र इच्छा होने पर वह बाहर की ओर भागा।
मोना ने कहा, 'मुझे लगता है कि मुझे अब चले जाना चाहिए।'
पेरी ने कहा, 'मैं तुम्हारे साथ आऊंगी।'
ऐसा नहीं था कि मोना की तरह पेरी को शराब या उत्तेजक व्यवहार से कोई परेशानी होती थी। पेरी की बेचैनी अलग तरह की थी। जब वह दूसरों के उत्साह को देखती और उनके साथ तालमेल नहीं बिठा पाती, तो वह हमेशा सिकुड़ जाती, जैसे कोई हेजहॉग खुशी से खुद को बचाने के लिए गेंद की तरह गोल हो जाता है।

जब पेरी और मोना चुपके से पब से निकलीं, तो उस समय पूर्णिमा थी। ब्रिज ऑफ साइज के नीचे से गुजरते हुए, वे धुंधली रोशनी वाली गलियों से होकर आगे बढ़ीं।
मोना ने कहा, 'मुझे समझ नहीं आ रहा। शिरीन ने मुझे क्यों बुलाया?'
पेरी भी यही सोच रही थी। 'खैर, उसे नए दोस्त बनाना अच्छा लगता है।'
मोना ने सिर हिलाया। 'नहीं, कुछ और बात है। मैं ठीक से बता नहीं सकती। हम एक-दूसरे को काफी समय से जानते हैं, लेकिन मुझे हमेशा से ऐसा लगता रहा है कि वह मुझे पसंद नहीं करती, शायद मेरे हिजाब की वजह से।'
शिरिन ने जिस तरह अपनी मां को घूरा था, उसे याद करके पेरी चुप हो गई।
‘अगर ऐसा है तो ठीक है, मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन वो मुझसे दोस्ती करने की कोशिश क्यों कर रही है?’ मोना ने गर्व से भरे चेहरे के साथ कहा। ‘क्या तुम्हें लगता है कि मैं बेवजह शक कर रही हूँ?’
‘नहीं,’ पेरी ने कहा। ‘मेरा मतलब है, हाँ, थोड़ा-बहुत। मुझे यकीन है कि आप दोस्त बन सकते हैं।’
‘देखते हैं,’ मोना ने कहा। ‘शिरिन हमेशा मुझसे कहती है कि मुझे प्रोफेसर अज़ूर का सेमिनार लेना चाहिए।’
‘सच में?’ पेरी तनावग्रस्त हो उठी, मानो उसके शरीर ने किसी ऐसे खतरे को भांप लिया हो जिसे उसका दिमाग अभी तक समझ नहीं पाया था। ‘वह मेरे साथ भी ऐसा ही करती है। अज़ूर के पास जाओ,’ वह कहती है।
‘तो मैं अकेली नहीं हूँ…’ मोना ने अनमने ढंग से कहा। उसने टर्ल स्ट्रीट की ओर इशारा किया। ‘खैर, मैं इधर हूँ।’
ठीक है, शुभ रात्रि।
‘तुम भी, बहन,’ मोना ने कहा। ‘हमें और भी अक्सर मिलना चाहिए।’
इतना कहकर उसने पेरी का हाथ दोनों हाथों से कसकर पकड़ा, उसे जोर से हिलाया और रात के अंधेरे में गायब हो गई।

अपने विचारों में खोई पेरी ब्रॉड स्ट्रीट की ओर मुड़ी। अंधेरे में आगे बढ़ते हुए उसने सोडियम-पीली स्ट्रीट लाइटों की रोशनी में एक आकृति देखी: एक महिला जो जंग लगी हुई एक प्रैम धकेल रही थी, जिस पर कपड़े, गत्ते और प्लास्टिक की थैलियाँ लदी थीं – मानो वह यहाँ से कहीं न कहीं भटकने वाली एक निर्दयी यात्री हो। पेरी ने उसे गौर से देखा। उसके कपड़े गंदे थे और गीलेपन से उसके शरीर से चिपके हुए थे; उसके बाल मिट्टी और सूखे खून जैसे दिखने वाले पदार्थ से सने हुए थे। धीरे-धीरे पेरी और भी चीज़ें देख पाई: हथेलियों पर कठोर निशान, दाहिने गाल की हड्डी पर एक चोट का निशान जिससे उसका रंग बदल गया था, आँखों के आसपास सूजन। इस्तांबुल में तो हर समय बेघर और लाचार चेहरे दिखते थे। कुछ अजनबियों की नज़रों से बचने के लिए कोनों में दुबके रहते थे; ज़्यादातर लोग ध्यान, भोजन और पैसे की भीख मांगते थे। ऑक्सफ़ोर्ड में भी बेघर लोग थे, बस इस्तांबुल जितने नहीं, लेकिन किसी बेघर व्यक्ति को देखना बेचैन कर देने वाला था, क्योंकि यह शहर की अद्भुत शांति के साथ एक गहरा विरोधाभास था।
छोटे-छोटे, सधे कदमों से चलती उस महिला की ओर अजीब तरह से आकर्षित होकर पेरी उसके पीछे चलने लगी। हवा की दिशा क्षण भर के लिए बदलने पर पेरी की नाक में एक दुर्गंध आई। पेशाब, पसीना और मल की मिली-जुली गंध।
बैग वाली महिला खुद से बात कर रही थी, उसकी आवाज़ तनाव से भरी थी। 'कितनी बार कहना पड़ेगा, धिक्कार है?' उसने पूछा। जवाब का इंतज़ार करते हुए उसका चेहरा सख्त हो गया। वह खुशी से खिलखिला उठी, लेकिन उसका गुस्सा तुरंत भड़क उठा। 'नहीं, कमीने!'
पेरी के दिल में एक ऐसा गहरा भारीपन छा गया जो उदासी की हद तक पहुँच गया था। एक उज्ज्वल भविष्य वाली ऑक्सफोर्ड की छात्रा पेरी और उस महिला के बीच क्या अंतर था जिसके पास नाम-नंबर था? क्या समाज में कोई ऐसी सीमा थी जिसे पार करने से शिष्ट समाज डरता था – ठीक उसी तरह जैसे उस सपाट दुनिया का किनारा जिसने कभी प्राचीन नाविकों को भयभीत कर दिया था? यदि ऐसा था, तो समझदारी और पागलपन की सीमा कहाँ थी? उसे होजा की कही बातें याद आईं जब वह और उसकी माँ उससे मिलने गए थे। शायद वह सही था। शायद वह अंधकार की ओर झुकी हुई थी।

वह महिला रुकी और पीछे मुड़ी, उसकी निगाहें पेरी पर टिक गईं। "क्या तुम मुझे ढूंढ रही थी, प्यारी?" वह खिलखिलाकर हंसी, जिससे उसके निकोटीन से सने दांत दिखाई दिए। "या तुम भगवान को ढूंढ रही थी?"
पेरी का चेहरा पीला पड़ गया। वह सिर हिलाकर चुप हो गई, कुछ कह नहीं पाई। आगे बढ़ते हुए उसने मुट्ठी खोली और अपने पास रखे सिक्के आगे बढ़ाए। तभी उस महिला ने अपने कोट की आस्तीन से हाथ निकालकर उन्हें ऐसे झटपट पकड़ लिया जैसे कोई छिपकली अपनी जीभ से पत्ते से कीड़ा उठा लेती है।
पेरी तुरंत मुड़ी और लगभग दौड़ते हुए अपने कॉलेज की ओर चल पड़ी, उसे पता नहीं क्यों डर लग रहा था, उसे उम्मीद थी कि हर कदम उसे उस बैग वाली महिला और उस बढ़ते हुए संदेह से दूर ले जाएगा कि वे दोनों एक ही जगह से संबंधित हैं।

उस रात पेरी देर तक जागकर पढ़ती रही। अगर उसने बाहर लॉन पर नज़र रखी होती, तो शायद उसने शिरीन को देखा होता, जिसने अपनी चाबी कहीं खो दी थी, अपनी ऊँची एड़ी के जूते उतारे, नशे में धुत एक दोस्त की मदद से बारह फुट ऊँची पत्थर की बगीचे की दीवार फांद ली - इस प्रक्रिया में दीवार टूट गई और उसकी तंग सफेद जींस पर दाग लग गए - फिर फूलों की क्यारी में गिर गई, जल्दी से उठी और भूतल के किसी कमरे की खिड़की पर दस्तक दी, और इस सब के दौरान वह खिलखिलाती हुई हँसती और एक मधुर फ़ारसी धुन गाती रही।

शब्दकोश

ऑक्सफोर्ड, 2000
ऑक्सफ़ोर्ड में छात्रों के बजट के हिसाब से पब और खाने-पीने की जगहों की कोई कमी नहीं थी, फिर भी पेरी शायद ही कभी उनमें से किसी में कदम रखती थी। और, जबकि सौ से ज़्यादा क्लब और समितियाँ थीं जिनमें वह शामिल हो सकती थी, उसने हर एक से दूरी बनाए रखी, यहाँ तक कि फेमिनिस्ट स्क्वाड से भी। उसे अपने लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित रखना था, उसने खुद को याद दिलाया; कुछ भी और करने से उसका ध्यान पढ़ाई से हट जाएगा। इसमें लड़के भी शामिल थे। प्यार में पड़ना मुश्किल होता है; प्यार से बाहर निकलना और भी मुश्किल होता है। सारी भावनाएँ और उतार-चढ़ाव; दोपहर के भोजन, रात के खाने और सैर; फिर छोटी- छोटी बातों पर झगड़े और सुलह। संक्षेप में, किसी दूसरे इंसान को, अगर अपने जीवन के केंद्र में नहीं तो उसके आस-पास कहीं रखना, बहुत मेहनत का काम था। उसके पास इसके लिए समय नहीं था। इसी तरह, दोस्ती भी उतनी ही कठिन और श्रमसाध्य हो सकती थी। कभी-कभी उसे कोई ऐसा छात्र मिल जाता था जिससे उसकी तुरंत अच्छी दोस्ती हो जाती थी, लेकिन फिर वह रिश्ते को और गहरा करने से बचती थी। कॉलेज के शुरुआती हफ्तों में पेरी ने जिस तरह से खुद को एक ही मूलमंत्र के इर्द-गिर्द अनुशासित किया, उसमें कुछ कठोरता और रोबोटिकपन, लगभग हठधर्मिता थी: पढ़ाई करो, पढ़ाई करो, पढ़ाई करो।
स्कूल के पूरे जीवन सफलता की आदी होने के कारण, उसे अपनी नई शैक्षणिक कमजोरियों का गहरा एहसास था। व्याख्यानों को समझने में उसे कोई परेशानी नहीं होती थी। ट्यूटोरियल में भाग लेना - वाद-विवाद और लेखन कार्य - उसके लिए अधिक कठिन साबित हुआ। अपनी मातृभाषा के अलावा किसी अन्य भाषा में अपने विचारों को कागज पर उतारना उसके लिए चुनौतीपूर्ण था। असफल न होने के दृढ़ संकल्प के साथ, उसने कड़ी मेहनत की, हालांकि वह स्वयं से संतुष्ट नहीं थी। वह समझ गई थी कि ऑक्सफोर्ड में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए उसे अपनी अंग्रेजी सुधारनी होगी। उसका दिमाग खुद को पूरी तरह से व्यक्त करने के लिए शब्दों की तलाश में था, ठीक वैसे ही जैसे एक छोटे पौधे को अपनी पूरी क्षमता तक बढ़ने के लिए बारिश की बूंदों की आवश्यकता होती है। उसने रंगीन पोस्ट-इट नोट्स के ढेर खरीदे। उन पर उसने वे शब्द लिखे जो उसे अचानक मिले, जिनसे

उसे प्यार हो गया और जिन्हें वह जल्द से जल्द इस्तेमाल करना चाहती थी - ठीक वैसे ही जैसे हर विदेशी किसी न किसी तरह से करता है।
ऑटोटॉमी: खतरे में पड़े जानवर द्वारा शरीर के किसी अंग को त्याग देना।
क्लेफ्ट स्टिक: (टोलकिन की पुस्तक 'द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' से): किसी कठिन परिस्थिति में होना।
रैंटिपोल: (स्लीपी हॉलो की किंवदंती से): जंगली, लापरवाह, कभी-कभी झगड़ालू व्यक्ति।
अपने पहले राजनीतिक दर्शन निबंध में उन्होंने लिखा: तुर्की में, जहाँ दैनिक राजनीति बेतरतीब है, जब भी व्यवस्था में दरार पड़ती है, तो लोकतंत्र ही पहली चीज होती है जिसे तोड़कर आत्म-विच्छेद के कृत्य में बलिदान कर दिया जाता है।
जब निबंध पढ़कर सुनाने की उसकी बारी आई, तो शिक्षक ने उसे बीच में ही रोक दिया और हैरानी व हंसी दोनों के भाव से पूछा, 'क्या यह वाकई अंग्रेजी थी?' पेरी बेहद शर्मिंदा थी। जो वाक्य उसे सुनने में बुद्धिमान, परिष्कृत और स्टाइलिश लग रहा था, वही एक स्थानीय वक्ता के लिए निरर्थक था। एक विदेशी और स्थानीय व्यक्ति एक ही शब्द को इतना अलग-अलग कैसे सुन सकते हैं? हिम्मत न हारते हुए, बारीकियों पर ध्यान देते हुए, वह चमकदार शब्दों को इकट्ठा करती रही। ये शब्द उसे उन घुमावदार सीपियों और गुलाबी मूंगों की याद दिलाते थे, जो अनगिनत लहरों से चिकने हो गए थे, जिन्हें उसने बचपन में अपने परिवार के साथ समुद्र किनारे जाते समय इकट्ठा किया था। फर्क सिर्फ इतना था कि उन सुंदर लेकिन गतिहीन यादगारों के विपरीत, शब्द सजीव थे, जीवित थे।

दिशा का ज्ञान न होने के कारण पेरी अक्सर ऑक्सफोर्ड घूमते समय रास्ता भटक जाती थी। ऐसे ही एक दौरे पर उसे 'टू काइंड्स ऑफ इंटेलिजेंस' नाम की एक किताबों की दुकान मिली। जैसे ही वह सामने के कमरे में दाखिल हुई, उसके असमान फर्श से एक अजीब सी चरमराहट की आवाज़ आई; हर दीवार पर छत तक किताबों की अलमारियां थीं; कोने में एक चिमनी थी, जिसके ऊपर ऑक्सफोर्ड की पुरानी तस्वीरें लगी थीं; लकड़ी की सीढ़ियाँ दो छोटे कमरों की ओर जाती थीं, जिनमें

से प्रत्येक में चुनिंदा किताबें भरी हुई थीं जो मालिकों की दर्शन, मनोविज्ञान, धर्म और रहस्यवाद में रुचि को दर्शाती थीं। दीवारों पर फ्रेम की हुई तस्वीरें, ग्राहकों के बैठने के लिए फर्श पर हल्के रंग के बीन बैग और दिन भर मुफ्त कॉफी देने वाली कॉफी मशीन के साथ, यह दुकान तुरंत उसकी पसंदीदा जगह बन गई।
दुकान के मालिक (वह स्कॉटिश थीं; वह पाकिस्तानी) उनसे तब बहुत प्रभावित हुए जब उन्हें पता चला कि उन्हें दुकान के नाम की उत्पत्ति पता है। यह रूमी की एक कविता का शीर्षक था। पेरी को कुछ पंक्तियाँ भी याद थीं: बुद्धि दो प्रकार की होती है, एक अर्जित, जैसे बच्चा स्कूल में किताबों और शिक्षक के कहे अनुसार याद करता है... दूसरी... बुद्धि... तरल... भीतर से निकलने वाला एक स्रोत, जो बाहर की ओर प्रवाहित होता है।
महिला ने कहा, 'शाबाश! जब मन करे, आकर यहाँ पढ़ो।'
‘आपकी बुद्धि को और अधिक विकसित करने के लिए। दोनों प्रकार की!’ उस व्यक्ति ने कहा।
पेरी ने ऐसा ही किया। जल्द ही यह उसकी आदत बन गई। वह अपनी कॉफी लेती, टिप बॉक्स में एक सिक्का डालती और बीन बैग पर बैठकर तब तक पढ़ती रहती जब तक उसकी पीठ में दर्द न होने लगे और पैर अकड़ न जाएं। वह बोडलियन संग्रहालय भी अक्सर जाती थी। वह एक सुनसान कोने में बैठकर किताबें पढ़ती, अपनी क्षमता से कहीं अधिक किताबें उठा लेती, चुपके से प्रेट्ज़ेल स्टिक्स का एक पैकेट खोलती और शब्दों के सागर में डूब जाती।
उसने ऑक्सफ़ोर्ड की तस्वीरों वाले पोस्टकार्ड खरीदे। धूप से जगमगाती मध्ययुगीन सड़कें, सुनहरे रंग की चूना पत्थर की इमारतें, छायादार कॉलेज के बगीचे... इनमें से कुछ उसने अपने माता-पिता को भेजे, लेकिन बाकी अपने भाई उमट के लिए रखे। वह उसे लगातार पत्र लिखती रहती थी, हालाँकि उसके जवाब अनियमित और संक्षिप्त होते थे। फिर भी, उसने कभी हार नहीं मानी। उसने अपने पोस्टकार्ड को हल्का-फुल्का, यहाँ तक कि खुशनुमा रखा। उसे अपने डर, सिरदर्द, बुरे सपने और अकेलेपन का ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं थी, जिसे अब वह जानती थी कि वह एक अभिशाप और साथी दोनों है। इसके बजाय, उसने अंग्रेजों के विचित्र रूप से आकर्षक तरीकों, उनके व्यावहारिकता, अपनी संस्थाओं में उनके अनकहे विश्वास और उनके अनोखे हास्य के बारे में बात की।

उमुत लाइनदार कागज़ पर, बिस्कुट के डिब्बों, कैलेंडर या किराने के थैलों से फाड़े गए कागज़ के टुकड़ों पर लिखकर जवाब देता था। लेकिन एक बार उसने एक पोस्टकार्ड भेजा। नीला समुद्र, एक लाल मछुआरे की नाव, भूमध्य सागर की शांत हवा और वादों जैसी कोमल रेत... मानो वह भी खुशी का दिखावा करने की कला में हाथ आज़मा रहा हो।

‘फॉर्मल हॉल’ के दौरान – सदियों पुराने एक भव्य हॉल में, जो कॉलेज के पूर्व अध्यक्षों के चित्रों से घिरा हुआ था – पेरी प्राचीन ओक की बेंचों पर बैठती, कॉलेज के चांदी के बर्तनों से सजी मेजों पर सफेद जैकेट पहने कर्मचारियों द्वारा परोसी जाती, और उसे ऐसा लगता जैसे वह किसी दूसरी दुनिया में पहुँच गई हो। वह किसी चित्र की पात्र जैसी थी, एक साथ अवास्तविक और रोमांटिक। कॉलेज के कुछ हिस्से सदियों से अपरिवर्तित थे, और उसे इतिहास की अनुभूति और उसकी निरंतरता की महक बहुत प्यारी लगती थी। कई बार वह पुरानी लाइब्रेरी में सिर्फ किताबों से भरी अलमारियों की मादक सुगंध लेने जाती। वह तहखाने में जाती जहाँ वह एक हैंडल घुमाकर अलमारियों को हिलाती ताकि उसे अपनी मनचाही किताबें मिल सकें। हजारों किताबों के बीच, जिनमें से हर एक उसके लिए एक आश्रय थी, वह पूर्णता का अनुभव करती। अजीब बात यह थी कि ज्ञान के उस विशाल भंडार में उसके मन में एक ही विचार बार-बार आता था: ईश्वर।
उसे यह बात समझ नहीं आती थी, क्योंकि वह अपने आप को जिन गुणों से परिपूर्ण मानती थी, उनमें से कोई भी 'धार्मिक' या 'आध्यात्मिक' नहीं था। यह बात वह अपनी माँ को बताने की हिम्मत कभी नहीं करती थी, पर कई बार उसे यह संदेह होता था कि क्या वह वास्तव में किसी चीज़ में विश्वास करती भी है या नहीं। सांस्कृतिक रूप से, वह एक मुस्लिम थी, बेशक। उसे रमज़ान और ईद बहुत पसंद थे, जो उसके दिल को गर्मजोशी से भर देते थे और उसके मन को सुगंध और स्वाद की गहरी यादों से भर देते थे। उसके लिए इस्लाम बचपन की एक याद की तरह था - बहुत परिचित और व्यक्तिगत, लेकिन साथ ही किसी तरह धुंधला, समय और स्थान से बहुत

दूर। जैसे उसकी कॉफ़ी में घुली हुई चीनी का एक टुकड़ा, जो है भी और नहीं भी।
उसे हमेशा यह बात अजीब लगती थी कि इतने सारे तुर्क अरबी प्रार्थनाओं को बिना यह जाने याद कर लेते थे कि वे क्या कह रही हैं। चाहे अंग्रेज़ी हो या तुर्की, पेरी को शब्दों से प्यार था। वह उन्हें अपनी हथेलियों में ऐसे थामे रहती थी जैसे फूटने वाले अंडे हों, जिनमें जीवन से भरे नन्हे दिल उसकी त्वचा पर धड़क रहे हों। वह उनके अर्थों की खोज करती थी – छिपे हुए और प्रकट; वह उनकी व्युत्पत्ति का अध्ययन करती थी। लेकिन अनगिनत विश्वासियों के लिए, प्रार्थनाओं के शब्द पवित्र ध्वनियाँ थीं, जिनसे अपेक्षा की जाती थी कि उन्हें गहराई से न समझें, बल्कि उनका अनुकरण करें – एक ऐसी प्रतिध्वनि जिसका न कोई आरंभ है और न कोई अंत, जिसमें सोचने की क्रिया अनुकरण की क्रिया में समाहित हो जाती है। आस्था की सुरक्षित गोद में, प्रश्नों को छोड़ देने से उत्तर मिलते थे; समर्पण से ही प्रगति होती थी।
पेरी ने अपनी ईश्वर-डायरी में लिखा: आस्तिक लोग प्रश्नों के बजाय उत्तरों को, अनिश्चितता के बजाय स्पष्टता को प्राथमिकता देते हैं। नास्तिक भी लगभग ऐसा ही करते हैं। अजीब बात है, जब बात ईश्वर की आती है, जिसके बारे में हम लगभग कुछ भी नहीं जानते, तो हममें से बहुत कम लोग वास्तव में कहते हैं, 'मुझे नहीं पता।'

देवदूत

ऑक्सफोर्ड, 2000
ऑक्सफ़ोर्ड आने के बाद से पेरी नियमित रूप से अपने पिता से फ़ोन पर बात करती थी, और जानबूझकर ऐसे समय पर फ़ोन करती थी जब उसे पता होता था कि उनके फ़ोन उठाने की संभावना अधिक है। लेकिन आज जब उसने इस्तांबुल में फ़ोन किया, तो उसकी माँ ने फ़ोन उठाया।
‘पेरिसिम…’ सेल्मा ने प्यार से कहा, लेकिन तुरंत ही अपना लहजा बदल दिया। ‘क्या तुम अपने भाई की शादी में आ रहे हो?’
'जी मां। मैंने आपसे कहा था कि मैं ऐसा करूंगा।'
‘वह एक फरिश्ता है, मैं आपको बता रहा हूँ।’
'कौन?'
‘बेशक, दुल्हन ही होगी, मूर्ख।’
तैयारियों को लेकर चिंतित सेल्मा ने अपनी होने वाली बहू के गुणों की इतनी अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा की कि पेरी को इसका एहसास हो गया।
पेरी ने कहा, 'वाह, बहुत बढ़िया! परिवार में एक फरिश्ते की ज़रूरत है।' उसे अपनी माँ की तारीफों में छिपे व्यंग्य का एहसास हो रहा था, मानो चमकदार पैकेजिंग में छिपी मिठाई में कुछ बासी चीज़ छिपी हो। दुल्हन सेल्मा की वो बेटी थी जो उसे कभी नहीं मिली थी - नेक, सरल स्वभाव वाली और आज्ञाकारी। ‘तुम्हें क्या हुआ है?’ सेल्मा ने पूछा।
'कुछ नहीं।'
सेल्मा ने आह भरी। 'तुम मेहंदी की रात के लिए यहाँ जरूर आई हो।'
शादी के विपरीत, जिसे दूल्हे की जिम्मेदारी माना जाता था, मेहंदी की रात दुल्हन के परिवार के कर्तव्यों के अंतर्गत आती थी।
‘माँ, हमने इस बारे में बात की थी। मैं सिर्फ शादी में ही शामिल हो सकती हूँ।’
‘यह ठीक नहीं है। लोग गपशप करेंगे। आपको जल्दी आना होगा।’
पेरी ने अपनी आँखें घुमाईं। जिस तेज़ी से उसकी माँ उसका मूड खराब कर देती थी, वह अब भी उसे आश्चर्यचकित कर देती थी - मानो सेल्मा, और केवल सेल्मा ही,

जानती हो कि उसकी बेटी के दिल में कहाँ दबाना है ताकि उसके खून का प्रवाह तेज़ हो जाए।
पेरी ने दृढ़ता से कहा, 'मैं और अधिक व्याख्यानों को छोड़ नहीं सकती।' उनकी बातचीत तीखी हो गई, दोनों पक्ष एक-दूसरे पर स्वार्थी होने का आरोप लगाने लगे। फोन रखने के बाद, पेरी को कही और अनकही बातों पर, उनके बीच टूटे रिश्तों पर, जिन्हें सुधारा नहीं जा सकता था, गहरा आक्रोश महसूस हुआ।

उसी रात पेरी की नींद ठीक से नहीं आई। सुबह उठते ही उसे तेज़ सिरदर्द होने लगा, मानो माइग्रेन हो गया हो। उसने दराजें चेक कीं, लेकिन उसे कोई दर्द निवारक दवा नहीं मिली। कनपटी को मलते हुए उसने एक धातु के डिब्बे का निचला हिस्सा अपनी धड़कती दाहिनी आंख पर दबाया, जिससे उसे हमेशा आराम मिलता था। वह वापस बिस्तर पर लेट गई और खुद को समेट लिया। उसे नींद आने की उम्मीद नहीं थी, लेकिन देखते ही देखते वह सपने देखने लगी।
टेढ़े-मेढ़े पेड़ों से भरा एक बगीचा। अकेली, हवा में लहराती पोशाक पहने, पेरी टहल रही थी। एक धारा के किनारे, उसने एक विशाल ओक का पेड़ देखा। वहाँ, एक शाखा से एक टोकरी में एक बच्चा लटका हुआ था, जिसका आधा चेहरा एक गहरे धब्बे से ढका हुआ था। पेरी ने भय से देखा कि पेड़ में आग लगी हुई थी, लपटें उसके तने को नीचे से ऊपर तक चाट रही थीं। उसने एक बाल्टी उठाई और धारा से पानी भरने लगी। देखते ही देखते चारों ओर पानी ही पानी हो गया, जो उसके पैरों के आसपास मथ रहा था और भंवर बना रहा था। जब उसने दोबारा ऊपर देखा, तो बच्चा पेड़ पर नहीं था; वह उस उफनती नदी में बह गया था। पेरी चीख पड़ी जब उसे एहसास हुआ कि उसने कुछ बहुत बड़ी, अपूरणीय गलती कर दी है।
कहीं से हल्की-हल्की दस्तक सुनाई दी, धीमी लेकिन लगातार। पेरी ने अपनी आँखें खोलने की कोशिश की, उसे समझ नहीं आ रहा था कि कहीं यह भी उसके सपने का हिस्सा तो नहीं है।
दरवाजे के दूसरी तरफ से एक आवाज आई, 'मैं शिरीन हूँ, तुमने मुझे बहुत डरा दिया था। तुम ठीक हो?'

पेरी उठ बैठी और उलझन में पलकें झपकाने लगी। 'मैं ठीक हूँ,' उसने कहा। उसका गला सूखा और बेजान सा लग रहा था, जैसे सूखी पत्तियाँ हों। उसे इस बात का डर सता रहा था कि उसकी चीख इतनी ज़ोर से निकली कि सामने वाले कमरे तक सुनाई दी।
जब तक मैं तुम्हें अपनी आँखों से नहीं देख लेता, मैं यहाँ से नहीं जाऊंगा। धीरे-धीरे पेरी बिस्तर से उठी और दरवाजा खोला। शिरीन ने आड़ू रंग का रेशमी पजामा और उसी रंग का आई मास्क पहना हुआ था, जिसे उसने माथे तक खींच रखा था। मेकअप रहित और क्रीम की मोटी परत से घिरी उसकी आंखें पहले से ज्यादा गहरी और छोटी लग रही थीं।
‘अरे यार, तुम्हारी आवाज़ तो किसी हॉरर फिल्म की औरत जैसी लग रही थी,’ शिरिन ने कहा। ‘उन बेवकूफ हीरोइनों में से एक जो किसी पागल को देखकर सामने का दरवाजा खोलकर वहां से भागने के बजाय ऊपर की मंजिल पर भाग जाती है।’
'अगर मैंने आपको जगा दिया तो क्षमा करें।'
शिरिन ने अपने आकर्षक सीने पर हाथ बांधते हुए कहा, 'मेरी चिंता मत करो। क्या तुम्हें हमेशा बुरे सपने आते हैं?'
‘कभी-कभी…’ पेरी ने स्वीकार किया। उसने नीचे बिछे कालीन पर नज़र डाली और एक दाग देखा जो उसने पहले नहीं देखा था। ‘बस बेवकूफी भरे सपने।’ 'पुनरावर्ती?'
'कुछ हद तक, हाँ।'
शिरिन ने अपने कान के पीछे बालों की एक लट को धकेलते हुए, ऐसी आवाज़ में कहा जिसमें विरोध की कोई गुंजाइश नहीं थी, 'मैंने अपने परिवार में बहुत पागलपन देखा है, और भगवान जानता है कि मैं खुद भी थोड़ी सनकी हूँ। मैं इसे देखते ही पहचान लेती हूँ।'
‘क्या तुम्हारा मतलब है कि मैं पागल हूँ?’
'पूरी तरह से पागल तो नहीं थी, लेकिन मैंने जो चीख सुनी वह वाकई चौंकाने वाली थी। अगर आपको कोई मनोवैज्ञानिक समस्या है, तो आपको उससे निपटना ही होगा।'
मुझे कोई मनोवैज्ञानिक समस्या नहीं है!
‘आह!!!’ शिरीन ने एक असहनीय चीख निकाली, मानो किसी जंगली जानवर को तीर लग गया हो। ‘जब लोग “मनोवैज्ञानिक” शब्द से नाराज़ होते हैं तो मुझे बहुत

बुरा लगता है! मुझे यकीन है कि अगर मैं कहती कि आपको बवासीर है तो आपको बुरा नहीं लगता।’
पेरी ने सुधार करते हुए कहा, 'हेमोराइडल'।
‘जो भी हो,’ शिरिन ने दीवारों पर लगे पोस्ट-इट नोट्स पर नज़र डालते हुए कहा। ‘तुम तो डिक्शनरी वाली लड़की हो।’
‘देखिए, मेरा हालचाल पूछने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, लेकिन मैं ठीक हूँ।’ शीशे की खिड़की से चाँद की रोशनी उसके चेहरे पर एक विकृत आयताकार आकृति में पड़ रही थी। ‘मैं अपने भाई की शादी के लिए घर जा रही हूँ। मैं पढ़ाई नहीं छोड़ सकती, लेकिन पारिवारिक जिम्मेदारियाँ सबसे पहले आती हैं। मैं थोड़ी तनावग्रस्त महसूस कर रही हूँ।’
शिरिन ने सिर हिलाया। 'ठीक है, उस शादी में जाओ, लेकिन वापस आने पर तुम्हें थोड़ा बाहर निकलना चाहिए। थोड़ा मौज-मस्ती करना ठीक है; तुम अभी जवान हो, क्या तुम भूल गए हो?'
पेरी ने धीमी आवाज़ में कहा, 'मैं तुम्हारे जैसी नहीं हूँ।'
‘क्या आपका मतलब है कि आपको दुख में आनंद आता है?’
'बिल्कुल नहीं!'
शिरिन ने कहा, 'उदासी से निपटने के दो तरीके हैं। या तो आप ड्राइवर की सीट पर बैठकर गाड़ी की रफ्तार बढ़ा दें, जबकि मिस्टर डिप्रेशन पीछे बैठकर अपना शोर मचाते रहें। या फिर आप उन्हें ही गाड़ी चलाने दें, और फिर वे आपको डरा देंगे।'
पेरी ने पूछा, 'इससे क्या फर्क पड़ता है? अगर तुम्हें वैसे भी पेड़ से टकराना ही है तो।'
'हाँ, लेकिन गाड़ी चलाने का मौका तो तुम्हें मिलेगा, बहन, उस उदास बूढ़े मिस्टर डिप्रेशन को नहीं। है ना कमाल की बात?'
पेरी को जब यह एहसास हुआ कि वह इस बहस में जीत नहीं सकती, तो उसने विषय बदलने का एकमात्र तरीका सोचा। "वैसे, अज़ूर, आपने जिस प्रोफेसर का ज़िक्र किया था, मैंने उनके सेमिनार के बारे में जानकारी ढूंढ ली है।"
‘क्या सच में?’ शिरीन के गालों पर हल्की गुलाबी रंगत आ गई। ‘क्या वो आकर्षक नहीं है?’
'मैं उनसे मिला नहीं हूँ, मैंने केवल विकल्पों की सूची में उनका विवरण पढ़ा है।'

‘ओह! अच्छा, आप क्या सोचते हैं?’
'दिलचस्प लगता है।'
शिरिन दरवाजे की ओर बढ़ी। ‘क्या मैं आपको कुछ दोस्ताना सलाह दे सकती हूँ? एक ईरानी महिला होने के नाते, एक तुर्की बहन को, इसे बर्बादी की निशानी समझो। अगर तुम अज़ूर के सेमिनार में पहुँच जाओ, तो कभी भी “दिलचस्प” शब्द का इस्तेमाल मत करना। उसे यह शब्द बिल्कुल पसंद नहीं है। वह कहता है कि “दिलचस्प” शब्द में दूर-दूर तक कुछ भी दिलचस्प नहीं है।’
इतना कहकर शिरीन बाहर चली गई और अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया, पेरी को उसके बुरे सपनों के साथ अकेला छोड़ दिया।

संगीत बॉक्स

इस्तांबुल, 2016
मिठाइयाँ क्रिस्टल की प्लेटों में परोसी गईं: चॉकलेट कस्टर्ड से भरा हेज़लनट मूस केक और ऊपर भैंस की क्रीम से सजा ओवन में पका हुआ क्विंस। मेहमानों ने एक साथ प्रतिक्रिया दी, कुछ प्रशंसा से भरे थे, तो कुछ चिंता से।
‘अरे, आज रात मेरा वजन दो पाउंड बढ़ गया होगा,’ पीआर महिला ने अपना पेट थपथपाते हुए कहा।
‘चिंता मत करो, घर पहुँचने तक यह कैलोरी बर्न हो जाएगी,’ व्यापारी की पत्नी ने आश्वस्त करते हुए कहा।
पत्रकार ने कहा, 'राजनीति पर बहस करते रहो। इसी तरह हम इस देश में कैलोरी बर्न करते हैं।'
जब नौकरानी उसके पास आई तो पेरी ने धीरे से कहा, 'नहीं, धन्यवाद।'
'ज़रूर, महोदया,' नौकरानी ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, मानो वह स्वेच्छा से इस काम में शामिल हो गई हो।
लेकिन मेज़बान ने बातचीत सुनकर मेज के अपने छोर से हस्तक्षेप किया: 'नहीं, प्रिय! जब आपने हमारे विचारों का विरोध किया तो मैं नाराज़ नहीं थी, लेकिन अगर आप मेरा केक नहीं चखेंगे तो मुझे अच्छा नहीं लगेगा।'
पेरी को मानना ही पड़ा। वह क्विंस और केक दोनों खाएगी। उसे हमेशा यह बात हैरान करती थी कि औरतें एक-दूसरे को मोटा करने के लिए इतनी उत्सुक क्यों रहती हैं। शायद इसका संबंध 'तुलनात्मक सौंदर्यशास्त्र के नियम' से था - जब कई औरतें मोटी होती थीं, तो कोई भी वास्तव में मोटी नहीं होती थी। लेकिन शायद वह कुछ ज्यादा ही निराशावादी थी। शिरीन की बहुत पुरानी आवाज़ उसके दिमाग में गूंजी। 'मानो, माउस, तुम अभी उतनी निराशावादी नहीं हो।'
जैसे ही मेज़बान, संतुष्ट होकर, अगले मेहमान की ओर मुड़ी, पेरी ने अपना शराब का गिलास उठा लिया। आज शाम उसने सामान्य से अधिक शराब पी ली थी, हालाँकि किसी को इसका एहसास नहीं हुआ, यहाँ तक कि उसे खुद भी नहीं। वर्षों से उसने अपने दिल में अनचाही भावनाओं को रोकने के लिए जो बांध खड़ा किया था, उसमें एक दरार आ गई थी। अब उस छोटी सी दरार से उदासी की एक धारा रिस रही

थी। इस बीच, उसका एक और हिस्सा, इससे होने वाले खतरे और विनाश के प्रति सचेत होकर, पूरी तरह सतर्क था और उस दरार को बंद करने की पुरजोर कोशिश कर रहा था ताकि सब कुछ सामान्य हो सके।
पत्रकार की प्रेमिका ने भारी, सिगरेट पीने वाली आवाज में कहा, 'मुझे लगा था कि आज कोई ज्योतिषी आने वाला है।' हर कोई जानता था कि वह उन अफवाहों से परेशान थी - जो हाल ही में एक मीडिया वेबसाइट पर प्रकाशित हुई थीं - कि पत्रकार को अपनी पूर्व पत्नी के साथ रोमांटिक डिनर करते देखा गया था और शायद दोनों फिर से एक साथ आ रहे हैं।
‘उसे एक घंटे पहले यहाँ होना चाहिए था,’ व्यापारी ने कहा। ‘लगता है बेचारा ट्रैफिक में फंस गया।’
‘अरे वाह, इस्तांबुल में तो ज्योतिषियों को भी नहीं पता कि कौन सी सड़क लेनी है,’ अमेरिकी हेज-फंड मैनेजर ने चुटकी लेते हुए कहा।
‘तुम देखोगे, मेरे दोस्त, यह आदमी सबसे बेहतरीन है,’ व्यापारी ने आधी अंग्रेजी, आधी तुर्की में कहा। ‘लोग कहते हैं कि इसने वित्तीय संकट का पूर्वानुमान लगा लिया था।’
'शायद हम सभी को ज्योतिषियों से सलाह लेनी चाहिए, क्योंकि राजनीतिक विशेषज्ञ बेकार हैं और वित्तीय विशेषज्ञ तो उससे भी बदतर हैं,' पीआर महिला ने कहा।
अचानक ही पेरी ने मेज से उठकर जाने का बहाना बनाया।
‘अरे नहीं, क्या हमने आपको फिर से बोर कर दिया?’ वास्तुकार ने अपनी ड्रिंक पीते हुए कहा, उसकी आँखें भावहीन थीं। छोटी-छोटी बातों पर नाराज़ होने वाला वह व्यक्ति, उसे चुनौती देने के लिए उसे माफ़ नहीं कर पाया था।
पेरी ने उसकी तरफ देखा। 'मैं बस बच्चों का हालचाल जानने के लिए फोन करने जा रही हूँ।'
‘बिल्कुल,’ व्यापारी ने कहा। ‘आप ऊपर मेरे दफ्तर में क्यों नहीं चले जाते? वहाँ आपको शांति और सुकून मिलेगा।’
अपने पति का मोबाइल उधार लेकर पेरी पहली मंजिल पर चली गई, और इस दौरान वह खाने की मेज से आ रही आवाजों को लगातार सुनती रही।

उस व्यवसायी के दफ्तर में बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ थीं जिनसे बोस्फोरस का शानदार नज़ारा दिखता था। चमड़े की दीवारों, लकड़ी की नक्काशीदार छत, महोगनी और संगमरमर से बनी विशाल मेज, अंडे की जर्दी के रंग की ऊँची आर्मचेयर, प्राचीन कलाकृतियाँ और उत्तम चित्रों से सुसज्जित यह कमरा किसी दफ्तर से ज़्यादा किसी भव्य माफिया सरगना के निजी लाउंज जैसा लगता था।
एक कोने में व्यापारियों की तस्वीरों से सजावट की गई थी – जिनमें राजनेता, मशहूर हस्तियाँ और बड़े उद्योगपति शामिल थे। उनमें से एक तस्वीर में पेरी की नज़र मध्य पूर्व के एक तानाशाह की मुस्कुराती हुई मुस्कान पर पड़ी, जो अब सत्ता में नहीं था और एक भव्य बद्दू तंबू जैसे दिखने वाले स्थान के सामने अपने मेज़बान से हाथ मिला रहा था। उसके पीछे, एक और तस्वीर में, मध्य एशिया के एक दिवंगत निरंकुश शासक का कठोर चेहरा दिखाई दे रहा था, जो अपने गृहनगर को अपनी तस्वीर से सजाने के लिए कुख्यात था, यहाँ तक कि उसने एक महीने का नाम अपने नाम पर और दूसरे का नाम अपनी माँ के नाम पर रखा था। पेरी ने गहरी साँस ली, मानो अपने फेफड़ों में धुएँ का एक काल्पनिक बादल रोके हुए हो, साँस बाहर नहीं निकल पा रही थी। वह इस आलीशान घर में क्या कर रही थी, जो गुप्त और अंधेरे रास्तों से आए धन से बना था? उस क्षण, उसे लगा जैसे वह नदी में एक कंकड़ है, जो धारा में लगातार इधर-उधर फेंका जा रहा है। अगर प्रोफ़ेसर अज़ूर यहाँ होते, तो शायद वे मुस्कुराते और अपनी किताब "द गाइड टू रिमेनिंग परप्लेक्स्ड" से उद्धृत करते: प्रेम के बिना ज्ञान नहीं। स्वतंत्रता के बिना प्रेम नहीं। और स्वतंत्रता तब तक नहीं जब तक हम उस चीज़ से दूर जाने का साहस न करें जो हम बन चुके हैं।
जल्दी से, मानो अपने ही मन से भागते हुए, उसने अपने घर का नंबर डायल किया। खिड़की से माथा टिकाकर, वह बाहर के नज़ारे को निहारती रही और बच्चों की देखभाल कर रही अपनी माँ के फ़ोन उठाने का इंतज़ार करती रही। शीशे के पीछे, एक ऐसे अर्धचंद्राकार चाँद की रोशनी में जो इतना चमकदार था कि मानो असली न लगे, शहर फैला हुआ था – घर एक तरफ झुके हुए थे मानो एक-दूसरे से कुछ राज़ फुसफुसा रहे हों; तीखे मोड़ों वाली सड़कें खड़ी पहाड़ियों पर चढ़ रही थीं; आखिरी चाय की दुकानें अपने दरवाज़े बंद कर रही थीं और आखिरी ग्राहक जा रहे थे… उसने सोचा कि उसका पर्स चुराने वाले बच्चे क्या कर रहे होंगे। क्या वे सो रहे थे, और अगर हाँ, तो क्या वे भूखे पेट सोए थे? पेरी को लगा कि शायद

‘क्या यह सुबह तक इंतजार नहीं कर सकता?’ सेल्मा ने पूछा। ‘तुम्हें पता है मेरी आंखें अब उतनी तेज नहीं रहीं जितनी पहले थीं।’
‘प्लीज, मुझे एक कॉल करनी है,’ पेरी ने विनती की। ‘आज रात ही।’
‘ठीक है, थोड़ा इंतजार करो,’ सेल्मा ने आह भरते हुए कहा। ‘देखती हूँ मैं क्या कर सकती हूँ।’
‘ओह, माँ…’
'हाँ?'
'इसके बाद, क्या आप कृपया नोटबुक को दोबारा लॉक कर सकते हैं?'
‘धीरे-धीरे,’ सेल्मा ने थकी हुई आवाज़ में कहा। ‘मुझे भ्रमित मत करो।’
पेरी ने अपनी माँ के रिसीवर को एक तरफ रखने की खटखटाहट सुनी। पीछे हटते कदमों की आवाज़, भारी और जल्दबाज़ी भरी। वह इंतज़ार करती रही, अपने होंठ चबाती रही। दूर, दूसरे पुल की रोशनी में, समुद्र हरा-नीला था, उम्मीद का रंग। उसने खिड़की में अपनी परछाई देखी, और अपने ढीले पेट को नापसंद किया। फिर भी, वह अभी तक तेज़ी से बूढ़ी नहीं हुई थी, जैसा कि उसे डर था। शायद बुढ़ापे के अलग-अलग तरीके होते हैं। कुछ शरीर से पहले मुरझाते हैं, कुछ मन से, और कुछ आत्मा से।
मस्तिष्क के स्मृति-संग्रह वाले हिस्से में एक डिब्बा था – एक संगीत बॉक्स, जिसका इनेमल रंग उखड़ा हुआ था, और जिसकी धुनें किसी दिल को छू लेने वाली थीं। उसमें वे सभी बातें दबी हुई थीं जिन्हें मन न तो भूलना चाहता था और न ही याद करने की हिम्मत करता था। तनाव या सदमे के क्षणों में, या शायद बिना किसी स्पष्ट कारण के, वह डिब्बा अचानक खुल जाता और उसकी सारी सामग्री बिखर जाती। उसे ऐसा ही महसूस हो रहा था कि आज रात उसके साथ भी ऐसा ही हो रहा है।
'मुझे वह नहीं मिला,' सेल्मा ने परिश्रम के कारण हांफते हुए कहा।
‘क्या आप दोबारा कोशिश करेंगे? जब आपको मिल जाए तो मुझे बता देना।’
‘मैं टीवी देख रही थी,’ सेल्मा ने आपत्ति जताई, फिर थोड़ा नरम लहजा अपनाते हुए बोली, ‘ठीक है, मैं अपनी पूरी कोशिश करूंगी।’
उनके बीच संबंध सुधर गए थे, ठीक उसी कारण से जिसने पहले उन्हें अलग रखा था: मेन्सुर। जीवन में मतभेद पैदा करने वाले मेन्सुर की अनुपस्थिति ने उन्हें और करीब ला दिया था।

पेरी ने झट से कहा, 'एक और बात, मेरा फोन चोरी हो गया है। अदनान को मैसेज कर देना, लेकिन इस बारे में कुछ मत कहना। बस इतना लिख देना, "घर पर फोन करो", मैं तुम्हें कॉल कर दूंगी।'
‘क्या हो रहा है?’ सेल्मा ने पूछा। एक पल के लिए संदेह का भाव उसके चेहरे पर छा गया। ‘क्या शिरीन वही भयानक लड़की नहीं है जो इंग्लैंड में रहती है?’ पेरी को लगा जैसे उसका दिल ज़ोर से धड़क उठा हो।
‘तुम उससे बात क्यों करना चाहते हो?’ सेल्मा ने जोर देकर पूछा। ‘वह तुम्हारी दोस्त नहीं थी।’
पेरी ने मन ही मन सोचा, "वह मेरी सबसे अच्छी दोस्त थी," लेकिन उसने यह बात कहने से खुद को रोक लिया। "वह, मोना और मैं। हम तीनों: पापी, आस्तिक और भ्रमित।"
इसके बजाय उसने कहा, 'माँ, बहुत समय हो गया है, हम सब अब बड़े हो गए हैं। आपको चिंता करने की कोई बात नहीं है। मुझे यकीन है कि शिरीन ने सब कुछ पीछे छोड़ दिया होगा।'
ये शब्द बोलते हुए और खुद को इन पर यकीन दिलाने की कोशिश करते हुए भी, पेरी जानती थी कि इनमें से कुछ भी सच होने की संभावना नहीं है। शिरिन कभी भी अतीत को भुला नहीं सकती थी। ठीक वैसे ही जैसे पेरी भी नहीं भुला पाई थी।

कुंवारीपन की बेल्ट

ऑक्सफ़ोर्ड, इस्तांबुल, 2000
सर्दी के मौसम की शुरुआत में एक दोपहर, जब हवा में समुद्री नमक और गंधक की महक थी, पेरी अपने भाई की शादी के लिए इस्तांबुल पहुँची। उसे अपने जन्म शहर की बहुत याद आ रही थी – यहाँ रहते हुए उसे चाहे कितना भी अकेलापन महसूस हुआ हो, दूर रहने के दौरान वह और भी अकेली हो गई थी। मानो उदासी भरे विचारों से खुद को बचाने के लिए, सूटकेस रखते ही वह जिम्मेदारियों की एक लंबी सूची से घिर गई – रिश्तेदारों से मिलना, उपहार खरीदना, घर के काम निपटाना।
पेरी को यह समझने में देर नहीं लगी कि उसकी अनुपस्थिति में नालबंतोग्लू परिवार में तनाव का एक पिरामिड खड़ा हो गया था, जिससे माहौल भारी और सांस लेना मुश्किल हो गया था। कुछ मनमुटाव पुराना था - उसके माता-पिता के बीच होने वाली आम तीखी नोकझोंक। लेकिन इसका एक बड़ा हिस्सा हाल ही का था, जो शादी की तैयारियों के कारण पैदा हुआ था। दुल्हन के परिवार ने एक भव्य समारोह पर ज़ोर दिया था, जो उनकी बेटी के योग्य हो। किराए पर लिया गया हॉल आखिरी समय में एक बड़े स्थान से बदल दिया गया, जिसका मतलब था अधिक लोगों को आमंत्रित करना, अधिक भोजन मंगवाना और अंततः अधिक पैसा खर्च करना। फिर भी, कोई संतुष्ट नहीं था। हालांकि दोनों परिवार शिष्टाचार और प्रशंसा का आदान-प्रदान करते रहे, शिष्टाचार के दिखावे के पीछे, दोनों ओर असंतोष की लहर बह रही थी।
शादी की सुबह, पेरी की नींद घर में फैली स्वादिष्ट खुशबू से खुली। जब वह रसोई में गई, तो उसने देखा कि उसकी माँ पीले डेज़ी फूलों की छपाई वाले एप्रन पहने हुए, तीन अलग-अलग तरह के बोरेक (पालक, सफेद पनीर और कीमा) बना रही थी। सेल्मा रगड़-रगड़ कर, पॉलिश करके, धूल झाड़कर, कपड़े धोकर, असाधारण गति से काम कर रही थी और मानो रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी।
किचन की मेज पर बैठी अपनी बेटी से मेंसुर ने अखबार से नजरें हटाए बिना कहा, 'उस औरत से कह दो, वह काम करते-करते मर जाएगी।' अखबार एक मध्य-वामपंथी दैनिक था जिसकी सदस्यता पेरी को याद रहने तक वह लेता रहा था।

'उस आदमी से कहो कि उसके बेटे की शादी हो रही है। ऐसा जीवन में एक ही बार होता है,' सेल्मा ने पलटवार किया।
पेरी ने आह भरी। 'तुम दोनों बच्चों की तरह हो - एक दूसरे से बात क्यों नहीं कर रहे हो?'
इस पर उसके पिता ने पन्ना पलटा; उसकी माँ ने आटे का एक और लोथा बेलना शुरू किया। उनके बीच एक कुर्सी पर बैठी, मानो एक दूरी बनाने के लिए, पेरी ने पूछा, 'मेहंदी की रात कैसी रही?'
सेल्मा ने अपने निचले होंठ को दांतों से दबाया, उसकी निगाहें टूटे हुए कांच की तरह थीं। 'तुम चूक गए। तुम्हें यहाँ होना चाहिए था।'
‘माँ, मैंने तुमसे कहा था कि मैं नहीं आ पाऊँगी। मेरी क्लासें थीं।’
‘खैर, आपको बता दूं, सब लोग आपके बारे में पूछ रहे थे। मेरी पीठ पीछे कानाफूसी हो रही थी कि बेटा यहाँ नहीं है, बेटी यहाँ नहीं है… कैसा परिवार है!’
‘उमुत नहीं आ रहा है?’ पेरी ने पूछा।
‘उसने कहा था कि वह आएगा। उसने वादा किया था। मैंने उसके पसंदीदा व्यंजन बनाए। मैंने सबको बताया कि वह आ रहा है। लेकिन आखिरी समय में उसने फोन किया और कहा, “माँ, मुझे कुछ ज़रूरी काम हैं।” क्या ज़रूरी काम? क्या वह मुझे मूर्ख समझता है? मुझे वह लड़का समझ नहीं आता।’
लेकिन पेरी ने ऐसा किया। जेल से रिहा होने के बाद से उमट दक्षिणी कस्बे में एक शांत जीवन जीना पसंद करता था, जहाँ वह अपने घर जैसे एक केबिन में पर्यटकों के लिए छोटी-मोटी चीज़ें बनाता था। उसकी मुस्कान उतनी ही नाजुक थी जितनी कि वे सीपियाँ जिनसे अब उसकी आजीविका चलती थी। वे पहले भी कुछ बार उससे मिलने गए थे। वह हमेशा विनम्र और संयमित रहता था, मानो अजनबियों से बात कर रहा हो। उसके साथ रहने वाली महिला - दो बच्चों वाली तलाकशुदा - ने बताया कि वह ठीक था, लेकिन कभी-कभी उसका मिजाज अचानक बिगड़ जाता था: वह चिड़चिड़ा, गुस्सैल हो जाता था, बिस्तर से उठ नहीं पाता था, अपना चेहरा भी नहीं धो पाता था; उसने बताया कि कभी-कभी वह इतना गुस्सा हो जाता था कि उसे दिन-रात उस पर नज़र रखनी पड़ती थी, इसलिए नहीं कि उसे डर था कि वह उसे या उसके बच्चों को नुकसान पहुँचा सकता है, बल्कि इसलिए कि वह खुद को नुकसान पहुँचा सकता है; उसने रेज़र को नज़र से दूर रखा, क्योंकि वे घाव आसानी से

ठीक नहीं होते थे; न तो उसने इस बारे में ज़्यादा सोचा, न ही नालबंतोग्लस ने इस डर से कि यह उनके लिए संभालना मुश्किल हो जाएगा।
‘देखो, मुझे माफ़ करना, अगर हो सकता तो मैं पहले आ जाती,’ पेरी ने कहा। उसका अपनी माँ से झगड़ा करने का कोई इरादा नहीं था। ‘कैसा रहा, बताओ।’
‘अरे, वही रोज़ की बात, कुछ खास नहीं,’ सेल्मा ने कहा। ‘बदले में, वे हमसे हीरों की बारिश की उम्मीद करते हैं।’
एक कुशल लेखाकार की तरह, सेल्मा इस बात का हिसाब रख रही थी कि नालबंतोग्लस परिवार ने दूसरे परिवार की तुलना में कितना पैसा खर्च किया; दूल्हा कितने लोगों को आमंत्रित कर रहा था और दुल्हन की अतिथि सूची में कितने लोग थे; इत्यादि। ऐसा लग रहा था मानो उनके जीवन में कोई तराजू आ गया हो: एक परिवार जितना भार एक पलड़े पर डालता, दूसरे पलड़े से उसका संतुलन बनाना ही पड़ता था। अगर यह एक तरह की रस्साकशी थी, तो इसे पूरी मर्यादा के साथ लड़ा जा रहा था। पेरी यह देखकर हैरान थी कि कैसे एक पल उसकी माँ तुलना करती और शिकायत करती, और अगले ही पल दुल्हन की माँ से फोन पर खुशी-खुशी बातें करती, स्कूल की बच्ची की तरह मज़ाक करती और खिलखिलाती।
खर्च चाहे जितना भी हो, दुल्हन में कुछ ऐसे गुण थे जो सेल्मा को बेहद पसंद थे - उनमें से एक था उसका परिवार काफी धार्मिक होना।
“सच कहूँ तो, मेहंदी की रात वे एक शानदार दुल्हन लेकर आए थे,” सेल्मा ने कहा। “उनकी आवाज़ कोयल जैसी थी! सब लोग रो पड़े। दुल्हन का परिवार हमारी सात पीढ़ियों के पूर्वजों से भी ज़्यादा धार्मिक है। वे हाजी और शेख़ों के वंशज हैं।” उसने आखिरी शब्दों पर ज़ोर देते हुए कहा, ताकि उसके पति के अनभिज्ञ कानों तक ये शब्द पहुँच जाएँ।
‘शानदार!’ मेन्सुर ने अपने कोने से जवाब दिया। ‘इसका मतलब है कि उनके वंश में भी उतने ही विधर्मी हैं। पेरी, अपनी माँ को समझाओ। द्वंद्ववाद में एक बुनियादी सिद्धांत है। निषेध का निषेध। हर सिद्धांत अपना विरोध पैदा करता है। जहाँ बहुत सारे संत होते हैं, वहाँ बहुत सारे पापी भी अवश्य होते हैं!’ सेल्मा की भौंहें तन गईं। 'पेरी, उससे कहो कि वह बकवास कर रहा है।'
‘पापा, मम्मी, बस करो…’ पेरी ने कहा। ‘हम खुशकिस्मत हैं कि मेरे भाई को एक ऐसी साथी मिल गई है जो उसे खुश रखती है। बस यही मायने रखता है।’
वह दुल्हन से कुछ बार मिल चुकी थी। गालों पर डिंपल वाली, भूरी आँखों वाली, जो ज़रा सी हैरानी पर चौड़ी हो जाती थीं, और सोने की चूड़ियों की शौकीन, वह

युवती कुछ शर्मीली सी लग रही थी। उसने सिर पर स्कार्फ़ बांध रखा था, जिसे पेरी ने दुबई स्टाइल में बांधना सीखा था। इस्तांबुल स्टाइल गोल चेहरों पर, दुबई स्टाइल अंडाकार चेहरों पर और खाड़ी देशों का स्टाइल चौकोर चेहरों पर जंचता था। पेरी यह देखकर दंग रह गई कि इस्लामी फैशन की एक पूरी नई श्रेणी उभर रही थी या अब तक उसकी नज़र से छिपी हुई थी। 'हाउट कॉउचर हिजाब', 'बुर्किनी स्विमवियर' और 'हलाल ट्राउज़र्स' के साथ, यह एक फैशन ट्रेंड था - और एक विशाल उद्योग भी।
अपने पिता समेत कई धर्मनिरपेक्ष लोगों के विपरीत, पेरी हिजाब पहनने वाली महिलाओं का लगातार विरोध नहीं करती थी – इसीलिए मोना से उसकी दोस्ती इतनी आसानी से हो गई। वह लोगों के पहनावे पर नहीं, बल्कि उनके अंतर्मन पर ध्यान देती थी। और यहीं उसकी दुविधा थी। दुल्हन के दृष्टिकोण को स्वीकार करने के बावजूद, पेरी मन ही मन उसे नीचा समझती थी। उसने यह बात अपने माता-पिता को कभी नहीं बताई थी, और खुद से भी इसे स्वीकार करना उसके लिए लगभग उतना ही मुश्किल था। मोना पढ़ी-लिखी नहीं थी; उसने आखिरी बार शायद स्कूल में ही कोई किताब पढ़ी थी। वे तब तक बातचीत नहीं कर पाती थीं जब तक कि विषय ऐसे न हों जिनमें पेरी की कोई दिलचस्पी न हो – जैसे लोकप्रिय टीवी सीरियल या कम कार्बोहाइड्रेट वाला आहार। सच कहें तो, दुल्हन अपने होने वाले पति से ज़्यादा अनभिज्ञ नहीं थी, जिसे पेरी मन ही मन नीचा समझती थी। उसे याद नहीं था कि उसने कभी हाकान से ठीक से बात की हो।
उसका यह बौद्धिक अभिमान केवल युवाओं तक ही सीमित था। ज्ञान से वंचित, अनपढ़ बुजुर्गों से उसे कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन अपनी ही उम्र के ऐसे किसी भी व्यक्ति को, जो किताबों को अपने फर्नीचर से मेल खाने वाली सजावटी वस्तुएँ समझता हो, पेरी हल्के तिरस्कार की दृष्टि से देखती थी।
उसने खुद से वादा किया, "अगर मैं कभी प्यार में पड़ूँगी, तो किसी बुद्धिमान व्यक्ति से। मुझे उसकी शक्ल, रुतबा या उम्र से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, सिर्फ उसकी बुद्धि से मतलब होगा।"

में प्रवेश करने वालों में, आश्चर्यजनक रूप से, दुल्हन का चाचा भी था। जिस तेज़ी से उसने शराब पी, उसे नशे में धुत होने में ज़्यादा समय नहीं लगा - इस बात को मेनसुर ने बड़े आनंद से देखा।
मेज़बान की भूमिका निभाते हुए, पेरी - नीले रंग की घुटने तक लंबी पोशाक पहने और बालों को इतने बड़े जूड़े में बाँधे हुए कि उसके सिर का गुरुत्वाकर्षण केंद्र ही बदल गया था - को कई मेहमानों से बात करनी थी और बार-बार मुस्कुराना था। बच्चों से प्यार जताते हुए, बुजुर्गों के हाथों को चूमते हुए, अपने साथियों की गपशप सुनते हुए, उसने देखा कि एक युवक उसे घूर रहा है, मानो उसे गहरी नज़रों से देख रहा हो। यह उस तरह की मर्दाना नज़र नहीं थी जो आकर्षण को दर्शाती है और वहीं रुक जाती है, बल्कि यह एक ऐसी नज़र थी जो दबाव डाल रही थी, ज़ोर दे रही थी, अधिकार जता रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे वह समझ ही नहीं पा रहा था कि दृढ़ता और आक्रामकता के बीच बस एक छोटा सा अंतर होता है। जब उनकी नज़रें मिलीं, तो पेरी ने तेवर चढ़ाए, यह जताने की कोशिश में कि उसे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है। उसने बदले में एक हल्की सी मुस्कान दी, जिससे उसका इशारा हवा में ही लटका रह गया, मानो उस तक पहुँचा ही न जा सके।
आधे घंटे बाद, जब वह महिला शौचालय की ओर जा रही थी, तो उस युवक ने उसका रास्ता रोक दिया। दीवार पर हाथ रखकर, ताकि वह आगे न बढ़ सके, उसने कहा, 'तुम परी जैसी दिखती हो। जाहिर है, तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारा नाम बिल्कुल सही रखा है।'
'माफ़ कीजिए। क्या आपके पास करने के लिए इससे बेहतर काम नहीं हैं?'
'मुझे दोष मत दो, तुम्हें इतना सुंदर नहीं होना चाहिए,' उसने उसे घूरते हुए कहा।
पेरी का खून खौल उठा, उसके मुंह से शब्द लड़खड़ाते हुए निकले। 'मुझे अकेला छोड़ दो! किसी ने तुम्हें मुझे परेशान करने का अधिकार नहीं दिया है।' चौंककर उसने पलकें झपकाईं। बड़ी मुश्किल से उसने अपना हाथ नीचे किया। उसका चेहरा, जो कुछ सेकंड पहले तक आत्मविश्वास भरी मुस्कान लिए था, अब स्पष्ट शत्रुता दिखा रहा था। 'उन्होंने कहा था कि तुम घमंडी हो। मुझे उनकी बात मान लेनी चाहिए थी। सिर्फ इसलिए कि तुम ऑक्सफोर्ड जाते हो, इसका मतलब यह नहीं कि तुम हमसे बेहतर हो!'
उसने शांत स्वर में कहा, 'इसका ऑक्सफोर्ड से कोई लेना-देना नहीं है।'

'घमंडी कुतिया,' उसने धीमी आवाज़ में कहा, इतनी धीमी कि वह सुन सके।
पेरी का चेहरा पीला पड़ गया जब उसने उसे दूर जाते देखा। पसंद से नफरत में बदलना कितना आसान था! पूरब के राज्य में, पुरुषों का दिल, पेंडुलम के सिरे पर लटके गोले की तरह, एक छोर से दूसरे छोर तक झूलता रहता था। अत्यधिक प्रेम से अत्यधिक घृणा के बीच झूलता हुआ, उस भावनात्मक अवशेष पर लटका हुआ जो कल तक जुनून था, पुरुष बहुत अधिक प्यार करते थे, बहुत अधिक क्रोधित होते थे, बहुत अधिक नफरत करते थे, हमेशा बहुत अधिक।
सैलून में लौटते ही पेरी ने देखा कि दूल्हा और दुल्हन उस नृत्य में मग्न थे जिसका सब बेसब्री से इंतज़ार कर रहे थे। चारों ओर से दर्जनों निगाहें उन पर टिकी थीं। उनकी पीठ एकदम सीधी थी, हाथ अकड़े हुए थे, वे बिना छुए अपनी मुद्रा बनाए हुए थे और एक साथ झूम रहे थे – मानो दो नींद में चलने वाले लोग एक ही सपने में फंसे हों।
पेरी उदास थी। उसके भीतर बसी शख्सियत और उससे अपेक्षित शख्सियत के बीच की खाई पहले से कहीं ज़्यादा गहरी लग रही थी। उसे अपने परिवेश और अपने भविष्य के बीच की उस दूरी का एहसास हो रहा था, जो मानो कभी पाटी न जा सके। वह वैसी दुल्हन नहीं बनेगी। वह अपनी माँ जैसा जीवन नहीं जिएगी। वह खुद को सीमित, बंधा हुआ और अपनी असलियत से परे कुछ भी नहीं बनेगी।
एक विचार बिजली की तेज़ी से उसके मन में कौंधा: मुझे इस दुनिया के किसी भी हिस्से के आदमी से कभी शादी नहीं करनी चाहिए। यह विचार उसकी अब तक की सारी शिक्षाओं से बिल्कुल उलट था, इतना अजीब और इतना घोर अपमानजनक था कि उसे नज़रें नीचे करनी पड़ीं, कहीं कोई उसकी आँखों में यह देख न ले। वह अपने पति को ऐसी संस्कृति से चुनेगी जो उसकी संस्कृति से जितनी दूर और भिन्न हो सके, उतनी ही भिन्न हो। शायद कोई एस्किमो। कोई जिसका नाम अकबालिबाक्तुक हो। उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई जब उसने कल्पना की कि उसके पिता अपने इनुइट दामाद को साथ में कुछ ड्रिंक्स पीने के लिए बुलाएंगे, और उनके नए मेज़े में मछली के सिर का सूप, कच्चा व्हेल का मांस और किण्वित सील के पंख होंगे। इस बीच, उसकी माँ उस पर इस्लाम धर्म अपनाने का दबाव डालेगी, यहाँ तक कि खतना भी करवाएगी। अकबालिबाकतुक अब्दुल्ला बन जाएगा। फिर उसका भाई हाकान उसे तुर्की मर्दानगी का सबक सिखाने के लिए बाहर ले जाएगा। अकबालिबाकतुक चायखाने में ताश खेलते और नरगिलेह पीते हुए कई खाली घंटे बिताएगा। जल्द ही, अगर वह बुरी संगत में ज़्यादा समय बिताएगा, तो उसे देश के पुरुषवादी

तौर-तरीकों में ढाल दिया जाएगा, और वह अपने लिंग से जुड़े विशेषाधिकारों की माँग करेगा। उनका बर्फीला प्यार पितृसत्तात्मक रीति-रिवाजों की गर्मी में तेज़ी से पिघल जाएगा।

आधी रात के बाद जश्न समाप्त हुआ। एक-एक करके बचे हुए मेहमानों ने विदाई ली और बैंड के सदस्यों ने अपना सामान समेटा और चले गए, केवल करीबी परिवार के सदस्य ही पीछे रह गए। अगली सुबह नवविवाहित जोड़ा अपने एक सप्ताह के हनीमून पर रवाना होने वाला था। उनका गंतव्य तुर्की के भूमध्यसागरीय तट पर स्थित एक विशेष रिसॉर्ट होटल था, जिसने अपने हलाल रेस्तरां, हलाल पूल और हलाल डिस्को के निर्माण के कारण प्रसिद्धि हासिल की थी और कुछ विवाद भी पैदा किए थे, जिनमें सभी में लिंग-विशिष्ट अनुभाग थे। उन्होंने समुद्र तट को भी विभाजित कर दिया था और समुद्र को भी महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग-अलग भागों में बाँट दिया था।
लेकिन आज रात, सेल्मा के आग्रह पर और सुविधा के लिए, नवविवाहित जोड़ा हवाई अड्डे के पास स्थित नालबंतोग्लस के घर पर रात बिताएगा। दुल्हन के माता- पिता - जो कस्बे के दूसरे हिस्से में रहते थे - को भी आमंत्रित किया गया था। इस प्रकार वे सभी बैग, टोकरियाँ और रेशमी फूलों का गुलदस्ता लिए मिनी-वैन में ठसाठस भर गए, जिसके बुने हुए पंखुड़ियाँ इतने घंटों के बाद सिकुड़ और बिखर गई थीं।
साल के इस समय के हिसाब से यह असामान्य रूप से ठंडा था, हवा खिड़कियों से ऐसे टकरा रही थी मानो कोई पीड़ित आत्मा हो।
बारिश से भीगी सड़कों पर मिनी-वैन के तेज़ी से आगे बढ़ते ही पेरी ने देखा कि दुल्हन की माँ ने अपने पर्स से एक चमकीली लाल रंग की कमरबंद - 'कुंवारीपन की कमरबंद' - निकाली और उसे अपनी बेटी की कमर पर बाँध दिया। कमरबंद देखकर वह थोड़ी हैरान हुई, हालाँकि वह जानती थी कि देश के कई हिस्सों में यह आम रिवाज है। इस बारे में ज़्यादा सोचे बिना, उसने अपने बगल में बैठे हाकान से बात करने की कोशिश की। उसका भाई थका हुआ और खोया-खोया सा लग रहा था, और उसने

उसके माथे पर पसीने की एक पतली परत देखी; जल्द ही पेरी भी खामोशी में खो गई।

अस्पताल

इस्तांबुल, 2000
घर पहुँचने पर नवविवाहित जोड़े को मुख्य शयनकक्ष दिया गया, जबकि दुल्हन के माता-पिता को पेरी के कमरे में ठहराया गया। सेल्मा और मेन्सुर के पास अपने बेटे के कमरे में रहने और एक ही बिस्तर साझा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। पेरी को बैठक कक्ष में सोफे पर ही संतोष करना पड़ा।
जैसे ही पेरी का सिर तकिये पर टिका, थकान की एक लहर उस पर छा गई। नींद और जागने के बीच, उसे दूर से एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी, हवा में तैरते शब्द, ठीक आखिरी बत्ती बुझने से पहले। कोई प्रार्थना कर रहा था। उसने अंदाज़ा लगाने की कोशिश की कि कौन है, लेकिन आवाज़ में उम्र और लिंग का कोई भेद नहीं था। शायद वह पहले से ही सपना देख रही थी। गलियारे में घड़ी की टिक-टिक की आवाज़ से उसकी नींद और गहरी हो गई, वह इतनी नींद में थी कि अपने दांत भी नहीं बना पा रही थी, हर सांस के साथ उसकी छाती ऊपर-नीचे हो रही थी, और वह सो गई।
आधी रात के सन्नाटे में, एक घंटे या उससे भी ज़्यादा समय बाद, पेरी अचानक जाग उठी। उसे लगा कि उसने कोई आवाज़ सुनी है, लेकिन वह निश्चित नहीं थी। वह कोहनी के बल स्थिर होकर बैठ गई। जैसे ही उसने ध्यान से सुनना शुरू किया, वह सोचने लगी कि क्या वह अंधेरे की आवाज़ सुन रही है या अंधेरा उसे सुन रहा है। अपनी सांस रोककर उसने दिल की धड़कनें गिनीं: तीन, चार, पाँच... फिर वही आवाज़ आई। कोई रो रहा था। सिसकियों के बीच, एक लगातार, ज़ोरदार सरसराहट सुनाई दी, जैसे तूफ़ान से पहले पेड़ों के झुरमुट में हवा चल रही हो। एक दरवाज़ा खुला और ज़ोर से बंद हो गया, अगर गलती से नहीं तो किसी गुस्से वाले हाथ से।
हालांकि पेरी को अपने अंतर्मन में कुछ गड़बड़ होने का आभास हो रहा था, फिर भी वह लेट गई, इस उम्मीद में कि जो भी गड़बड़ है वह अपने आप शांत हो जाएगी। लेकिन आवाज़ें बढ़ती गईं। फुसफुसाहट चीखों में बदल गई, कदमों की आहट गलियारे में गूंजने लगी, और पृष्ठभूमि में अब सिसकी नहीं, बल्कि एक कराह सुनाई दे रही थी, एक दर्द से तड़पती आत्मा की पुकार।

‘क्या हो रहा है?’ पेरी ने जोर से कहा, जैसे ही वह खड़ी हुई, उसकी आवाज घर के भीतरी हिस्सों में गूंज उठी।
वह उस कमरे में पहुँची जहाँ उसके माता-पिता को सो रहे होना चाहिए था। उसकी माँ जाग रही थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसके पिता इधर-उधर टहल रहे थे, हाथ जुड़े हुए थे और बाल बिखरे हुए थे। उनके बगल में उसका भाई हाकान बैठा था, उंगलियों के बीच एक सिगरेट सुलग रही थी; उसने अतिरंजित निराशा के भाव से कश लिया। उन्हें देखकर उसे अजीब सा एहसास हुआ कि वह इनमें से किसी को नहीं जानती – अजनबी लोग उसके अपनों का रूप धारण किए हुए थे।
पेरी ने पूछा, 'सब लोग जाग क्यों रहे हैं?'
उसके भाई ने उसे घूरकर देखा, उसकी आँखें तलवार की धार की तरह सिकुड़ी हुई थीं। 'अपने कमरे में जाओ!'
'लेकिन -'
मैंने कहा, जाओ!
पेरी एक कदम पीछे हट गई। उसने हाकान को पहले कभी इस तरह नहीं देखा था - हालाँकि वह हमेशा गुस्से के दौरे और गाली-गलौज के लिए जाना जाता था, लेकिन इस बार उसका गुस्सा इतना बेकाबू और भयंकर था कि कमरे में मानो कोई जंगली जानवर मौजूद हो।
बैठक कक्ष में लौटने के बजाय, पेरी मुख्य शयनकक्ष की ओर मुड़ी, जहाँ उसने देखा कि दरवाजा थोड़ा खुला हुआ है और दुल्हन नाइटगाउन पहने बिस्तर के किनारे पर बैठी है, उसके काले बाल कंधों पर बिखरे हुए हैं। उसके माता-पिता उसके दोनों ओर बैठे थे, उनके होंठ सिकुड़े हुए थे।
दुल्हन ने कहा, 'मैं कसम खाती हूं कि यह सच नहीं है।'
‘तो फिर वो ऐसी बात क्यों कहता है?’ उसकी माँ ने कर्कश स्वर में पूछा।
‘आप उस पर विश्वास करते हैं या अपनी बेटी पर?’
मां कुछ पल चुप रही। 'मैं डॉक्टर की बात पर विश्वास करूंगी।'
धीरे-धीरे, मानो किसी सम्मोहन में, पेरी को उन आवाज़ों के पीछे का कारण समझ में आया जो उसने पहले सुनी थीं: उसका भाई बेडरूम से गुस्से में बाहर निकल गया था, क्योंकि उसे यकीन था कि उसकी नई पत्नी कुंवारी नहीं थी।
‘कौन सा डॉक्टर?’ दुल्हन ने पूछा; उसकी लाल और भयभीत आँखें खिड़की से बाहर शहर की ओर टकटकी लगाए हुए थीं। आसमान, बादलों के पीछे छिपे चाँद के कारण

कोयले जैसा काला था, क्षितिज पर बैंगनी रंग की हल्की सी झलक दिखाई दे रही थी, जो भोर का संकेत थी।
'इस मामले की तह तक पहुंचने का यही एकमात्र तरीका है,' महिला ने उठते हुए कहा, अपनी बेटी का हाथ पकड़ा और उसे बिस्तर से खींच लिया।
‘मां, कृपया ऐसा मत करो,’ दुल्हन ने मोती से भी छोटी आवाज में फुसफुसाते हुए कहा।
लेकिन वह महिला सुन नहीं रही थी। उसने अपने पति से कहा, 'जाओ और हमारे कोट ले आओ,' जिस पर उसने सहमति न जताते हुए भी, आदतवश सिर हिला दिया।
पेरी का चेहरा लाल हो गया और वह जल्दी से अपने माता-पिता के पास वापस भागी। 'बाबा, इन्हें रोकिए। ये अस्पताल जा रहे हैं!'
सूती पायजामे में लिपटे मेन्सुर का चेहरा उस दयनीय स्थिति में था, मानो उन्हें किसी ऐसे नाटक में धकेल दिया गया हो जिसमें उन्हें अपने संवाद याद न हों। उन्होंने अपनी बेटी की ओर देखा, फिर दुल्हन और उसकी माँ की ओर, जो अब उनके सामने से गुज़रते हुए दरवाज़े की ओर बढ़ रही थीं। यह वही बेबसी थी जो उन्होंने वर्षों पहले उस रात दिखाई थी जब पुलिस ने उनके घर पर छापा मारा था।
'आइए हम सब शांत हो जाएं,' मेन्सुर ने कहा। 'अजनबियों को इसमें शामिल करने की कोई जरूरत नहीं है। अब हम एक परिवार हैं।'
दुल्हन की मां ने हाथ हिलाकर इन शब्दों को टाल दिया। “अगर मेरी बेटी की गलती है, तो मैं उसे खुद सजा दूंगी। लेकिन अगर आपका बेटा झूठ बोल रहा है, तो अल्लाह की कसम, मैं उसे इसका पछतावा करवाऊंगी।”
मेंसुर ने कहा, 'कृपया, हमें क्रोध में आकर कोई कार्रवाई नहीं करनी चाहिए -' हाकान ने बीच में टोकते हुए कहा, "उन्हें जो करना है करने दो। मैं भी सच जानना चाहता हूँ। मुझे यह जानने का पूरा अधिकार है कि मैंने किस तरह की औरत से शादी की है।"
पेरी ने अपने भाई को हैरानी से देखा। 'तुम ऐसी बात कैसे कह सकते हो?'
‘चुप रहो!’ हाकान ने इतनी सपाट आवाज में कहा कि वह संदेश की कठोरता से बिल्कुल मेल नहीं खाती थी। ‘मैंने तुमसे कहा था कि इस मामले से दूर रहो।’

आधे घंटे से भी कम समय में वे सभी पास के अस्पताल में एक बेंच पर बैठे थे। दुल्हन को छोड़कर सभी।
उस रात की कई बातें पेरी के मन में बसी रहीं, जो आने वाले वर्षों तक उसकी यादों में गूंजती रहीं: छत पर पड़ी दरारें जो किसी भूले हुए महाद्वीप के नक्शे जैसी लग रही थीं; कंक्रीट के फर्श पर नर्स के जूतों की खट-खट की आवाज़; कीटाणुनाशक की गंध जो खून और संक्रमण की बदबू के साथ मिली हुई थी; दीवारों पर लगा काई जैसा हरा रंग; 'इमरजेंसी सेक्शन' का बोर्ड जिसमें एक अक्षर गायब था; और वह परेशान करने वाला विचार जो उसके दिमाग में घर कर गया था, कि चाहे जो कुछ भी घट रहा हो, उसे कितना भी अवास्तविक क्यों न लगे, अगर उसके माता-पिता ने उसकी शादी किसी ऐसे परिवार में कर दी होती जो इन चीजों की परवाह करता, तो शायद उसी तरह की जांच उसके साथ भी हो सकती थी। हाँ, पेरी ने डूबते दिल से यह बात समझ ली।
उसने शादी की रात के संकटों के बारे में सुना तो था, लेकिन हमेशा यही सोचती थी कि ऐसी बातें दूसरे लोगों के साथ होती हैं – दूरदराज के गांवों में रहने वाले किसान, ऐसे देहाती लोग जिन्हें कुछ पता ही नहीं होता। उसका परिवार किसी जर्जर अस्पताल में कौमार्य परीक्षण जैसे झंझट में पड़ने वाला नहीं था। बचपन से ही उसे अपने भाइयों के बराबर, बल्कि उनसे भी ज़्यादा, सम्मान मिला था। उसके माता-पिता दोनों ने उसे लाड़-प्यार दिया, दुलार किया और दुलार किया। फिर भी, एक तंग मोहल्ले में पली-बढ़ी, जहाँ हर पर्दे के पीछे से नज़रें टिकी रहती थीं, जो देखती और परखती रहती थीं, वह हमेशा सीमाओं का ध्यान रखती थी, क्या नहीं पहनना चाहिए, सार्वजनिक स्थानों पर कैसे बैठना चाहिए, शाम को बाहर घूमने के बाद कब घर लौटना चाहिए... यानी, ज़्यादातर समय। स्कूल के आखिरी साल में, असहमति और विद्रोह का वो बवंडर जिसने उसके ज़्यादातर सहपाठियों को अपनी चपेट में ले लिया था और उन्हें दूर-दूर तक बहा ले गया था, शुरू में उसे अछूता छोड़ गया, क्योंकि वह नैतिक मूल्यों के ऊँचे स्तर पर टिकी हुई थी। जहाँ उसके साथियों ने समान जोश के साथ वर्जनाओं को तोड़ा और एक-दूसरे के दिल तोड़े, वहीं पेरी ने एक शांत जीवन जिया। लेकिन फिर उसे प्यार हो गया, और प्यार, चाहे कितना भी क्षणिक क्यों न हो, उतना ही साहसी था, जिसने उसकी अच्छी तरह से संरक्षित सीमाओं को चकनाचूर कर दिया। अपने माता-पिता को बिना बताए, वह अपने वामपंथी प्रेमी के साथ हद पार कर

चुकी थी। अब उसे 'लाडली बेटी' के रूप में अपनी स्थिति की नाजुकता समझ में आ रही थी। उसे पाखंडी जैसा महसूस हो रहा था। एक तरफ वह खुद कुंवारी नहीं थी, बल्कि दूसरी युवती के कौमार्य परीक्षण के परिणाम का इंतजार कर रही थी। ‘इतनी देर क्यों लग रही है? क्या कोई समस्या है?’ दुल्हन के पिता ने उछलकर खड़े होते हुए कहा, लेकिन फिर तुरंत बैठ गए।
'बिल्कुल नहीं,' उसकी पत्नी ने उस पर झल्लाते हुए कहा। महिला इतनी उत्तेजित थी कि ड्यूटी पर मौजूद नर्स को दो बार आकर उसे अपनी आवाज़ धीमी करने के लिए कहना पड़ा।
एक घंटा बीत गया – या यूँ कहें कि ऐसा ही लगा। आखिरकार डॉक्टर प्रकट हुईं, उनके बाल बंधे हुए थे, चश्मे के पीछे उनकी धूसर आँखें चमक रही थीं। उन्होंने खुलेआम तिरस्कार भरी निगाहों से उन्हें देखा। यह स्पष्ट था कि उन्हें अपने किए पर बेहद पछतावा था और उन्हें इस बात पर उससे भी ज़्यादा गुस्सा था कि उन्होंने उनसे ऐसा करने को कहा था।
'चूंकि आप जानना चाहते हैं, तो वह कुंवारी है,' डॉक्टर ने घोषणा की। 'कुछ लड़कियां बिना हाइमन के पैदा होती हैं, और कुछ हाइमन यौन संबंध या किसी साधारण शारीरिक गतिविधि के दौरान फट सकती हैं लेकिन उनसे कभी खून नहीं निकलता।'
ऐसा प्रतीत होता था कि वह जानबूझकर ऐसा कर रही थी, चिकित्सा तथ्यों का उपयोग करके उन्हें अपमानित कर रही थी - दुल्हन को हुई शर्मिंदगी का बदला लेने के लिए।
‘आपने इस युवती की मानसिक स्थिति को नष्ट कर दिया है। अगर आपको उसकी परवाह है, तो मैं आपको सलाह देती हूं कि उसे किसी चिकित्सक के पास ले जाएं। मैं चाहती हूं कि आप सब अभी चले जाएं। हमारे पास गंभीर समस्याओं वाले मरीज हैं। आप लोग हमारा समय बर्बाद करते हैं।’
बिना कुछ कहे डॉक्टर ने पीठ फेर ली और चली गई। पूरे एक मिनट तक कोई नहीं बोला। दुल्हन की मां ने चुप्पी तोड़ी।
‘अल्लाह महान है,’ वह रोते हुए बोली। ‘उन्होंने मेरी बेटी को बदनाम करने की कोशिश की। लेकिन अल्लाह, मेरे अल्लाह ने, उनके चेहरे पर करारा थप्पड़ मारा और कहा, “तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई एक कुंवारी को अपवित्र करने की? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई एक गुलाब की कली को कलंकित करने की?”’

पेरी की दृष्टि के दायरे में, उसने अपने पिता को अपना सिर नीचे करते हुए देखा, उनकी निगाहें कंक्रीट के फर्श पर टिकी हुई थीं मानो वह चाहते हों कि फर्श उन्हें निगल ले।
'यह तुम्हारा बेटा है जो ऐसा नहीं कर सका, मेरी बात सुनो! अगर वह इतना मर्द नहीं है, तो तुम मेरी बेटी को कैसे दोष दे सकते हो? इसके बजाय तुम्हें अपने बेटे को उस जगह ले जाना चाहिए था जहाँ तुम जानते हो!'
'पत्नी, शांत हो जाओ,' उसके पति ने धीरे से कहा, वह असहज और अनिश्चित लग रहा था कि क्या यह सही तरीका है।
उसके हस्तक्षेप से महिला का गुस्सा और बढ़ गया। 'मैं ऐसा क्यों करूं? मैं उन्हें शर्मिंदगी से क्यों बचाऊं?'
गलियारे में एक दरवाजा खुला और दुल्हन बाहर निकली। वह उनकी ओर बढ़ी, उसके कदम सधे हुए और धीमे थे। पलक झपकते ही उसकी माँ आगे बढ़ी और शोक में डूबी मुट्ठियों से अपनी जांघों को पीटने लगी। 'मेरी प्यारी बच्ची, इन्होंने तुम्हारे साथ क्या किया? काश ये उसी कीचड़ में डूब जाएँ जिसमें इन्होंने हमें घसीटने की कोशिश की!'
अपनी माँ की अनदेखी करते हुए, दुल्हन बाहर निकलने की ओर बढ़ गई। जब वह नालबंतोग्लस और अपने पति के पास से गुज़री, जिसका पैर इतनी ज़ोर से काँप रहा था कि बेंच हिल रही थी, तो उसने अपना सिर ऊपर रखा और किसी से भी नज़रें नहीं मिलाईं। पेरी ने उसके हाथों पर ध्यान दिया, जो मैनीक्योर और मेहंदी से सजे थे, और उसकी हथेलियों पर लाल रंग के अर्धचंद्र बने हुए थे। यही वह बात थी जिसने उसे उस भयानक रात में देखी गई किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्रभावित किया। ये वे निशान थे जो एक युवती कौमार्य परीक्षण के दौरान अपने नाखूनों से बनाती है।
‘फेरिडे… रुको…’
पेरी ने पहली बार अपना नाम उच्चारित किया था। आज तक उसे हमेशा 'वह' या 'तुम' या बस 'दुल्हन' कहकर पुकारा जाता था।
हालांकि उसने अपनी गति धीमी कर दी, लेकिन फेरिडे न तो रुकी और न ही पीछे मुड़ी। सीधे आगे बढ़ते हुए, स्वचालित दरवाजों से होते हुए, वह अपने माता- पिता के साथ गायब हो गई।
पेरी के भीतर भयंकर क्रोध उबल रहा था – अपने भाई पर, जिसकी स्वार्थपरता और असुरक्षा ने यह दुख लाया था; अपने माता-पिता पर, जिन्होंने इस अपराध को

रोकने के लिए और अधिक प्रयास नहीं किया; उस सदियों पुरानी परंपरा पर, जो मनुष्य के मूल्य को उसके पैरों के बीच के अंगों से निर्धारित करती थी; लेकिन सबसे अधिक खुद पर। वह फरीदे की मदद के लिए कुछ कर सकती थी, फिर भी उसने नहीं किया। हमेशा ऐसा ही होता था। तनाव के क्षणों में, ठीक उसी समय जब उसे कुछ करना चाहिए था और दृढ़ संकल्प दिखाना चाहिए था, वह सुस्ती में डूब जाती थी, मानो किसी अदृश्य शक्ति ने उसे नीचे धकेल दिया हो, जहाँ से वह अपने आसपास की दुनिया को धुंधला होते हुए देखती थी, और उसकी भावनाएँ मंद होती जाती थीं, जैसे बल्बों की बत्ती एक-एक करके बुझ जाती है।

घर लौटते समय, शादी के लिए किराए पर ली गई मिनी-वैन में नालबंतोग्लु परिवार अकेला था। हाकान गाड़ी चला रहा था और मेनसुर पीछे बैठकर खिड़की से बाहर देख रहा था, जबकि पेरी अपनी माँ के बगल वाली सीट पर बैठ गई।
‘अब क्या होगा?’ पेरी ने पूछा।
‘कुछ नहीं, इंशाल्लाह,’ सेल्मा ने कहा। ‘हम चॉकलेट, रेशम, गहने खरीदेंगे… और माफी मांगेंगे। हम उनकी भरपाई के लिए हर संभव कोशिश करेंगे, भले ही अस्पताल जाने का विचार उनका था, हमारा नहीं।’
पेरी ने एक पल सोचा। 'इतनी बुरी शुरुआत के बाद शादी कैसे टिक सकती है?' उसकी माँ ने तिरछी मुस्कान दी, सड़क के लैंप की रोशनी से उसका चेहरा दो हिस्सों में बँट गया: आधा लौ, आधा छाया। 'मानो, पेरिसिम, कई शादियाँ इससे भी बदतर हालातों से गुज़र चुकी हैं। सब ठीक हो जाएगा, इंशाअल्लाह।'
पेरी अपनी माँ को घूरती रही, शायद पहली बार, सचमुच अपनी माँ को देख रही थी। उसे लगा कि उसके माता-पिता का विवाह शायद उतना अच्छा नहीं है जितना दिखता है, और उसके प्यारे पिता हमेशा से उतने सज्जन नहीं रहे जितना वह उन्हें समझती थी।
उसके विचार अचानक अपने माता-पिता की शादी की उस तस्वीर पर चले गए जो उन्होंने अलमारी में रखी हुई थी, फ्रेम में तो थी लेकिन प्रदर्शित नहीं की गई थी। मेन्सुर और सेल्मा, दोनों युवा और दुबले-पतले, अकड़े हुए और बिना मुस्कुराए खड़े थे, मानो उन्हें अपने किए की गंभीरता का एहसास हो गया हो।

उनके पीछे जंगली ऑर्किड और उड़ते हुए हंसों का एक बेतुका दृश्य था। अपने अभी तक ढके हुए सिर के चारों ओर, सेल्मा ने गुंथी हुई डेज़ी की माला पहन रखी थी - उनकी बनावटी सुंदरता उनकी खुशी से कम नकली नहीं थी।
पेरी ने सहज प्रवृत्ति से ही अपनी माँ का हाथ थाम लिया और उसे धीरे से दबाया। उसके मन में यह ख्याल आया कि जिस माँ को वह हमेशा कमज़ोर और आँसू बहाने वाली समझती थी, शायद उसके अंदर भी एक मज़बूती हो। सेल्मा भावनात्मक संकटों से उसी तरह निपटती थी जैसे वह घर के काम करती थी। वह पूरी लगन से बिखरी हुई चीज़ों को समेटती थी, ठीक वैसे ही जैसे घर में बिखरी हुई छोटी- मोटी चीज़ों को संभालती थी।
जैसे कि उसने अपनी बेटी के विचारों को भांप लिया हो, सेल्मा ने कहा, 'मुझे विश्वास है, इससे मदद मिलती है। हम जिस दौर से गुज़रे हैं, उसके पीछे कोई न कोई कारण ज़रूर होगा। हमें अभी तक पता नहीं है, लेकिन अल्लाह को पता है।' पेरी अपनी माँ के गालों की लाली और आँखों की चमक से समझ गई कि उसकी माँ सच्ची थी। आस्था, चाहे सेल्मा इसे किसी भी रूप में समझती हो, उसमें समर्पण की भावना भर देती थी, जो कमजोरी का कारण बन सकती थी अगर इसने उसे और मजबूत न बनाया होता। क्या धर्म उन महिलाओं के लिए एक सशक्त शक्ति थी जिनकी शक्ति पुरुषों द्वारा निर्मित समाज में सीमित थी, या यह उनके अधीनता को बढ़ावा देने का एक और साधन मात्र था?
अगले दिन पेरी सवालों से भरे दिमाग के साथ इंग्लैंड वापस लौट गई - और वह यह तय नहीं कर पा रही थी कि जवाबों की तलाश करना बेहतर होगा या उन्हें अनछुआ छोड़ देना।

सफाईकर्मी

इस्तांबुल, 2016
मां से फोन पर बात खत्म करने के बाद, पेरी नकली यूनानी कलशों से सजी मुख्य सीढ़ियों से नीचे उतरी, पॉलिश किए हुए संगमरमर के फर्श पर चली और वापस खाने की मेज पर आ गई। उसका एक हिस्सा शिरिन का नंबर न मिलने से निराश था। दूसरा हिस्सा राहत से भरा था। उसे नहीं पता था कि वह क्या कहती और, अगर उसे सही शब्द मिल भी जाते, तो क्या शिरिन सुनती। उसने ऑक्सफोर्ड छोड़ने के तुरंत बाद कुछ बार शिरिन को फोन किया था, लेकिन शिरिन इतनी गुस्से में थी कि बात नहीं कर पाई थी, घाव अभी भी ताजा था। हालांकि कई साल बीत चुके थे, लेकिन इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि अब हालात अलग होंगे।
मेहमानों की हंसी कानों में चुभ रही थी, पेरी डाइनिंग रूम में दाखिल हुई, तो उसने देखा कि पीआर महिला ड्रिंक्स कैबिनेट के पास खड़ी उसका इंतजार कर रही थी।
“अरे, जब आप बाहर थे, मैंने अपने भाई को फोन किया था,” महिला ने मुस्कुराते हुए कहा, हालांकि उसकी मुस्कान उसकी आंखों तक नहीं पहुंची। “उसे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि आप भी उसी समय ऑक्सफोर्ड में थे जब वह था। मुझे यकीन है कि आप दोनों के कुछ परिचित कॉमन लोग होंगे।”
पेरी ने भी उतनी ही तीव्रता से उसकी ओर देखा। 'शायद, लेकिन ऑक्सफोर्ड एक बड़ा विश्वविद्यालय है।'
मैंने उसे बताया कि आपके पास उस घोटालेबाज प्रोफेसर की तस्वीर है। वह बहुत हैरान हुआ।
पेरी ने आने वाली स्थिति के लिए खुद को तैयार करते हुए अपने जबड़े को भींच लिया।
'उसका नाम क्या था? मेरे भाई ने बताया था लेकिन मैं भूल गया।'
पेरी ने कहा, 'अज़ूर,' उसका नाम उसकी जीभ पर आग की बूंद की तरह जल रहा था। ‘बिल्कुल, मुझे पता था कि यह अजीब है!’ पीआर महिला ने अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए उंगलियां चटकाईं। ‘उह, मेरे भाई को जिज्ञासा थी… वह चाहता था कि मैं आपसे पूछूं, क्या आप उसके छात्र थे?’

‘नहीं, मैं प्रोफेसर को इतना अच्छे से नहीं जानती थी,’ पेरी ने बिना रुके कहा। ‘फोटो में दिख रही लड़कियां उनकी छात्राएं थीं। मैं तो बस उनकी दोस्त थी। वैसे भी, उन सभी से मेरा संपर्क टूट गया था।’
‘ओह,’ पीआर महिला ने निराशा भरे लहजे में कहा, लेकिन वह अभी भी हार मानने को तैयार नहीं थी। ‘फेसबुक पर कोशिश करो। मैंने अपने सभी कॉलेज के दोस्तों से दोबारा संपर्क कर लिया है – यहाँ तक कि प्राथमिक विद्यालय के दोस्तों से भी। हम पुलाव और दाल खाने के दिन मनाते हैं –’
पेरी ने सिर हिलाया, वह उस औरत से छुटकारा पाना चाहती थी जो उसकी ज़मीन पर हमला करने वाली शत्रु सेना की तरह उसकी निजता और उसके अतीत को लूट रही थी। वह उसे कभी नहीं बताएगी कि उसने कितनी बार अज़ूर का नाम गूगल पर खोजा था - उसकी उपलब्धियाँ, उसकी किताबें, उसकी तस्वीरें - और उसके बारे में सैकड़ों जानकारियों को पढ़ा था; और फिर उस घोटाले के बारे में भी गूगल पर खोजा, जिसके बाद उसने पढ़ाना बंद कर दिया था लेकिन साक्षात्कार और भाषण देना जारी रखा था।
मेरे भाई ने कहा कि उसे याद है कि उसने ऐसी अफवाहें सुनी थीं कि एक तुर्की लड़की इस प्रोफेसर का कोर्स कर रही थी। उसने कहा कि यह पूरे शहर में चर्चा का विषय था।
उनके बीच का माहौल गंदे पोखर की तरह तनावपूर्ण हो गया था। 'तुम क्या कहना चाह रही हो?' पेरी ने उसकी आवाज़ में व्याप्त ठंडक पर आश्चर्यचकित होते हुए पूछा।
‘कुछ नहीं, मुझे बस जिज्ञासा थी।’
पेरी की आँखों के सामने उस आवारा की छवि कौंध गई। उसका दुबला-पतला शरीर, उसकी भेदक आँखें, और उसके एक्जिमा से ग्रस्त हाथ। यह महिला, भले ही विशेषाधिकार प्राप्त और धनी थी, लेकिन नशे की आदी उससे कम नहीं थी। पेरी ने कल्पना की कि वह दूसरों के दुर्भाग्य और काले रहस्यों से भरी एक प्लास्टिक की थैली पकड़े हुए है, जिसमें वह अपनी नाक घुसाकर अपनी जिंदगी से राहत पाने के लिए साँस लेती है।
‘काश मेरे पास तुम्हें बताने के लिए कुछ और दिलचस्प होता,’ पेरी ने कहा, दिलचस्प शब्द सुनते ही वह एक पल के लिए रुक गई। उसकी यह टिप्पणी, हालांकि उस दखलंदाज़ के लिए थी, लेकिन ऐसा लग रहा था मानो वह खुद से ही कह रही हो। ‘मैं एक शांत छात्रा थी, उस तरह की नहीं जो किसी घोटाले में शामिल हो।’

जनसंपर्क अधिकारी ने सहानुभूति जताते हुए मुस्कुराया।
अगली बार जब तुम अपने भाई से बात करो, तो उसे बताना कि यह किसी और ने किया होगा।
'ओह यकीनन।'
बाकी के खाने के दौरान, पेरी ने पीआर महिला से नज़रें मिलाने से परहेज किया। उसे झूठ बोलने का कोई पछतावा नहीं था। वह अपना अतीत किसी अजनबी को, खासकर ऐसी अजनबी को, जो गपशप बटोरने के लिए हर छोटी-मोटी बात जानने को उत्सुक हो, बताने वाली नहीं थी। वैसे भी, देखा जाए तो यह पूरी तरह झूठ भी नहीं था। आखिर, वह कोई और लड़की थी, आज की पेरी से बिल्कुल अलग, जो कभी प्रोफेसर अज़ूर की पसंदीदा छात्रा थी और बाद में उनकी बर्बादी का कारण बनी।

द डस्क रन

ऑक्सफोर्ड, 2000
कॉलेज लौटकर पेरी ने खुद को पढ़ाई में पूरी तरह से डुबो दिया। सुबह जब वह अपनी कॉफी लेने जाती - जो मीठी और कड़क तुर्की कॉफी से बिल्कुल अलग थी - तो वह स्नातक छात्रों और प्रोफेसरों को ध्यान से देखती, जिनके चेहरे तल्लीन होते थे, सीने से किताबें और नोट्स चिपकाए वे एक इमारत से दूसरी इमारत की ओर भागते रहते थे; वह सोचती कि उनमें से कितने लोगों ने कहीं और का जीवन जिया है। यह मान लेना कितना आसान था कि ऑक्सफोर्ड - या कोई भी जगह - दुनिया का केंद्र है।
बुधवार को वह शाम ढलते ही पुस्तकालय से निकली। वह लगभग तीन घंटे से पढ़ रही थी और उसका दिमाग विचारों से भरा हुआ था। उसने अपने दिमाग को एक विशाल घर की तरह कल्पना की, जिसमें कई कमरे थे और जिनमें वह पढ़ी, सुनी और देखी हुई सभी चीजों को संग्रहित करती थी, और जहाँ एक छोटा क्लर्क, एक नन्हा सा क्लर्क, उसकी अवचेतन सेवा में लगा हुआ एक छोटा सा जीव, उन सबका निरीक्षण, प्रसंस्करण और पंजीकरण करता था। फिर भी, उसे विश्वास था कि किसी के विचार स्वयं से भी छिपे हो सकते हैं।
उसने दौड़ने का फैसला किया। उधार ली हुई किताबें रखने और दौड़ने के कपड़े बदलने के लिए सीढ़ियों पर थोड़ी देर रुकने के बाद, वह होलीवेल स्ट्रीट पर धीरे-धीरे अपनी लय पकड़ते हुए दौड़ने लगी। उसके चेहरे पर ठंडी हवा मरहम जैसी लग रही थी।
साइकिल सवार चुपचाप गुजर रहे थे, अंधेरे में उनके रिफ्लेक्टर रहस्यमय ढंग से टिमटिमा रहे थे। लोग हर जगह साइकिल से जाते थे - दुकानों, रेस्तरां, सेमिनारों तक - और उनका एक पसंदीदा दृश्य था वरिष्ठ प्रोफेसरों को साइकिल पर देखना, हवा में उनके गाउन धीरे-धीरे लहराते हुए। वह खुद एक अच्छी साइकिल चालक नहीं थीं। यह उन चीजों में से एक थी जिन पर उन्हें मेहनत करनी पड़ती थी - जैसे खुशी।
अपने सामान्य मार्ग से भटककर, वह सुनसान गलियों और संकरी सड़कों से तेज़ी से गुज़री। उसने अज्ञात शीतकालीन पौधों की सुगंध को महसूस किया, एक मोड़

पर मुड़ी और हांफते हुए रुक गई। उसने खुद को दीवार पर लगे एक पोस्टर के सामने पाया।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted], [redacted]

&

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

तीसरा मार्ग

ऑक्सफोर्ड, 2000
पेरी जब तक अपने गंतव्य तक पहुँची, उसके बाल बिखरे हुए थे और गर्दन से पसीने की बूँदें बह रही थीं, तब तक सूरज ढलते-ढलते सुनहरे आसमान में डूब चुका था। वह नव-गॉथिक शैली की उस इमारत के पास पहुँची जिसे 'विज्ञान के गिरजाघर' के रूप में डिज़ाइन किया गया था। ऑक्सफ़ोर्ड में वास्तुकला दो श्रेणियों में बँटी हुई थी: एक वह जो इतिहास को संजोए रखती थी और दूसरी वह जो स्वप्निल थी। प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय दोनों ही था। पैरों के नीचे बजरी की चरमराहट के बीच पेरी ने सोचा कि यह इमारत - अंदर के संग्रहों से स्वतंत्र रूप से - अपने आगंतुकों से विस्मय और सम्मान की माँग करती है। मुख्य द्वार पर दो परिचारक थे, एक लड़की और एक लड़का – देखने में वे छात्र लग रहे थे – दोनों ने एक जैसी चमकीली नीली कमीज पहनी हुई थी और उनके चेहरे पर ऊब के भाव थे। उनमें से एक ने उसकी ओर सिर हिलाया।
पेरी ने हांफते हुए कहा, 'मैं बहस के लिए आई थी।'
‘क्या आपके पास टिकट है?’ लड़के ने पूछा – वह दुबला-पतला युवक था जिसका निचला होंठ उभरा हुआ था और उसका माथा संकरा था जिस पर घने, लाल बाल थे। ‘उह… नहीं,’ पेरी ने घबराते हुए कहा। ‘और मेरे पास मेरा बटुआ भी नहीं है।’ ‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।’ उसने सिर हिलाया। ‘कई हफ्ते पहले ही बिक गया था।’
पेरी के मुंह से शब्द अनायास ही निकल गए। 'अरे, लेकिन मैं तो दौड़कर यहाँ तक आई हूँ!'
पेरी की इतनी ज़ोरदार और सहज प्रतिक्रिया पर, लड़की ने सहानुभूति से मुस्कुराते हुए कहा, 'वैसे भी यह खत्म होने ही वाला है, तुम देर से आई हो।' आशा की एक पतली सी किरण से चिपके हुए पेरी ने पूछा, 'क्या मैं कम से कम एक झलक देख सकती हूँ?'
लड़की ने कंधे उचका दिए। उसे कोई आपत्ति नहीं थी। लेकिन लड़के की सोच अलग थी। उसने कहा, 'हम इसकी इजाज़त नहीं दे सकते,' उसका लहजा ऐसा था मानो उसे अचानक अधिकार मिल गया हो और वह इसका पूरा फायदा उठाना चाहता हो।

‘[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[,’ [[[[[
[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[, '[[[[[, [[[[[[[[['
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[- [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[
[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[['[[[[[[[[[' [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[,
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[; [[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[– [[[[[[[, [[[[[[-[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[– [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[, [[[[[[[[[[[[[[[[
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[-
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[,
[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[[

तीनों में सबसे उम्रदराज, दूसरे प्रोफेसर का चेहरा चौड़ा, रंग लालिमा लिए, बाल झड़ते हुए भूरे और तोंद निकले हुए थे, जिन्हें वे उत्तेजित होने पर छुपाना भूल जाते थे। उन्होंने एक भूरे रंग की जैकेट पहनी हुई थी, जो उन्हें या तो तंग लग रही थी या किसी और तरह से असहज, क्योंकि वे अपनी कुर्सी पर झुके हुए, बेचैन से बैठे हुए और कहीं और ध्यान केंद्रित किए बिना नज़र रखे हुए थे। पेरी को वे एक सौम्य स्वभाव के व्यक्ति लगे, ऐसे व्यक्ति जो मंच पर ईश्वर के विषय पर बहस करने के बजाय अपने छात्रों या पोते-पोतियों के साथ समय बिताना पसंद करते।
तीसरे वक्ता, जो मॉडरेटर के बाईं ओर, बाकी लोगों से अलग बैठे थे, उनके भूरे- सुनहरे बाल उनके कॉलर पर लहराते हुए सुंदर लहरों की तरह गिर रहे थे, और उनकी नाक उभरी हुई थी जो बदसूरत और भव्यता के बीच संतुलन बनाए हुए थी। उनकी आंखें काले और कछुए के खोल जैसे फ्रेम वाले क्लासिक चश्मे के पीछे से ओब्सीडियन के कणों की तरह चमक रही थीं, जब वे थकी हुई मुस्कान के साथ दर्शकों को घूर रहे थे। पेरी यह तय नहीं कर पा रही थी कि उनकी शांति किसी आत्मसंतुष्ट आत्मा का संकेत थी या फिर उनके परिष्कृत अहंकार का प्रतिबिंब। उनकी उम्र का अनुमान लगाना भी उतना ही कठिन था। उनके शरीर में एक चुस्त-दुरुस्त लचीलापन था जो बताता था कि वे बाकी लोगों से छोटे हैं, और उनके व्यवहार में एक ऐसी जीवंतता झलक रही थी जो शायद उनकी कम उम्र के कारण ही थी। पेरी को पूरा यकीन था कि वे वही प्रोफेसर थे जिनके बारे में शिरिन इतनी बातें कर रही थी।
‘मुझे विश्वास है कि मैं यहाँ उपस्थित सभी लोगों की ओर से यह कह रहा हूँ कि हमारी चर्चा बेहद रोचक रही, और हमें कुछ विचारोत्तेजक बातें सुनने को मिलीं जिन पर मनन करने की ज़रूरत है,’ संचालक ने उत्साहपूर्वक कहा। वे काफी थके हुए और कार्यक्रम के समापन से राहत महसूस कर रहे थे। पेरी सोच रही थी कि उसके आने से पहले क्या हुआ होगा, उसे अकादमिक शिष्टाचार के आवरण के नीचे तनाव का गहरा एहसास हो रहा था।
अब दर्शकों के लिए मंच खोलने का समय है। कुछ बुनियादी नियम: अपने प्रश्न संक्षिप्त और सटीक रखें। कृपया माइक के आने का इंतजार करें और बोलने से पहले अपना परिचय देना न भूलें।
हॉल में उत्साह की एक लहर दौड़ गई, जैसे गेहूँ के खेत में हवा का झोंका चलता है। तुरंत ही कुछ साहसी और निडर लोगों ने हाथ उठा दिए।

सबसे पहले एक छात्र ने बोलना शुरू किया। अपना संक्षिप्त परिचय देते हुए, उन्होंने प्राचीन ग्रीस और रोम से लेकर मध्य युग तक, अच्छाई और बुराई के द्वंद्व पर एक तीखा भाषण दिया। जब वे पुनर्जागरण काल तक पहुँचे, तब तक श्रोता बेचैन होने लगे थे, और पत्रकार ने बीच में ही टोकते हुए पूछा, 'ठीक है महोदय... क्या आपके मन में कोई प्रश्न है या आप कोई धर्मनिरपेक्ष उपदेश देने की योजना बना रहे हैं?'
हंसी गूंज उठी। छात्र का चेहरा लाल हो गया और जब उसने आखिरकार माइक्रोफोन छोड़ा - बिना कोई सवाल पूछे - तो यह स्पष्ट रूप से अनिच्छा से हुआ।
अगला वक्ता एक पादरी था, जिसने काला चोगा पहना हुआ था; शायद कोई एंग्लिकन पादरी। पेरी दोनों में फर्क नहीं कर पाया। उसने कहा कि उसे पैनल बहस अच्छी लगी, लेकिन पहले वक्ता के इस दावे को सुनकर वह हैरान रह गया कि धर्म में स्वतंत्र चर्चा की कोई गुंजाइश नहीं है। ईसाई चर्च का इतिहास इसके विपरीत उदाहरणों से भरा पड़ा है। यूरोप भर के कई विश्वविद्यालयों, जिनमें उनका अपना विश्वविद्यालय भी शामिल है, की नींव धर्मशास्त्र से ही पड़ी है। उसने निष्कर्ष निकाला कि नास्तिकों को अपने विचार रखने का पूरा अधिकार है, बशर्ते वे तथ्यों को तोड़-मरोड़कर पेश न करें।
इसके बाद पादरी और दाढ़ी वाले प्रोफेसर के बीच संक्षिप्त बातचीत हुई, जिसे पेरी ने 'नास्तिक' समझा। प्रोफेसर ने कहा कि धर्म, स्वतंत्र चर्चा का सहयोगी होने के बजाय, उसका सदियों पुराना दुश्मन है। जब स्पिनोज़ा ने रब्बियों की शिक्षाओं पर सवाल उठाए, तो उनकी बुद्धिमत्ता की प्रशंसा नहीं की गई; बल्कि उन्हें आराधनालय से निकाल दिया गया। यही चिंताजनक प्रवृत्ति ईसाई धर्म और इस्लाम दोनों के इतिहास में देखी जा सकती है। विज्ञान और स्पष्टता के प्रति समर्पित व्यक्ति होने के नाते, उन्हें हठधर्मिता के प्रभाव में नहीं रखा जा सकता था।
माइक की ओर बढ़ने वाली अगली श्रोता एक शालीन अधेड़ उम्र की महिला थीं। उन्होंने कहा कि विज्ञान और धर्म कभी एक साथ नहीं चल सकते, और उन्होंने इतिहास में धार्मिक अधिकारियों द्वारा सताए गए पूर्व और पश्चिम के दार्शनिकों और वैज्ञानिकों के उदाहरण दिए। उन्होंने दूसरे प्रोफेसर पर जमकर प्रहार किया, जो पेरी को एहसास हुआ कि एक प्रसिद्ध विद्वान होने के अलावा, एक अत्यंत धार्मिक व्यक्ति भी थे।

दूसरे प्रोफेसर, हालांकि अपने नास्तिक साथी जितने वाक्पटु नहीं थे, फिर भी मधुर आयरिश लहजे में धीरे-धीरे बोलते थे, हर शब्द को बड़े ही सलीके से, मानो किसी स्वादिष्ट व्यंजन का स्वाद लेकर सुना जा रहा हो। उन्होंने कहा कि उनके दृष्टिकोण से धर्म और विज्ञान में कोई टकराव नहीं है। दोनों साथ-साथ चल सकते हैं, बशर्ते हम उन्हें तेल और पानी की तरह देखना बंद कर दें। वे व्यक्तिगत रूप से कई वैज्ञानिकों को जानते थे, जो अपने-अपने क्षेत्रों के विशेषज्ञ थे और कट्टर ईसाई थे। जैसा कि डार्विन ने तर्क दिया था - जिन्होंने खुद को कभी नास्तिक नहीं माना था - यह सोचना बेतुका है कि कोई व्यक्ति एक ही समय में कट्टर आस्तिक और विकासवादी दोनों नहीं हो सकता। आज जिन वैज्ञानिकों को 'कट्टर नास्तिक' कहा जाता है, वे वास्तव में हृदय से आस्तिक थे।
इसी बीच, पेरी को बैठने के लिए कोई खाली सीट नहीं मिली, इसलिए वह दीवार से टिक गई। उसने अज़ूर को गौर से देखा, जो बातचीत सुन रहा था, उसके बाल माथे पर बिखरे हुए थे, चेहरा रहस्यमयी चमक से जगमगा रहा था और ठुड्डी हथेली पर टिकी हुई थी। वह इस स्थिति में ज़्यादा देर नहीं रह पाएगा। अगला सवाल उसी से पूछा जाना था।
आगे की पंक्ति में बैठी एक युवती खड़ी हो गई। कंधे सीधे किए हुए, छत से आती रोशनी में उसकी काली चोटी चमक रही थी, वह मजबूती से खड़ी थी। उसकी पीठ मुड़ी होने पर भी पेरी पहचान गई कि वह शिरिन है।
प्रोफेसर अज़ूर, एक स्वतंत्र विचारक होने के नाते, मुझे उस धर्म से समस्या है जिसमें मेरा जन्म हुआ है। तथाकथित "विशेषज्ञों" या "विचारकों" का अहंकार और इमामों, पुजारियों और रब्बियों के स्वार्थी उपदेश मुझे बिल्कुल पसंद नहीं हैं। माफ कीजिएगा, यह सब सरासर ढोंग है। जब मैं आपको पढ़ता हूँ, तो मुझे एक ऐसी आवाज़ मिलती है जो मेरे गुस्से को संबोधित करती है। संवेदनशील मामलों पर आप दृढ़ विश्वास के साथ बोलते हैं। और आप मुझे दूसरों के साथ सहानुभूति रखना सिखाते हैं। जब आप लिखने बैठते हैं, तो क्या आपके मन में कोई विशिष्ट पाठक होता है?
अज़ूर ने समझदारी और मिलीभगत भरी हल्की मुस्कान के साथ अपना सिर एक तरफ झुकाया – यह भाव-भंगिमा पेरी की नज़र से छूट गई। उसकी नज़र के किनारे पर एक नीले रंग की टी-शर्ट ने उसका ध्यान भटका दिया। यह वही पुरुष अटेंडेंट था जिससे वह बाहर मिली थी! उसे लगा कि वह उसे ढूंढ रहा है, इसलिए वह दीवार से

सटकर पीछे हट गई। लेकिन वह युवक, जिसका चेहरा स्पष्ट शत्रुता से भरा हुआ था, मंच को घूर रहा था, उसका जबड़ा कसा हुआ था, और उसकी आँखें विशेष रूप से एक वक्ता पर टिकी हुई थीं: अज़ूर पर।
जैसे ही शिरिन बैठी, वही लड़का लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा और दर्शकों के बीच से टेढ़े-मेढ़े रास्ते से निकलता हुआ शिरिन के पास आकर रुका और माइक माँगते हुए उसके करीब झुक गया। पेरी को उनके बीच की बातचीत का कोई अंदाज़ा नहीं था, लेकिन उसने शिरिन की पीठ को अकड़ते हुए देखा। फिर भी माइक छीनकर, लड़का पैनलिस्टों की ओर मुड़ा और उसकी बुलंद आवाज़ लगभग चिल्लाहट जैसी थी। 'प्रोफेसर अज़ूर से मेरा एक सवाल है!'
अज़ूर का चेहरा गंभीर हो गया। उसका धीमा और सधा हुआ सिर हिलाना यह दर्शाता था कि वह उस युवक को जानता था। 'मैं सुन रहा हूँ, ट्रॉय,' उसने कहा। प्रोफेसर साहब, आपने अपनी पिछली किताबों में से एक में लिखा था - मुझे लगता है कि वह 'स्मैश द डुएलिटी' थी - कि आप नास्तिकों या आस्तिकों के साथ बहस में नहीं पड़ेंगे, लेकिन यहाँ आप ठीक वही कर रहे हैं, जब तक कि मैं किसी क्लोन से बात न कर रहा हूँ। आखिर क्या बदल गया है? क्या आप तब गलत थे या अब गलती कर रहे हैं?
अज़ूर ने उसे एक मुस्कान दी - जो उसने शिरिन को दी थी उससे अलग - जिसमें ठंडे आत्मविश्वास की झलक थी।
‘आपको मेरे शब्दों की आलोचना करने का पूरा अधिकार है, बशर्ते आप उन्हें सत्य रूप से उद्धृत करें। मैंने यह नहीं कहा कि मैं नास्तिकों और आस्तिकों के साथ कभी बहस नहीं करूंगा। मैंने जो कहा वह यह था…’ उन्होंने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। ‘क्या किसी के पास इसकी प्रति है? मुझे देखना है कि मैंने क्या कहा था।’
हंसी की लहर दौड़ गई।
संचालक ने उसे एक किताब थमा दी। अज़ूर ने तुरंत वह पृष्ठ ढूंढ लिया जिसकी उसे तलाश थी। 'यह रहा!'
पेरी को लगा कि उसने कुछ नाटकीय ढंग से गला साफ किया और पढ़ना शुरू किया: “ईश्वर के अस्तित्व का सवाल एक ऐसा उबाऊ, निष्फल और बेतुका विवाद खड़ा करता है जिसमें बुद्धिमान लोग उलझे रहते हैं। हमने अक्सर देखा है कि न तो आस्तिक और न ही नास्तिक निश्चितता के वर्चस्व को छोड़ने को तैयार हैं। उनका दिखावटी मतभेद एक ही बात को बार-बार दोहराने जैसा है। शब्दों की इस

लड़ाई को “बहस” कहना भी उचित नहीं है, क्योंकि प्रतिभागी, चाहे उनके विचार कुछ भी हों, अपनी स्थिति पर अड़े रहते हैं। जहाँ बदलाव की कोई संभावना नहीं है, वहाँ वास्तविक संवाद का कोई आधार नहीं है।”
अज़ूर ने किताब बंद करने से पहले अपना सिर झुकाकर दर्शकों पर नज़र डाली। ‘देखिए, खुली बहस में हिस्सा लेना कुछ-कुछ प्यार में पड़ने जैसा है।’ उनकी आवाज़ शांत थी; उनके हाव-भाव ज़ोरदार, सहज और भरपूर थे। ‘जब बहस खत्म होती है, तब तक आप एक अलग इंसान बन चुके होते हैं। इसलिए, मेरे दोस्तों, अगर आप बदलना नहीं चाहते, तो दार्शनिक बहसों में न पड़ें। यही बात मैंने पहले भी कही थी और यही बात मैं अब भी कह रहा हूँ।’
दर्शकों के बीच से तालियों की गड़गड़ाहट गूंज उठी।
'मुझे खेद है कि हमारे पास समय कम बचा है। श्रोताओं से एक अंतिम प्रश्न,' मॉडरेटर ने घोषणा की।
एक बूढ़ा आदमी खड़ा हो गया। ‘क्या मैं प्रतिष्ठित विद्वानों से पूछ सकता हूँ कि क्या ईश्वर पर उनकी कोई पसंदीदा कविता है – चाहे वे उसमें विश्वास करते हों या नहीं?’
दर्शक उत्सुकता से अपनी सीटों पर हिलने-डुलने लगे।
पहले प्रोफेसर ने कहा: 'समय बीतने के साथ मेरी पसंदीदा कविताएँ बदलती रहती हैं... लेकिन इस समय मैं लॉर्ड बायरन की "प्रोमेथियस" की कुछ पंक्तियों के बारे में सोच रहा हूँ।'
टाइटन! जिसकी अमर आँखों के सामने
मृत्यु के कष्ट,
उनकी दुखद वास्तविकता को देखते हुए,
वे ऐसी वस्तुएँ नहीं थीं जिन्हें देवता तुच्छ समझते हों;
तुम्हारी दया का प्रतिफल क्या था?
एक मौन पीड़ा, और तीव्र पीड़ा;
चट्टान, गिद्ध और श्रृंखला…
दूसरे प्रोफेसर ने कहा, 'मुझे कविताएँ याद करने में बिल्कुल भी महारत हासिल नहीं है। मैं टी. एस. एलियट की कविताएँ याद करने की कोशिश करूँगा।' बहुत से लोग अपना नाम छपा हुआ देखना चाहते हैं।
बहुत से लोग केवल नस्लीय रिपोर्ट ही पढ़ते हैं।

आपका पढ़ना तो बहुत है, लेकिन वह परमेश्वर का वचन नहीं है; आपका निर्माण तो बहुत है, लेकिन वह परमेश्वर का घर नहीं है।
हालांकि अब अज़ूर की बारी थी, फिर भी वह कुछ पल के लिए चुप रहा, मानो कुछ ज़्यादा ही देर तक चुप रहा हो। उस सन्नाटे में उसने उत्सुकता से कहा, 'मेरी कविता महान फ़ारसी कवि हाफ़िज़ की होगी। मैं शब्दों में थोड़ा बदलाव कर सकता हूँ, क्योंकि जैसा कि आप जानते हैं, अनुवाद का हर कार्य प्रेमी का विश्वासघात होता है।'
वह इतनी धीमी आवाज़ में बोल रहा था कि पेरी को उसे सुनने के लिए आगे झुकना पड़ा। उसने देखा कि दर्शकों में भी कई लोग ऐसा ही कर रहे थे।
मैंने ईश्वर से बहुत कुछ सीखा है
कि मैं अब खुद को ऐसा नहीं कह सकता
एक ईसाई, एक हिंदू, एक मुसलमान, एक बौद्ध, एक यहूदी
सत्य ने अपने बारे में मुझसे बहुत कुछ साझा किया है
कि मैं अब खुद को ऐसा नहीं कह सकता
एक पुरुष, एक स्त्री, एक देवदूत या यहाँ तक कि एक पवित्र आत्मा
जैसे ही उसने ये छंद कहे, अज़ूर ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और सीधे दर्शकों की ओर देखा। हालाँकि वह किसी विशेष व्यक्ति को नहीं देख रहा था, और अपने प्रशंसकों और आलोचकों से समान दूरी पर प्रतीत हो रहा था, फिर भी उस क्षण पेरी को लगा कि उसके शब्द उसी की ओर लक्षित थे।
संचालक ने अपनी घड़ी पर एक नज़र डाली। उन्होंने घोषणा की, 'प्रत्येक वक्ता के लिए हमारे पास अंतिम टिप्पणी का समय है। महोदय, आप अपने विचारों को एक वाक्य में कैसे संक्षेप में बताएँगे?'
नास्तिक प्रोफेसर ने कहा, 'मैं एक प्रसिद्ध उद्धरण दोहराऊंगा और यहीं पर बात समाप्त करूंगा: धर्म उन लोगों के लिए एक काल्पनिक कहानी है जो अंधेरे से डरते हैं।'
'उस स्थिति में, नास्तिकता उन लोगों के लिए एक काल्पनिक कहानी है जो प्रकाश से डरते हैं,' धर्मनिष्ठ प्रोफेसर ने अपने मधुर आयरिश लहजे में जवाब दिया। सभी की निगाहें अज़ूर की ओर मुड़ गईं। उसने शरारत भरे लहजे में कहा, 'सच कहूँ तो, मुझे परियों की कहानियाँ बहुत पसंद हैं। मेरे साथी भी उतने ही गुमराह हैं। एक आस्था को नकारना चाहता है, दूसरा संदेह को। वे यह नहीं समझते कि मुझे, एक साधारण इंसान होने के नाते, आस्था और संदेह दोनों की

ज़रूरत है। सज्जनों, अनिश्चितता एक आशीर्वाद है। हम इसे कुचलते नहीं, बल्कि इसका जश्न मनाते हैं। यही तीसरे मार्ग का तरीका है।'
‘इसी के साथ मैं अपने विशिष्ट अतिथियों को धन्यवाद देना चाहूंगा और अपनी चर्चा समाप्त करना चाहूंगा,’ मॉडरेटर ने बीच में ही टोकते हुए कहा, उन्हें चिंता थी कि अज़ूर की टिप्पणियों से कहीं कोई नया विवाद न छिड़ जाए। उन्होंने टिप्पणी की कि आज का कार्यक्रम ब्रिटिश और ऑक्सफ़ोर्ड की सर्वोत्तम परंपरा में एक ईमानदार, बेरोकटोक और खुली बहस का एक आदर्श उदाहरण था।
सभी वक्ताओं के लिए जोरदार तालियाँ बजाएँ! और यह मत भूलिएगा कि अब वे अपनी पुस्तकों पर हस्ताक्षर करेंगे।
श्रोतागण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठे। फिर, जिन लोगों को हस्ताक्षरित प्रतियाँ चाहिए थीं, वे प्रोफेसरों की पुस्तकों से भरे स्टॉल की ओर दौड़ पड़े, जबकि अन्य लोग वक्ताओं में से किसी एक से व्यक्तिगत रूप से बात करने की उम्मीद में मंच की ओर चल पड़े; कुछ लोग बैठे रहे और आपस में फुसफुसाते रहे। शेष श्रोतागण धीरे-धीरे निकास द्वार की ओर बढ़ गए।
इसी बीच, तीनों वक्ता अपने लिए निर्धारित मेज की ओर बढ़े। कार्यक्रम के आयोजकों द्वारा प्रत्येक के सामने एक पीला गुलाब रखा गया था।
पेरी भीड़ के साथ धीरे-धीरे आगे बढ़ी, अपने बाएँ और दाएँ की बातचीत छुपकर सुनती रही। हॉल से बाहर निकलने से ठीक पहले, वह रुकी और पीछे मुड़ी, मानो वह अपनी नज़र के दायरे में आने वाली हर बात को समेटना चाहती हो। उसने देखा कि मॉडरेटर अपने नोट्स अपने ब्रीफ़केस में रख रहा है। उसने देखा कि दो वरिष्ठ प्रोफ़ेसर अपने पाठकों से बातें कर रहे हैं। और उसने देखा कि अज़ूर के सामने प्रशंसकों की एक अव्यवस्थित कतार बन गई - जब तक कि वह धीरे-धीरे लोगों की भीड़ में गायब नहीं हो गया।

ऑप्टिमाइज़र

इस्तांबुल, ऑक्सफोर्ड, 2001
पहला सत्र धुंधला-सा बीत गया। क्रिसमस की छुट्टियों में घर आई पेरी ने खुद को यकीन दिलाया कि उसके पिता की सेहत में कोई गिरावट नहीं आई है और उसकी माँ की साफ़-सफ़ाई को लेकर चिंता जुनून में नहीं बदली है। पूरे घर में ब्लीचिंग पाउडर और नींबू के इत्र की महक फैली हुई थी। हर रेडिएटर पर कपड़े सूखने के लिए लटके हुए थे, जिन्हें इतनी बार धोया गया था कि उनके पैटर्न और रंग लगभग मिट चुके थे, और नीचे पानी के छोटे-छोटे गड्ढे ऐसे जमा हो रहे थे मानो बीते हुए दिनों के लिए बहाए गए आँसू हों।
नए साल की पूर्व संध्या पर पिता और पुत्री टीवी के सामने बैठे भुने हुए शाहबलूत चबाते हुए एक बेली डांसर का नृत्य देख रहे थे – यह मेन्सुर का नए साल के आगमन का जश्न मनाने का पारंपरिक तरीका था। सेल्मा हमेशा की तरह जल्दी अपने कमरे में चली गई थी, सोने के लिए नहीं बल्कि प्रार्थना करने के लिए। उमट और हाकान दोनों के चले जाने के बाद, वहाँ केवल वे दोनों ही थे, पिता और पुत्री – बिल्कुल पहले की तरह। वे ज़्यादा नहीं बोले, मानो उनके बीच की खामोशी की अपनी ही एक भाषा हो। पेरी को सबसे ज़्यादा उनकी रस्मों की याद आ रही थी – समुद्र किनारे लंबी सैर करना, मेनेमेन पकाना, खिड़की के पास कैक्टस के बगल में कार्ड टेबल पर बैकगैमोन खेलना।
एक हफ्ते बाद पेरी ऑक्सफोर्ड लौट आई। इस्तांबुल की लगातार दो यात्राओं ने उसका बजट खत्म कर दिया था, इसलिए उसने अंशकालिक नौकरी पाने का पक्का इरादा कर लिया था। उसके मन में एक और बात भी थी: प्रोफेसर अज़ूर के बारे में और अधिक जानकारी हासिल करना।

वसंत सत्र नई उम्मीदों और नए फैसलों के साथ शुरू हुआ। पेरी ने अकादमिक सलाह के लिए अपने ट्यूटर से मिलने का समय तय किया। तार के फ्रेम वाले चश्मे पहने और हमेशा किसी न किसी तरह खोए-खोए से रहने वाले डॉ. रेमंड कद में छोटे

और मजबूत जबड़े वाले थे, मानो वे अपने दिमाग में कोई द्विघात समीकरण हल करने की कोशिश कर रहे हों। वे अपने साथ काम करने वाले हर छात्र को अपनी बौद्धिक क्षमताओं का अधिकतम उपयोग करने के लिए एक आदर्श समय सारिणी खोजने के लिए प्रोत्साहित करते थे। इसके बदले में, स्नातक छात्रों ने उन्हें एक उपनाम दिया था: सर ऑप्टिमाइज़र।
डॉ. रेमंड और पेरी ने दूसरे वर्ष में उसे कौन से पाठ्यक्रम लेने चाहिए, इस बारे में विस्तार से चर्चा की। वैसे, इसमें ज्यादा लचीलापन नहीं था। कार्यक्रम लगभग तय था, बस कुछ मामूली बदलावों की ही अनुमति थी।
पेरी ने फुर्ती से कहा, 'एक सेमिनार है जिसमें मैं भाग लेना चाहती थी। सब कहते हैं कि यह बहुत अच्छा है।' 'वैसे, बिल्कुल सब तो नहीं, लेकिन मेरी एक दोस्त कहती है कि यह बहुत बढ़िया है।'
‘और वह कौन सा सेमिनार होगा?’ डॉ. रेमंड ने अपना चश्मा उतारते हुए पूछा। वर्षों से उन्होंने बार-बार देखा था कि छात्र एक-दूसरे को गुमराह करते रहते हैं। जो एक के लिए कारगर साबित होता था, वही दूसरे के लिए मुसीबत बन जाता था। इसके अलावा, युवाओं में अपने पसंदीदा गानों की तरह ही बार-बार अपना मन बदलने की प्रवृत्ति होती थी। जिस पाठ्यक्रम के बारे में वे सत्र की शुरुआत में उत्साह से भरे होते थे, सत्र के अंत में उसकी धज्जियां उड़ा देते थे। कॉलेज के फेलो के रूप में अपने तेईस वर्षों में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि छात्रों को बहुत अधिक विकल्प न देना ही बेहतर है। विकल्प और भ्रम एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।
अपने शिक्षक के मन में चल रहे विचारों से अनभिज्ञ पेरी ने आगे कहा, 'ईश्वर पर सेमिनारों की एक श्रृंखला है। प्रोफेसर का नाम अज़ूर है। क्या आप उन्हें जानते हैं?'
डॉ. रेमंड के चेहरे पर बनी सौम्य मुस्कान लगभग न के बराबर नीचे की ओर मुड़ गई। उनकी भौंहों की हल्की सी हरकत ने ही उनकी बेचैनी को ज़ाहिर कर दिया। 'ओह, मैं उन्हें जानता हूँ - कौन नहीं जानता?'
पेरी का दिमाग तेज़ी से सोचने लगा, क्योंकि वह इस আপাত रूप से सरल टिप्पणी के लहजे को समझने की कोशिश कर रही थी। उसे पता चल गया था कि अंग्रेज़ अपनी राय अप्रत्यक्ष तरीके से व्यक्त करते हैं। तुर्कों के विपरीत, वे सीधे- सीधे नाराज़गी को सीधे-सीधे ज़ाहिर नहीं करते थे, न ही सीधे-सीधे गुस्से को दोहराकर। नहीं, उनकी बातचीत में कई परतें होती थीं; गहरी से गहरी बेचैनी

को भी वे एक शांत मुस्कान से व्यक्त कर देते थे। वे प्रशंसा करते थे, जबकि असल में वे निंदा करना चाहते थे; वे अपनी आलोचनाओं को गूढ़ प्रशंसा में लपेट देते थे। पेरी मन ही मन सोचने लगी, अगर मैं मंच पर खराब प्रदर्शन करती, तो तुर्की में वे मुझ पर कांटेदार होली की टहनियाँ फेंकते; इंग्लैंड में, मुझे लगता है कि वे गुलाब फेंकते – उन्हें पूरा भरोसा होता कि मैं कांटों से ही संदेश समझ जाऊंगी। बिलकुल अलग-अलग तरीके।
इसी बीच, डॉ. रेमंड कुछ देर रुके और इस नाजुक मुद्दे से निपटने के सर्वोत्तम तरीके पर विचार करने लगे। जब उन्होंने दोबारा बोलना शुरू किया, तो उन्होंने हर शब्द को सावधानीपूर्वक चुना – ठीक वैसे ही जैसे कोई माता- पिता किसी उदास बच्चे को जीवन की कोई अप्रिय सच्चाई समझा रहे हों। 'मुझे पूरी तरह यकीन नहीं है कि यह आपके लिए सही विकल्प होगा।'
लेकिन आपने कहा था कि मैं अपनी रुचि का कोई भी विषय चुन सकता हूँ, बशर्ते वह विकल्पों की सूची में हो, और यह विषय सूची में है। मैंने इसकी जाँच कर ली है।
'शायद आप मुझे बता सकते हैं कि आप यह सेमिनार क्यों लेना चाहते हैं?' ‘पारिवारिक कारणों से यह विषय मेरे लिए महत्वपूर्ण है।’
‘पारिवारिक कारणों से?’
'हमारे घर में भगवान हमेशा से एक विवादित मुद्दा रहा है। या यूं कहूं कि धर्म। मेरे माता-पिता के विचार आपस में विरोधाभासी हैं। मैं इसका ठीक से अध्ययन करना चाहता हूं।'
डॉ. रेमंड ने अपना गला साफ किया। 'हम भाग्यशाली हैं कि हमारे पास दुनिया के सबसे बड़े पुस्तक संग्रहों में से एक है; आप भगवान के बारे में जितना चाहें उतना पढ़ सकते हैं।'
‘क्या किसी प्रोफेसर के मार्गदर्शन में ऐसा करना बेहतर नहीं होगा?’
यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब डॉ. रेमंड देना नहीं चाहते थे और उन्होंने दिया भी नहीं। 'अज़ूर बहुत ज्ञानी हैं, यह तो निश्चित है, लेकिन मैं आपको आगाह करना चाहता हूँ कि उनकी शिक्षण पद्धति, मैं कैसे कहूँ, अपरंपरागत है। यह हर किसी के लिए कारगर नहीं होती। यह सेमिनार छात्रों को दो भागों में बाँट देता है - कुछ इसका आनंद लेते हैं, जबकि अन्य बेहद दुखी हो जाते हैं। वे मुझसे शिकायत करने आते हैं।'

पेरी चुपचाप बैठी रही। अजीब बात यह थी कि उसके सलाहकार के उत्साहहीन रवैये ने उसकी जिज्ञासा को और बढ़ा दिया था; अब वह सेमिनार में भाग लेने के लिए और भी उत्सुक थी।
'ध्यान रहे कि यह एक छोटी कक्षा है। अज़ूर कम छात्रों को ही लेता है और वह उनसे हर सप्ताह उपस्थित रहने और सभी पठन सामग्री और असाइनमेंट करने की अपेक्षा करता है। इसमें बहुत मेहनत लगती है।'
पेरी ने कहा, 'मैं कड़ी मेहनत से पीछे नहीं हटती।'
डॉ. रेमंड ने गहरी आह भरी। “ठीक है, तो जाइए और अज़ूर से बात कीजिए, उनसे पाठ्यक्रम दिखाने को कहिए।” उन्होंने आगे कहा, “अगर उनके पास पाठ्यक्रम हो तो।”
‘आपका क्या मतलब है, महोदय?’
डॉ. रेमंड कुछ देर रुके, उनके आमतौर पर सौम्य चेहरे पर बेचैनी झलक रही थी। फिर उन्होंने कुछ ऐसा किया जो उन्होंने ऑक्सफोर्ड में अपने लंबे जीवन में कभी नहीं किया था: किसी छात्र से उसके सहकर्मी के बारे में पीठ पीछे नकारात्मक बातें करना। 'देखो, अज़ूर को यहाँ थोड़ा सनकी समझा जाता है। वह खुद को प्रतिभाशाली मानता है और प्रतिभाशाली लोग सोचते हैं कि वे आम लोगों के नियमों से बंधे नहीं हैं।'
‘ओह,’ पेरी ने हांफते हुए कहा। ‘लेकिन क्या यह सच है?’
‘क्या यह सच है?’
क्या वह प्रतिभाशाली है?
डॉ. रेमंड को एहसास हुआ कि उनका व्यंग्य उल्टा पड़ गया है, और अब वे जो कुछ भी कहेंगे, उससे वे और भी मुश्किल में पड़ सकते हैं। उनके गंभीर चेहरे पर अचानक हंसी का भाव आ गया। 'यह तो मज़ाक में कहा था।'
‘मजाक? मैं समझ गया…’
डॉ. रेमंड ने चश्मा वापस लगाते हुए बातचीत समाप्त करते हुए कहा, 'जल्दबाजी मत करो, आराम से सोचो। पहले देखो कि तुम्हें कैसा लगता है। अगर कोई शंका हो तो वापस आकर मुझसे बात करो, हम आसानी से तुम्हारे लिए कोई दूसरा विकल्प ढूंढ लेंगे। एक बेहतर विकल्प।'
पेरी अपनी जगह से उछल पड़ी, क्योंकि उसने वही सुना था जो वह सुनना चाहती थी। 'बहुत बढ़िया, धन्यवाद महोदय!'

पेरी के जाने के बाद, उसके सलाहकार के होंठ सोच-विचार में नीचे झुक गए। उसका जबड़ा और भी कस गया, नथुने फूल गए और ठुड्डी के नीचे उंगलियां आपस में गुंथी हुई थीं। वह कुछ देर तक अपनी कुर्सी पर बिना हिले-डुले बैठा रहा। अंत में, उसने कंधे उचका दिए, यह तय करते हुए कि उसने जो कर सकता था वह कर दिया है। अगर वह नासमझ लड़की अपनी क्षमता से ज़्यादा करने की कोशिश कर रही थी, तो इसके लिए वह खुद ही ज़िम्मेदार होगी।

जवानी

इस्तांबुल, 2016
पेरी की कुर्सी के पीछे खड़ी डेनिज़ नीचे झुकी, उसके गाल पर एक हल्की सी चुंबन दी और उसकी माँ के कान में फुसफुसाते हुए कहा: 'माँ, मैं जाना चाहती हूँ।'
मुरानो झूमर की रोशनी से उसका चेहरा जगमगा उठा। उसकी सहेली उसके बगल में खड़ी थी और उंगली पर बालों की एक लट घुमा रही थी। दोनों किशोरियाँ ऊबी हुई लग रही थीं। हालाँकि वे बड़ों की दुनिया में शामिल होने के लिए तरस रही थीं, यह स्पष्ट था कि उन्हें यह नीरस और शायद अनुमान लगाने योग्य लग रही थी।
डेनिज़ ने आगे कहा, 'सेलिम हमें घर ले जाएगा।'
वह अपनी माँ से अनुमति नहीं माँग रही थी, बस उन्हें बता रही थी। दूसरी लड़की, बैंक के सीईओ की बेटी भी आ रही थी – आखिरी समय में तय हुई उनकी स्लीपओवर पार्टी। उन्होंने अपनी योजना बना ली थी। शायद वे देर रात तक जागेंगी, संगीत सुनेंगी, दोस्तों को मैसेज करेंगी, आधी रात को स्नैक्स खाएंगी, लोगों की इंस्टाग्राम तस्वीरों और यूट्यूब वीडियो पर हँसेंगी; फिर भी डेनिज़ शिकायत करती रहेगी, उसके दिल में शिकायतों का अंबार जमा हो गया होगा, मानो वह अपने प्यारे माता-पिता के घर में नहीं बल्कि किसी नजरबंदी केंद्र में रह रही हो।
‘ठीक है, प्यारे,’ पेरी ने कहा। उसे अपने पति के ड्राइवर सेलिम पर पूरा भरोसा था, जो कई सालों से परिवार के साथ काम कर रहा था। ‘तुम जल्दी जा सकते हो; पापा और मुझे देर नहीं होगी।’
मेहमान मुस्कुराए। कुछ ने आंखें घुमाईं। किशोर बच्चों वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह एक आम बातचीत थी।
‘बाय-बाय, लड़कियों!’ सीईओ ने अपने कोने से हाथ हिलाया।
पेरी ने अपनी कुर्सी पीछे धकेलते हुए कहा, 'चलिए मैं आप लड़कियों को बाहर तक छोड़ देती हूं।'
अदनान उठ खड़ा हुआ। 'नहीं, तुम यहीं रहो, प्रिय। मैं कर दूंगा।'

उनकी निगाहें मिलते ही उसकी आँखों में चमक आ गई। अब वह पोलरॉइड को लेकर परेशान नहीं लग रहा था। उसने बात वहीं खत्म कर दी थी। वह इस मामले में माहिर था, जानता था कि कब बातों को जाने देना है – पेरी के विपरीत। उसने सहजता से पेरी को देखकर मुस्कुराया, वह मुस्कान जिसका मतलब था कि वह जिम्मेदारी ले रहा है और चीजों को व्यवस्थित कर रहा है। शांत और समझदार, अदनान को समस्याओं को सुलझाना अच्छा लगता था; और अगर वह उन्हें सुलझा नहीं पाता था, तो वह उन्हें संभालना जानता था। पेरी से कितना अलग। उसके लिए, समस्याएं कीड़े के काटने जैसी थीं: वह उन्हें खुजलाती रहती थी। वह न तो उन्हें ठीक होने देती थी और न ही उन्हें अकेला छोड़ती थी। जबकि उसे टूटी हुई चीजों – और टूटे हुए लोगों – को ठीक करना अच्छा लगता था। पेरी ने सोचा, अस्थिरता के प्रति उसके आकर्षण को और कैसे समझाया जाए? मेरे प्रति उसके आकर्षण को और कैसे समझाया जाए?
जब उसके पति और बेटी वहाँ से गुज़रे, तो पेरी खड़ी हो गई। उसने अदनान को होठों पर चूमा, हालाँकि वह जानती थी कि कुछ मेहमान इसे असभ्य व्यवहार और कुछ अशोभनीय मानेंगे। 'धन्यवाद, प्रिय।'
कभी-कभी जब वह जीवन की छोटी-छोटी बातों के लिए उसका शुक्रिया अदा करती, तो उसे एहसास होता कि असल में वह उन बड़ी बातों के लिए शुक्रिया अदा कर रही है जिन्हें व्यक्त न करना ही बेहतर था। हाँ, वह उसकी आभारी थी, उस भाग्य की आभारी थी जिसने उसे उसके पास लाया था। लेकिन फिर भी, वह जानती थी कि कृतज्ञता प्रेम नहीं होती।
मेरी बात सुनो, माउस, दो तरह के मर्द होते हैं: तोड़ने वाले और सुधारने वाले। हम पहले वाले से प्यार तो करते हैं, लेकिन दूसरे वाले से शादी करते हैं। उसे यह सोचकर बहुत बुरा लग रहा था कि उसकी ज़िंदगी, उसकी अपनी ज़िंदगी, शिरिन के सिद्धांत को सही साबित कर रही है।
पेरी की आँखों में स्नेह झलक रहा था, उसने अपनी बेटी को देखकर मुस्कुराया। वह डेनिज़ को गले लगाने ही वाली थी कि लड़की के चेहरे के भावों ने मानो कह दिया, माँ, कृपया ऐसा मत करो, इस समूह के सामने नहीं।
पेरी ने धीमी आवाज़ में कहा, 'मैं तुमसे प्यार करती हूँ।'
डेनिज़ एक पल के लिए रुकी। 'मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ। तुम्हारा हाथ कैसा है?'

पेरी ने पट्टी को पलटा, किनारों पर सूखा खून लगा हुआ था। 'कोई बात नहीं। कल तक यह बिल्कुल ठीक हो जाएगा।'
“बस दोबारा ऐसा मत करना,” डेनिज़ ने फुसफुसाते हुए कहा, मानो वह एक चिंतित माँ हो और पेरी एक बिगड़ैल बेटी। फिर उसने मेहमानों से प्रसन्नतापूर्वक कहा, “शुभ रात्रि, सभी को। धूम्रपान मत करना। याद रखना, यह आपके लिए हानिकारक है।”
‘शुभ रात्रि,’ कई आवाजों का एक साथ उच्चारण हुआ।
जैसे ही किशोर कमरे से बाहर निकले, व्यापारी की पत्नी ने कहा, 'ओह, जवानी! काश मैं समय को पीछे मोड़ पाती। क्या साठ ही चालीस है? यह सब झूठ है।'
“तुम खुद बोलो,” व्यापारी ने अपनी पत्नी से कहा। “मैं तो बिल्कुल नए सिक्के की तरह जवान हूँ। सावधान रहो, कहीं मैं तुम्हें तलाक देकर अपने लिए एक जवान लड़की न ले आऊँ।”
पत्रकार ने बनावटी खांसी की। ‘वैसे तो यह पूर्वी देशों की एक घटना है, मतलब, कम उम्र में बुढ़ापा आना। पश्चिमी देशों के लोगों को देखिए। चेहरे पर झुर्रियां और सफेद बाल, फिर भी विदेश में पर्यटक। अमेरिकी बुजुर्गों को हमारी हागिया सोफिया में भीड़ लगाते और एफिसस के पत्थरों पर कूदते देखना शर्मनाक है। वे खुद को क्या कहते हैं – ग्रे पैंथर? मैंने अभी तक किसी सत्तर वर्षीय मध्य पूर्वी व्यक्ति को दुनिया घूमते नहीं देखा है। तुर्क, अरब, ईरानी, पाकिस्तानी… दुनिया के बारे में हमारे बड़े-बड़े विचार हैं – लेकिन हम इसे कभी देखते ही नहीं!’
पूरी शाम अपनी राष्ट्रवादी भावनाओं का प्रदर्शन करने वाले वास्तुकार ने उसे घूरकर देखा।
व्यापारी की पत्नी, जो अचानक अपने मोबाइल फोन पर संदेश भेजने में व्यस्त हो गई थी, ने अपना सिर उठाया, उसका चेहरा चमक रहा था। 'सभी के लिए खुशखबरी! ज्योतिषी दस मिनट की दूरी पर है, मुझे अभी-अभी उसका संदेश मिला है।'
‘बहुत बढ़िया,’ पीआर महिला ने कुर्सी पर पीछे झुकते हुए कहा। ‘हमें उनसे बहुत कुछ पूछना है। बच्चे जा चुके हैं, हमारे ड्रिंक्स भी तैयार हैं – अब हम कुछ शरारती बातें शुरू कर सकते हैं। आज रात मैं उनके कुछ राज़ जानना चाहूंगी।’
इतना कहकर महिला ने पेरी को आँख मारी। पेरी ने आँख मारकर इसका जवाब नहीं दिया।

रंगीन अजनबी

ऑक्सफोर्ड, 2001
पेरी ने पहले कभी नौकरी नहीं की थी, इसलिए वह समझ नहीं पा रही थी कि नौकरी की तलाश कहाँ से शुरू करे। फिर भी, अपने व्यस्त शेड्यूल और छात्र वीज़ा के बावजूद, जो उसे सप्ताह में सीमित घंटों के काम की ही अनुमति देता था, वह किसी न किसी तरह का रोज़गार पाने के लिए दृढ़ थी। इसलिए वह सीधे अपनी उत्साही दोस्त के पास गई, जिसकी हर बात पर राय होती थी - यहाँ तक कि उन विषयों पर भी जिनके बारे में उसे कुछ भी पता नहीं था।
शिरिन ने कहा, 'आपके पास एक सीवी होना चाहिए, जिसमें आपका कार्य अनुभव दर्शाया गया हो।'
लेकिन मेरे पास कोई नहीं है।
अरे, मनगढ़ंत कहानी बना लो! कौन जाँच करेगा कि तुमने इस्तांबुल के किसी पिज़्ज़ेरिया में वेट्रेस का काम किया था?
‘क्या तुम चाहते हो कि मैं झूठ बोलूं?’
शिरिन ने आंखें घुमाईं। 'अरे वाह, शब्दों का खेल! इस तरह कहने पर तो बहुत बुरा लगता है। बस अपनी कल्पना का इस्तेमाल करो, मैं यही कह रही हूं। ये तो अपनी जीवनी पर मेकअप लगाने जैसा है। कहीं तुम मेकअप के खिलाफ तो नहीं हो!' एक पल के लिए दोनों महिलाएं एक-दूसरे के चेहरों को टकटकी लगाकर देखती रहीं: एक का चेहरा रंगा हुआ था; दूसरी का चेहरा बिल्कुल भी मेकअप से मुक्त था। शिरीन ने चुप्पी तोड़ी। 'मुझे लगता है कि मुझे आपकी मदद करनी चाहिए।'

अगली सुबह पेरी को अपने दरवाजे के नीचे एक लिफाफा मिला। जाहिर है, शिरिन ने उसके लिए पहले से ही एक सीवी तैयार कर रखा था।
एक मिनट बाद, पेरी अपनी दोस्त के दरवाजे पर दस्तक दे रही थी। जैसे ही उसे अंदर से हल्की सी बड़बड़ाहट सुनाई दी, वह कागज का एक टुकड़ा लहराते हुए अंदर दौड़ पड़ी। 'यह क्या है? मैंने इनमें से कुछ भी नहीं किया है!'

शिरीन, जो अभी भी तकिए के नीचे सिर छिपाए बिस्तर पर लेटी थी, की दबी हुई आवाज़ आई, 'उफ़। मुझे पता था, दयालुता का कभी कोई फल नहीं मिलता।'
पेरी ने कहा, 'आपकी मदद के लिए धन्यवाद। लेकिन इसमें लिखा है कि मैं इस्तांबुल के एक मशहूर भूमिगत बार में बारटेंडर थी, जब तक कि वह जलकर राख नहीं हो गया। एक जानबूझकर की गई आग! और यह भी कि मैंने ओटोमन पांडुलिपियों के पुस्तकालय में काम किया, जहाँ मैं महल के मसखरों और हिजड़ों के बारे में लिखती थी! ओह, एक और बात: गर्मियों में मैं एक निजी एक्वेरियम में ऑक्टोपस की देखभाल करती थी!'
सैल्मन-गुलाबी रंग के साटन के पायजामे में बैठी शिरीन ने अपनी आंखों से पट्टी हटाई और खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'शायद मैं आखिरी हिस्से में कुछ ज्यादा ही भावुक हो गई थी।'
'सिर्फ आखिरी हिस्से के साथ? आपको क्या लगता है कि यह बकवास मुझे अंशकालिक नौकरी ढूंढने में कैसे मदद करेगी?'
ऐसा नहीं होगा। लेकिन इससे आप विदेशियों के लिए एक अजूबा बन जाएंगे। यकीन मानिए, पढ़े-लिखे ब्रिटिश लोगों को बहुसंस्कृतिवाद में मजा आता है। हालांकि, बहुत ज्यादा नहीं, बस उतना ही जितना जरूरी है। आप और मेरे जैसे लोगों को थोड़ा सनकी होने की छूट है। इससे हमारे साथ रहना मजेदार हो जाता है। तो आप भी इसका भरपूर फायदा उठाएं। अगर विदेशी रोमांच और अच्छा खाना नहीं लाएंगे, तो उन्हें इंग्लैंड में कौन चाहेगा!
पेरी चुप रही।
'सुनो, तुम्हें क्या लगता है कि एक आम ब्रिटिश नागरिक तुम्हारे देश के बारे में क्या जानता है? वे तो यही मानते हैं कि वहाँ हर कोई या तो डॉल्फ़िन के साथ तैर रहा है और कैलामारी खा रहा है या फिर बुर्का पहनकर इस्लामी नारे लगा रहा है।'
पेरी की आंखें झपकने लगीं क्योंकि उसके दिमाग में ढेर सारी तस्वीरें उमड़ रही थीं।
‘मेरा मतलब है कि या तो उनके मन में सकारात्मक छवि होती है – रेतीले समुद्र तट और पूर्वी देशों की मेहमाननवाज़ी, इस तरह की बातें। या फिर नकारात्मक छवि – इस्लामी कट्टरपंथी, पुलिस की बर्बरता और मिडनाइट एक्सप्रेस। जब वे आपसे अच्छा व्यवहार करना चाहते हैं, तो पहली बात कहते हैं; जब वे आपको चुनौती देना चाहते हैं, तो दूसरी बात। पढ़े-लिखे लोग भी रूढ़ियों से अछूते

नहीं हैं।’ शिरीन दीवार के पास सिंक में चेहरा धोने के लिए खड़ी हो गई।
‘पसंद हो या न हो, बहन, जो तुम मेरे मुंह से सुन रही हो, वह कड़वा सच है।
तुम्हें रूढ़ियों के खिलाफ खड़ा होना होगा।’
'और क्या यही तरीका है, जालसाजी के जरिए?' पेरी ने अपने हाथ में मौजूद सीवी पर नजर डालते हुए पूछा।
'यह भी एक घटिया तरीका है,' शिरीन ने अपने बालों में उंगलियां फेरते हुए कहा, पानी की बूंदें उसकी ठोड़ी पर चिपकी हुई थीं।
अपराधबोध से प्रेरित होकर पेरी अपना रिज्यूमे लेकर सड़कों पर निकल पड़ी। पहले तो उसने दुकानों की खिड़कियों पर लगे उन साइनबोर्ड्स को ढूंढा जिन पर लिखा था, 'सहायता की आवश्यकता है'। लेकिन ऐसा कोई साइनबोर्ड नहीं मिला। हिम्मत जुटाकर वह एक केक की दुकान में घुसी और मैनेजर से बात की। उसे विनम्रतापूर्वक मना कर दिया गया। फिर उसने उस पब में अपनी किस्मत आजमाई जहाँ वह अपने माता-पिता के साथ जाया करती थी। नतीजा वही रहा। तीसरी जगह जहाँ उसने दस्तक दी, वह उसकी पसंदीदा किताबों की दुकान थी - 'टू काइंड्स ऑफ इंटेलिजेंस'। दुकान के मालिक पेरी की पूछताछ सुनकर हैरान नहीं हुए। छात्र अक्सर पार्ट-टाइम नौकरी की तलाश में आते रहते थे।
‘प्रिय, क्या तुमने इससे पहले कहीं काम किया है?’ पति ने पूछा।
पेरी हिचकिचाई। 'मुझे अफसोस है कि मैंने नहीं पढ़ी है। लेकिन आप जानते हैं कि मुझे किताबें बहुत पसंद हैं।'
पत्नी मुस्कुराई। ‘आज तो तुम्हारा सौभाग्य है! हम अगले कुछ हफ्तों के लिए किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश कर रहे थे जो हमारी मदद कर सके। हम यह वादा नहीं कर सकते कि उसके बाद भी तुम्हें काम पर रखेंगे। शायद कभी-कभार जब काम ज्यादा हो जाए तो काम मिल जाए। तुम्हारा क्या ख्याल है?’
‘बिल्कुल सही लग रहा है!’ पेरी ने कहा, उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि उसने अभी-अभी क्या सुना है।
दुकान से निकलते समय, उसकी नज़र एक शेल्फ पर उमर खय्याम की रुबाइयात पर पड़ी – जो उसके पिता के प्रिय कवि थे। अनुवादक एडवर्ड फिट्ज़गेराल्ड की प्रस्तावना और चित्रों से सजी यह खूबसूरत पुरानी किताब उसे बेहद लुभा रही थी। सौभाग्य से, उन्हें इस पर अच्छी छूट मिल गई।
बाहर हल्की-हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई। पतली, गुनगुनी बूँदें उसका मूड अच्छा कर रही थीं। वह मुस्कुराई, अपना रिज्यूमे किताब में रखा और घड़ी

देखी। अगले ट्यूटोरियल में अभी भी एक घंटा बाकी था। उसे ख्याल आया कि उसके पास अज़ूर से मिलने और ईश्वर पर उनके सेमिनार का सिलेबस लेने के लिए काफी समय है। शिरीन ने उनके बारे में जो कुछ भी कहा था - और पैनल में उन्हें देखते हुए उसके मन में जो मिली-जुली भावनाएँ थीं - उन्हें देखते हुए उसे उनसे आमने-सामने मिलने में थोड़ा डर लग रहा था।
प्रोफेसर के बारे में सोचते हुए, उसने बेतरतीब ढंग से कविताओं की किताब खोली, जो खय्याम की सांस और आत्मा थीं:
आह, प्रेम! क्या हम दोनों भाग्य के साथ मिलकर साजिश रच सकते हैं?
इस दुखद व्यवस्था को पूरी तरह से समझने के लिए
उसने पंक्तियों को ध्यान से, धीरे-धीरे पढ़ा। क्या इसमें आने वाली घटनाओं का कोई संकेत था? यदि हाँ, तो वह क्या हो सकता है? यदि उसके पिता ने उसे लगभग एक हजार वर्ष पूर्व के कवि के शब्दों में संकेत खोजते हुए देख लिया होता, तो वे प्रसन्न नहीं होते।
लेकिन पेरी को नहीं लगता था कि खय्याम से सलाह लेकर उसने अपने पिता के सुनहरे नियम का उल्लंघन किया है। ‘इसीलिए तो मुझे कविता इतनी पसंद है,’ उसने मन ही मन बुदबुदाया। ‘मैं कविताओं को छू सकती हूँ, देख सकती हूँ, सुन सकती हूँ, सूंघ सकती हूँ और उनका स्वाद ले सकती हूँ। मेरी सारी इंद्रियाँ काम कर रही हैं, विश्वास करो बाबा!’
इसलिए अब समय आ गया था कि वह आखिरकार प्रोफेसर से आमने-सामने मिले।

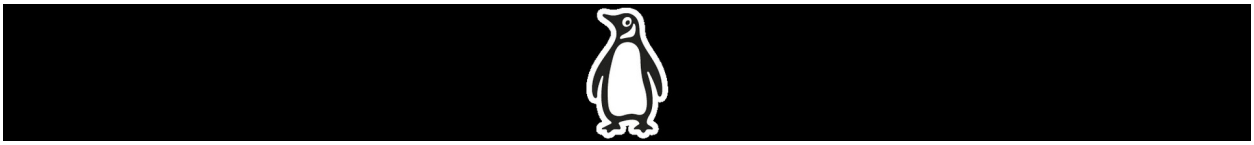

□□□ □□□

सिस्किन

ऑक्सफोर्ड, 2001
प्रोफेसर अज़ूर का पता न होने पर पेरी ने अंदाज़ा लगाया कि वह उन्हें धर्मशास्त्र विद्यालय में ढूंढ पाएगी। अगर वह ईश्वर के बारे में पढ़ाते थे, तो यकीनन उन्हें वहीं होना चाहिए था।
भव्य और सादगी से भरपूर, यह मध्ययुगीन इमारत ऑक्सफोर्ड में व्याख्यान और अध्यापन के लिए निर्मित सबसे पुरानी संरचना थी। दूर से देखने पर, अपने जटिल मेहराबों, नक्काशीदार लकड़ी के दरवाजों और ऊंचे खंभों के साथ, यह वास्तुकला की उस अद्भुत कृति से कहीं अधिक किसी स्वप्निल कलाकार के नाजुक जलरंग चित्र जैसी प्रतीत होती थी। हवा में एक सुस्त उम्मीद छाई हुई थी, मानो दशकों की शांति से थक चुके प्राचीन पत्थर किसी चीज़ की प्रतीक्षा कर रहे हों - या कम से कम पेरी को उस विशेष दिन इसके पास पहुँचते समय ऐसा ही लगा।
कुछ ऐसा था जो उसे अंदर खींच लाया, पंद्रहवीं शताब्दी की गुंबददार छत की भव्य रेखाओं में एक दिव्य और आध्यात्मिक अनुभूति थी। किसी ने उसे अंदर जाने से नहीं रोका, और लंबवत शैली की खिड़कियों से रोशन उस लंबे कमरे में मानो कोई नहीं था - सिवाय एक छात्र के जो फर्श पर पालथी मारकर बैठा एक किताब में डूबा हुआ था। पेरी के कदमों की आहट सुनकर उसने ऊपर देखा। एक ऊँची खिड़की से छनकर आती रोशनी में, उसके चेहरे के भाव एक पल के लिए धुंधले हो गए, और फिर स्पष्ट हो गए - संकरा माथा, लाल बाल, और झाइयों वाले गाल। यह वही परिचारक था जिसने पेरी को ईश्वर वाद-विवाद के प्रवेश द्वार पर रोका था; वही परिचारक जिसने सबके सामने प्रोफ़ेसर अज़ूर पर कटाक्ष किया था। उसे उसका नाम याद था - केवल इसलिए क्योंकि यह प्राचीन तुर्की शहर ट्रॉय के नाम जैसा था।
‘हैलो,’ पेरी ने सावधानी से कहा।
'नमस्ते।' उसके चेहरे पर मुस्कान पहचान की झलक थी।
‘आप कुछ दिन पहले संग्रहालय में थे। क्या आप वहां काम करते हैं?’ पेरी ने पूछा।

'नहीं, मैं तो बस स्वयंसेवा कर रहा हूँ। मैं एक साधारण स्नातक छात्र हूँ - बिल्कुल तुम्हारी तरह।'
पेरी को लगभग उम्मीद थी कि वह बहस में चुपके से घुसने के लिए उसे डांटेगा, लेकिन या तो उसने उसे देखा नहीं था, या उसने इस विषय को उठाना ही उचित नहीं समझा। इसके बजाय, उसने बेफिक्री से बातचीत की, उससे पूछा कि वह कहाँ से आई है और क्या पढ़ती है। अब जब उससे हर तरह का अधिकार छीन लिया गया था, तो वह सहज और यहाँ तक कि मिलनसार भी हो गया था।
बातचीत में थोड़ी देर के लिए सन्नाटा छा जाने पर पेरी ने कहा, 'मैं प्रोफेसर अज़ूर को ढूंढ रही हूँ। क्या आपको पता है कि उनका कार्यालय कहाँ हो सकता है?'
ट्रॉय का चेहरा एक पल के लिए भावहीन रहा। जब उसने दोबारा बोलना शुरू किया, तो उसकी आवाज़ खोखली सी लगी, मानो कोई गुब्बारा पिचक गया हो। 'वह तुम्हें यहाँ नहीं मिलेगा। आजकल ये विश्वविद्यालय के दफ्तर हैं। वैसे भी तुम उसे क्यों ढूंढ रहे हो?'
प्रश्न पूछे जाने की उम्मीद न होने के कारण पेरी की आवाज लड़खड़ा गई। 'उह... मुझे उनके सेमिनार में दिलचस्पी है।'
‘कहीं तुम “भगवान” को लेने की योजना तो नहीं बना रहे हो?’
‘क्यों नहीं?’ पेरी ने पूछा। ‘इसमें क्या गलत है?’
‘सब कुछ,’ ट्रॉय ने कहा। ‘वह आदमी प्रोफेसर के भेष में भेड़िया है!’ ‘तुम्हें वो पसंद नहीं है?’
‘उसने मुझे अपनी क्लास से निकाल दिया। वैसे, मैं उस पर मुकदमा कर रहा हूँ। मैं उसे कोर्ट में हरा दूँगा।’
‘वाह, मुझे नहीं पता था कि छात्र ऐसा भी कर सकते हैं,’ पेरी ने कहा। ‘मतलब… यह सुनकर दुख हुआ कि आपको परेशानी हुई।’
‘समस्या?’ ट्रॉय ने तिरस्कार भरे लहजे में यही शब्द दोहराया। ‘अज़ूर स्वयं शैतान है। मेफिस्टोफेल्स। क्या तुम जानते हो कि वह कौन है?’
'हाँ, फॉस्ट से।'
ट्रॉय को यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि एक तुर्की लड़की फॉस्ट के बारे में जानती है। 'देखो, तुम अच्छी लगती हो, लेकिन तुम विदेशी हो, तुम यह नहीं समझ पाओगी कि यह आदमी कितना पागल है। तुम्हें मेरी बात माननी होगी। अज़ूर से दूर रहो!'

‘खैर, चेतावनी के लिए धन्यवाद,’ पेरी ने कहा, उनके बीच जो भी सहानुभूति पनपी थी, वह धीरे-धीरे खत्म हो रही थी। ‘लेकिन मैं खुद फैसला करूंगी।’
ट्रॉय ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'ठीक है, ये तुम्हारी मर्ज़ी है। उसके कॉलेज में कमरे हैं। प्रवेश द्वार मर्टन स्ट्रीट पर है। सामने वाले चौक में, बाईं ओर तीसरी सीढ़ी ढूंढो। खुले प्रवेश द्वार पर तुम्हें काले रंग की पृष्ठभूमि पर सफेद रंग से लिखे नामों की एक सूची दिखेगी।'
पेरी ने उसे धन्यवाद दिया, हालाँकि मन ही मन उसे यह बात कुछ अजीब लगी कि वह उसे उस व्यक्ति की ओर ले जाने के लिए इतना उत्सुक था जिसे वह शैतान मानता था। प्रोफ़ेसर अज़ूर का कॉलेज हाई स्ट्रीट से थोड़ी दूर एक प्राचीन पत्थर की पक्की गली में था, जहाँ प्रवेश एक सुनहरे रंग के गॉथिक मेहराब और एक पत्थर के आंगन से होकर होता था।

पेरी को सीढ़ियाँ आसानी से मिल गईं। बाहरी दीवार के दोनों ओर चाक से कॉलेज की नवीनतम नौका दौड़ के परिणाम लिखे हुए थे, जिनके ऊपर दो क्रॉस किए हुए चप्पू बने थे। बरामदे के अंदर उसने एक तख्ती पर पट्टियों में खुदे हुए नाम पढ़े: प्रो. टी. जे. पैटरसन, जी. एल. स्पेंसर, प्रो. एम. लिट्ज़िंगर… और प्रो. ए. ज़ेड. अज़ूर, पहली मंजिल पर। वह अंधेरे, संकरे, पत्थर के गलियारे से नीचे उतरी। वहाँ, दाईं ओर, एक प्रवेश द्वार था, जिसका चौखट प्राचीनता के भार से झुका हुआ था; दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था, जिस पर कागज का एक टुकड़ा पिन से लगा हुआ था।
प्रोफेसर ए. जेड. अज़ूर
उपलब्धता: मंगलवार सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक / शुक्रवार दोपहर 2 बजे से शाम 4 बजे तक।
सिद्धांत: यदि आपके पास कोई प्रश्न है, तो कार्यालय समय के दौरान पधारें। विपरीत सिद्धांत: यदि आपके पास कार्यालय समय के बाहर कोई ज़रूरी प्रश्न है, तो आकर पूछें कि क्या उत्तर दिया जाता है।
है
अपने मामले में सिद्धांत लागू होता है या प्रति-सिद्धांत, इसका सावधानीपूर्वक चयन करें।

‘ओह, ओह, मुझे बहुत खेद है,’ उसने अचानक कहा, उसकी ओर एक कदम बढ़ाते हुए और तुरंत एक कदम पीछे हटते हुए। ‘मेरा बिना अनुमति के अंदर आने का बिल्कुल भी इरादा नहीं था।’
'तो फिर आपने ऐसा क्यों किया?' उसने पूछा, मानो वह सचमुच जानना चाहता हो। ‘उह, मैंने एक पक्षी देखा।’
‘कौन सा पक्षी?’
पेरी ने अपनी बाईं ओर इशारा किया, जहाँ कुछ देर पहले वह प्राणी था, लेकिन अब वहाँ केवल खाली जगह थी। उसने घबराकर चारों ओर देखा। सिस्किन बिना किसी निशान के गायब हो गया था। 'जब हम बात कर रहे थे, तब वह खिड़की से निकल गया होगा।'
एक मिनट तक वह चुपचाप खड़ा रहा, उसकी आँखें एकटक टिकी हुई थीं और उनमें एक अजीब सी परिचितता झलक रही थी, मानो वह कोई और किताब हो जिसे उसने अतीत में पढ़ा हो और अब उसे याद करने की कोशिश कर रहा हो। अंत में, उसने कहा, 'वैसे, वह एम्बर रंग की थी।'
'माफ़ करें?'
‘आप जिस अगरबत्ती को देख रहे थे,’ उसने कहा। ‘गुरुवार को अंबर रंग की अगरबत्ती जलाते हैं। मैं अलग-अलग दिनों में अलग-अलग तरह की अगरबत्ती जलाता हूँ। क्या आपको अंबर रंग की अगरबत्ती पसंद है?’
पेरी का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। हाँ, वह एम्बर की शक्ति के बारे में जानती थी।
'रोमन महिलाएं एम्बर की गेंदें अपने साथ रखती थीं। कुछ का कहना है कि सुगंध के लिए; अन्य का कहना है कि चुड़ैलों से सुरक्षा के लिए।'
पेरी की आंखें चौड़ी हो गईं। वह यह नहीं बता सकती थी कि यह ट्रॉय की चेतावनी का असर था या अज़ूर की उपस्थिति का, लेकिन वह घबरा गई थी।
'कहीं तुम डर तो नहीं रही हो?' उसने उसकी बेचैनी को भांपते हुए पूछा।
‘अंबर का?’
‘चुड़ैलों की!’
‘बिल्कुल नहीं,’ पेरी ने झट से कहा। उसके भीतर से एक आवाज़ आई कि अगर उसने उसे अगरबत्ती की जाँच करते हुए देखा है, तो वह यहाँ इतनी देर तक रहा होगा कि उसने पक्षी को भी देख लिया होगा। ‘एक बार फिर, प्रोफेसर, आपके कमरे में आने के लिए मुझे बहुत खेद है।’

‘तुम कितनी बार माफी मांगते हो?’ अज़ूर ने पूछा। ‘तीन मिनट में दो बार। अगर यही तुम्हारा औसत है, तो यह कुछ ज़्यादा ही है, तुम्हें नहीं लगता?’
पेरी शरमा गई। उसकी बात में दम था। वह हर बात के लिए ज़रूरत से ज़्यादा माफ़ी माँगती थी – अपॉइंटमेंट में कुछ मिनट देर से पहुँचने पर; अगले व्यक्ति के लिए पकड़े हुए दरवाज़े को एक सेकंड पहले ही छोड़ देने पर; फुटपाथ पर किसी को ओवरटेक करने पर; सुपरमार्केट में अपनी ट्रॉली से किसी ग्राहक को बस हल्का सा छूने पर... वह हर समय 'सॉरी' कहती रहती थी।
‘एक परिकल्पना है,’ अज़ूर ने अपने बालों को आंखों से हटाते हुए कहा। ‘जो लोग बेवजह माफी मांगते हैं, वे बेवजह धन्यवाद भी देते हैं।’
पेरी ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात कही। 'शायद वे बस बेचैन आत्माएं हैं जो किसी तरह अपना गुजारा करने की कोशिश कर रही हैं। वे दूसरों के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, लेकिन वे जानते हैं कि हमेशा एक अंतर बना रहता है।'
‘किस तरह का अंतर?’ अज़ूर ने पूछा।
पेरी ने कहा, 'जैसे हम यहाँ के हैं ही नहीं,' और उसे तुरंत अपने कहे पर पछतावा हुआ। वह अपनी भावनाओं को इस अजनबी और प्रोफेसर के सामने क्यों ज़ाहिर कर रही थी, जो उसकी दुनिया से बिल्कुल अलग था?
अज़ूर पेरी के पास से गुज़रा, अपनी डेस्क के पीछे बैठ गया, कागज़ के एक टुकड़े पर कुछ लिखा और उसे अपने सिर के ऊपर कपड़े सुखाने वाली रस्सी पर टांग दिया। 'तो तुम्हें चिंता है कि दूसरे छात्र तुम्हें अपने जैसा नहीं समझेंगे? एक ढोंगी जो सबकी तरह होने का दिखावा कर रहा है? तुम्हें लगता है कि तुम... अलग हो? किसी बुरी आत्मा के वश में हो? अजीब हो? पागल हो?'
‘मैंने ऐसा नहीं कहा,’ पेरी ने आपत्ति जताई। उसके शरीर की हर मांसपेशी तनावग्रस्त महसूस हो रही थी, मानो अगले प्रहार का इंतजार कर रही हो।
उसकी प्रतिक्रिया से बेखबर, उसने कहा, 'मुझे बताओ, तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि तुम ऑक्सफोर्ड में रहने के लायक नहीं हो?'
‘मैंने ऐसा भी नहीं कहा!’ उसकी निगाहें उस लाल रंग के कालीन पर पड़ीं जो उसे अपने घर के कालीनों की याद दिला रहा था। ‘यहाँ के लोग कितने समझदार हैं,’ उसने खड़े होते हुए कहा।
'आप नहीं हैं?'

‘मैं ठीक हूँ, लेकिन मुझे मेहनत करनी होगी। बाकी छात्र विश्वविद्यालय जीवन में आसानी से ढल जाते हैं। जबकि मेरे लिए यह थोड़ा मुश्किल है,’ पेरी ने कहा, उसे अब जाकर याद आया कि वह यहाँ क्यों आई थी। ‘दरअसल, मैं ईश्वर पर आपके सेमिनार की विस्तृत जानकारी देखना चाहती हूँ। डॉ. रेमंड ने सुझाव दिया था कि मैं आपसे सीधे पूछूँ।’
‘अरे, डॉ. रेमंड?’
अज़ूर के लहजे से ऐसा लग रहा था मानो वह उसके 'नैतिक शिक्षक' - उसके अकादमिक सलाहकार - के बारे में कुछ खास नहीं सोचते हों, लेकिन उन्होंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। इसके बजाय, उन्होंने चमड़े की जिल्द वाली किताब से एक नोट निकाला, उसे मुंह बनाकर सरसरी नजर से देखा, उसे मोड़कर गेंद की तरह बना दिया, फुर्ती से कूड़ेदान में फेंक दिया और घोषणा की, 'मुझे लगता है कि आप माइकलमास सत्र के लिए इस पर विचार कर रही हैं। सेमिनार में सीटें भर चुकी हैं और प्रतीक्षा सूची भी है।'
पेरी को इसकी उम्मीद नहीं थी। अब जब उसे पता चल गया था कि सेमिनार में जाना उसकी पहुँच से बाहर है, तो वह उसमें शामिल होने के लिए बेताब थी। ‘हालांकि,’ उसकी निराशा देखकर अज़ूर ने कहा, ‘एक छात्रा को पढ़ाई छोड़नी पड़ेगी। इसलिए शायद भविष्य में हमारे पास एक सीट खाली हो जाए।’
पेरी का चेहरा खिल उठा। उसकी उत्सुकता के भीतर, उसे थोड़ी बेचैनी भी महसूस हुई क्योंकि उसे लगा कि जिस छात्र का वह जिक्र कर रहा था, वह शायद ट्रॉय था।
‘वहाँ एक लड़का था –’
‘हाँ… वह क्रोधित और आक्रामक है,’ अज़ूर ने कहा। ‘क्रोधित और आक्रामक व्यक्ति ईश्वर का अध्ययन नहीं कर सकते।’
उनके बीच सन्नाटा छा गया, मानो कोई कागज़ खुल रहा हो। अपनी मेज के पीछे से, अज़ूर ने पेरी पर अपनी निगाहें गड़ा दीं। 'अब बताओ, तुम इस सेमिनार में क्यों आना चाहती हो?'
‘मेरे परिवार में, आस्था एक विवादास्पद विषय है। मेरे पिता –’
‘तुम्हारे माता-पिता यहाँ नहीं हैं। मैं तुमसे पूछ रहा हूँ।’
‘खैर, आस्था के मामलों को लेकर मेरे मन में हमेशा से दुविधा और जिज्ञासा रही है। मुझे अपने विचारों को स्पष्ट करने की जरूरत है।’

‘जिज्ञासा पवित्र है। अनिश्चितता एक आशीर्वाद है,’ अज़ूर ने पैनल में व्यक्त किए गए अपने विचारों को दोहराते हुए कहा। ‘अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए, ऑक्सफ़ोर्ड में आप मुझसे संपर्क करने वाले अंतिम व्यक्ति होंगे।’
बाहर एक चिड़िया चहचहा रही थी और पेरी सोच रही थी कि कहीं यह सिसकिन तो नहीं है, जो प्रकृति में लौट आई है, जो खतरों और क्रूरता से भरी होने के बावजूद भी उसका घर है। अपने ख्यालों में खोई हुई पेरी ने ध्यान नहीं दिया कि प्रोफेसर आगे झुककर उस कविता संग्रह को उठा रहे हैं जिसे उसने नीचे रख दिया था।
‘अहा! ये क्या है? देखो, रुबाइयात का एक पुराना संस्करण!’ अज़ूर ने कहा। उसके कुछ कहने से पहले ही उसने उसे खोल दिया और अंदर सीवी ढूंढ लिया।
‘ओह, यह तो बस एक…’ पेरी लड़खड़ा गई।
प्रोफेसर अज़ूर ने खुशी और अविश्वास के मिले-जुले भाव से शिरिन द्वारा तैयार किए गए पृष्ठ को पढ़ा। 'वाह वाह! तुमने एक ऑक्टोपस की देखभाल की है?' पेरी जम गई।
उन्होंने कहा, 'रहस्यमय प्राणी, अत्यंत बुद्धिमान। जैसा कि आप जानते ही होंगे, इसके लगभग दो-तिहाई न्यूरॉन्स इसके तंतुओं में स्थित होते हैं।' कोई और विकल्प न होने के कारण पेरी मान गई।
‘क्या आपको लगता है कि ऑक्टोपस की भुजाओं का अपना दिमाग होता है?’ अज़ूर ने पूछा। पेरी को राहत मिली कि उसे जवाब की उम्मीद नहीं थी। ‘दशकों से लोग मानते आए हैं कि किसी जानवर का दिमाग जितना बड़ा होता है, वह उतना ही बुद्धिमान होता है। वे बुद्धिमत्ता को दिमाग के आकार से जोड़ते थे। कितना लैंगिक भेदभाव है! पुरुषों में महिलाओं की तुलना में अधिक मस्तिष्क ऊतक होते हैं। फिर आता है शानदार ऑक्टोपस, अपनी छह भुजाओं से इन मिथकों को तोड़ता है – वैसे, आठ नहीं, लोग गलती से पैरों को गिन लेते हैं। क्या होगा अगर एक बड़े, भारी-भरकम, केंद्रीकृत दिमाग के बजाय, कई दिमागों का एक जटिल नेटवर्क विकास का अगला चरण हो?’
पेरी के भीतर, लगभग उसकी इच्छा के विरुद्ध, एक सूक्ष्म रोमांच फैल गया। उसे एहसास हुआ कि उसे उसकी बातें सुनना अच्छा लग रहा था।
‘क्योंकि उम्र के साथ इसकी बुद्धि बढ़ती जाती है, अगर यह और अधिक समय तक जीवित रहता, तो ऑक्टोपस पृथ्वी पर सबसे बुद्धिमान प्रजाति होता। लेकिन

महान दार्शनिक अरस्तू का मानना था कि ऑक्टोपस मूर्ख होते हैं। अब इससे अरस्तू के बारे में क्या पता चलता है?’
पेरी को एक अजीब सी अनुभूति हुई कि यह बातचीत जिस भी दिशा में जा रही थी, वह अब किसी दार्शनिक और घोंघे के बारे में नहीं, बल्कि अज़ूर और खुद उसके बारे में थी। उसने कहा, 'अरस्तू गलत था, शायद पक्षपाती था। उसे लगा कि अष्टकोण में कुछ भी दिलचस्प नहीं है; वह पहले से ही सब कुछ जानता था। इसलिए वह यह देखने में असफल रहा कि वह चमत्कारों से भरा हुआ है।'
प्रोफेसर मुस्कुराए। “बिल्कुल सही… पेरी,” उन्होंने रिज्यूमे पर लिखे पेरी के नाम पर नज़र डालते हुए कहा। “अरस्तू के ऑक्टोपस की तरह, ईश्वर भी एक रहस्य है जिसे जानने के लिए खोजबीन की आवश्यकता है।”
लेकिन यह अलग बात है। हमें ऑक्टोपस पर विश्वास करने की ज़रूरत नहीं है; हम जानते हैं कि वह मौजूद है। जबकि भगवान के मामले में, हम इस बात पर भी सहमत नहीं हो सकते कि वह है या नहीं।
अज़ूर ने भौंहें चढ़ाईं। 'मेरे सेमिनार का आस्था से कोई लेना-देना नहीं है। हम ज्ञान की खोज कर रहे हैं।'
उसकी आवाज़ में दृढ़ता थी। उदास और अधीर। पेरी को शक था कि जब वह देर रात तक काम करते हुए या ओस से भीगी सुबहों में टहलते हुए खुद से बात करता था, तो वह इसी लहजे का इस्तेमाल करता था।
‘ईश्वर पर आयोजित यह संगोष्ठी जिज्ञासु मनों का मिलन है। हम सभी अलग-अलग पृष्ठभूमियों से आते हैं, लेकिन हममें एक बात समान है: जिज्ञासा की भावना! यह एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें बहुत अधिक पठन और शोध की आवश्यकता होती है। मुझे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप आस्तिक हैं या नहीं। मेरे विद्यार्थियों में केवल एक ही पाप है: आलस्य।’
पेरी ने सावधानी से पूछा, 'और पाठ्यक्रम –'
‘ओह, ये पवित्र पाठ्यक्रम!’ अज़ूर गरज उठा। ‘शिक्षा जगत में तात्कालिकता बिल्कुल बर्दाश्त नहीं की जाती। स्नातक छात्रों को हर सप्ताह यह बताना ज़रूरी है कि उन्हें क्या पढ़ना है, इसके लिए उन्हें एक महीने पहले सूचना देनी पड़ती है। वरना वे घबरा जाएंगे!’
इतना कहकर उसने दराज खोली, एक पन्ना निकाला, उसे रुबाइयात के अंदर रखा और उसे दे दिया। ‘यह लो, अगर तुम्हें ज़रूरत हो तो,’ उसने कहा। अपना बायोडाटा उसने अपने पास रख लिया।

पेरी ने कहा, 'धन्यवाद,' हालांकि उसे संदेह था कि उसके हाथ में मौजूद दस्तावेज सच्चाई का उतना ही कम प्रतिनिधित्व करता था जितना कि शिरिन द्वारा उसके लिए तैयार किया गया सीवी।
‘जाने से पहले,’ अज़ूर ने कहा, ‘आपने कहा था कि आप भ्रमित और जिज्ञासु हैं, और ऐसा लगता है कि आप अपने लिए चीजों को जटिल बना रहे हैं: ये तीन 'सी' हैं जो ईश्वर की संभावना के ईमानदार अध्ययन के लिए आवश्यक हैं।’
‘आपका मतलब भ्रम और जिज्ञासा से है –’
‘और जटिलता! कुछ लोग इसे अराजकता कहते हैं!’ अज़ूर ने आगे कहा। ‘जिनके पास आवश्यक ज्ञान है, वे ईश्वर का अध्ययन करने के लिए अच्छी स्थिति में हैं।’ पेरी को यकीन नहीं था कि इसका मतलब सेमिनार में प्रवेश मिलेगा या नहीं, लेकिन फिर भी उन्हें धन्यवाद देने की ज़रूरत महसूस करते हुए मुस्कुराई और अज़ूर पर धीरे से दरवाज़ा बंद कर दिया। जैसे ही वह चौक पार कर रही थी, उसने इमारत की ओर पीछे मुड़कर देखा, उस खिड़की को खोजने की कोशिश कर रही थी जिसमें वह सिस्किन फंसा हुआ था। उसकी नज़रें इमारत के पुराने अग्रभाग पर घूमीं और एक कांच के चप्पू पर टिक गईं, जिसके पीछे प्रोफेसर की परछाईं एक क्षणिक विचार की तरह गुज़र गई। लेकिन शायद यह केवल उसकी कल्पना थी।

पवित्र पाठ्यक्रम

ईश्वर के मन में प्रवेश/मन का ईश्वर (दर्शन और धर्मशास्त्र का मानद विद्यालय) गुरुवार दोपहर 2 बजे से शाम 4.30 बजे तक।
व्याख्यान कक्ष, 10 मर्टन स्ट्रीट

सेमिनार का विवरण
साप्ताहिक कक्षाओं के इस पाठ्यक्रम में हम उन प्रश्नों पर चर्चा करेंगे जो आज विश्व भर में बड़ी संख्या में लोगों के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। हमारा उद्देश्य बेहतर समझ के लिए आवश्यक बौद्धिक साधनों से स्वयं को सुसज्जित करना और हर प्रकार के पूर्वाग्रह और कट्टरता से मुक्त स्वतंत्र वाद-विवाद को प्रोत्साहित करना है। छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे उन विचारों को पढ़ें, उन पर शोध करें, मनन करें और उनका सम्मान करें जिनसे वे व्यक्तिगत रूप से सहमत न हों।
यह सेमिनार किसी विशेष धर्म का प्रचार नहीं करता और न ही किसी विशेष मत का समर्थन करता है। चाहे आप यहूदी, हिंदू, पारसी, बौद्ध, ताओवादी, ईसाई, मुस्लिम, तिब्बती बौद्ध, मॉर्मन, बहाई, अज्ञेयवादी, नास्तिक, न्यू एज अनुयायी हों या अपना खुद का पंथ शुरू करने वाले हों, आपको समान रूप से अपनी बात रखने का अवसर मिलेगा। व्याख्यान कक्ष में हम सभी लोग एक वृत्त में बैठकर चर्चा करते हैं ताकि सभी केंद्र से समान दूरी पर रहें।

सेमिनार के उद्देश्य
1. सहानुभूति, ज्ञान, समझ और बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देने के लिए,
सोफोस, ईश्वर की अवधारणा से संबंधित मामलों में;
2. छात्रों को सबसे आम प्रश्नों के उत्तरों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करना।
हमारे समय के लिए चुनौतीपूर्ण प्रश्न;
3. छात्रों को किसी विषय पर आलोचनात्मक और सावधानीपूर्वक सोचने के लिए प्रोत्साहित करना।
यह विषय न केवल धर्मशास्त्र या दर्शनशास्त्र में महत्वपूर्ण है, बल्कि

मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी;
4. सार्वभौमिक दुविधाओं को यांत्रिक दोहराव के बिना हल करने के लिए, जानकारी की कमी, कट्टरता और दूसरों को नाराज करने का डर;
5. संक्षेप में, भ्रमित करना और भ्रमित होना...

सेमिनार सामग्री
पठन सामग्री की सूची आपकी लगन, मेहनत और शैक्षणिक प्रदर्शन के अनुसार व्यक्तिगत रूप से तैयार की जाएगी। ऐसे पाठ्य सामग्री दिए जाने के लिए तैयार रहें जो आपके अपने विश्वासों से भिन्न हो सकती हैं और उन पर टिप्पणी करने के लिए भी तैयार रहें (उदाहरण के लिए, नास्तिक छात्रों को धार्मिक लेखकों की पुस्तकें दी जा सकती हैं; आस्तिक छात्र नास्तिक विद्वानों की रचनाएँ पढ़ेंगे, आदि)।

इस सेमिनार से क्या उम्मीद करें
चूंकि ईश्वर हमारा मुख्य विषय है, इसलिए यह संगोष्ठी खुली है, जिसका न कोई आरंभ है और न ही संभवतः कोई अंत। यह विद्यार्थी पर निर्भर करता है कि वह इस अनुभव से कितना सीखता है और कितनी दूर तक आगे बढ़ता है।
ए. क्रेन। वे लोग जो औसत गति से उड़ान भरने से असंतुष्ट हैं।
ऊंचाइयों पर पहुंचकर, वे अपने शिक्षक सहित सभी से आगे निकलने का लक्ष्य रखते हैं। वे अतिरिक्त पठन सामग्री मांगेंगे, प्रश्नों पर प्रश्न उठाएंगे, बौद्धिक चुनौतियों की मांग करेंगे और पर्वतीय दर्रों को पार करते हुए उड़ान भरेंगे।
बी. उल्लू। सारसों जितने महत्वाकांक्षी नहीं, उल्लू
फिर भी वे महान विचारक हैं। सैकड़ों पन्ने सरसरी तौर पर पढ़ने के बजाय, वे उपलब्ध सामग्री का गहन अध्ययन करना पसंद करते हैं। वे सेमिनार, पठन सामग्री, प्रशिक्षक और यहां तक कि स्वयं पर भी संदेह करेंगे। समूह में उनका योगदान विशाल और अद्वितीय होगा।
सी. अल्पाइन स्विफ्ट पक्षी। शायद ये सारस या अन्य पक्षियों की तरह प्रेरित नहीं होते।

उल्लुओं की तरह तीव्र, स्विफ्ट पक्षी फिर भी सबसे लंबी दूरी तय करते हैं। वे सेमिनार समाप्त होने के बाद भी, और स्नातक होने के बाद भी, इस विषय पर पढ़ना जारी रखते हैं।
डी. रॉबिन्स। न्यूनतम से संतुष्ट, अधिक चिंतित
बौद्धिक क्षमता से ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि उन्हें अंत में क्या ग्रेड मिलेगा।
रास्ते में आने वाली चुनौतियों का सामना करने वाले, डरपोक और सतही सोच से आगे बढ़ने में अनिच्छुक रॉबिन पक्षी संभवतः सेमिनार से सबसे कम लाभ उठाएंगे।

इस सेमिनार के नियम
सभी विचारों का स्वागत है, बशर्ते वे शोध, कुशल प्रस्तुति और खुले विचारों पर आधारित हों। कक्षा के दौरान खाना खाने में कोई आपत्ति नहीं है। वास्तव में, भोजन (सीमित मात्रा में, अधिक न खाएं) और पेय पदार्थ (गैर-मादक, हमें अपने दिमाग को शांत रखना है) प्रोत्साहित किए जाते हैं - न केवल इसलिए कि वे मूड को बेहतर बनाते हैं और बुद्धि को केंद्रित करने में मदद करते हैं, बल्कि इसलिए भी कि जिनके साथ आप भोजन साझा करते हैं, उनके प्रति शत्रुता रखना मुश्किल होता है। इसलिए, अपने सहपाठियों के साथ भोजन साझा करें, विशेषकर उनके साथ जो आपके विचारों से असहमत हैं।
अन्य छात्रों के प्रति बदमाशी, अत्याचार, घृणास्पद भाषण या दुर्भावनापूर्ण व्यवहार बर्दाश्त नहीं किया जाएगा (और आपके शिक्षक के प्रति भी इसकी अनुमति नहीं दी जाएगी, यह कहने की आवश्यकता नहीं है)। नाराज़गी व्यक्त करना भी स्वीकार्य नहीं होगा। इस सेमिनार में शामिल होने के लिए सहमति देकर, आप अपनी व्यक्तिगत संवेदनशीलता पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्राथमिकता देने के लिए एक मौन समझौते में प्रवेश कर रहे हैं। यदि आप आपत्तिजनक विचारों को सुनना बर्दाश्त नहीं कर सकते, तो हम स्वतंत्र बहस नहीं कर सकते। जब आप आहत महसूस करते हैं, जो कि स्वाभाविक है, तो एक बुद्धिमान व्यक्ति की सलाह याद रखें: 'यदि आप
हर रगड़ से चिढ़कर, तुम्हारा दर्पण कैसे चमकेगा?
यदि आपको लगता है कि आप ईश्वर के बारे में सब कुछ जानते हैं और नए ज्ञान से अपना मन भरने में आपकी कोई रुचि नहीं है, तो कृपया दूर रहें।

और ‘मेरी रोशनी से दूर रहो’।† समय अनमोल है – मेरा भी और आपका भी। यह सेमिनार जिज्ञासुओं के लिए है। वे लोग जो हर दिन एक नौसिखिया बनने को तैयार हैं।
एक ही सुबह’।‡ यदि यह सब बहुत थकाऊ लगता है, तो याद रखें: ‘मनुष्य जो सर्वोच्च गतिविधि प्राप्त कर सकता है वह है सीखना।
समझना, क्योंकि समझना ही स्वतंत्रता है।

विपणन रणनीति

इस्तांबुल, 2016
दो नौकरानियां - कड़क काली वर्दी, साफ सफेद एप्रन पहने और एक जैसे भावों के साथ - चॉकलेट ट्रफल्स से भरी क्रिस्टल प्लेटें लेकर अंदर आईं।
‘सब लोग इन्हें जरूर आजमाएं! ये मेरे लाडले हैं,’ व्यापारी की पत्नी ने कहा।
यह खबर भी अखबारों में छपी थी। एक व्यवसायी ने दिवालिया हो चुकी चॉकलेट फैक्ट्री का अधिग्रहण कर लिया था। अपनी पत्नी को शादी की सालगिरह के तोहफे के तौर पर उसने उत्पादन और विपणन का जिम्मा उसे सौंप दिया था। उसने फैक्ट्री का नाम बदलकर एटेलियर रख दिया और ब्रांड का नाम लेस बॉनबॉन्स डू हरेम रख दिया। तुर्की के ग्राहक इस नाम का पूरा उच्चारण नहीं कर पाते थे, लेकिन इसकी फ्रांसीसी, यूरोपीय और विशिष्ट शैली ही इस उत्पाद को आकर्षक, परिष्कृत और फैशनेबल बनाने के लिए काफी थी।
अब मेजबान ने उत्साह से कहा, 'बस एक चखकर देखिए, मुझे लगता है आप अपनी उंगलियां भी खा जाएंगे।'
मेहमान आगे झुककर जालीदार कागज़ की डोरियों पर करीने से सजाए गए स्वादिष्ट व्यंजनों का निरीक्षण करने लगे।
‘हमने इनका नाम दुनिया के शहरों के नाम पर रखा है। रसभरी वाला देखो, वो एम्स्टर्डम है। मार्जिपन वाला मैड्रिड है। बर्लिन में बीयर और अदरक है। लंदन में पुरानी व्हिस्की है। सामग्री की बात करें तो हम कोई कसर नहीं छोड़ते।’
‘तुम यह बात दोबारा कह सकते हो!’ व्यापारी ने बीच में कहा। ‘उसने अठारह साल पुरानी सिंगल माल्ट व्हिस्की पीने पर जोर दिया! यह मुझे बर्बाद कर देगी।’ मेहमान हंस पड़े।
बीच में हुई रुकावट को नजरअंदाज करते हुए, मेजबान ने कहा, 'मुझे अब व्यवसायी की पत्नी नहीं कहा जाता। अब से मैं अपने दम पर एक व्यवसायी महिला हूं।'
मेहमानों ने जयकारे लगाए।

उस महिला व्यवसायी ने उत्साहपूर्वक आगे कहा, 'वेनिस, चेरी लिकर के साथ। मिलानो, हमने अमारेटो के साथ बनाया है। ज्यूरिख, कॉन्यैक और पैशन फ्रूट के साथ। और पेरिस, शैम्पेन के साथ!'
‘उन्हें अपनी मार्केटिंग रणनीति के बारे में बताएं,’ व्यवसायी ने कहा। ‘हमारे पास दो विकल्प हैं: शराब पीने वालों के लिए और शराब न पीने वालों के लिए,’ उस व्यवसायी महिला ने समझाया। ‘एक ही डिब्बा, अलग-अलग उत्पाद। यूरोप और रूस को हम अल्कोहल युक्त ट्रफल निर्यात करते हैं। मध्य पूर्व को बिना अल्कोहल वाले। बढ़िया है ना?’
पत्रकार ने पूछा, 'क्या हलाल चॉकलेट के भी नाम होते हैं?'
‘ज़रूर, प्रिये।’ व्यवसायी महिला ने अगली क्रिस्टल प्लेट की ओर इशारा किया। ‘मदीना, खजूर के साथ। दुबई, नारियल क्रीम। अम्मान, कारमेल और हेज़लनट्स। वह गुलाबी वाली, गुलाब जल के साथ, इस्फ़हान।’
पेरी ने पूछा, 'इस्तांबुल कैसा रहेगा?'
‘अहा, हम कैसे भूल सकते हैं!’ उस व्यवसायी महिला ने कहा। ‘इस्तांबुल विरोधाभासों पर आधारित होना ही था: वेनिला कस्टर्ड और पिसी हुई काली मिर्च का मेल!’
वे लोग लगातार बातें करते हुए ट्रफल्स का आनंद ले रहे थे, तभी नौकरानियों ने गर्म पेय परोसना शुरू कर दिया। अधिकांश महिलाओं ने कैमोमाइल या काली चाय को चुना, जबकि अधिकांश पुरुषों ने कॉफी - एस्प्रेसो, अमेरिकानो - मंगाई। मेज पर किसी ने भी तुर्की कॉफी नहीं मंगवाई, सिवाय उस अमेरिकी हेज-फंड मैनेजर के, जो 'जब रोम में हों तो रोम जैसा व्यवहार करें...' के सिद्धांत पर अड़ा हुआ था, हालांकि इस मामले में रोमवासी ऐसे व्यवहार कर रहे थे मानो वे रोम में ही न हों।
स्थानीय तरीके से काम करने के लिए उत्सुक अमेरिकी ने पूछा, 'क्या बाद में कोई मेरे कप को पढ़कर बता सकता है?'
‘चिंता मत करो,’ उस व्यवसायी महिला ने अंग्रेजी में जवाब दिया। ‘आपको कॉफी के बचे हुए दाने बचाने की जरूरत नहीं है। ज्योतिषी किसी भी मिनट यहाँ आ जाएगी!’
पत्रकार की प्रेमिका ने कहा, 'मैं उसके आने का बेसब्री से इंतजार कर रही हूं। मुझे उसके साथ कुछ समय बिताना है।'

पेरी ने चारों ओर देखा। ये ईश्वर से डरने वाली, पति से डरने वाली, तलाक से डरने वाली, गरीबी से डरने वाली, आतंकवाद से डरने वाली, भीड़ से डरने वाली, बदनामी से डरने वाली, पागलपन से डरने वाली महिलाएं थीं, जिनके घर बेदाग साफ थे, और भविष्य से उनकी अपेक्षाएं स्पष्ट थीं। जीवन के आरंभ में ही उन्होंने 'पिता को मनाने की कला' को 'पति को मनाने की कला' से बदल दिया था। जो महिलाएं लंबे समय से विवाहित थीं, वे अपने विचारों को लेकर अधिक साहसी और मुखर हो गई थीं, फिर भी वे जानती थीं कि सीमा कब पार नहीं करनी है।
पेरी को उनकी चिंताओं से कोई डर नहीं था; उसे अपने पिता से कभी डर नहीं लगा, अपने पति से कभी डर नहीं लगा, और जहाँ तक ईश्वर की बात है, भले ही उनके संबंध हमेशा अच्छे न रहे हों, उसने उनसे भी न डरने का निश्चय कर लिया था। उसकी बेचैनी का असली कारण कुछ और ही था। वह स्वयं, उसका अपना अंधकार ही, उसे भय से भर देता था।
“अरे, हम उस ज्योतिषी को इतनी खूबसूरत महिलाओं के साथ निजी सत्र नहीं करने देंगे!” व्यापारी ने धीमी आवाज़ में एक भद्दा मज़ाक किया, जिस पर पुरुष मेहमान ठहाकों से हँसे और महिला मेहमानों ने बहरेपन का नाटक किया।
पेरी को याद आया कि शिरीन कितनी आसानी से सबके सामने गालियां दे देती थी, मानो किसी परेशान करने वाली मक्खी को भगा रही हो, वैसे ही हाथ हिलाकर। उसे याद आया कि ऑक्सफोर्ड में रहते हुए उसने भी गालियां दी थीं, हालांकि सिर्फ एक बार, जब वह प्रोफेसर अज़ूर से नाराज़ थी तो उन्हें खरी-खोटी सुनाई थी। किसी प्रियजन से नफरत करना कितना आसान होता है!
इस देश में दो तरह की औरतें थीं: एक वो जो बेझिझक अपशब्दों का इस्तेमाल करती थीं और अश्लीलता के कलंक की परवाह नहीं करती थीं (एक छोटा सा अल्पसंख्यक समूह), और दूसरी वो जो कभी ऐसा नहीं करती थीं (बहुसंख्यक समूह)। रात्रिभोज में मौजूद मध्यम-से-उच्च वर्ग की महिलाएं दूसरे समूह से थीं। वे कभी अपशब्द नहीं बोलती थीं, सिवाय तब जब वे अंग्रेजी, फ्रेंच या जर्मन बोलती थीं। विदेशी भाषा में अपशब्द बोलना उनके लिए किसी तरह से ठीक था। एक ऐसा अपशब्द जिसे वे अपनी मातृभाषा में बोलने का सपना भी नहीं देखती थीं, उसे वे यूरोपीय भाषा में बिना किसी अपराधबोध के बोल देती थीं। किसी दूसरे की भाषा में अपशब्द कहना आसान था - और किसी तरह कम आपत्तिजनक भी - जैसे कोई मुखौटा पहने पार्टी में जाने वाली महिला अपने संकोच को छोड़ देती है।

दूसरी ओर, पुरुषों को अपशब्दों का प्रयोग करने की पूरी स्वतंत्रता थी और वे ऐसा खुलकर करते थे, और यह हमेशा क्रोध में आकर नहीं होता था। अपशब्दों का प्रयोग सामाजिक वर्ग की सीमाओं को पार करता था। यह पुरुष जाति को एकजुट करता था।
‘वैसे, हमारे पास कुछ ट्रफल्स हैं जिनका हमने अभी तक नाम नहीं रखा है,’ उस व्यवसायी महिला ने कहा। ‘एक शेरी और नींबू के छिलके से बना है। आज रात, पेरिसिम, तुमने मुझे एक विचार दिया। चलो इसे ऑक्सफोर्ड नाम देते हैं!’ इतना कहकर वह व्यवसायी महिला खड़ी हो गई और प्लेटों में खोजने लगी। ‘आह, मिल गया!’ अपनी छोटी उंगली को नज़ाकत से मोड़कर उसने चॉकलेट बॉल उठाई और पेरी को देते हुए कहा, ‘इसे चखो।’
सबके सामने पेरी ने उसे मुंह में डाला और स्वाद उसकी जीभ पर घुल गया। शुरुआती मिठास के नीचे एक तीखा खट्टापन उसके तालू पर लगा, एक ही निवाले में लुभावना और भ्रामक दोनों – बिल्कुल प्रोफेसर अज़ूर के सेमिनारों की तरह।

घातक चुंबन

ऑक्सफोर्ड, 2001
ईस्टर की छुट्टियों में पेरी घर नहीं गई। उसे अभी भी इंग्लैंड में शैक्षणिक वर्ष को तीन सत्रों में विभाजित करने के तरीके की आदत डालनी थी। लंबी छुट्टियाँ हमेशा उसे परेशान करती थीं। न केवल इसलिए कि वह बाकी छात्रों की तरह बार-बार घर नहीं जा सकती थी। न केवल इसलिए कि वह न तो बहिर्मुखी थी और न ही खोजी स्वभाव की, इसलिए अपने आसपास की चीजों को जानने में उसकी रुचि नहीं थी। बल्कि इसलिए भी कि इन छुट्टियों के दौरान उसे दूसरों से अपना अंतर अधिक स्पष्ट रूप से महसूस होता था। जब सभी निबंध लिख रहे होते थे, व्याख्यान सुन रहे होते थे, तो वह आसानी से सबके साथ घुलमिल जाती थी; लेकिन जब उससे आराम करने और मौज-मस्ती करने की उम्मीद की जाती थी, तो उसे समझ नहीं आता था कि वह क्या करे।
फिर भी, उसी सप्ताह उसे एक अप्रत्याशित निमंत्रण मिला। मोना, जो सत्र समाप्त होने के बाद भी वहीं रुकी हुई थी और अपनी आदत के अनुसार एक सामाजिक गतिविधि से दूसरी में भाग ले रही थी, उसके दो चचेरे भाई-बहन अमेरिका से मिलने आए थे। वे सब मिलकर वेल्स के ग्रामीण इलाके की यात्रा करने की योजना बना रहे थे, जहाँ उन्होंने एक कॉटेज किराए पर लिया था।
मोना ने कहा, 'तुम हमारे साथ क्यों नहीं आती? तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। खूब ताजी हवा मिलेगी।'
पेरी ने अपने सूटकेस में इतनी किताबें भर लीं, जिनमें प्रोफेसर अज़ूर की दो किताबें भी शामिल थीं, जितनी वह एक हफ्ते में भी नहीं पढ़ सकती थी। फिर भी वह उनके साथ जाने के लिए तैयार हो गई। उसे लगा कि मोना अपने रिश्तेदारों के साथ व्यस्त होगी। उसे एक ही समय में साथ भी और अकेलापन भी मिलेगा। यह ठीक-ठाक लग रहा था।
जब उसने पहली बार वेल्श और अंग्रेजी में लिखे सड़क के संकेत देखे तो वह दंग रह गई। तब तक उसे यह ख्याल भी नहीं आया था कि एक ही देश में एक से अधिक आधिकारिक भाषाएँ हो सकती हैं। तुर्की में उसने कभी भी तुर्की और कुर्द भाषा में कोई सार्वजनिक सूचना नहीं देखी थी। उसकी हैरानी इतनी बढ़ गई कि जब भी उसे ऐसी कोई सूचना दिखती, वह रुककर उसकी तस्वीर खींच लेती थी।

मोना हंसते हुए बोली, 'तुम पागल हो! यहाँ का नज़ारा इतना खूबसूरत है और तुम सड़क के साइनबोर्ड की तस्वीरें खींच रहे हो?'
नज़ारे वाकई मनमोहक थे। रंग-बिरंगे फूलों से भरे खेतों में भेड़ें अपने नवजात मेमनों के साथ चर रही थीं; हरे-भरे मैदानों पर बैंगनी रंग की हीथर, ब्लूबेल्स और कुकू फूल बिखरे हुए थे। उनका हॉलिडे रेंटल एक छोटी सी, लकड़ी के ढांचे वाली, सफ़ेद रंग की कुटिया निकली जो घाटी के पश्चिमी किनारे पर काफी ऊंचाई पर स्थित थी। सुबह के समय यह शानदार धूप से नहा जाती थी; दोपहर में, शांति की गहरी छाया छा जाती थी। दूर, वाय नदी पहाड़ियों के बीच से होकर एक लहराते हुए चांदी के धागे की तरह बह रही थी।
पेरी को वह कुटिया बहुत प्यारी थी: लोहे का चूल्हा, नीची छतें, बाहर रखे लकड़ियों के ढेर, पत्थर के फर्श, यहाँ तक कि चादरों की वह महक भी जो बिस्तर पर लेटते ही बर्फ़ जैसी ठंडी लगती थी। वह मोना के साथ कमरा साझा करती थी, और उसके चचेरे भाई-बहन बगल वाले कमरे में रहते थे। हालाँकि पास का गाँव एक मील दूर था, लेकिन दिन भर में करने के लिए इतना कुछ होता था कि उसे पढ़ने का समय ही नहीं मिलता था। वह, जो हमेशा से शहर में पली-बढ़ी थी, प्रकृति को बड़े चाव से देखती थी, छोटी-छोटी चीजों में छिपे अजूबों को, और उसे लगता था कि बस यही सब मायने रखता है - ये छोटी-छोटी चीजें। हमेशा नकारात्मक विचारों में डूबी रहने वाली पेरी ने कल्पना की कि कोई आपदा आ गई है - परमाणु बम - और वे ही सभ्यता से दूर, अकेले बचे हैं। वह जानती थी कि अगर उसकी माँ अपनी बेटी को यहाँ, चार लड़कियों को, सुनसान जगह पर रहते हुए देखेगी तो वह सदमे में आ जाएगी।
एक रात, अपने बिस्तर से उसने मोना को एक कोने में प्रार्थना करते हुए देखा, उसका चेहरा मक्का की ओर था। उन्होंने धर्म के बारे में बिल्कुल बात नहीं की थी, दोनों ही इस विषय से बचती रही थीं। अगर शिरीन उनके साथ होती, तो वह ज़रूर इस विषय को उठाती।
मोना के लाइट बंद करते ही कमरे में अचानक सन्नाटा छा गया। पेरी करवटें बदलती रही। “बचपन में मेरे होंठ पर मधुमक्खी ने काट लिया था,” उसने धीरे से बुदबुदाते हुए कहा, मानो वह उस याद को झाड़ रही हो। “मेरा मुँह इतना सूज गया था कि पानी के गुब्बारे जैसा लग रहा था। मेरे पिताजी ने कहा कि मधुमक्खी मुझसे बेइंतहा प्यार करती थी... मुझसे। वह मुझे चूमना चाहती थी।

मैं हमेशा सोचती थी, क्या उसे पता था कि डंक मारते ही उसकी मौत हो जाएगी? अजीब है ना, अगर उसे पता भी है और फिर भी वह ऐसा करती है। आत्म-विनाश।” मोना एक तरफ लुढ़क गई। खिड़की से आती चांदनी में उसकी आकृति किसी मूर्ति जैसी लग रही थी। 'चेतना केवल मनुष्यों में होती है। यह ईश्वरीय व्यवस्था है। इसीलिए अल्लाह हम मनुष्यों को हमारे व्यवहार के लिए जिम्मेदार ठहराता है।'
लेकिन देखिए, जानवर मरना नहीं चाहते। उनमें जीने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। फिर भी वे डंक मारते हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि वे अपनी ही जान ले रहे हैं। मेरा मतलब है, आप प्रकृति को देखते हैं और सोचते हैं, वाह, कितनी प्यारी और मीठी है। असल में, यह बेहद क्रूर है।
मोना ने आह भरी। 'याद रखो, तुम दुनिया नहीं चला रहे हो। सब कुछ उसी के हाथ में है, तुम्हारे हाथ में नहीं। भरोसा रखो।'
पेरी भला उस व्यवस्था पर कैसे भरोसा कर सकती थी जिसमें मधुमक्खियों का प्रेम होते ही मर जाना तय था? और अगर यही वह दैवीय व्यवस्था थी जिसके बारे में लोग बढ़-चढ़कर बातें करते थे, तो वे इसे न्यायपूर्ण और पवित्र कैसे कह सकते थे? ठंड लगने पर उसने रजाई को अपनी ठुड्डी तक खींच लिया।
उस रात पेरी नींद में चीख पड़ी और तुर्की भाषा में कुछ शब्द बुदबुदाई जो हजारों मधुमक्खियों की भिनभिनाहट की तरह लग रहे थे जो खुद को आज़ाद करने की कोशिश कर रही हों।
शोर सुनकर चचेरी बहनें जाग उठीं और बगल के कमरे से खिलखिलाकर हंसने लगीं। मोना अपने बिस्तर पर अचंभित होकर बैठ गई। उसने प्रार्थना की कि जो भी बुरी शक्तियां उसकी सहेली को परेशान कर रही थीं, वे हमेशा के लिए दूर हो जाएं। अगली सुबह वे सभी ऑक्सफोर्ड लौट आए। मोना और पेरी जब भी वेल्स की अपनी यात्रा के बारे में बात करतीं, तो उनके चेहरे पर एक खिलखिलाती मुस्कान होती – हालांकि दोनों ने अपने-अपने तरीके से महसूस किया था कि उन खास पलों के पीछे कुछ गहरा अंधकार छिपा हुआ है।

खाली पृष्ठ

इस्तांबुल, ग्रीष्मकाल 2001
ऑक्सफ़ोर्ड में अपना पहला साल पूरा करने के बाद, पेरी ने छुट्टियाँ इस्तांबुल में बिताईं। बीच-बीच में, उसकी माँ कभी-कभार किसी युवक का ज़िक्र करती रहती थी, और हर बार वही विशेषण इस्तेमाल करती थी। सेल्मा के लिए, पेरी की शिक्षा कोई बौद्धिक जागृति या उज्ज्वल भविष्य की शुरुआत नहीं थी, बल्कि उसकी शादी से पहले का एक छोटा सा अंतराल था। पिछले महीने ही वह सात मंदिरों में गई थी: मोमबत्तियाँ जलाकर, रेशम की पट्टियाँ बाँधकर और अपनी बेटी के सुखी वैवाहिक जीवन की कामना करते हुए।
‘आपके जाने के बाद नए पड़ोसी आ गए। अच्छे परिवार हैं,’ सेल्मा ने कहा, और साथ ही वह रात के खाने के लिए तैयार की जा रही फलियों के ढेर को छील रही थी। ‘उनका एक बेटा है। कितना होशियार, सुंदर और नेक लड़का है…’
‘तुम्हारा मतलब है कि तुमने मेरे लिए एक उपयुक्त पति ढूंढ लिया है,’ पेरी ने धीरे से कहा। उसने अपनी उंगली पर बालों का एक गुच्छा घुमाया और अजीब तरह से खींचा। उसने देखा कि वह बाकी बालों से काफी छोटा था और उसे अचानक एक अजीब सा शक हुआ कि उसकी माँ ने सोते समय उसके बालों की एक लट काट ली थी। यह सोचकर कि उसके बाल अब उन मंदिरों में से एक में, सेल्मा की भेंटों के बीच दफन हैं, उसे थोड़ी बेचैनी हुई।
'उस लड़की को अकेला छोड़ दो, औरत,' मेन्सुर ने अपनी कुर्सी से कहा। 'तुम उसे भ्रमित कर रही हो। उसे अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना है। हमें डिप्लोमा चाहिए, पति नहीं।'
‘इस लड़के के पास डिप्लोमा है,’ सेल्मा ने विरोध करते हुए कहा। ‘यह विश्वविद्यालय गया था। वे अभी सगाई कर सकते हैं और उसके स्नातक होने के बाद शादी कर सकते हैं। इसमें उसका क्या नुकसान है?’
पेरी ने कहा, 'सिर्फ मेरी आजादी, मेरी जवानी और मेरा दिमाग।'
'तुम बिल्कुल अपने पिता की तरह बात करते हो,' सेल्मा ने कहा और अपनी फलियों की ओर लौट गई, मानो उसने अपनी बात साबित कर दी हो।
यह विषय वहीं समाप्त हो गया – लेकिन ज्यादा देर तक नहीं।

जिधर भी मुड़ती, उसे लोग ऐसे षड्यंत्र सिद्धांतों की तलाश में लगे हुए मिलते, जैसे मधुमक्खियाँ अमृत की तलाश में भिनभिनाती हैं।
मुझे शिरीन को फोन करना चाहिए, उसने मन ही मन सोचा। अपनी सहेली की आत्मविश्वास भरी आवाज़ सुनने की चाह में उसने एक पेफोन से उसे फोन किया।
सौभाग्य से, उसने तुरंत जवाब दिया।
अरे पेरी! ये दुनिया कितनी अजीब है! उम्मीद है हम कुछ रोचक समय में जी रहे होंगे।
पेरी ने कहा, 'यह तो बहुत ही भयानक है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि इसके बारे में क्या कहूँ।'
शिरिन लगभग चिल्लाते हुए बोली, ‘निर्दोषों का कत्लेआम हुआ। क्यों? क्योंकि कुछ नीच दरिंदों को लगता है कि वे ईश्वर के नाम पर हत्या करके जन्नत में जाएंगे। हालात और बिगड़ेंगे, आप देखेंगे। अब सभी मुसलमानों को बदनाम किया जाएगा। और भी निर्दोषों को हर तरफ से भुगतना पड़ेगा।’
पेरी ने देखा कि टेलीफोन बूथ के नीचे च्युइंग गम का एक टुकड़ा चिपका हुआ था
- यह एक छोटी सी शरारत थी, लेकिन फिर भी शरारत ही थी। 'भयानक! घिनौना। और बहुत डरावना। यह कैसे हो सकता है?'
‘खैर, मुझे यकीन है कि हर कोई इसी बात पर बहस करेगा। महीनों, सालों तक भी। पत्रकार, विशेषज्ञ, शिक्षाविद। लेकिन वास्तव में चर्चा करने जैसा कुछ नहीं है। धर्म असहिष्णुता को बढ़ावा देता है और इससे नफरत पैदा होती है और फिर हिंसा। बात यहीं खत्म होती है।’
‘लेकिन क्या यह अन्याय नहीं है?’ पेरी ने कहा। ‘ऐसे कई धार्मिक लोग हैं जो कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे। यह धर्म की वजह से नहीं हुआ। यह तो सरासर बुराई है।’
‘जानते हो क्या, माउस, मैं तुमसे बहस नहीं करने वाला। इस बार मैं भी तुम्हारी तरह ही उलझन में हूँ। मुझे अज़ूर से बात करनी होगी वरना मैं पागल हो जाऊँगा।’
पेरी को अंदर से एक झटका लगा। 'तुम उससे मिलने जा रही हो? लेकिन अभी तो सत्र शुरू ही नहीं हुआ है।'
‘किसे परवाह है? मैं कल ऑक्सफोर्ड जा रहा हूँ। मुझे पता है वो वहाँ है। अपना टिकट बदल लो, मेरे साथ आ जाओ।’

पेरी ने कहा, 'मैं कोशिश करूंगी।' उसे यह बताने की ज़रूरत नहीं लगी कि अगर उसे आखिरी समय में टिकट मिल भी जाए, तो भी वह उसे खरीद नहीं सकती।
घर पर, पेरी ने पाया कि उसकी मां और पिता भी उसकी तरह ही हैरान थे, और टीवी पर बार-बार वही दृश्य देख रहे थे।
'कट्टरपंथी लोग दुनिया पर नियंत्रण कर रहे हैं,' मेंसुर ने कहा।
उन्होंने सामान्य से जल्दी शराब पीना शुरू कर दिया था, और उनके हाव-भाव से लग रहा था कि वे काफी पी चुके हैं। पहली बार उन्हें अपनी बेटी के ऑक्सफोर्ड जाने पर संदेह हो रहा था। 'शायद हमें तुम्हें विदेश नहीं भेजना चाहिए था; अब कहीं भी सुरक्षित नहीं है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं ऐसा कहूंगा, लेकिन शायद अब पश्चिम, पूर्व से ज्यादा खतरनाक हो गया है।'
‘पूरब हो या पश्चिम, इससे क्या फर्क पड़ता है? कोई भी अपनी किस्मत से नहीं बच सकता…’ सेल्मा ने कहा। ‘अगर अल्लाह ने इसे अपनी अदृश्य स्याही से तुम्हारे माथे पर लिख दिया है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम यहाँ हो या चीन में। मौत आएगी और तुम्हें ढूंढ लेगी।’
इस पर मेन्सुर ने क्रॉसवर्ड पहेलियों के लिए इस्तेमाल होने वाला बॉलपॉइंट पेन उठाया और अपने माथे पर टेढ़ी-मेढ़ी रेखा में 100 लिख दिया।
‘तुम क्या कर रहे हो?’ सेल्मा ने पूछा।
मैं अपनी किस्मत बदल रहा हूँ! मैं 100 साल जीने जा रहा हूँ।
पेरी अपनी माँ की प्रतिक्रिया सुनने के लिए वहाँ नहीं रुकी। उसे अपने माता-पिता के झगड़ों से कोई सब्र नहीं था। तीव्र अकेलेपन से घिरी, वह अपने कमरे में गई और अपनी 'ईश्वर-डायरी' निकाली। उसने कुछ सार्थक लिखने की बहुत कोशिश की, पर वह लिख नहीं सकी। आज नहीं। उसके मन में धर्म, आस्था और ईश्वर के बारे में अनगिनत सवाल थे - उस ईश्वर के बारे में जो अत्याचारों को होने देता है और फिर भी आज्ञाकारिता की अपेक्षा करता है। वह पन्ने को घूरती रही, उसकी खालीपन में खोई हुई। वह सोच रही थी कि जब अज़ूर और शिरिन उसके दफ्तर में मिलेंगे तो अज़ूर क्या कहेगा। काश वह भी सिस्किन की तरह चुपके से उस कमरे में घुसकर बातें सुन पाती। उसे भी प्रोफेसर से कुछ सवाल पूछने थे। शायद शिरिन का ज़ोर देना सही था; पेरी को ईश्वर पर एक सेमिनार की ज़रूरत थी
- किसी सर्वोच्च सत्ता के बारे में नए सत्य खोजने के लिए नहीं, बल्कि अपने भीतर पनप रही अनिश्चितताओं को समझने के लिए।

फिर उसने कुछ ऐसा किया जो वह कभी किसी को नहीं बताएगी: उसने ट्विन टावर्स में मारे गए सभी लोगों के लिए प्रार्थना की। उसने उनके परिवारों और प्रियजनों के लिए प्रार्थना की। और अपनी प्रार्थना समाप्त करने से पहले, उसने ईश्वर से एक छोटी सी विनती की कि उसे अज़ूर के सेमिनार में प्रवेश दिया जाए, ताकि वह उनके बारे में और अधिक जान सके और संभवतः अपने मन के भीतर और बाहर फैली उथल-पुथल को कुछ हद तक समझ सके।

वृत्त

ऑक्सफोर्ड, 2001
नए सत्र के पहले सप्ताह में, एक दोपहर, आसमान किसी गाँव के तालाब की तरह शांत था, पेरी 'ईश्वर के मन में प्रवेश/मन के ईश्वर' के पहले सत्र के लिए तैयार हो रही थी। कुछ ही दिन पहले उसे पोर्टर लॉज में अपने कबूतरखाने में प्रोफेसर अज़ूर का एक लिफाफा मिला था। अंदर का नोट कार्ड पर तिरछी रेखाओं में लिखा था, जो स्पष्ट रूप से जल्दबाजी में लिखा गया था:
प्रिय सुश्री नलबंतोग्लू,
यदि आप अब भी मेरे सेमिनार में रुचि रखते हैं, तो यह अगले गुरुवार को ठीक दोपहर 2 बजे शुरू होगा! यदि आवश्यकता हो तो एम्बर (एक प्रकार का कागज) साथ लाएँ – लेकिन माफी मांगने की आवश्यकता नहीं है।
ऑक्टोपस इंतजार कर रहा है।
ए. जेड. अज़ूर
जब से उसे वह सूचना मिली थी, ट्यूटोरियल और किताबों की दुकान पर अपनी अंशकालिक नौकरी के बीच, उसे इस बात पर विचार करने का कोई मौका नहीं मिला था कि आगे उसे किन चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। अब, जब वह नोटबुक को सीने से लगाए सेमिनार कक्ष की ओर बढ़ रही थी, तो उसे अपनी घबराहट पर आश्चर्य हुआ।

कमरे में प्रवेश करते ही पेरी ने मन ही मन दस छात्रों की गिनती की: पाँच लड़के, पाँच लड़कियाँ। उनमें मोना को देखकर वह आश्चर्यचकित रह गई, जिसने उतनी ही हैरानी से उसका अभिवादन किया।
पेरी ने बाकी छात्रों पर नज़र डाली, उनकी अटपटी मुस्कानों और एक-दूसरे से उचित दूरी पर बैठने के तरीके को गौर से देखा, और यह देखकर राहत महसूस की कि घबराहट में दिखने वाली वह अकेली नहीं थी। कुछ छात्र अपने विचारों में डूबे

हुए थे, जबकि अन्य दबी आवाज़ में बातें कर रहे थे या सेमिनार का विवरण पढ़ रहे थे - शायद कई बार पढ़ चुके थे; और एक लड़का, जिसका सिर राइटिंग पैड पर टिका था, सोता हुआ प्रतीत हो रहा था।
पेरी खिड़की के पास एक कुर्सी पर बैठ गई और बाहर फैले हुए ओक के पेड़ को निहारने लगी, जिसके मुरझाते पत्ते माणिक और सुनहरे रंग में चमक रहे थे। वह सोच रही थी कि क्या महिलाओं के शौचालय जाने का समय है, लेकिन सेमिनार शुरू होने के बाद वापस लौटने के डर ने उसे अपनी जगह पर ही बैठाए रखा। बाहर आसमान में बादल छा गए थे, और दोपहर का समय होने के बावजूद, ऐसा लग रहा था जैसे शाम ढल रही हो।
ठीक समय पर दरवाजा खुला और प्रोफेसर अज़ूर अंदर आए। उनके हाथ में फाइलों का ढेर, क्रेयॉन का एक बड़ा डिब्बा और एक रेत घड़ी जैसी दिखने वाली चीज़ थी। उन्होंने चमड़े के कोहनी पैच वाली नेवी ब्लू कॉरडरॉय जैकेट पहनी हुई थी। उनकी सफेद कमीज़ तो बिल्कुल इस्त्री की हुई थी, लेकिन टाई खुली हुई थी, मानो उन्हें बांधने की जहमत ही न उठी हो, और उनके बाल बिखरे हुए थे। या तो वे तेज़ हवा में चल रहे थे या बार-बार अपने बालों में उंगलियां फेर रहे थे। बिजली की तेज़ी से, उसने सब कुछ मेज पर गिरा दिया और रेत घड़ी को एक लेक्चर स्टैंड पर रख दिया, तुरंत उसे पलट दिया - रेत के कण ऊपरी बल्ब से निचले बल्ब में टपकने लगे, मानो छोटे-छोटे तीर्थयात्री किसी पवित्र यात्रा पर हों। वह लंबे और पतले कद के साथ व्हाइट बोर्ड के सामने खड़ा हुआ और कक्षा की सुस्ती को दूर करते हुए फुर्ती से बोला:
सभी को नमस्कार! शालोम अलेइकुम! सलामून अलैकुम! आप सभी पर शांति हो! नमस्ते! जय जिनेंद्र! सत नाम! सत श्री अकाल! यदि आप सोच रहे थे तो बता दूं कि मैं ये सभी अभिवादन किसी विशेष क्रम या वरीयता के अनुसार नहीं कह रहा हूँ।
किसी ने जवाब दिया, 'अलोहा।'
अन्य लोगों ने भी तरह-तरह की शुभकामनाओं के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, जिससे आवाजों और हंसी का एक मिला-जुला माहौल बन गया।
‘वाह!’ अज़ूर ने अपने हाथों को आपस में रगड़ते हुए कहा। ‘मैं देख रहा हूँ कि तुममें बेशर्मी भरी आत्मविश्वास की भावना भरी हुई है। यह हमेशा एक अच्छा संकेत होता है – या फिर तबाही का नुस्खा। देखते हैं कौन सा साबित होता है।’

अपने काले और कछुए के खोल जैसे चश्मे के पीछे, उनकी आँखें चमकीले समुद्री कांच के मोतियों की तरह चमक रही थीं। उनका स्वर उत्साह की लहरों में लहरा रहा था, मानो कोई खोजकर्ता दूर देशों से लौटकर अपने दोस्तों के साथ अपने कारनामों को साझा कर रहा हो। उन्होंने संगोष्ठी में भाग लेने की जिज्ञासा और साहस दिखाने के लिए सभी को बधाई दी और आँख मारते हुए कहा कि उन्हें उम्मीद है कि उनमें अंत तक बने रहने का धैर्य भी होगा। जिस सहजता और गति से वे बोल रहे थे, उससे यह समझना मुश्किल था, लगभग नामुमकिन, कि वे कब मज़ाक कर रहे थे और कब गंभीर थे।
‘जैसा कि आपने शायद पहले ही देख लिया होगा, आप ग्यारह लोग हैं – दस लोग बहुत ही सही होते, और पूर्णता उबाऊ होती है,’ अज़ूर ने कहा। उसने चारों ओर देखा और जीभ चटकाई। ‘मुझे लगता है कि हमें काम करना है… आपने अपनी कुर्सियाँ ऐसे फैला रखी हैं जैसे आपको निमोनिया होने का डर हो। तो अगर मैं आपसे थोड़ी विनती करूँ, तो देवियों और सज्जनों, क्या आप कृपया खड़े हो सकते हैं?’ आश्चर्यचकित और आनंदित होकर, छात्रों ने वही किया जो उन्हें बताया गया था। ‘कितने आज्ञाकारी! कहते हैं, प्रभु की दृष्टि में यही सर्वोच्च सद्गुण है। अब क्या आप अपनी कुर्सियों को इस तरह व्यवस्थित कर सकते हैं कि एक वृत्त बन जाए – क्योंकि ईश्वर के बारे में बात करने के लिए यही सबसे उपयुक्त आकृति है।’
अज़ूर ने समझाया कि अलग-अलग विषयों के लिए बैठने की अलग-अलग व्यवस्थाएँ ज़रूरी होती हैं। राजनीति के लिए, बिखरी हुई और अनियमित व्यवस्था; समाजशास्त्र के लिए, एक सुव्यवस्थित त्रिभुज; सांख्यिकी के लिए, एक आयत; और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए, एक समांतर चतुर्भुज। लेकिन ईश्वर पर चर्चा एक वृत्त में ही होनी चाहिए, जहाँ परिधि पर केंद्र से समान दूरी पर बैठे सभी लोग एक-दूसरे की आँखों में देखते हुए चर्चा करें।
'अब से, जब भी मैं हर हफ्ते अंदर आऊंगा, तो मुझे उम्मीद होगी कि तुम मुझे एक घेरे में बैठे मिलोगे।'
इस काम को पूरा करने में उन्हें कुछ मिनट लगे, और थोड़ी-बहुत कुर्सी खिसकाने और इधर-उधर करने की मशक्कत करनी पड़ी। जब उन्होंने काम खत्म किया, तो उनके द्वारा बनाई गई आकृति एक सही वृत्त की बजाय निचोड़े हुए नींबू जैसी लग रही थी। प्रोफेसर अज़ूर पूरी तरह से संतुष्ट तो नहीं थे, लेकिन उन्होंने उनके प्रयासों के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। इसके बाद, उन्होंने

उनसे कुछ वाक्यों में अपना परिचय देने को कहा, जिसमें वे अपनी पृष्ठभूमि का उल्लेख करें और विशेष रूप से यह बताएं कि वे ईश्वर में रुचि क्यों रखते हैं, 'जबकि निश्चित रूप से युवाओं के लिए इससे कहीं अधिक मनोरंजक चीजें मौजूद हैं'।
सबसे पहले मोना ने बोलना शुरू किया। उन्होंने कहा कि 9/11 की त्रासदी के बाद, पश्चिम में इस्लाम के प्रति लोगों की सोच को लेकर वे बेहद चिंतित थीं। सोच-समझकर बोलते हुए उन्होंने कहा कि उन्हें एक युवा मुस्लिम महिला होने पर गर्व है, वे अपने धर्म से दिल से प्यार करती हैं, लेकिन लगभग हर दिन जिस तरह के भेदभाव का सामना उन्हें करना पड़ता है, उससे वे बेहद निराश हैं। उन्होंने कहा, 'जो लोग इस्लाम के बारे में कुछ नहीं जानते, वे मेरे धर्म, मेरे पैगंबर, मेरी आस्था के बारे में बेबुनियाद बातें बना देते हैं।' उन्होंने तुरंत आगे कहा, 'और मेरे हिजाब के बारे में भी।' उन्होंने कहा कि वे यहां सर्वशक्तिमान ईश्वर के स्वरूप के बारे में खुलकर चर्चा करने आई हैं, क्योंकि हम सभी को उन्होंने ही बनाया है और अलग-अलग बनाने का एक खास कारण है। उन्होंने कहा, 'मैं विविधता का सम्मान करती हूं, लेकिन बदले में सम्मान की उम्मीद भी रखती हूं।'
मोना के बगल में बैठे युवक की जब बोलने की बारी आई, तो उसने अपनी पीठ सीधी की और गला साफ किया। उसका नाम एड था। वैज्ञानिक पृष्ठभूमि से आने वाले एड ने कहा कि वह ईश्वर के प्रति 'वस्तुनिष्ठ सावधानी और बौद्धिक तटस्थता' का भाव रखता है। उसका मानना था कि विज्ञान और आस्था का मेल संभव है, लेकिन इसके लिए धर्म के अतार्किक पहलुओं को अलग करना होगा, जो कि बहुत सारे हैं। उसने आगे कहा, 'मेरे पिता यहूदी हैं, मेरी माँ प्रोटेस्टेंट हैं, दोनों धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन नहीं करते। मुझे लगता है, मोना की तरह, लेकिन एक अलग तरीके से, मुझे आधुनिक युग में पहचान और आस्था में रुचि है - हालाँकि सच कहूँ तो, ईश्वर मेरे लिए कभी कोई मुद्दा नहीं रहा।'
‘तो फिर तुम यहाँ क्यों हो?’ एक हट्टे-कट्टे, हल्के चेचक के निशान वाले, सुनहरे बालों वाले लड़के ने अपनी उंगलियों के बीच पेंसिल घुमाते हुए पूछा। ‘मुझे लगा कि इस कक्षा में सभी को भगवान से कोई न कोई समस्या है!’ पेरी ने देखा कि एड ने प्रोफेसर अज़ूर की ओर देखा, जिन्होंने उसे लगभग न के बराबर सिर हिलाकर इशारा किया। उनके बीच कुछ ऐसा आदान-प्रदान हुआ - एक ऐसा संदेश जिसे वह समझ नहीं पाई।

होलोकॉस्ट और ट्विन टावर्स के विध्वंस में देखा गया। विभिन्न धर्मों के बीच एक सच्चा संवाद स्थापित करना अत्यंत आवश्यक था। ईश्वर का भय ही मानव जाति की हिंसक प्रवृत्ति को रोकने का सबसे शक्तिशाली उपाय है। आधुनिक युग में, ईश्वर की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है।
अवी और भी कुछ कहना चाहता था, लेकिन उसके बगल में बैठी काले बालों वाली लड़की ने बीच में ही फुर्ती और बेचैनी से बोलना शुरू कर दिया। उसका नाम सुजाता था। उसने पूर्वी दर्शन और उसके पश्चिमी समकक्ष के बीच अंतर के बारे में बात की – 'या यूं कहूं कि मध्य पूर्वी, क्योंकि इब्राहीमी धर्म सभी एक ही क्षेत्र से आते हैं। उनकी समानता को समझने के लिए किसी बाहरी व्यक्ति की आवश्यकता होती है।'
सुजाता ने कहा कि भारतीय मूल की एक ब्रिटिश नागरिक होने के नाते, उनके जीवन का मूलमंत्र था: 'आप अपने बारे में जो सोचते हैं, वही आपकी वास्तविकता बनाते हैं।' उनकी नज़र में ईश्वर के कोई गुण नहीं थे। उनका इरादा किसी को ठेस पहुँचाने का नहीं था, लेकिन उन्हें अब्राहमिक ईश्वर बहुत कठोर, निर्णय लेने वाला और उदासीन लगता था। उन्होंने कहा, 'मैं कहती हूँ: सब कुछ ईश्वर है। जबकि आप कहते हैं: सब कुछ ईश्वर का है। उस छोटे से संबोधन से बहुत बड़ा अंतर आ जाता है।'
एक ही समय में आज्ञाकारी और विद्रोही, सुजाता ने यह कहकर अपनी बात समाप्त की कि वह इन दार्शनिक मतभेदों पर विस्तार से चर्चा करने के लिए कितनी उत्सुक हैं।
जैसे-जैसे हर बोलने वाले के साथ पेरी अपनी कुर्सी पर और नीचे खिसकती गई, मानो वह सिकुड़ती जा रही हो। उसकी इच्छा थी कि वह पूरी तरह गायब हो जाए। उसे धीरे-धीरे यह शक होने लगा कि प्रोफ़ेसर अज़ूर ने छात्रों को जानबूझकर चुना है, उनकी अकादमिक योग्यताओं के आधार पर नहीं, बल्कि उनकी व्यक्तिगत कहानियों और महत्वाकांक्षाओं के आधार पर। कोई भी दो छात्र एक ही पृष्ठभूमि से नहीं थे और उनके बीच स्पष्ट मतभेद थे जो आसानी से टकराव में बदल सकते थे। शायद अज़ूर यही चाहता था: एक संघर्ष – या कई संघर्ष। शायद वह अपने छात्रों पर उनकी जानकारी के बिना प्रयोग कर रहा था, मानो वे चूहों के झुंड हों, जो उसकी मानसिक प्रयोगशाला की दीवारों के भीतर इधर-उधर भाग रहे हों और आपस में लड़ रहे हों। अगर ऐसा है, तो वह आखिर क्या परीक्षण कर रहा होगा – ईश्वर का कोई नया विचार?

एक और बात थी जो पेरी को परेशान कर रही थी। अगर उसके आस-पास के हर व्यक्ति को एक छोटा बाबेल बनाने के लिए चुना गया था, तो उसे ही क्यों चुना गया था? अज़ूर उसके बारे में क्या जान सकता था जब उसने उसे इतना कम बताया था? जितना ज़्यादा वह सोचती, उतना ही ज़्यादा वह असुरक्षित महसूस करती। डॉ. रेमंड के शब्द उसके कानों में गूंज रहे थे: उनकी शिक्षण विधि अपरंपरागत है। यह हर किसी को पसंद नहीं आती। यह एक ऐसा सेमिनार है जो छात्रों को विभाजित कर देता है। कुछ इसका आनंद लेते हैं; अन्य बहुत दुखी हो जाते हैं।
‘हाय, मैं किम्बर हूं,’ एक लड़की ने कहा जिसके बाल इतने घुंघराले थे कि जब भी वह अपना सिर हिलाती, कुछ लटें ऊपर-नीचे उछलती थीं। ‘मेरे पास एक लंबा जवाब है और एक छोटा जवाब।’
प्रोफेसर अज़ूर ने कहा, 'लंबे वाले से शुरू करो।'
किम्बर ने बताया कि उनके पिता जीसस क्राइस्ट ऑफ लैटर-डे सेंट्स चर्च में पादरी थे। वे मॉर्मन थे। उनके सभी परिवार और दोस्त मॉर्मन थे। उन्होंने कहा कि उन्हें इस सेमिनार में इसलिए दिलचस्पी है क्योंकि ईश्वर ने उनके जीवन को अर्थ दिया है और वे ईश्वर के बारे में अपनी समझ को और बढ़ाना चाहती हैं। उन्होंने आगे कहा कि आजकल के युवा सिर्फ डेटिंग करने, परीक्षा की तैयारी करने या ऐसी नौकरी ढूंढने में लगे रहते हैं जिसमें इतना पैसा हो कि किसी को भी उसकी जरूरत न पड़े। लेकिन उनका मानना था कि जीवन में इससे कहीं अधिक कुछ होना चाहिए। 'हममें से प्रत्येक का पृथ्वी पर एक विशिष्ट उद्देश्य है। मैं अभी भी अपने उद्देश्य की तलाश में हूँ।'
‘और इसका संक्षिप्त उत्तर क्या है?’ अज़ूर ने पूछा।
किम्बर खिलखिलाकर हंस पड़ी। 'मैंने अपनी दोस्त से शर्त लगाई थी। उसने कहा था कि निबंधों की जाँच करने के मामले में तुम सबसे सख्त ट्यूटर हो। मैं एक होशियार छात्रा हूँ। बचपन से लेकर अब तक किसी भी विषय में फेल नहीं हुई। इसलिए मैंने यह चुनौती स्वीकार कर ली।'
अज़ूर के होठों पर एक शांत मुस्कान फैल गई। “सत्य एक दुर्लभ वस्तु है; इसे बताना कितना आनंददायक है।”
पेरी, जिसका आधा मुंह हाथ से ढका हुआ था, खुद से बुदबुदाने लगी, 'एमिली डिकिंसन।'
‘चलिए आगे बढ़ते हैं। अगला!’ प्रोफेसर ने निर्देश दिया।

एडम। गोल नाक, ठुड्डी में गड्ढा और ऊँची भौहें, जो उसे ऐसा दिखाती थीं मानो दुनिया उसके लिए हमेशा एक आश्चर्य हो। उसने कहा कि सांस्कृतिक रूप से वह एंग्लिकन था, लेकिन चर्च नहीं जाता था। उसने आगे कहा कि चर्च जाना ज़रूरी नहीं था, क्योंकि उसका मानना था कि ईश्वर प्रेम का स्रोत है और ईश्वर उसे वैसे ही प्यार करता है जैसे वह है। 'मैं "जीओ, प्यार करो, सीखो" के सार्वभौमिक सिद्धांत में विश्वास करता हूँ। सब कुछ बड़े अक्षरों में। बस इतना ही।'
उसके बगल में बैठी लड़की ने पूछा, 'क्या अब मेरी बारी है?' 'मेरा नाम एलिजाबेथ है। मेरा जन्म और पालन-पोषण ऑक्सफोर्डशायर में हुआ है, मैं घर से ज्यादा दूर नहीं गई हूँ। मेरा परिवार एक गौरवशाली क्वेकर परंपरा से आता है। मुझे ईश्वर से कोई समस्या नहीं है, लेकिन मुझे एक पुरुष-ईश्वर से परेशानी है।'
एलिज़ाबेथ ने समझाया कि मनुष्य प्रकृति और धरती को देवी के रूप में देखने का अपना संबंध खो चुका है। इतिहास भर में नारीत्व का दमन किया गया है। इसकी कीमत युद्धों, रक्तपात और हिंसा के रूप में चुकाई गई। उन्होंने कहा कि उन्हें प्राचीन धर्मों, जैसे शमनवाद, विक्का और तिब्बती बौद्ध धर्म में रुचि है। 'कोई भी ऐसी चीज़ जो हमें धरती माता से पुनः जुड़ने में मदद करे।' उन्होंने सभी से आग्रह किया कि वे ईश्वर को पुरुष के रूप में देखना बंद करें और स्त्री के रूप में देखना शुरू करें।
अब केवल पेरी और उसके बगल में बैठा लड़का ही बचे थे जिन्होंने अभी तक बात नहीं की थी। पेरी ने हाथ से इशारा किया कि वह पहले बोले और उसने भी पेरी को बोलने का इशारा किया। पेरी मान गई।
‘ठीक है, मेरा नाम पेरी है…’
‘और वह उद्धरण एमिली डिकिंसन का था, बहुत बढ़िया,’ अज़ूर ने बीच में ही टोकते हुए कहा।
पेरी जानती थी कि उसका चेहरा लाल हो रहा है। उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि प्रोफ़ेसर ने उसकी बात सुन ली है। 'मैं इस्तांबुल से आई हूँ और...' वह अपनी बात भूल गई और हकलाने लगी, उसे इस बात का अफ़सोस था कि उसने अपने जन्म शहर का ज़िक्र क्यों किया, जबकि बाकी लोगों ने कुछ और ठोस बात कही थी। 'उह... मैं... मैं... मुझे पक्का नहीं पता कि मैं यहाँ क्यों हूँ।'

‘तो फिर छोड़ दो,’ केविन ने शरारती लहजे में कहा। ‘इससे हम फिर से दस हो जाएंगे। मुझे एकदम सही संख्या चाहिए!’
समूह में हंसी की लहर दौड़ गई। पेरी ने अपनी निगाहें नीचे कर लीं। वह एक साधारण से परिचय में कैसे अटक गई, जबकि बाकी सभी ने, अपने स्पष्ट मतभेदों के बावजूद, अपना परिचय सहजता से दे दिया था?
अंत में बोलने वाला ब्रूनो नाम का एक लड़का था। उसने कहा कि वह मार्क्सवादी या ऐसा कुछ नहीं है, लेकिन धर्म को जनता के लिए जहर मानने के मुद्दे पर वह मार्क्स से सहमत है - और अल्बानिया के पूर्व नेता एनवर होक्सा से भी, जिनके विचार उसने एक बार पढ़े थे और धर्म के विषय पर उनकी स्पष्टता को उल्लेखनीय पाया था।
‘ठीक है, नौजवान,’ अज़ूर ने कहा, ‘लेकिन जब हम दूसरों को उद्धृत करते हैं, विशेषकर दार्शनिकों और कवियों को जिनके लिए शब्द महत्वपूर्ण हैं, तो हमें सटीकता के साथ ऐसा करना चाहिए। मार्क्स ने वास्तव में कहा था: “धर्म शोषित प्राणी की आह है, एक निर्दयी दुनिया का हृदय है, और आत्माहीन परिस्थितियों की आत्मा है। यह जनता के लिए अफीम है।”’
‘ठीक है। वही बात है,’ ब्रूनो ने जवाब दिया, जिस विषय पर उसे बेहद दिलचस्पी थी, उस पर बीच में टोकने से उसकी झुंझलाहट साफ झलक रही थी। मानो किसी प्रहार के लिए तैयार होते हुए उसने ठुड्डी आगे निकाली और कहा कि मोना ने खुलकर चर्चा करने को कहा था और वह भी बेबाकी से खुलकर अपनी बात रखेगा। उसे पता था कि कुछ लोगों को उसकी बातें सुनना पसंद नहीं आएगा, लेकिन उसका मानना था कि यह एक ऐसा सेमिनार है जहाँ खुलकर बहस करने को महत्व दिया जाता है। उसे इस्लाम से आपत्ति थी। उसने आगे कहा कि सच कहूँ तो, उसे सभी एकेश्वरवादी धर्मों से आपत्ति होती, लेकिन ईसाई धर्म और यहूदी धर्म में सुधार हुए हैं, जबकि इस्लाम में नहीं।
ब्रूनो का तर्क था कि इस्लाम में महिलाओं के प्रति व्यवहार अस्वीकार्य है और यदि वह इस धर्म में एक महिला के रूप में पैदा हुए होते, तो वे इसे पल भर में त्याग देते। उन्होंने कहा कि आज की दुनिया के अनुकूल होने के लिए इस्लाम में पूर्णतः परिवर्तन करना होगा, लेकिन मौजूदा परिस्थितियों में यह असंभव था, क्योंकि पवित्र ग्रंथ और हदीस दोनों को पूर्ण और निर्विवाद माना जाता था।
‘यदि परिवर्तन निषिद्ध है, तो हम इस धर्म में सुधार कैसे कर सकते हैं?’

अपने कोने से मोना ने उसे तीखी निगाहों से देखा और खरी-खोटी सुनाई। 'कौन कहता है कि मुझे अपने धर्म को सुधारने के लिए तुम्हारी ज़रूरत है?' ‘शानदार, सब लोग! बेहतरीन शुरुआत!’ अज़ूर ने बीच में कहा। ‘अपने विचारों को इतने प्रभावशाली ढंग से साझा करने के लिए धन्यवाद। आप लोगों को धर्म के बारे में बहस करते हुए सुनने के बाद, जबकि हमारा मुख्य विषय ईश्वर है, मुझे स्पष्ट शब्दों में यह समझाना होगा कि यह सेमिनार किस बारे में होगा।’ छात्रों के घेरे के भीतर चक्कर लगाते हुए, प्रोफेसर आत्मविश्वास से आगे बढ़े और जोश से बोले। ‘हम यहाँ इस्लाम, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म या हिंदू धर्म पर चर्चा करने के लिए नहीं हैं। हम इन परंपराओं पर थोड़ी-बहुत बात कर सकते हैं, लेकिन केवल तभी जब हमारे मुख्य विषय की आवश्यकता हो। हमारा विषय ईश्वर के स्वरूप का वैज्ञानिक अध्ययन है। आप अपनी व्यक्तिगत मान्यताओं को इसमें बाधा नहीं बनने दे सकते। जब आप किसी विषय पर, किसी भी विषय पर, भावुक हो जाते हैं, तो बस याद रखें, जैसा कि रसेल ने कहा था, “किसी व्यक्ति की भावनाओं की तीव्रता उसके तथ्यों के ज्ञान के विपरीत अनुपात में बदलती है।”’
सूरज के एक बड़े बादल के पीछे छिपने से कमरे की रोशनी फीकी पड़ गई। अज़ूर की आँखों में चमक आ गई। 'क्या हम सब इस बारे में स्पष्ट हैं?'
‘हां,’ छात्रों ने उत्साहपूर्वक एक साथ उत्तर दिया।
फिर, कुछ सेकंड बाद, धीमी आवाज़ में: 'नहीं।' यह पेरी थी।
अज़ूर रुक गया। 'तुमने क्या कहा?'
‘माफ़ कीजिए… मुझे नहीं लगता कि भावनाओं पर प्रतिक्रिया देने में कुछ गलत है।’ पेरी ने दोनों हाथों से इशारा करते हुए कहा। ‘हम इंसान हैं। इसका मतलब है कि हम तर्क से ज़्यादा भावनाओं से प्रेरित होते हैं। तो फिर भावनाओं को कम क्यों आंकना?’ उसने प्रोफेसर की ओर देखा, उसे डर था कि उनके चेहरे पर क्या भाव होंगे।
वह शांत, सहयोगी और यहां तक कि उसकी आपत्ति से थोड़ा प्रभावित भी था। 'बहुत बढ़िया, इस्तांबुल की लड़की, चुनौती देती रहो।'
अज़ूर ने कहा कि अगर ऑक्सफ़ोर्ड में अपने वर्षों के अंत तक भी वे उसी तरह बोलते, सोचते और लिखते रहे जैसे उन्होंने विश्वविद्यालय में प्रवेश करते समय किया था, तो उन्होंने अपना समय और अपने परिवार का पैसा बर्बाद कर दिया

होगा। बेहतर होगा कि वे अभी घर लौट जाएं। 'बदलने के लिए तैयार रहें, आप सभी। केवल पत्थर के ढेले ही नहीं बदलते - वास्तव में, वे भी बदलते हैं।'
अज़ूर ने कहा, वे यहाँ अंग्रेजी भाषी दुनिया के सबसे पुराने विश्वविद्यालय में थे। ऑक्सफोर्ड सदियों से न केवल अकादमिक अध्ययन और वैज्ञानिक अनुसंधान का केंद्र रहा है, बल्कि धार्मिक बहस और विवाद का भी केंद्र रहा है।
‘आप भाग्यशाली हैं! आप भगवान के बारे में बात करने के लिए बिल्कुल सही जगह पर हैं!’
जैसे-जैसे प्रोफ़ेसर अज़ूर व्याख्यान देते रहे, उनका पूरा व्यवहार बदल गया। उनका चेहरा, जो अब तक शांत था, अब स्पष्ट रूप से जीवंत हो उठा। उनकी आवाज़, जो अब संयमित और सधी हुई नहीं थी, उसमें एक तीखापन था, एक लोहे की धार जैसा जिसे वे आम तौर पर छिपाकर रखते थे, लेकिन अब उसे छुपाने की कोई कोशिश नहीं कर रहे थे। पेरी को उनकी याद इस्तांबुल की किसी गली की बिल्ली की आ गई, न कि उस डरपोक और सहमी हुई बिल्ली की जो इंसानों से दूर रहती है, बल्कि उन आज़ाद बिल्लियों की जो ऊँची से ऊँची दीवारों पर शान से चलती है, पूरे मोहल्ले का जायज़ा लेती है मानो वह उसका गुप्त राज्य हो।
ठीक है, अब एक सवाल है। अगर कांस्य युग का कोई व्यक्ति प्रकट होकर आपसे ईश्वर का वर्णन करने को कहे, तो आप क्या कहेंगे?
मोना ने कहा, 'वह दयालु है।'
‘आत्मनिर्भर,’ एवी ने आगे कहा।
'वह नहीं, बल्कि वह,' एलिजाबेथ ने कहा।
‘न वो, न वो,’ केविन ने कहा। ‘यह सब झूठ है।’
प्रोफेसर अज़ूर ने भौंहें चढ़ाईं। 'शाबाश, तुम परीक्षा में बुरी तरह फेल हो गए।'
‘ऐसा क्यों?’ ब्रूनो ने आपत्ति जताई।
‘क्योंकि तुम दोनों की भाषा एक जैसी नहीं है, याद रखो, तुम और तुम्हारे बालदार पूर्वज।’ उसने कागजों का एक गट्ठा और क्रेयॉन का एक डिब्बा निकाला और रोइसिन से उसे बाँटने को कहा। ‘शब्दों को भूल जाओ। चित्रों के माध्यम से समझाओ!’
‘क्या?’ ब्रूनो ने हैरानी से कहा। ‘आप हमसे चित्र बनवाना चाहते हैं? क्या हम छोटे बच्चे हैं?’

‘काश तुम होते,’ अज़ूर ने कहा। ‘तुम्हारी कल्पनाशीलता कहीं अधिक होती और तुम जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझ पाते।’
मोना ने हाथ उठाया। 'सर, इस्लाम में मूर्तियों की पूजा मना है। हम ईश्वर का चित्रण नहीं करते। हमारा मानना है कि वह हमारी समझ से परे हैं।'
'ठीक है। तुमने अभी जो बताया, उसे बनाओ।'
अगले दस मिनट तक वे करवटें बदलते रहे, आहें भरते रहे और शिकायतें करते रहे, लेकिन धीरे-धीरे उन्होंने तरह-तरह की रचनाएँ करना शुरू कर दिया। ब्रह्मांड का एक चित्र – तारे, आकाशगंगाएँ और उल्कापिंड। बिजली की एक चमक से भेदे हुए सफेद बादलों का एक समूह। बाहें फैलाए यीशु मसीह की एक छवि। सूर्य के प्रकाश में सुनहरे गुंबदों वाली एक मस्जिद। हाथी के सिर वाले भगवान गणेश। सुडौल स्तनों वाली एक देवी। अंधेरे में एक मोमबत्ती। जानबूझकर खाली छोड़ा गया एक पृष्ठ… हर किसी ने ईश्वर की कल्पना अपने-अपने तरीके से की। पेरी ने थोड़ी देर झिझकने के बाद एक बिंदु बनाया, जिसे उसने प्रश्नचिह्न में बदल दिया।
प्रोफेसर अज़ूर ने कहा, 'समय समाप्त हो गया है।' उन्होंने कागज़ों का एक और जत्था बाँटा। 'ईश्वर क्या है, इसका खाका तैयार करने के बाद, मैं चाहता हूँ कि आप यह दर्शाएँ कि ईश्वर क्या नहीं है।'
'क्या?'
अज़ूर ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'प्रतिक्रिया देना बंद करो, ब्रूनो, और काम पर लग जाओ।'
पीली आँखों वाला एक दानव। लोहे का एक भयानक मुखौटा। एक दुर्गंधयुक्त दलदल। धुआँ उगलती बंदूक। खून से सना चाकू। आग। विनाश। नरक का एक टुकड़ा... अजीब बात यह है कि ईश्वर क्या नहीं है, इसकी कल्पना करना, ईश्वर क्या है, इसकी कल्पना करने से कहीं अधिक कठिन साबित हुआ। केवल एलिजाबेथ को ही यह काम आसान लगा। उसने बस एक आदमी का चित्र बना दिया।
प्रोफेसर अज़ूर ने कहा, 'आपके सहयोग के लिए धन्यवाद। क्या आप दोनों चित्रों को उठाकर अगल-बगल रख सकते हैं? इन्हें घेरे में बैठे सभी लोगों को दिखाएँ।'
उन्होंने ऐसा ही किया, एक-दूसरे के कार्यों का निरीक्षण किया।

अब इन चित्रों को अपनी ओर घुमाइए। ठीक है? बहुत बढ़िया! हम एक ऐसे प्रश्न की जांच करने जा रहे हैं जिसे इतिहास भर में दार्शनिकों, विद्वानों और रहस्यवादियों ने उठाया है: इन दोनों चित्रों के बीच क्या संबंध है?
‘हूँ?’ इस बार ब्रूनो अकेला नहीं था।
‘क्या ईश्वर का पहला स्वरूप – ईश्वर के अस्वीकृत स्वरूप – का समावेश करता है या उसे नकारता है?’ अज़ूर चहलकदमी करने लगा। ‘उदाहरण के लिए, यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है, सर्वशक्तिशाली और सर्वदयालु है, तो क्या इसका अर्थ यह है कि वह बुराई का भी प्रतीक है, या इसका अर्थ यह है कि बुराई उससे बाह्य है – एक बाहरी शक्ति जिससे उसे लड़ना होगा? ईश्वर का स्वरूप और ईश्वर का अस्वीकृत स्वरूप के बीच वास्तव में क्या संबंध है?’
अज़ूर ने आगे कहा, ‘आपने दो चित्र बनाए हैं। मुझे बताइए कि वे आपस में कैसे जुड़े हैं। एक निबंध लिखिए। यह किसी भी शैली में हो सकता है, बशर्ते यह साहसी, निडर, ईमानदार हो और अकादमिक शोध पर आधारित हो!’
किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा। रेखाचित्र बनाते समय उन्होंने इस अभ्यास को हल्के में लिया था, उन्हें इस पर ज्यादा विश्वास नहीं था। अगर उन्हें पता होता कि उन्हें दोनों चित्रों के बीच संबंध पर एक निबंध लिखना होगा, तो वे शायद ज्यादा सोच-विचार करते। लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।
‘अतीत के दार्शनिकों, रहस्यवादियों, विद्वानों की ओर लौट जाओ। आज से दूर रहो। अपने मन से दूर रहो।’
‘क्या हमें अपने ही दिमाग से दूर रहना चाहिए?’ केविन ने दोहराया।
‘तो, अगले हफ्ते के लिए यही तुम्हारा काम है। अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करो, मुझे प्रभावित करो!’ अज़ूर ने अपनी फाइलें, क्रेयॉन और रेत घड़ी उठाते हुए कहा, जिसमें रेत का आखिरी कण अभी-अभी नीचे बल्ब में गिरा था। ‘लेकिन मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ, मुझे प्रभावित करना आसान नहीं है!’

छाया नाटक

ऑक्सफोर्ड, 2001
शुक्रवार की शाम को, जब ज़्यादातर छात्र आराम करने के लिए पब और क्लबों में गए, पेरी कॉलेज की लाइब्रेरी में बैठकर पढ़ रही थी। जैसे ही बचे हुए छात्र भी चले गए, इमारत के अंदर सन्नाटा गहरा गया, खाँसी या फुसफुसाहट की आवाज़ के बिना, बस पन्नों के पलटने की हल्की सी आहट सुनाई दे रही थी। पढ़ाई की जगह आनंद लेना, डाइटिंग की जगह दावत खाने जैसा था, और उसने कई बार अपनी सामाजिक अक्षमता पर अफ़सोस जताया। लेकिन उसे किताबों के बीच रहना अच्छा लगता था, जो उसे ऐसी आज़ादी का एहसास देती थीं जो और किसी चीज़ से नहीं मिल सकता था। उसने इस बात पर ध्यान न देने की कोशिश की कि आजकल उसकी ज़्यादातर पढ़ाई प्रोफ़ेसर अज़ूर से जुड़ी होती है। पिछले कुछ हफ़्तों में कई बार उसने खुद को यह सोचते हुए पाया कि वह सेमिनार में कुछ ऐसा अप्रत्याशित कहेगी, कुछ ऐसा शानदार और साहसी जो उन्हें चौंका देगा और उन्हें उसे एक नए नज़रिए से देखने पर मजबूर कर देगा।
उसके बगल में मेज पर उसका हाल ही में खरीदा हुआ फोल्डिंग पोलरॉइड कैमरा रखा था। दौड़ते समय उसे कभी-कभी बेहद खूबसूरत आसमान देखने को मिलते थे – मूंगे जैसे गुलाबी सूर्योदय, तूफानी सूर्यास्त, पाले से ढके घास के मैदान
– जिन्हें वह कैमरे में कैद करना चाहती थी। कैमरा महंगा तो था, लेकिन पैसे की बर्बादी नहीं थी। उसने किताबों पर भी बहुत खर्च कर दिया था और एक नया पर्सनल कंप्यूटर खरीदने की योजना बना रही थी। चलो छोड़ो, उसने सोचा। मुझे और मेहनत करनी पड़ेगी।
वह खड़ी हुई, अपने पैर फैलाए। वह इस हिस्से में अकेली थी – ऐसा लग रहा था मानो वह पूरी इमारत में अकेली हो। किताबों के ढेर के बीच चलते हुए, उसे अचानक एक हलचल महसूस हुई, जो परछाई की तरह शांत थी। झट से वह मुड़ी। वह ट्रॉय था।
'हाय, मेरा इरादा आपको डराने का नहीं था।'
‘तुम मेरा पीछा तो नहीं कर रहे हो, है ना?’ पेरी ने पूछा।

‘नहीं – खैर, हाँ। चिंता मत करो, मैं काटूंगा नहीं।’ ट्रॉय मुस्कुराया और उसके हाथ में पकड़ी किताब की ओर इशारा करते हुए बोला, ‘तुम क्या पढ़ रही हो? … प्राचीन ग्रीस में नास्तिकता। क्या यह अज़ूर के लिए है?’
'हाँ,' पेरी ने थोड़ा असहज महसूस करते हुए कहा।
मैंने तुमसे कहा था कि वह आदमी शैतान है, लेकिन तुमने मेरी बात को गंभीरता से नहीं लिया।
‘तुम उससे इतनी नफरत क्यों करते हो?’
क्योंकि उसे अपनी हदें नहीं पता। मुझे पता है कि यह बात आपको अच्छी लग सकती है, लेकिन ऐसा नहीं है। एक डॉन को डॉन की तरह ही व्यवहार करना चाहिए। बस। ‘और आपको नहीं लगता कि वह ऐसा करता है?’
ट्रॉय ने एक गहरी आह भरी। 'क्या तुम मजाक कर रहे हो? वह आदमी भगवान के बारे में नहीं सिखाता। वह खुद को भगवान मानता है।'
‘वाह, यह तो बहुत कठोर है।’
‘देखते हैं,’ ट्रॉय ने कहा और तुरंत एक कदम पीछे हट गया, मानो उसने इरादे से ज़्यादा कुछ बता दिया हो। ‘खैर, मुझे जाना है। मेरे दोस्त बेयर में इंतज़ार कर रहे हैं; क्या तुम हमारे साथ आना चाहोगे?’
'धन्यवाद, लेकिन मुझे काम करना है,' पेरी ने आश्चर्य से कहा कि उसने ऐसा पूछा।
ठीक है। आपका सप्ताहांत अच्छा बीते। मैंने जो कहा उस पर विचार करें।
पेरी जब पुस्तकालय से निकली, तब तक आसमान गहरा नीला-काला हो चुका था, बस सड़क की बत्तियों की धुंधली सी परछाईं दिख रही थी। आसमान इतना करीब लग रहा था कि मानो वो हाथ बढ़ाकर उसे अपने कंधों पर ओढ़ ले, जैसे कोई नीली शॉल ओढ़ रही हो। चलते-चलते उसने अपना सिर ऊपर रखा और प्राचीर की दीवारों से नीचे झुकती हुई उन मूर्तियों और विचित्र आकृतियों पर नज़र डाली, मानो सदियों के रहस्यों की रक्षा कर रही हों। उसी क्षण उसे शहर के प्राचीन धार्मिक विवाद, उसकी विद्वतापूर्ण पृष्ठभूमि, जो आज भी उसके कमरों में गूंज रही थी, याद आ गई। उसने अपनी जैकेट को ठुड्डी तक ज़िप से बंद कर लिया; उसे जल्द ही एक सर्दियों का कोट खरीदना पड़ेगा। वो पैसे बचा रही थी।
जब वह एक मोड़ पर मुड़ी, तो अंधेरे में लोगों को मोमबत्तियाँ लिए देखकर वह आश्चर्यचकित रह गई। एक शोक सभा। वह पास गई, उसकी निगाहें फुटपाथ पर बिछी

तस्वीरों और फूलों की कतारों पर टिकी थीं। एक पोस्टर पर लिखा था, "स्रेब्रेनिका को याद रखें।"
पेरी ने मृतकों के चेहरों को ध्यान से देखा - लड़के, पिता, पति; उनमें से एक का चेहरा उसके भाई उमट से मिलता-जुलता था, ठीक उसी समय जब उसे गिरफ्तार किया गया था।
प्रार्थना सभा में मौजूद लोगों के बीच पेरी ने मोना को देखा, जिसने अपने सिर और कंधों पर मैजेंटा रंग का स्कार्फ लपेटा हुआ था। मोना ने भी पेरी को देखा और हाथ में मोमबत्ती लिए उससे बात करने के लिए आगे बढ़ी।
पेरी ने तस्वीरों में दिख रहे चेहरों की ओर इशारा करते हुए कहा, 'यह बहुत दुखद है।'
मोना ने कहा, ‘यह दुखद से कहीं अधिक है। यह नरसंहार है। हमें इसे कभी नहीं भूलना चाहिए।’ वह थोड़ी देर रुकी और पेरी को नए सिरे से दिलचस्पी से देखने लगी। ‘तुम हमारे साथ क्यों नहीं जुड़ जाती?’
‘उह, ज़रूर,’ पेरी ने कहा। उसने एक मोमबत्ती और अपने भाई जैसे दिखने वाले लड़के की तस्वीर उठाई और फुटपाथ पर बैठ गई। रात उसे उफनती नदी की तरह घेरने लगी।
पेरी ने पूछा, 'क्या ऐसा सिर्फ मुस्लिम छात्र ही कर रहे हैं?'
‘वैसे, इसका आयोजन मुस्लिम छात्र परिषद ने किया था, लेकिन अन्य लोग भी अपना समर्थन दिखाने आए हैं। अज़ूर के सेमिनार से भी लोग आए हैं। देखो, एड भी यहाँ है।’
और वह वहीं था। जब मोना अपने साथी आयोजकों के साथ व्यस्त थी, तो पेरी उससे बात करने के लिए चली गई, क्योंकि मोना उसे अकेला छोड़कर चली गई थी।
‘हाय, एड।’
‘पेरी, हाय। लगता है मैं ही यहाँ इकलौता यहूदी हूँ। या आधा यहूदी।’
जैसे कि उनके धर्म का जिक्र करना एक स्वाभाविक जुड़ाव हो, पेरी ने कहा, 'क्या आपको बुरा लगेगा अगर मैं आपसे पूछूं कि आप भगवान पर सेमिनार क्यों ले रहे हैं?'
‘यह अज़ूर की वजह से है। उस आदमी ने मेरी जिंदगी बदल दी।’
‘सचमुच?’ पेरी को एड और प्रोफेसर के बीच हुई वह नजरों की मुलाकात याद आ गई। 'पिछले साल उन्होंने मेरी बहुत मदद की। मैं अपनी गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप करने वाला था।'

और उसने तुम्हें ऐसा करने से मना किया था?
‘बिल्कुल नहीं। उन्होंने मुझसे कहा कि पहले उसे समझने की कोशिश करो,’ एड ने कहा। ‘हम दोनों सेकेंडरी स्कूल से साथ थे। लेकिन वो बदल गई। अचानक ही वो धार्मिक हो गई। मैं उसे पहचान ही नहीं पा रहा था।’ तोराह का कड़ाई से पालन करने के उसके फैसले और विज्ञान के प्रति उसकी प्रतिबद्धता के कारण, उसकी और उसकी प्राथमिकताओं के बीच का अंतर इतना बढ़ गया था कि उसे पाटना नामुमकिन था। ‘मैं अज़ूर के पास गया, पता नहीं क्यों। मैं किसी रब्बी या किसी और के पास भी जा सकता था, लेकिन अज़ूर मुझे सही व्यक्ति लगा।’
'उसने आपको क्या बताया?'
‘यह अजीब था। उसने कहा कि चालीस दिनों तक, वह जो कुछ भी कहे, ध्यान से सुनो। एक महीना और दस दिन। अगर आप किसी से प्यार करते हैं तो यह इतना मुश्किल नहीं है। उसने कहा कि शबात साथ में मनाओ। वह मुझे जो कुछ भी दिखाना चाहे, बस उसे मुझे अपनी दुनिया में ले जाने दो। आपत्ति मत करो, टिप्पणी मत करो।’ ‘क्या तुमने ऐसा किया?’
‘मैंने किया। यह बेहद मुश्किल था! जब मैं निरर्थक बातें सुनता हूँ – मुझे माफ़ करना, लेकिन यही सच है – वह सब धार्मिक बातें, तो मेरा दिमाग़ विद्रोह कर देता है। अज़ूर ने कहा था कि न्याय करने का काम न्यायाधीशों पर छोड़ दो। दार्शनिक न्याय नहीं करते। वे समझते हैं।’ एड हँस पड़ा। ‘लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती।’
'और क्या?'
चालीस दिन बाद, अज़ूर ने मुझे फोन किया और कहा, शाबाश, अब तुम्हारी प्रेमिका की बारी है। चालीस दिनों तक तुम बात करोगे, वह सुनेगी। वह धर्म से विरक्त होने की प्रक्रिया से गुजरेगी।
‘क्या उसने ऐसा किया?’
‘बिल्कुल नहीं।’ एड ने सिर हिलाया। ‘हमारा ब्रेकअप हो गया था। लेकिन मैं समझ गया था कि अज़ूर क्या करने की कोशिश कर रहा था। मुझे वह इसी वजह से पसंद था।’
उसका उत्साह उसे चिढ़ा रहा था, शिष्य का अपने गुरु पर वह असीम विश्वास। उसने कहा, 'लेकिन हम दार्शनिक नहीं हैं। हम स्नातक छात्र हैं।'

‘यही तो बात है। सभी प्रोफेसर हमें स्वतंत्रता देते हैं – सिवाय अज़ूर के। वह हम पर बहुत दबाव डालते हैं। उनका मानना है कि जीवन में हमारा जो भी लक्ष्य हो, हम सभी को दार्शनिक होना चाहिए।’
'क्या साधारण छात्रों से इतनी उम्मीद करना बहुत ज्यादा नहीं है?'
एड ने उसकी तरफ देखा। 'तुम साधारण नहीं हो। कोई भी साधारण नहीं होता।' पेरी ने अपने होंठ कसकर बंद कर लिए।
‘क्या बात है? तुम्हें वो पसंद नहीं है?’ एड ने पूछा।
‘हाँ, मुझे ऐसा लगता है, बस…’ पेरी ने बात अधूरी छोड़ दी। ‘मुझे लगता है कि वह हम पर प्रयोग कर रहा है, और मुझे इससे असहज महसूस हो रहा है।’
‘शायद वो है, लेकिन किसे परवाह है?’ एड ने कहा। ‘उसने मेरी जिंदगी बदल दी। बेहतर के लिए।’
हल्की-हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई, जो किसी भी क्षण मूसलाधार बारिश में बदल सकती थी। शोक सभा स्थगित करनी पड़ी। उन्होंने पोस्टर, मोमबत्तियाँ और तस्वीरें हटा दीं। मोना इधर-उधर भाग-दौड़ कर सब कुछ संभाल रही थी।
पेरी ने एड की ओर हाथ बढ़ाया। उसके इशारे को अनसुना करते हुए, एड ने उसे अपनी ओर खींचा और गर्मजोशी से गले लगा लिया। 'अपना ख्याल रखना। और अज़ूर पर भरोसा रखना, वह बहुत अच्छा इंसान है।'
अंधेरे में अकेली पेरी अपने आंगन की ओर वापस चल पड़ी, हवा में बारिश और मिट्टी की मिली-जुली खुशबू फैली हुई थी। उसे भीगने की कोई परवाह नहीं थी। उसने उन इमारतों का जायजा लिया जो सदियों से गरमागरम बहसों की गवाह रही थीं; पड़ोसी दुश्मन बन गए, किताबें नष्ट हो गईं, विचारों को खामोश कर दिया गया, विचारकों को सताया गया... सब कुछ ईश्वर के नाम पर।
कौन सही था, ट्रॉय या एड? एक ही रात में उसने प्रोफेसर के दो विरोधी विचार सुन लिए थे; और परेशानी यह थी कि उसे लग रहा था कि दोनों ही सही हो सकते हैं। पुराने ओटोमन छाया नाटक की तरह, एक पर्दा उसे वास्तविकता से अलग कर रहा था, और वह खुद को छवियों को पकड़ने में उलझी पा रही थी। अज़ूर पर्दे के पीछे का कठपुतली नचाने वाला था – हर समय मौजूद और नियंत्रण में, फिर भी अज्ञात, हमेशा पहुँच से बाहर।

उत्पीड़ित

इस्तांबुल, 2016
लेस बॉनबॉन्स डू हरेम का आखिरी टुकड़ा अभी मेज से गायब भी नहीं हुआ था कि एक कुत्ता खुले दरवाजे से अंदर आ गया, अपनी पूंछ को इतनी फुर्ती से हिला रहा था कि उसका दुबला-पतला शरीर उसके लिए बिल्कुल अप्रत्याशित था। एक पोमेरेनियन, जिसका सिर सिकुड़ा हुआ था, आंखें भावपूर्ण थीं और शरीर पर शरद ऋतु के मुरझाए पत्तों के रंग के घने बाल थे।
'पोम-पोम, डार्लिंग, क्या तुम्हें मेरी याद आई?' उस व्यवसायी महिला ने कहा। उसने उस जीव को ज़मीन से उठाकर अपनी गोद में रख लिया। वहाँ से वह जानवर मेहमानों को देखता रहा, पलकें झपकाता रहा, उसके लोमड़ी जैसे चेहरे पर एक निष्क्रिय भाव था जो किसी भी क्षण गुर्राहट भरी शत्रुता में बदल सकता था। ‘आपको पता है मुझे कब एहसास हुआ कि यह देश बदल गया है?’ उस व्यवसायी महिला ने किसी से विशेष रूप से नहीं पूछा। ‘जब मैं पिछले महीने पोम-पोम को पशु चिकित्सक के पास ले गई थी।’
उसने बताया कि आम तौर पर पशुचिकित्सक नियमित रूप से आते थे, लेकिन कुछ हफ़्ते पहले उस आदमी के पैर में चोट लग गई थी और हालाँकि वह पहले की तरह काम करता रहा, लेकिन घर आकर इलाज करने में असमर्थ था। पोम-पोम को बगल में दबाए वह क्लिनिक के लिए निकल पड़ी। पहले, कुत्ते पालने वाले लोग लगभग एक जैसे ही होते थे - आधुनिक, शहरी, धर्मनिरपेक्ष और पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित। चूंकि रूढ़िवादी मुसलमान कुत्तों को मकरूह मानते थे, इसलिए वे अपने घर में कुत्तों को रखना पसंद नहीं करते थे।
‘मुझे कभी समझ नहीं आया कि उन लोगों को कुत्तों से क्या दिक्कत है। ये सब बकवास है कि फरिश्ते कुत्ते वाले घर में प्रवेश नहीं करते,’ उस व्यवसायी महिला ने कहा। ‘या फिर पेंटिंग वाले घर में।’
‘यह अल-बुखारी की हदीस है,’ हाल ही में उस समूह में शामिल हुए एक अख़बार मालिक ने कहा। उनकी कॉलरलेस, साफ़ सफ़ेद कमीज़ उनके काले बालों को और भी आकर्षक बना रही थी, जो पूरे सिर पर एक ही लंबाई में कटे हुए थे। उन्होंने न मूंछें रखी थीं, न दाढ़ी, एकदम साफ़ शेव किया हुआ था। डिनर में मौजूद बाकी

सभी लोगों से अलग, वह नवगठित इस्लामी-बुर्जुआ वर्ग से थे। देश के पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित अभिजात वर्ग के साथ मेलजोल करने की उनकी उत्सुकता के बावजूद, वह अपनी पत्नी को, जो हिजाब पहनती थीं, ऐसे डिनर में लाने के बारे में सोच भी नहीं सकते थे। उन्होंने मन ही मन सोचा कि वह उनके बीच असहज महसूस करेंगी। असल में, वह खुद ही उनके आसपास असहज महसूस करते थे। बेशक, वह एक पत्नी के रूप में उनसे खुश थे – अल्लाह जानता है कि वह अपने पाँच बच्चों के लिए कितनी ममतामयी माँ थीं – लेकिन घर के बाहर, खासकर उनके समूह से बाहर, उन्हें वह असभ्य और यहाँ तक कि अशोभनीय लगती थीं; वह उनकी हर हरकत पर नज़र रखते थे और उनकी हर टिप्पणी को भौंहें चढ़ाकर सुनते थे। बेहतर होता अगर वह घर पर ही रहतीं।
फिर वह आराम से बैठ गया और बोला, 'वैसे, हदीस में यह नहीं कहा गया है कि कोई भी तस्वीर। यह मूर्तिपूजा को रोकने के लिए चित्रों के खिलाफ चेतावनी देती है।'
‘तो फिर, हम तो गए काम से,’ व्यापारी ने कहा। संतुष्ट भाव से हंसते हुए उसने दोनों बाहें खोलीं और दीवारों पर लगी कलाकृतियों की ओर इशारा किया। ‘हमारे पास एक कुत्ता है और ढेरों चित्र हैं। नग्न चित्र भी। शायद आज रात हमारे सिर पर पत्थर बरसेंगे!’
हंसमुख लहजे के बावजूद, उसके शब्दों ने कुछ मेहमानों को स्पष्ट रूप से परेशान कर दिया, जो असहजता से मुस्कुरा रहे थे। तनाव को भांपते हुए, पोम-पोम गुर्राया, उसके नुकीले दांत लार से लथपथ थे।
‘चुप रहो, माँ यहाँ है,’ उस व्यवसायी महिला ने उस छोटे से जीव से कहा, और अपने पति से थोड़े कम स्नेह भरे लहजे में बोली, ‘किस्मत को मत आजमाओ, कुछ बुरा हो सकता है।’ उसने अपना पानी ऐसे गटक लिया जैसे चिड़चिड़ाहट ने उसे प्यासा कर दिया हो। ‘अब मैं कहाँ थी? तो जब मैं पशु चिकित्सक के पास गई, तो प्रतीक्षा कक्ष में सिर पर स्कार्फ पहनी महिलाओं को अपने पैरों के पास कुत्ते लिए देखकर मैं हैरान रह गई! चिहुआहुआ, शिह-त्जू, पूडल। वे कुत्तों के प्रति आप और मुझसे कहीं अधिक लगाव रखती थीं! जाहिर है, धार्मिक मुसलमान बदल रहे हैं।’
अखबार के मालिक ने कहा, 'मैं यह नहीं कहूंगा कि वे बदल रहे हैं। देखिए, हम जैसे धार्मिक लोगों को कभी वो आजादी नहीं मिली जो आपको मिली हुई है। हम

दशकों से आप जैसे आधुनिकतावादी अभिजात वर्ग द्वारा उत्पीड़ित होते रहे हैं - बुरा न मानें।'
‘अगर यह सच भी होता, तो वो दिन बीत चुके हैं। अब सारी सत्ता तुम्हारे हाथ में है,’ पेरी ने कांपती आवाज में बुदबुदाया, मानो वह अपने मन की बात कहने से हिचकिचा रही हो, लेकिन एक बार फिर खुद को रोक नहीं पाई।
अखबार के मालिक ने आपत्ति जताई। ‘मैं असहमत हूँ। एक बार उत्पीड़ित, हमेशा उत्पीड़ित। आपको नहीं पता कि उत्पीड़ित होना कैसा लगता है। हमें सत्ता से चिपके रहना होगा, अन्यथा आप इसे हमसे छीन सकते हैं।’
‘अरे, रहने दो!’ पत्रकार की प्रेमिका चिल्लाई, जो शराब के प्रति बेहद असंवेदनशील थी। उसने अरबपति की ओर उंगली उठाते हुए कहा, ‘तुम उत्पीड़ित नहीं हो! तुम्हारी पत्नी उत्पीड़ित नहीं है! मैं उत्पीड़ित हूँ!’ उसने अपनी छाती पर हाथ रखते हुए कहा, ‘मैं, अपने सुनहरे बालों, मिनी-स्कर्ट, मेकअप, नारीत्व और शराब के गिलास के साथ... मैं ही इस निरंकुश संस्कृति में फंसी हुई हूँ।’
पत्रकार की आंखें हैरानी से चौड़ी हो गईं। उसे डर था कि उसकी प्रेमिका उस उद्योगपति के गुस्से का शिकार हो सकती है और उसकी नौकरी जा सकती है। इसलिए उसने मेज के नीचे उसे लात मारने की कोशिश की, लेकिन उसका पैर हवा में व्यर्थ ही घूमता रहा।
"खैर, हम सब उत्पीड़ित हैं," मेजबान ने तनाव कम करने के एक कमजोर प्रयास में कहा।
प्लास्टिक सर्जन ने कहा, 'यह बहुत सरल है। जैसे-जैसे लोगों की आय बढ़ती है, उनकी जीवनशैली बेहतर होती जाती है। मेरे पास कई मरीज हैं जो हिजाब पहनती हैं। जब बात स्तनों के ढीलेपन और गर्दन की झुर्रियां पड़ने की आती है, तो धार्मिक मुस्लिम महिलाएं बाकी महिलाओं से ज्यादा अलग नहीं होतीं।' व्यापारी ने सहमति में सिर हिलाया। 'यह तो मेरे सिद्धांत को ही सिद्ध करता है: पूंजीवाद ही हमारी समस्याओं का एकमात्र समाधान है। उन जिहादी सनकियों का इलाज मुक्त बाजार है। काश पूंजीवाद बिना किसी हस्तक्षेप के अपना मार्ग प्रशस्त कर पाता, तो यह सबसे दृढ़ निश्चयी लोगों को भी जीत लेता।'
इतना कहकर उन्होंने पॉलिश किए हुए बर-वॉलनट ह्यूमिडोर को खोला, जिसके ढक्कन पर फिदेल कास्त्रो की छवि जड़ी हुई थी, और आँख मारते हुए उसे पत्रकार को दे दिया। 'बेरुत ड्यूटी फ्री से लिमिटेड एडिशन। एक ले लो। दो ले लो।'

पुरुष अतिथियों ने अपनी मेज़बान की ओर शरमाते हुए देखा और फिर डिब्बे में हाथ डालकर एक-एक सिगार निकाल लिया।
‘मेरी पत्नी की चिंता मत करो,’ व्यापारी ने कहा। ‘इस घर में पूरी आजादी है। ‘!وعادادادادا
सब लोग हंस पड़े। शोर से परेशान होकर पोम-पोम गुस्से से भौंकने लगी।
मौका देखकर पेरी ने सिगरेट जलाई। उसने देखा कि प्रवेश द्वार पर खड़ी नौकरानी अब दबे पांव इधर-उधर घूम रही थी और ऐशट्रे रख रही थी। उसने सोचा कि वह औरत उन सबके बारे में क्या सोचती होगी। शायद न जानना ही बेहतर था। 'हमारी प्यारी पेरी आज रात बहुत ही विचारशील लग रही है,' उस व्यवसायी महिला ने कहा।
पेरी ने टिप्पणी को टालते हुए कहा, 'यह एक लंबा दिन था।'
उसके पति ने आगे झुककर मानो कोई राज़ बताने की कोशिश की। उसकी आदत थी कि वह अपनी कॉफ़ी बिना दूध और चीनी के कड़क पीता था, और मुँह में एक चीनी का टुकड़ा रखता था। अब, जैसे ही चीनी का टुकड़ा उसकी जीभ पर घुलने लगा, अदनान ने कहा, 'कभी-कभी मुझे लगता है कि पेरी को काल्पनिक पात्र, असल ज़िंदगी के पात्रों से ज़्यादा पसंद आते हैं। अपने दोस्तों को ट्वीट करने के बजाय, वह हमारे बेडरूम में लटकी डोरियों पर अपनी पसंदीदा कविताएँ टांगना ज़्यादा पसंद करती है।'
पेरी मुस्कुराई। यह एक और रस्म थी जो उसने प्रोफेसर अज़ूर से सीखी थी। इंटीरियर डिजाइनर ने कहा, 'मुझे आपसे ईर्ष्या होती है। मुझे तो पढ़ने का समय ही नहीं मिलता।'
‘ओह, मुझे कविता बहुत पसंद है,’ पीआर महिला ने कहा। ‘मेरा मन करता है कि मैं सब कुछ छोड़कर किसी मछुआरे के गांव में जाकर बस जाऊं। इस्तांबुल हमारी आत्मा को भ्रष्ट कर देता है!’
'मियामी आओ, हमने समुद्र के किनारे एक घर खरीदा है,' उस व्यवसायी ने कहा। उनकी पत्नी ने भौंहें चढ़ा लीं। 'इस आदमी की हिम्मत तो देखो! कलात्मक संवेदनशीलता बिल्कुल नहीं है। हम कविता की बात करते हैं, वो मियामी की बात करते हैं।'
‘इस बार मैंने क्या कर दिया?’ व्यापारी ने विरोध जताते हुए कहा।
किसी ने उनकी आलोचना नहीं की। वे इतने अमीर थे कि उनके सामने उनकी आलोचना करना उचित नहीं था।

तभी दरवाजे की घंटी बजी, एक बार, दो बार, तीन बार - निराशा, माफी और अधीरता का मिलाजुला भाव।
‘अरे वाह, आखिरकार!’ व्यवसायी महिला खुशी से उछल पड़ी। ‘ज्योतिषी आ ही गई!’ ‘हुर्रे!’ सबने एक साथ चिल्लाकर कहा।
पोम-पोम गुस्से से भौंकते और चिल्लाते हुए दरवाजे की ओर भागा।
इसके बाद मची अफरा-तफरी में पेरी को पास ही से एक बीप की आवाज़ सुनाई दी। उसने अपने पति का फोन उठाया और स्क्रीन देखी। उसकी माँ का एक लंबा संदेश था, जबकि माँ ने उसे सिर्फ 'मुझे कॉल करो' लिखने को कहा था। संदेश में लिखा था, 'नंबर मिल गया, टीवी शो छूट गया।' नीचे मांगी गई जानकारी थी: 'शिरिन: 01865...' अंक पेरी की आँखों के सामने नाचने लगे, मानो कोई तिजोरी खोलने का तरीका हो जो बहुत लंबे समय से बंद थी।

स्वप्न व्याख्याकार

ऑक्सफोर्ड, 2001
प्रोफेसर अज़ूर किताबों से लदे हाथों के साथ कक्षा में पहुंचे। उनके पीछे एक और व्यक्ति था - जो एक कुली निकला - जो मिट्टी के चूल्हे, काले कागज़ के रोल, सीडी प्लेयर और कई तकियों से लदी ठेलागाड़ी को धकेल रहा था, जैसे हवाई जहाज़ों में पाए जाते हैं। दोनों व्यक्ति कमरे के बीच में गए और सारा सामान उतार दिया।
पेरी ने मन ही मन सोचा, जैसे कोई नाटक चल रहा हो। वह मंच पर एक अभिनेता है; हम दर्शक हैं।
‘जिम, आपकी मेहनत के लिए धन्यवाद, मैं आपका एहसानमंद हूं,’ अज़ूर ने कुली से कहा।
कोई परेशानी नहीं, महोदय।
क्लास खत्म होने पर वापस आना मत भूलना।
उस व्यक्ति ने औपचारिक रूप से सिर हिलाया और चला गया।
अज़ूर ने अपने चारों ओर घेरा बनाकर खड़े युवा, आशा से भरे चेहरों पर नज़र डाली। तेज़ रोशनी में उसकी आँखें थकी हुई लग रही थीं, हरे रंग की एक गहरी छाया – मानो जंगल की कोई धारा अपने भंवरों से हिल रही हो। 'आज सुबह सब कैसे हैं?'
सभी ने उत्साहपूर्वक एक साथ जवाब दिए।
‘अच्छा, अगर आपको नींद पूरी करनी है, जो वैज्ञानिक रूप से असंभव साबित हो चुका है, तो ये रहा एक मौका। क्या आप कृपया इन तकियों को बाँट सकते हैं?’ प्रत्येक छात्र ने एक-एक लिया। इस बीच, प्रोफेसर चूल्हे पर काम करने में व्यस्त हो गए।
‘सर, क्या हम कॉलेज को जलाने जा रहे हैं?’ केविन ने अचानक पूछा।
‘तुम्हें मेरी बुरी योजनाओं का कैसे अंदाजा हो गया? नहीं, हम कुछ भी नहीं जलाएंगे।’
कुछ ही सेकंड में, इलेक्ट्रिक स्टोव तेज लाल रंग से चमक उठा।
ठीक है, बच्चों। मान लीजिए आप अपने गर्म, आरामदायक कमरों में हैं; बाहर कड़ाके की ठंड है। आप क्या कर सकते हैं, सिवाय सोने के!

छात्रों ने एक-दूसरे की ओर देखा।
‘अपने सिर तकियों पर रख लो!’ अज़ूर ने आदेश दिया।
उन्होंने वैसा ही किया जैसा उन्हें कहा गया था। पेरी को छोड़कर, जो एकदम सीधी बैठी थी और संदेह से उसकी आँखें चौड़ी खुली हुई थीं।
‘यही तो जज़्बा है, पेरी। सावधान रहना। क्या पता, मैंने तकियों में गुस्सैल बिल्लियाँ भर दी हों।’
वह शरमा गई, इस बार उसने बात मान ली।
इसके बाद अज़ूर ने काला कागज़ लिया और अपनी जेब से टेप का एक रोल निकाला।
उसने खिड़कियों को टेप से ढकना शुरू कर दिया। बाहर की रोशनी से कट जाने के कारण कमरा अर्ध-अंधेरे में डूब गया। उसने सीडी प्लेयर चालू किया: आग की चटकने की आवाज़ कमरे में गूंजने लगी।
‘हम क्या कर रहे हैं, महोदय?’ यह फिर से केविन था।
हम एक ऐसी जगह जा रहे हैं जहाँ रेने डेसकार्टेस अक्सर जाया करते थे। सपनों की जगह!
किसी ने अपनी हंसी दबा ली, लेकिन बाकी समूह दिलचस्पी लेता हुआ प्रतीत हुआ। 'वह महान दार्शनिक लगभग तुम्हारी ही उम्र के थे। क्या तुममें से किसी ने अभी तक कुछ सार्थक किया है?'
किसी ने जवाब नहीं दिया।
'डेकार्ट्स की महत्वाकांक्षाएं बहुत बड़ी थीं। मुझे यकीन है कि आपकी महत्वाकांक्षाएं और भी बड़ी हैं। लेकिन उनकी महत्वाकांक्षाएं कार्यप्रणाली और दार्शनिक जांच पर आधारित थीं।'
‘हमारे भी वैसे ही हैं!’ ब्रूनो ने कहा।
अज़ूर ने आँखें घुमाईं। 'हम डेसकार्टेस के दर्शनों पर विचार करेंगे। पहले में, युवा दार्शनिक एक पहाड़ी पर चढ़ रहा है। उसे डर है कि वह गिर जाएगा। वह जानता है कि उसे अपने लक्ष्यों तक पहुँचने के लिए और अधिक प्रयास करना होगा, लेकिन वह सोचता है कि वह एक सर्वोच्च शक्ति - ईश्वर - की सहायता के बिना कुछ भी हासिल नहीं कर सकता।'
पेरी का सिर तकिए पर था, उसकी आंखें आधी बंद थीं, और वह सुन रही थी।
दूर क्षितिज पर उसे एक गिरजाघर दिखाई देता है – ईश्वर का घर। हवा उसे उठाती है और इतनी ज़ोर से ले जाती है कि वह उसकी दीवारों से जा टकराता है।
केविन ने कहा, 'मैंने तुमसे कहा था ना कि भगवान अच्छा नहीं है।'

वह उठता है और अपने कपड़े झाड़ता है। वह एक आंगन में प्रवेश करता है जहाँ वह एक आदमी को देखता है जो उसे एक तरबूज देने की कोशिश करता है - एक विदेशी भूमि का फल।
पेरी के बगल में बैठे एड ने धीरे से कहा, 'यह तो अजीब है।' वह अपने साथ घर में बने बिस्कुट का एक डिब्बा लाया था, जिसे उसने अब खोलकर सबको देना शुरू कर दिया।
अज़ूर ने आगे बताया, ‘डेसकार्टेस दर्द से कराहते हुए, पसीने से तरबतर होकर जागता है। उसे चिंता होती है कि यह सपना शैतान की वजह से आया है। बुरे विचार कहाँ से आते हैं – बाहर से या भीतर से? वह ईश्वर से सुरक्षा की प्रार्थना करता है। लेकिन ईश्वर क्या है – कोई बाहरी स्रोत या हमारे मन की उपज? यही सवाल उसे दूसरे सपने की ओर ले जाता है जब वह दोबारा सोने में कामयाब हो जाता है।’
अज़ूर ने सीडी पर अगली रिकॉर्डिंग चलाई। कमरे में गरज की आवाज़ गूंज उठी। 'दार्शनिक के चारों ओर एक आंधी चल रही है। एक तूफान आ रहा है। वह पूछता है, जीवन में बुरी चीजें क्यों घटती हैं? अगर ईश्वर ऐसा है तो वह उन्हें कैसे होने दे सकता है? डेसकार्टेस उलझन में है। अकेला है। नाराज़ है। यह सपना अंधकारमय और निराशाजनक है।'
पेरी अपने भाई उमट के बारे में सोच रही थी, उस आदमी के रूप में नहीं जो आज मेज पर झुका हुआ पर्यटकों के लिए सीपियों से विंड चाइम बना रहा था, जिनसे वह कभी मिल भी नहीं पाया, बल्कि उस युवा आदर्शवादी के रूप में जिसने कभी दुनिया को बदलना और हर बुराई को सुधारना चाहा था। उसे अपने पिता के साथ हुई बातचीत याद आ रही थी, जिसमें वह यह समझने की कोशिश कर रही थी कि भगवान ने उन्हें क्यों छोड़ दिया। उसका गला दुख रहा था। उस पर छाने वाला दुख इतना तीव्र था कि उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसे नहीं पता था कि वह किस पर विश्वास करती है। शायद भगवान एक खेल है जिसे केवल खुशहाल बचपन वाले ही खेल सकते हैं।
नकारात्मक भावनाओं के प्रवाह को शांत करने के लिए, उसने तुरंत पूछा, 'तीसरे सपने के बारे में क्या, महोदय?'
अज़ूर ने उसे उत्सुकता भरी नज़रों से देखा। 'अच्छा, यही सबसे महत्वपूर्ण है। डेसकार्टेस को मेज पर एक किताब दिखती है, एक शब्दकोश। फिर उसे एक और

किताब दिखती है, कविताओं की किताब। वह बाद वाली किताब को बेतरतीब ढंग से खोलता है और ऑसोनियस की एक कविता पढ़ता है।'
‘कौन?’ ब्रूनो ने अचंभित होकर कहा।
‘डेसिमस मैग्नस ऑसोनियस। रोमन कवि, व्याकरणविद्, वाक्पटु।’ अज़ूर ने पेरी की ओर उंगली करते हुए कहा, ‘क्या तुम्हें पता है कि वह तुम्हारे शहर – कॉन्स्टेंटिनोपल – में आया था?’
पेरी ने अपना सिर हिलाया।
‘कविता की पहली पंक्ति है: जीवन में मुझे कौन सा रास्ता चुनना चाहिए?’ अज़ूर ने कहा। ‘एक आदमी प्रकट होता है और डेसकार्टेस से पूछता है कि वह इसके बारे में क्या सोचते हैं। लेकिन दार्शनिक जवाब नहीं दे पाते। निराश होकर वह आदमी गायब हो जाता है। डेसकार्टेस शर्मिंदा महसूस करते हैं। वे संदेह से भरे हुए हैं – जैसे सभी बुद्धिमान लोग होते हैं। अब इस सपने की व्याख्या कौन करना चाहेगा?’
‘खैर, वो तरबूज़ वाली बात तो शरारती लग रही थी,’ ब्रूनो ने कहा। ‘शायद डेसकार्टेस समलैंगिक थे। उन्हें उस मिस्टर एन पर क्रश था – चाहे वो कोई भी हों।’
‘शायद।’ अज़ूर ने आह भरी। ‘या फिर, शब्दकोश विज्ञान और ज्ञान का प्रतीक था। कविता दर्शन, प्रेम और बुद्धिमत्ता का प्रतीक थी। उसे लगा कि ईश्वर उससे कह रहा है कि वह इन सबको तर्क के माध्यम से एक साथ लाए और एक “अद्भुत विज्ञान” की रचना करे। एक सवाल है: क्या तुम ईश्वर का अध्ययन करने के लिए अपना खुद का एक अद्भुत विज्ञान बना सकते हो?’
‘हम ऐसा कैसे करेंगे?’ मोना ने कहा।
‘बहुमुखी प्रतिभा के धनी बनो,’ अज़ूर ने उत्तर दिया। ‘विभिन्न विषयों को आपस में जोड़ो, उनका संश्लेषण करो, केवल “धर्म” पर ध्यान केंद्रित मत करो। वास्तव में, धर्म से दूर रहो, यह केवल विभाजन और भ्रम पैदा करता है। गणित, भौतिकी, संगीत, चित्रकला, कविता, कला, वास्तुकला की ओर बढ़ो… ईश्वर तक अप्रत्याशित माध्यमों से पहुँचो।’
पेरी उत्साह से भर उठी। क्या वह अपना खुद का अद्भुत विज्ञान रच सकती थी? यह कितना शानदार होता! क्या वह किताबों के प्रति अपने प्रेम, विज्ञान, ज्ञान और कविता के प्रति अपने जुनून, अपनी अटूट उदासी, अपने बड़े भाई की टूटी हुई आत्मा और ज़ख्मी शरीर, अपने पिता की निंदा और शराब पीने की आदत, अपनी माँ

की प्रार्थना और खून से लथपथ हाथों, अपने दूसरे भाई के उग्र क्रोध को मिलाकर एक ठोस, विश्वसनीय और संपूर्ण रचना कर सकती थी? क्या साधारण सामग्रियों से कुछ स्वादिष्ट बनाना संभव था?
अज़ूर ने कहा, 'तीसरे सपने को देखकर मुझे आश्चर्य होता है कि क्या दार्शनिक दूसरों द्वारा आंका जाने से डरते थे। हमारे लिए, वे महान रेने डेसकार्टेस हैं! लेकिन वे खुद को छोटा, महत्वहीन समझते थे। अगर आप में से किसी को कभी ऐसा लगे कि आप काफी खास नहीं हैं, तो याद रखें, डेसकार्टेस को भी कभी-कभी ऐसा ही महसूस होता था।'
पेरी ने अपनी नज़रें झुका लीं। वह समझ गई थी कि अज़ूर क्या कर रहा है और इस बात के लिए वह उससे नफ़रत भी करती थी और प्यार भी। वह उसे, और सिर्फ़ उसे ही, खुद पर ज़्यादा भरोसा रखने के लिए कह रहा था। वह अपने कमरे में हुई उनकी बातचीत को भूला नहीं था।
जब उनका व्याख्यान समाप्त हुआ, तो अज़ूर ने अपनी सीडी का आखिरी गीत बजाया। उन्होंने कहा, 'बीथोवेन, मिस्सा सोलेमनिस। इसमें डूब जाइए। वापस सो जाइए!' अपने तकियों पर सिर रखे वे संगीत का आनंद ले रहे थे। किसी ने कुछ नहीं कहा।
प्रोफेसर ने घोषणा की, 'व्याख्यान समाप्त' और स्टॉप बटन दबा दिया।
उसी समय दरवाजे पर हल्की सी दस्तक हुई। अज़ूर ने उसकी ओर आवाज़ लगाई, 'जिम, अंदर आ जाओ। हमेशा की तरह समय पर।'
कुली अंदर आया और सीधे चूल्हे की ओर बढ़ा ताकि उसे वहां से ले जा सके। ‘ठीक है, सब लोग,’ अज़ूर ने कहा। ‘आज की हमारी चर्चा के आलोक में, डेसकार्टेस की ‘निश्चितता और ईश्वर की खोज’ पर एक निबंध लिखिए। कलम उठाने से पहले, सुनिश्चित करें कि आप शोध कर लें। ज्ञान के बिना अटकलें लगाना व्यर्थ की बकवास है। समझ गए?’
‘जी सर,’ छात्रों ने एक साथ उत्तर दिया।

जब पेरी बाहर निकली, तो उसका सिर दर्द से बेहाल था। हवा और बेकाबू चीज़ों का बल; अच्छाई और बुराई का द्वंद्व; अराजकता को समझने की ज़रूरत; सपनों में छिपे रहस्य और जीवन का स्वप्निल स्वरूप; सत्य की खोज में लगे एक युवा

दार्शनिक का अकेलापन; एक पुरानी कविता की पहली पंक्ति जो आज भी प्रासंगिक है: जीवन में मुझे कौन सा रास्ता अपनाना चाहिए? अज़ूर की बातें सुनते- सुनते उसके भीतर कुछ बदल गया था – एक ऐसा सूक्ष्म बदलाव जो लगभग अगोचर था, और अपरिवर्तनीय भी, जिससे एक ऐसा खालीपन पैदा हो गया था जिसमें झाँकने से वह डरती थी, कहीं उसे कुछ मिल न जाए। आमतौर पर शांत रहने वाले उसके भीतर एक दरार खुल गई थी, जिससे उसका धड़कता हुआ दिल ज़ाहिर हो गया था। वह चाहती थी कि वह दिनों तक उससे, और केवल उससे ही, बातें करता रहे।
जब अज़ूर ईश्वर, जीवन, आस्था और विज्ञान की बात करते थे, तो उनके शब्द भाप में पके चावल के छोटे-छोटे दानों की तरह आपस में गुंथे रहते थे, मानो भूखे मनों को तृप्त करने के लिए तैयार हों। उनकी संगति में पेरी पूर्ण और अविभाजित महसूस करती थी, मानो चीजों को देखने का एक और तरीका हो - जो उसके पिता और माता दोनों के दृष्टिकोण से अलग हो। अज़ूर के शब्दों में उसे नालबंतोग्लू परिवार में पली-बढ़ी उस थकाऊ द्वंद्व से मुक्ति का मार्ग मिला। अज़ूर के साथ वह अपने व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को अपना सकती थी और फिर भी उसका स्वागत होता था। उसे अपने किसी भी पहलू को दबाने, नियंत्रित करने या छिपाने की आवश्यकता नहीं थी। अज़ूर का ब्रह्मांड अच्छाई और बुराई, ईश्वर और शैतान, प्रकाश और अंधकार, अंधविश्वास और तर्क, आस्तिकता और नास्तिकता के कठोर द्वंद्वों से परे था। वह स्वयं उन सभी झगड़ों से ऊपर थे जो मेन्सुर और सेल्मा के बीच वर्षों से चले आ रहे थे, और किसी न किसी तरह उनकी बेटी तक पहुँच गए थे। पेरी को अपने अंतर्मन में यह अहसास था, हालाँकि वह यथासंभव इसे नकारने की कोशिश करती रही, कि वह अपने प्रोफेसर के प्रति आसक्त थी। इस उम्मीद में कुछ भयावह रूप से खतरनाक था कि किसी के पास हमारे अधिकांश प्रश्नों का उत्तर है, और उस व्यक्ति के माध्यम से उन सभी अनसुलझे सवालों का हल मिल सकता है जो अब तक अनसुलझे रह गए हैं।

लबादा

ऑक्सफोर्ड, 2001
‘नई कथाएँ खोजें, हमेशा बहुवचन। हम अक्सर ईश्वर के बारे में अपनी समझ को एक ही उत्तर – एक सूत्र – तक सीमित करने की कोशिश करते हैं। गलत!’
प्रोफेसर अज़ूर अपने हाथों को जेब में डाले हुए तेजी से इधर-उधर चल रहे थे। उन्होंने कहा कि कुछ दशक पहले तक, यहाँ तक कि सबसे बुद्धिमान विद्वान भी इस बात को लेकर आश्वस्त थे कि इक्कीसवीं सदी तक धर्म धरती से लुप्त हो जाएगा। लेकिन इसके विपरीत, 1970 के दशक के उत्तरार्ध में धर्म ने एक भव्य वापसी की, मानो कोई गायिका मंच पर लौट आई हो, और तब से यह यहाँ कायम है, हर गुजरते साल के साथ इसकी आवाज़ और बुलंद होती जा रही है। 'आज की गरमागरम बहसें आस्था के मुद्दों के इर्द-गिर्द घूमती हैं।'
यह शताब्दी पिछली शताब्दी की तुलना में अधिक धार्मिक होनी ही थी – कम से कम जनसंख्या के लिहाज़ से, क्योंकि धार्मिक लोगों के बच्चे धर्मनिरपेक्ष लोगों की तुलना में अधिक होते थे। लेकिन धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संघर्षों में उलझे रहने के कारण हमने एक महत्वपूर्ण पहेली को नज़रअंदाज़ कर दिया: ईश्वर। जहाँ पूर्व में दार्शनिक – और उनके शिष्य – धर्म की तुलना में ईश्वर के विचार से अधिक जूझते थे, वहीं अब स्थिति उलट गई थी। यहाँ तक कि आस्तिक-नास्तिक वाद-विवाद, जो अटलांटिक के दोनों ओर के बौद्धिक हलकों में काफी लोकप्रिय हो गए थे, ईश्वर की संभावना से अधिक राजनीति, धर्म और विश्व की स्थिति पर केंद्रित थे। ईश्वर के बारे में अस्तित्वगत और ज्ञानमीमांसीय प्रश्न उठाने की अपनी संज्ञानात्मक क्षमता को कमज़ोर करके और अतीत के दार्शनिकों से अपना संबंध तोड़कर, हम कल्पना की दिव्यता को खो रहे थे।
पेरी ने देखा कि अधिकांश छात्र हर शब्द को ध्यान से सुनने के लिए नोट्स बना रहे थे। वह केवल सुनने में ही संतुष्ट थी।
‘बहुत से लोग एम.ओ.सी. से पीड़ित हैं,’ अज़ूर ने कहा। ‘क्या किसी को पता है कि यह क्या है?’
केविन ने सवाल किया, 'क्या यह आधुनिक मोटापे का अभिशाप है?'
‘पागलों का मर्दानापन?’ एलिजाबेथ ने भी अपनी बात रखी।

अज़ूर मुस्कुराया मानो उसे इन उत्तरों की उम्मीद थी और बोला, 'निश्चितता की बीमारी।'
जिज्ञासा के लिए निश्चितता वही थी जो इकारस के पंखों के लिए सूर्य थी। जहाँ एक की चमक प्रबल होती थी, वहाँ दूसरा टिक नहीं पाता था। निश्चितता से अहंकार आता था; अहंकार से अंधापन; अंधेपन से अंधकार; और अंधकार से और अधिक निश्चितता। इसे उन्होंने विश्वासों का विपरीत स्वभाव कहा। इन व्याख्यानों के दौरान वे किसी भी बात को लेकर आश्वस्त नहीं होने वाले थे, यहाँ तक कि सेमिनार के पाठ्यक्रम को लेकर भी नहीं, जो कि हर चीज़ की तरह परिवर्तन के अधीन था। वे ज्ञान के सागर में जाल फेंकने वाले मछुआरे थे। अंततः, वे एक तलवार मछली पकड़ सकते थे; या वे खाली हाथ लौट सकते थे।
वे भी यात्री थे, राह के साथी, जो अभी तक किसी मंज़िल पर नहीं पहुँचे थे और शायद कभी पहुँच ही न पाएँ। वे बस प्रयास कर रहे थे, खोज रहे थे। क्योंकि इस मायावी जटिलता से भरे संसार में केवल एक ही बात स्पष्ट थी: परिश्रम आलस्य से बेहतर है, उत्साह उदासीनता से श्रेष्ठ है। प्रश्न उत्तरों से अधिक महत्वपूर्ण थे; जिज्ञासा निश्चितता से श्रेष्ठ थी। संक्षेप में, वे 'सीखने वाले' थे।
हालांकि 'निश्चितता का रोग' पूरी तरह से दूर करना असंभव है, फिर भी इसे एक ऐसे आवरण के रूप में समझा जा सकता है जिसे उतारा जा सकता है। 'मैं सहमत हूँ कि यह एक रूपक है, लेकिन रूपकों को हल्के में न लें - वे वक्ता को बदल देते हैं। आखिरकार, यह शब्द ग्रीक शब्द 'metaphorá' से आया है, जिसका अर्थ है "स्थानांतरित करना"।'
अब से, अज़ूर ने कहा, कक्षा में प्रवेश करने से पहले वह चाहता है कि हर कोई इस आवरण को उतार फेंके। इसमें वह स्वयं भी शामिल था, क्योंकि वह भी इसे धारण करने के लिए प्रवृत्त था। 'इसे एक पुराने कोट की तरह समझो, इसे एक खूंटी पर टांग दो। मैंने वास्तव में एक खूंटी दरवाजे के ठीक बाहर टांग दी है। आप जाकर देख सकते हैं।'
छात्रों को यह समझने में एक मिनट लगा कि वह गंभीर थे। सुजाता सबसे पहले उठी। वह कक्षा पार करके दरवाजा खोलकर हॉल में चली गई। जब उसने देखा कि वहाँ सचमुच एक खूंटी है, तो उसका चेहरा चमक उठा। जैसे उसने अपने कंधों पर लबादा ओढ़ा हो, उसने उसे उतारा, टांगा और विजयी भाव से वापस अंदर चली गई। एक-एक करके बाकी छात्रों ने भी उसका अनुसरण किया। अंत में, प्रोफेसर अज़ूर बाहर

आए। जिस तरह से उन्होंने अपने हाथ हवा में लहराए, उससे लग रहा था कि उनका लबादा काफी भारी था। लबादा उतारने के बाद, वे कक्षा में वापस आए और ताली बजाई। 'शानदार! अब जब हमने अपने अहंकार से छुटकारा पा लिया है, कम से कम प्रतीकात्मक रूप से, तो चलिए शुरू करते हैं।'
‘हमने ऐसा क्यों किया?’ ब्रूनो ने सिर हिलाते हुए कहा।
‘अनुष्ठान महत्वपूर्ण हैं, उन्हें कम मत समझिए,’ अज़ूर ने कहा। ‘धर्म इस बात को अच्छी तरह समझते हैं। लेकिन अनुष्ठानों का धार्मिक होना जरूरी नहीं है। इस संगोष्ठी में हम अपनी साझा प्रथाएँ अपनाएँगे।’
उसने एक मार्कर उठाया और बोर्ड पर लिखा: ईश्वर शब्द के रूप में।
आज हम जिस सभ्यता को परिभाषित करते हैं, वह लगभग 6,000 वर्ष पुरानी है। लेकिन मनुष्य इससे कहीं अधिक समय से अस्तित्व में हैं – 29 करोड़ वर्ष पुराने खोपड़ी के अवशेष मिले हैं। हम अपने बारे में जो जानते हैं, वह उस ज्ञान के आगे नगण्य है जो हमें अभी खोजना बाकी है। पुरातात्विक साक्ष्य स्पष्ट करते हैं कि हजारों वर्षों तक मनुष्य विभिन्न रूपों में ईश्वर या देवताओं की कल्पना करते रहे – एक वृक्ष, एक जानवर, प्रकृति की एक शक्ति या एक व्यक्ति। फिर, इतिहास के प्रवाह में कहीं, कल्पना का एक बड़ा बदलाव आया। ईश्वर को मूर्त वस्तु के रूप में देखने के बजाय, मनुष्य ने ईश्वर को शब्द के रूप में देखना शुरू कर दिया। तब से लेकर अब तक सब कुछ बदल गया है। अज़ूर ने चारों ओर देखा और पाया कि पेरी ही अकेली ऐसी थी जो नोट्स नहीं ले रही थी। 'क्या तुम मेरे साथ हो, इस्तांबुल की लड़की?'
उनकी पैनी निगाहों के सामने दोबारा शरमाने से बचने की कोशिश करते हुए, पेरी अपनी कुर्सी पर सीधी बैठ गई। 'जी सर।'
उसकी खुली और भरोसेमंद निगाहें कुछ और पलों तक उस पर टिकी रहीं, मानो उसे उम्मीद थी कि वह कुछ अलग कहेगी, और ऐसा न करके उसने उसे निराश कर दिया था। उसने अपनी अगली बात सभी से कही, 'अगर मैं आपको बताऊं कि इस दरवाजे के पीछे ईश्वर प्रतीक्षा कर रहे हैं, आप उन्हें देख नहीं सकते - या उन्हें - लेकिन आप उनकी आवाज सुन सकते हैं, तो आप उनसे क्या सुनना चाहेंगे? आपको मानव जाति के एक सामान्य प्रतिनिधि के रूप में नहीं, बल्कि स्वयं आपको - एक और एकमात्र।'
एडम ने कहा, 'मैं यह सुनना चाहता हूं कि वह मुझसे प्यार करता है।'

'हां, वह मुझसे प्यार करता है और यह जानकर खुश है कि मैं उससे प्यार करती हूं,' किम्बर ने कहा।
‘प्यार…’ कई अन्य लोगों ने भी अपने-अपने शब्दों में यही दोहराया।
केविन ने कहा, 'वह मुझसे सहमत हैं - उनके बारे में यह सारी बातें बकवास हैं।' ‘एक मिनट रुको, भगवान तुम्हें यह बात तब तक नहीं बता सकते जब तक उनका अस्तित्व ही न हो,’ एवी ने कहा। ‘तुम स्वयं अपने ही कथन का खंडन कर रहे हो।’ केविन ने frowning करते हुए कहा, 'मैं तो बस इस बेवकूफी भरे खेल में शामिल हो रहा हूँ।'
अब मोना की बारी थी। 'मैं अल्लाह से यह सुनना चाहती हूँ कि जन्नत सचमुच मौजूद है... और वहाँ अच्छे लोग होंगे और प्रेम और शांति की समृद्धि होगी, इंशाअल्लाह।'
अज़ूर इतनी तेज़ी से पेरी की ओर मुड़ा कि पेरी को अपनी नज़रें हटाने का समय ही नहीं मिला और उसके लिए अपनी आँखें उससे हटाना असंभव हो गया।
‘तुम्हारा क्या कहना है? तुम क्या चाहोगी कि भगवान तुम्हें क्या बताएं – पेरी?’
‘मैं चाहती हूँ कि वह माफी मांगे,’ उसने कहा। उसे खुद नहीं पता था कि यह बात उसके मन में कहाँ से आई, लेकिन उसने अपने शब्दों को रोकने की कोई कोशिश नहीं की।
‘माफी मांगो…’ अज़ूर ने कहा। ‘किस बात के लिए?’
‘सारे अन्याय के बावजूद,’ पेरी ने उत्तर दिया।
'आपका मतलब आपके साथ हुए अन्याय से है या दुनिया के साथ हुए अन्याय से?' पेरी ने इरादे से कहीं अधिक धीमी आवाज़ में कहा, 'दोनों।'
बाहर, पुराने बलूत के पेड़ का एक पत्ता हवा में आखिरी बार लहराया और ज़मीन पर गिर गया। अंदर, छात्र इतने ध्यानमग्न थे कि सन्नाटा लगभग महसूस किया जा सकता था।
सन्नाटे में, अज़ूर ने कहा, 'न्याय! कितना बड़ा शब्द है। किसके अनुसार या किसके आधार पर न्याय? इतिहास के सबसे बड़े कट्टरपंथियों ने न्याय के नाम पर सबसे जघन्य अन्याय किए।'
अज़ूर का लहजा सख्त हो गया। 'जैसा कि आप देख सकते हैं, हमारी चर्चा से ईश्वर के प्रति दो दृष्टिकोण सामने आए हैं - हम केविन को सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। पहला दृष्टिकोण ईश्वर को प्रेम से जोड़ता है। ईश्वर की

खोज में हम प्रेम की खोज कर रहे हैं। फिर पेरी का दृष्टिकोण है, जो न्याय की खोज करता है।'
पेरी ने गहरी साँस ली। उसने अपने दिल की बात कह दी थी और अब अज़ूर ने सबके सामने उसे चीर-फाड़ कर रख दिया था। अगर उसे उसके विचारों के लिए ज़रा भी सहनशीलता नहीं थी, तो उसने उसे बोलने के लिए प्रोत्साहित क्यों किया? इसके अलावा, उस पर कट्टरपंथी होने का आरोप कैसे लग सकता था? अपने पिता की बेटी होने के नाते, भला वह कट्टरपंथी कैसे हो सकती थी!
अज़ूर ने इन मौन विरोधों पर ध्यान नहीं दिया। उसने पेरी की ओर उंगली उठाई। 'तुम्हें अपने उस शक्तिशाली "न्याय" के साथ सावधान रहना चाहिए! यह पूरी तरह संभव है कि तुम्हारे विचारों वाले लोग इस दुनिया को बदतर बना रहे हैं। सभी कट्टरपंथियों में एक बात समान होती है: वे अतीत में जीते हैं। बिल्कुल तुम्हारी तरह!'
लेक्चर जल्द ही खत्म हो गया। पेरी ने आखिरी कुछ मिनट नहीं सुने। उसका ध्यान कहीं और था, सिर में तेज दर्द हो रहा था। वह हिल भी नहीं पा रही थी और किसी की तरफ देख भी नहीं पा रही थी, कहीं उसका दर्द किसी को दिख न जाए। अज़ूर समेत सभी के चले जाने के बाद, वह मोना के साथ अकेली रह गई।
‘हे पेरी,’ मोना ने पेरी के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। ‘मुझे पता है उसने तुम्हारे साथ बदतमीजी की। सच में, उसे नजरअंदाज करो।’
पेरी ने अपना चेहरा नीचे कर लिया, उसकी आँखों में आंसू भर आए। 'मुझे समझ नहीं आ रहा। मैंने सोचा था कि वह कमाल का है। शिरीन हमेशा कहती थी कि वह कमाल का है। लेकिन वह तो इतना...'
'अहंकारी,' मोना ने मदद करते हुए कहा।
वे दोनों साथ में बाहर चले गए। मोना ने कहा, 'तुम सेमिनार छोड़ सकती हो, तुम्हें पता है। अगर वह तुम्हें परेशान करे तो।'
‘हां,’ पेरी ने सिसकते हुए कहा। ‘शायद मैं जाऊंगी। मुझे उससे नफरत है!’

उस रात पेरी को अच्छी नींद नहीं आई। इतने सालों से चिंताओं और भय से बोझिल उसका मन बस एक ही विचार में उलझा हुआ था। लाख कोशिश करने के बावजूद वह अज़ूर के बारे में सोचना बंद नहीं कर पा रही थी। क्या उसने उसके चरित्र का

कोई भयानक पहलू देख लिया था, जिसे वह छुपाए हुए था और वार करने के मौके का इंतज़ार कर रहा था, या क्या यह सब उसका उसे यह दिखाने का तरीका था कि वह उसकी परवाह करता है और उसकी बौद्धिक उन्नति चाहता है?

सुबह उसने मोना और ब्रूनो को एक कैफे में देखा, मेज के दोनों सिरों पर बैठे हुए, उनके चेहरे पर आपसी दुश्मनी का भाव साफ झलक रहा था। अज़ूर ने उनसे अगले असाइनमेंट पर साथ काम करने और पुस्तकालय में एक रात साथ बिताने के लिए कहा था। खाना साझा करना, विचार साझा करना। वह जानबूझकर ऐसा कर रहा था: ब्रूनो को, जिसने मुसलमानों के प्रति अपनी नफरत कभी नहीं छिपाई थी, मोना के साथ काम करने के लिए मजबूर कर रहा था, जो हमेशा अपने धर्म को लेकर संवेदनशील थी। अज़ूर को शायद इस बात का एहसास नहीं था कि उनके बीच तालमेल बिठाने की उसकी योजना, चाहे कितनी भी नेक क्यों न लगे, काम नहीं कर रही थी। दोनों छात्र परेशान थे।
अब तक पेरी को इस बात में कोई संदेह नहीं रहा था कि अज़ूर के सेमिनारों में कुछ भी आकस्मिक नहीं था। सब कुछ सावधानीपूर्वक योजनाबद्ध और सुनियोजित था। प्रत्येक छात्र उसके मानसिक बोर्ड पर एक मोहरा था, एक ऐसे खेल में जो वह केवल स्वयं के विरुद्ध खेलता था। इस आशंका मात्र से ही उसके गाल लाल हो गए कि वह भी महज़ एक मोहरा है। वह इस बात के लिए उससे घृणा करती थी।
एक दिन बाद, पेरी को अपने कबूतरखाने में एक और नोट मिला।
पेरी,
वह लड़की जो एमिली डिकिंसन और उमर खय्याम को पढ़ती है और हर बात को गंभीरता से लेती है; वह लड़की जो अपने देश को पीछे नहीं छोड़ सकती और उसे हर जगह अपने साथ रखती है; वह लड़की जो दूसरों से ज़्यादा खुद से झगड़ती है; वह लड़की जो अपनी सबसे निर्दयी आलोचक है; वह लड़की जो ईश्वर से माफी की उम्मीद करती है जबकि बेवजह साथी मनुष्यों से माफी मांगती रहती है –
आप शायद मुझे एक बुरा इंसान समझते होंगे और सेमिनार में न आने पर विचार कर रहे होंगे।
लेकिन अगर आप अभी हार मान लेते हैं, तो आपको कभी पता नहीं चलेगा कि आपके संदेह सही हैं या नहीं। क्या सत्य की खोज ही आगे बढ़ते रहने के लिए पर्याप्त प्रेरणा नहीं है?

पेरी, हार मत मानो। याद रखो, 'स्वयं को जानने' का साहस करना, 'स्वयं को नष्ट करने' का साहस करने के समान है।
सबसे पहले, हमें खुद को अलग-अलग हिस्सों में बांटना होगा। फिर, उन्हीं हिस्सों को जोड़कर हम एक नए स्वरूप का निर्माण करेंगे।
महत्वपूर्ण बात यह है कि आप हमारे काम पर विश्वास करते हैं।
अपनी जेब में नोट रखे, पेरी ने अपने जूते पहने और दौड़ने के लिए निकल पड़ी। गहरी सांस लेते हुए, उसने अपनी स्वेटशर्ट की ज़िप ठुड्डी तक बंद की और दौड़ना शुरू कर दिया। उसकी मांसपेशियां दुख रही थीं; उसके जोड़ अकड़े हुए और दर्द से कराह रहे थे। सुबह की हवा में, जिसमें नम मिट्टी और पतझड़ के पत्तों की महक थी, दौड़ते हुए उसने गुस्से में एक गाली दी। कितना घमंडी कमीना है, खुद को क्या समझता है! धिक्कार है उसे!
हाँ, पेरी ने अपनी ज़िंदगी में पहली बार खुलकर गालियाँ दीं, ठंडी हवा में हर शब्द उसकी ज़बान पर नमक के दाने जैसा चुभ रहा था। उसने पहले ऐसा क्यों नहीं किया था? गालियाँ देना और भागना एक बेहतरीन मेल था। मज़ेदार। आत्मविश्वास से भरा हुआ।

भविष्यवाणी

इस्तांबुल, 2016
मेहमानों के बीच उस ज्योतिषी के आने की प्रतीक्षा में मेज पर सन्नाटा पसरा हुआ था। खुले दरवाजे से वे मेज़बान की आवाज़ सुन सकते थे, जो उनका स्वागत कर रही थी, मानो कांच की घंटियों की झंकार हो रही हो।
'आप कहां थे?'
‘ट्रैफिक! यह तो एक बुरा सपना है,’ एक पुरुष की तीखी और नाक से निकलने वाली आवाज फूट पड़ी।
‘हमें तो पता ही है,’ उस व्यवसायी महिला ने कहा। ‘आओ, प्यारे, अंदर ऐसे लोग हैं जो तुमसे मिलने के लिए बेताब हैं।’
कुछ ही क्षणों बाद, वह ज्योतिषी प्रकट हुआ, जिसने गहरे रंग की पतलून, सफेद कमीज और एक पुराने जमाने की नीले रंग की पैस्ले डिज़ाइन वाली जैकेट पहनी हुई थी। उसकी हल्की-हल्की दाढ़ी थी, जो शायद पार्टी में आते समय उग आई थी। छोटी और पास-पास स्थित आंखें, नुकीली नाक वाला कोणीय चेहरा और नाममात्र की ठुड्डी, ये सब मिलकर उसे एक शिकार की तलाश में घूमते लोमड़ी जैसा रूप दे रहे थे।
‘इतने सारे मेहमान!’ वह अंदर आते हुए उत्साह से बोला। ‘अगर आप सभी अपना भविष्य जानना चाहते हैं तो मुझे यहीं डेरा डालना पड़ेगा।’
'ज़रूर कीजिए,' उस व्यवसायी महिला ने कहा।
“सिर्फ़ महिलाएं,” कोने में बैठे व्यापारी ने कहा। जहाँ तक उनकी बात थी, दूसरों की किस्मत के किस्से सुनने से ज़्यादा उबाऊ कुछ नहीं हो सकता था। उन्हें अपनी किस्मत खुद बनानी पसंद थी। वे बैंक के सीईओ से निजी बातचीत करना चाहते थे, जबकि उनकी पत्नी अपनी बातें और फालतू की बातें करती रहतीं। “आप महिलाएं सोफे पर क्यों नहीं बैठ जातीं; वहाँ ज़्यादा आराम मिलेगा,” उन्होंने सुझाव दिया।
आज्ञाकारी होकर, व्यवसायी महिला ने ज्योतिषी और अन्य महिलाओं को चमड़े के सोफे की ओर ले गई। उसने एक नौकरानी को इशारा किया, 'हमारी नई मेहमान के लिए कुछ लाओ -'
‘गर्म चाय चलेगी,’ ज्योतिषी ने कहा।

‘क्या? बकवास! आपको पीना ही होगा। मैं ज़ोर दे रहा हूँ।’
‘जब मेरा काम पूरा हो जाएगा,’ उस ज्योतिषी ने कहा। ‘अभी मेरा गिलास बिल्कुल साफ होना चाहिए, जैसे मेरा मन।’
पेरी, जिसने यह बातचीत सुन ली थी, मन ही मन सोचने लगी: चाय का मामला बिल्कुल स्पष्ट नहीं है। न ही यह आदमी। इसी बीच, पुरुष मेहमान एक कलाकृति के नीचे इकट्ठा हो गए थे - दीवार पर बनी एक विशाल प्रागैतिहासिक मछली की मूर्ति, जिसके होंठ लाल रंगे हुए थे और सिर पर झालरदार ओटोमन टोपी थी। आखिरकार सभ्य संगति से मुक्त होकर, वे जी भर के गालियां दे सकते थे और उन्हें इस बात की चिंता नहीं करनी थी कि सिगार का धुआं किस तरफ उड़ाएं। व्यापारी ने भी उसी ओर इशारा किया।
नौकरानी ने कहा, 'एवलादीम*, हमारे लिए कॉन्यैक और बादाम लाओ।'
सबके साथ मेज छोड़कर पेरी सैलून के बीचोंबीच खड़ी रही। हमेशा की तरह ऐसी स्थितियों में वह दुविधा में थी। इस्तांबुल के सामाजिक समारोहों में आम तौर पर होने वाला लिंग-भेद उसे नापसंद था। रूढ़िवादी घरों में, अलगाव इतना ज़्यादा होता था कि पुरुष और महिलाएं पूरी रात बिना एक-दूसरे से बात किए, घर के अलग-अलग हिस्सों में बैठे रहते थे। जोड़े आते ही अलग हो जाते थे और शाम ढलने पर घर से निकलने से पहले फिर मिलते थे।
उदारवादी हलकों में भी यह प्रथा प्रचलित थी। रात के खाने के बाद, महिलाएं एक साथ इकट्ठा होतीं मानो उन्हें एक-दूसरे की ज़रूरत हो, सुकून, सांत्वना और आश्वासन के लिए। वे तरह-तरह के विषयों पर बातें करतीं, और उनके मिजाज बदलते रहते: विटामिन, सप्लीमेंट और ग्लूटेन-मुक्त व्यंजन; बच्चे और स्कूल; पिलाटेस, योग और फिटनेस; सार्वजनिक घोटाले और निजी गपशप... वे मशहूर हस्तियों के बारे में ऐसे चर्चा करतीं जैसे वे उनकी दोस्त हों और अपने दोस्तों के बारे में ऐसे जैसे वे मशहूर हस्तियां हों।
पेरी की बात करें तो, वह ज़्यादातर पुरुषों की बातचीत को महिलाओं की बातचीत से ज़्यादा पसंद करती थी, भले ही पुरुषों की बातचीत के विषय ज़्यादा गंभीर होते थे। पहले वह अपने आप ही पुरुषों के साथ जाकर उनकी बातों में शामिल हो जाती थी, चाहे वो अर्थव्यवस्था हो, राजनीति हो, फुटबॉल हो... उन्हें उसकी मौजूदगी से कोई आपत्ति नहीं होती थी, वे उसे अपने जैसा ही समझते थे, हालांकि उसके सामने वे कभी भी यौन विषयों पर बात नहीं करते थे। उसके इस व्यवहार से दूसरी महिलाओं का ध्यान ज़रूर आकर्षित होता था, भले ही

एड्रेस बुक से न हटाकर उन्हें आभासी अस्तित्व में रहने देना। क्योंकि एक दिन आप भी ऐसे ही नाम और ऐसे ही नंबर बन जाएंगे।
पेरी ने अपनी मां से मिला नंबर डायल किया। वह इंतज़ार करती रही, फोन से आती खामोशी बढ़ती गई; वह पल भर का सस्पेंस, जब आपको पता नहीं होता कि कॉल कनेक्ट होगी या व्यस्तता की आवाज़ आएगी; अंतरराष्ट्रीय कॉलों से पहले आने वाला क्षणिक संदेह।
‘पेरी, क्या तुम आ रही हो?’
वह पीछे मुड़ी, मोबाइल अभी भी उसके कान से लगा हुआ था। अदनान ने अपना सिर बाहर निकाला और दरवाज़े की चौखट पर झुक गया, उसके हाथ में पानी का गिलास था। हालाँकि शादी के अधिकांश समय तक पेरी को यह देखकर राहत मिली थी कि वह शराबी नहीं है और कभी शराबी नहीं बनेगा, फिर भी कभी-कभी वह चाहती थी कि वह अपना संयम खो दे - कभी-कभार ऐसी गलतियाँ करे जिनका उसे अगले दिन पछतावा हो। अदनान ने कहा, 'लोग सोच रहे हैं कि तुम कहां हो।'
उसी क्षण फोन बजने लगा, दूर-दूर तक फैले समुद्रों के पार, इंग्लैंड में, एक ऐसे घर में, जिसकी उसने कल्पना की थी, जो इस घर से कितना अलग था।
पेरी ने कहा, 'मैं एक मिनट में तुम्हारे पास आती हूँ।'
अदनान ने सिर हिलाया, उसके चेहरे पर उदासी छा गई। 'ठीक है, प्रिय। ज्यादा देर मत लगाना।'
उसने उसे मुड़कर भीड़ की ओर जाते देखा, जो उसके जाने के बाद से ज़्यादा शोरगुल भरी और खुशनुमा लग रही थी। उसने गिनती की: एक, दो, तीन… एक क्लिक। शिरिन की आवाज़ सुनने के लिए खुद को तैयार करते हुए उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। आवाज़ तो उसकी ही थी, पर ठंडी, मशीनी सी। उसका वॉइसमेल संदेश। हेलो, आपने शिरीन के फोन पर कॉल किया है। माफ कीजिए, मैं अभी यहाँ नहीं हूँ। अगर आपको कुछ अच्छा कहना हो, तो कृपया टोन के बाद अपना संदेश, नाम और नंबर छोड़ दें। अन्यथा, टोन से पहले बोलें और दोबारा कॉल न करें!
पेरी ने तुरंत फोन काट दिया। उसे मैसेज छोड़ना बिल्कुल पसंद नहीं था, उनकी बनावटी दोस्ती उसे बुरी लगती थी। उसने तुरंत दोबारा नंबर डायल किया। इस बार उसने मैसेज छोड़ा।
‘हाय, शिरिन… मैं पेरी हूँ।’ उसने उसकी आवाज़ में कमजोरी महसूस की। ‘हो सकता है तुम मुझसे बात न करना चाहो, मैं तुम्हें दोष नहीं देती। कई साल हो गए हैं…’ उसने निगलने की कोशिश की, उसका मुँह सूखे चूने जैसा था। ‘मुझे

अज़ूर से बात करनी है। मुझे उससे सुनना ही होगा, कि क्या उसने मुझे माफ़ कर दिया है –’
एक बीप की आवाज़ आई। स्क्रीन खाली हो गई। पेरी वहीं खड़ी रही, अपने मुँह से निकले उन शब्दों के अर्थ को समझने की कोशिश कर रही थी, मानो वे अपने आप ही निकल आए हों। अजीब बात है, उसे हल्कापन महसूस हो रहा था। उसका मन अब चिंताओं, आशंकाओं, रहस्यों और दबी हुई इच्छाओं के शोर से भरा नहीं था। उसने कर दिखाया था। उसने शिरीन को फोन कर दिया था। नतीजा चाहे जो भी हो, वह उसका सामना करने के लिए तैयार थी। उसे रात एक बाहरी शक्ति की तरह नहीं, बल्कि एक आंतरिक शक्ति की तरह महसूस हो रही थी – जो उसके सीने में बढ़ रही थी, फेफड़ों में जल रही थी, नसों में दौड़ रही थी, खुद को प्रकट करने के लिए बेताब थी। उसने सोचा, लंबे समय से दबे डर पर विजय पाने के बाद जो हल्कापन महसूस होता है, वैसा हल्कापन और कहीं नहीं मिलता।

लिमोसिन

ऑक्सफोर्ड, 2001
कड़ाके की ठंड में, शिरिन पहियों वाला गुलाबी सूटकेस खींचते हुए पेरी के कमरे में दाखिल हुई। वह क्रिसमस की छुट्टियों में अपने परिवार से मिलने घर जा रही थी। हर कोई घर जा रहा था: छात्र, शिक्षाविद, कॉलेज के कर्मचारी। पेरी को छोड़कर, जिसने सेमेस्टर के बजट से काफी ज़्यादा खर्च कर दिया था और सस्ती हवाई टिकट खरीदने में बहुत देर कर दी थी, इसलिए उसने छुट्टियों के दौरान ऑक्सफोर्ड में ही रहने का मन बना लिया था।
'क्या आप वाकई मेरे साथ लंदन नहीं आना चाहते?' शिरिन ने लगभग दसवीं बार पूछा।
‘ज़रूर। मैं यहाँ ठीक रहूँगी,’ पेरी ने कहा।
सच तो यह है कि वह वास्तव में 'यहाँ' रहने वाली नहीं थी। ऑक्सफ़ोर्ड में, छात्रों से अपेक्षा की जाती थी कि वे छुट्टियों के दौरान अपने कमरे खाली कर दें ताकि कॉलेज की सुविधाओं का उपयोग सम्मेलन में भाग लेने वालों या पर्यटकों के लिए किया जा सके। जिन लोगों को रुकना ज़रूरी था, जैसे कि वह खुद, उनके लिए कॉलेज ने अस्थायी और छोटे वैकल्पिक आवास उपलब्ध कराए थे। शिरिन पेरी के और करीब आई और उसकी आँखों में गौर से देखने लगी। ‘देखो, माउस, मैं सच कह रही हूँ। अगर तुम्हारा मन बदल जाए, तो मुझे फोन कर देना। माँ तुमसे मिलकर बहुत खुश होंगी। जब मेरे दोस्त घर आते हैं तो वो बहुत खुश होती हैं – वो घंटों मेरी शिकायत कर सकती हैं। हमारा परिवार थोड़ा अजीब है। हम आपस में खूब लड़ते हैं, लेकिन बाहर वालों के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं। हम तुम्हारे साथ भी अच्छा बर्ताव करेंगे।’
पेरी ने कहा, 'मैं वादा करती हूं कि अगर मुझे बहुत अकेलापन महसूस होगा तो मैं फोन करूंगी।'
ठीक है। याद रखना, जब मैं वापस आऊँगी, तो हम यहाँ से निकल रहे होंगे। अपना खुद का घर लेने का समय आ गया है।
पेरी को थोड़ी उम्मीद थी कि शिरिन यह बात भूल गई होगी, लेकिन ऐसा नहीं था। ऑक्सफ़ोर्ड में अनगिनत छात्रों ने यही सफ़र तय किया था: कॉलेज जीवन के घनिष्ठ आलिंगन में शुरुआत करना, जहाँ स्काउट्स, डाइनिंग हॉल, लाइब्रेरी और

कॉमन रूम जैसी सुविधाओं के साथ सब कुछ अपेक्षाकृत आसान था; धीरे-धीरे घुटन महसूस करना; संभावित फ्लैटमेट्स का एक छोटा समूह बनाना और दूसरे वर्ष में बाहर निकल जाना। कई छात्रों को ऐसा करना ही पड़ा क्योंकि उनके कॉलेज सभी छात्रों के लिए पर्याप्त आवास उपलब्ध नहीं करा सकते थे।
अब तक, जब भी शिरिन ने इस विषय को उठाया था, पेरी ने विनम्रतापूर्वक और दृढ़ता से मना कर दिया था। लेकिन शिरिन हमेशा की तरह दृढ़ थी, उसका जोश मानो सबको प्रभावित कर रहा था। एक एस्टेट एजेंट द्वारा दिखाए गए घरों की तस्वीरें दिखाते हुए, उसने पेरी को आश्वस्त किया कि उसके लिए हर महीने थोड़ा अधिक किराया देने में कोई फर्क नहीं पड़ता। बदले में, शिरिन को अपना निजी स्थान और मन की शांति मिलेगी। चूंकि उसे अकेलापन बिल्कुल पसंद नहीं था और वह कभी भी अकेले फ्लैट नहीं ले सकती थी, इसलिए अगर पेरी उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लेती है, तो शिरिन उसकी ऋणी होगी, न कि इसके विपरीत। पेरी ने बेचैनी से कहा, 'मैं इस बारे में सोचूंगी।'
‘सोचने जैसी कोई बात नहीं है। कॉलेज जीवन तो नए छात्रों के लिए है। यहाँ सिर्फ वही लोग टिकते हैं जो आगे बढ़ने की हिम्मत नहीं कर पाते... और फिर वे किताबी कीड़े।’
या फिर वे लोग जिनके पास पैसे की कमी है।
‘पैसा?’ शिरीन ने उसी तिरस्कार भरे लहजे में कहा, जैसा वह अप्रिय लोगों या अपरिहार्य परेशानियों, जैसे कि फटे हुए सीवर और बिना इकट्ठा किए गए कचरे के लिए रखती थी। ‘यह आपकी सबसे कम चिंता होनी चाहिए। इसे मुझ पर छोड़ दीजिए।’
शिरिन ने समय-समय पर इशारे किए थे, हालांकि उसने कभी खुलकर नहीं कहा था, कि उसका परिवार संपन्न है। बेशक उसके जीवन में कठिनाइयाँ तो थीं, लेकिन पैसों की कमी उनमें से एक नहीं थी। पेरी को लगा कि लंदन में जिस खस्ताहाल और जर्जर मकान के बारे में वह बार-बार बात करती थी, वह वैसा नहीं था। शिरिन पूरा किराया देने को तैयार थी। पेरी को बस इतना करना था कि वह अपनी किताबें और कपड़े कुछ बक्सों में पैक करे और इस नए सफर पर उसके साथ चल पड़े।
‘ठीक है, डार्लिंग, मुझे जाना है।’ शिरिन ने पेरी के दोनों गालों पर चुंबन किया और उसे खुशबू के बादल में सराबोर कर दिया। ‘नया साल मुबारक हो! 2002 का बेसब्री से इंतजार है! मुझे लगता है कि यह हमारे जीवन का सबसे अच्छा समय होगा।’

पेरी ने अपनी डेस्क पर रखी पानी की बोतल उठाई और अपनी दोस्त को सामने वाले लॉज तक ले गई।
प्रवेश द्वार पर मुख्य कुली सावधान मुद्रा में खड़ा था। पूर्व सैन्य अधिकारी होने के नाते, वह सभी छात्रों को नाम से जानता प्रतीत होता था। उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा, 'शिरिन, आपकी छुट्टियाँ अच्छी रहें, अगले साल मिलते हैं।' 'और पेरी, आपको भी।'
पेरी को लगा कि जब उसने उससे अभिवादन किया तो उसकी आवाज़ में कुछ ज़्यादा ही गर्मजोशी थी। शायद उसे उसके लिए बुरा लग रहा था। अकेली छात्रा जो घर नहीं जा रही थी।
बाहर एक काली लिमोसिन ड्राइवर के साथ खड़ी थी। शिरिन को ऊँची एड़ी के जूते पहने, थोड़ा लड़खड़ाते हुए और सूटकेस लिए हुए जाते देख पेरी के मन में कई तरह की भावनाएँ उमड़ रही थीं। शिरिन के साथ एक ही घर में रहने से उसकी सहेली के दबंग व्यक्तित्व से पैदा हुआ डर और भी बढ़ सकता था। वैसे भी, क्या वह सच में शिरिन की – या किसी की भी – एहसानमंद होना चाहती थी? और फिर भी, क्या अपना खुद का घर होना शानदार नहीं होगा?
जैसे ही कार आगे बढ़ी, पेरी ने एक पुरानी तुर्की परंपरा का पालन करते हुए, कार के पीछे पानी उछाला, "पानी की तरह जाओ, पानी की तरह वापस आओ, मेरे दोस्त।"

हिमखंड

ऑक्सफोर्ड, 2001
त्योहारी मौसम बड़े उत्साह के साथ नज़दीक आ रहा था। इस्तांबुल में नए साल के शांत समारोहों की आदी पेरी, पहले तो भव्य तैयारियों को देखकर चकित रह गई, फिर उसे आनंद आया - सड़कें जगमगाती रोशनी से सजी मेहराबदार आकृतियों से सजी थीं, दुकानें उपभोक्ता वस्तुओं से भरी हुई थीं, और कैरल गायक अंधेरे में जुगनुओं की तरह चमकती लालटेन लिए हुए थे।
छात्रों के बिना ऑक्सफ़ोर्ड मानो अपनी आत्मा खो बैठा था; क्रिसमस पर अकेले रहना पेरी के लिए और भी अकेलापन भरा था, जो आम तौर पर अकेले रहना पसंद करती थी। हर दिन वह तीन मेज़ों वाले एक चीनी रेस्तरां में अकेले खाना खाती थी। खाना अच्छा था, लेकिन अजीब तरह से स्वाद में उतार-चढ़ाव रहता था। शायद रसोइया द्विध्रुवी था, वह सोचती थी, जिसके मिजाज में बदलाव खाने में झलकते थे। कुछ दिन तो उसे खाना खाने के बाद तबीयत खराब महसूस होती थी।
वह टू काइंड्स ऑफ इंटेलिजेंस में अपनी अंशकालिक नौकरी पर वापस चली गई। मालिकों ने बताया कि छुट्टियों के मौसम में ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए उन्होंने वर्षों से खिड़की की सजावट के कई तरीके आजमाए थे - एक स्नोमैन कुर्सी पर बैठा किताब पढ़ रहा था, छत से अक्षर लटक रहे थे। इस बार वे कुछ अलग करना चाहते थे।
पेरी ने कहा, 'वर्जित पुस्तकों का क्रिसमस ट्री कैसा रहेगा?' ज्ञान के वृक्ष की तरह, जिस पर वर्जित फल लगे थे, उनका यह वृक्ष भी दुनिया में कहीं प्रतिबंधित पुस्तकों से सजा होगा।
उन्हें यह काम इतना पसंद आया कि उन्होंने उसे सौंप दिया। पेरी तल्लीन होकर दुकान की खिड़की के बीचोंबीच एक चांदी जैसा पेड़ सजा दिया। उसकी शाखाओं पर उसने एलिस इन वंडरलैंड, 1984, कैच-22, ब्रेव न्यू वर्ल्ड, लेडी चैटरलीज़ लवर, लोलिता, द नेकेड लंच, एनिमल फार्म... जैसी किताबें टांग दीं। अकेले तुर्की से प्रतिबंधित किताबों की सूची इतनी लंबी थी कि कई शाखाओं को उनके लिए समर्पित करना पड़ा और फिर भी यह काफी नहीं था। काफ्का, बर्टोल्ट ब्रेख्त, स्टीफन ज़्विग और जैक लंदन के साथ-साथ उमर खय्याम, नाज़िम हिकमत

और फातिमा मर्निसी भी शामिल थे। उसने शाखाओं पर अपने तैयार किए हुए चमकदार कार्ड बिखेर दिए: 'प्रतिबंधित', 'निंदा', 'जला दिया गया'।
जैसे-जैसे वह बोलती गई, उसका मन भटक गया और उसे एक और क्रिसमस का समय याद आ गया – वह शायद दस या ग्यारह साल की रही होगी – जब मेन्सुर एक प्लास्टिक का क्रिसमस ट्री घर लाया था। पड़ोस के किसी भी घर में ऐसा पेड़ नहीं था, हालांकि कई दुकानों और सुपरमार्केट में ऐसे पेड़ प्रदर्शित थे।
जब पेड़ को दहलीज से उठाकर उसके चुने हुए कोने तक ले जाया जा रहा था, तो उससे प्लास्टिक की सुइयां झड़ती गईं, ठीक वैसे ही जैसे परियों की कहानी का बच्चा घर लौटने का रास्ता ढूंढने के लिए ब्रेड के टुकड़े बिखेरता है। फिर भी, पेरी और मेन्सुर ने उसे बड़े उत्साह से सजाया - चांदी, सोना और नीले रंग की झालरें। जब उनके पास सजावट का सामान खत्म हो गया, तो उन्होंने खुद कुछ चीजें बनाईं: रंगे हुए अखरोट, स्प्रे किए हुए पाइनकोन, बोतल के ढक्कन और कॉर्क से बने जानवर। उनके पेड़ की हर चीज सस्ती और बेमेल थी; फिर भी वे उसे बहुत प्यार करते थे।
जब सेल्मा काम निपटाकर लौटी तो उसका चेहरा उतर गया। 'इस चीज़ की क्या ज़रूरत है?'
'नया साल आ रहा है,' मेन्सुर ने कहा, इस उम्मीद में कि शायद उनकी पत्नी को इस बात की जानकारी न हो।
'यह एक ईसाई प्रथा है,' सेल्मा ने कहा।
‘क्या हमें थोड़ी सी खुशी का भी हक नहीं है?’ मेन्सुर ने आंखें घुमाईं। ‘तुम्हें लगता है कि अगर मैं थोड़ा सा भी आनंद ले लूं तो वह मुझसे प्यार नहीं करेगा?’
‘जब तुम अल्लाह को प्रसन्न करने के लिए कुछ नहीं करते, तो अल्लाह तुमसे प्यार क्यों करेगा?’ सेल्मा ने कहा।
पेरी जानती थी कि उसके पिता ने उसे खुश करने के लिए यह विवादित शंकुधारी वृक्ष खरीदा था, इसलिए उसे माहौल में व्याप्त तनाव के लिए खुद को जिम्मेदार महसूस हुआ। उसे स्थिति को सुधारने का कोई रास्ता निकालना ही था। उस रात उसने सबके सो जाने का इंतजार किया और फिर सुबह तड़के तक जागकर अपनी योजना पर अमल किया।
अगली सुबह जब नलबंतोग्लस अपने बैठक कक्ष में दाखिल हुए, तो उन्होंने एक अनोखे ढंग से सजा हुआ सदाबहार वृक्ष देखा। सेल्मा की प्रिय प्रार्थना

माला, चीनी मिट्टी की बिल्लियाँ और रेशमी दुपट्टे, जिन्हें रिबन की तरह फाड़ दिया गया था, उसकी शाखाओं को सजा रहे थे। पेड़ के शीर्ष पर एक छोटी पीतल की मस्जिद थी, और उसके बगल में हदीस की एक किताब बड़े सलीके से रखी हुई थी।
पेरी ने मुस्कुराते हुए कहा, 'देखो, अब यह ईसाई धर्म के अनुरूप नहीं रहा।' अपनी माँ की प्रतिक्रिया का इंतज़ार करते हुए मानो दुनिया थम सी गई थी। सेल्मा का मुँह अविश्वास से खुला रह गया, मानो वह कुछ कहने ही वाली थी। लेकिन इससे पहले कि वह कुछ बोल पाती, उनके पीछे खड़ा मेन्सुर खिलखिलाकर हंसने लगा, उसके कंधे फड़कने लगे। अपने पति की हंसी सुनकर सेल्मा का चेहरा उतर आया। वह बाहर चली गई।
आज तक पेरी को यह नहीं पता था कि उसकी माँ ने क्या कहा होता और उसने वास्तव में उसके इस्लामी क्रिसमस ट्री के बारे में क्या सोचा था।

नए साल की पूर्व संध्या से एक दिन पहले, पेरी फिर से किताबों की दुकान पर थी। एक बुजुर्ग महिला के अलावा, जो साहित्य से ज़्यादा गर्माहट पाने के लिए वहाँ आई थी, कोई ग्राहक नहीं था। दुकान के मालिक एक दोस्त से मिलने गए हुए थे, और बाकी कर्मचारियों ने भी छुट्टी ले रखी थी।
पेरी ने अलमारियों से धूल झाड़ी, कॉफी बनाई, फर्श साफ किया, बीन्स के थैलों को व्यवस्थित किया, स्टॉक की जाँच की; वह उस जगह पर सुकून से थी जिससे उसे लगाव हो गया था। अपने काम पूरे करके, उसने ए. ज़ेड. अज़ूर की एक किताब उठाई और एक आरामकुर्सी में तकिए समेटकर बैठ गई। उसने दुकान से उनकी सारी पुरानी किताबें निकाल ली थीं: नौ प्रकाशन जिनके शीर्षक आकर्षक थे और जिनके कवर ज्यामितीय आकृतियों से बने थे। बिक्री के आंकड़े बताते थे कि वे खूब बिके थे। वह अब उनकी शुरुआती रचनाओं में से एक पढ़ रही थी: द गाइड टू रिमेनिंग परप्लेक्स्ड।
बुजुर्ग महिला धीरे-धीरे सामने वाली कुर्सी पर जा बैठी, उसकी पलकें झुकी हुई थीं और सिर झुका हुआ था। जल्द ही वह सो गई। पेरी ने कैश काउंटर के नीचे से एक कंबल निकाला और धीरे से उसे ओढ़ा दिया। समय धीमा और खिंचा हुआ सा

लगने लगा, अनातोलिया के शंकुधारी वृक्षों से निकलने वाले चीड़ के गोंद की तरह एक रहस्यमयी एहसास। ब्रह्मांड संभावनाओं से भरा है, यह एहसास उसके मन में एक मादक औषधि की तरह दौड़ रहा था। किताबों से घिरी हुई, जिन्हें वह पढ़ना चाहती थी, और अज़ूर के लेखन के साथ - जो आधा उत्तेजित करने वाला, आधा सुकून देने वाला था - उसे वर्षों में सबसे अधिक शांति का अनुभव हुआ। सच है, वह अब भी उससे नाराज़ थी, लेकिन वह उसकी किताबों से नाराज़ नहीं रह सकती थी। और वह उसके सेमिनार के बारे में सोचना बंद नहीं कर पाई थी। वह ऐसा कर ही नहीं पाई थी।
जैसे ही उसने एक अध्याय समाप्त किया, पीतल की घंटी की झंकार के साथ दुकान का दरवाजा खुल गया। ठंडी हवा का एक झोंका अंदर आया और उसके साथ ही प्रोफेसर अज़ूर भी प्रवेश कर गए, जो एक लंबे, गहरे रंग के कोट और केसरिया स्कार्फ में थे, जिन्हें देखकर कोई भी बौद्ध भिक्षु ईर्ष्या कर बैठता। मखमली फेडोरा टोपी, जो उनके बेकाबू बालों को बड़ी मुश्किल से संभाल पा रही थी, उनके आकर्षक व्यक्तित्व को पूरा कर रही थी।
‘क्या हम अंदर आ सकते हैं?’ उसने किसी विशेष व्यक्ति को संबोधित किए बिना कहा।
जैसे ही वह उठी और दरवाजे की ओर दौड़ी, फर्श की दरार में उसका पैर फंस गया, तब पेरी को समझ आया कि 'हम' से उसका क्या मतलब था। उसके बगल में, घने बालों वाला, नुकीली थूथन वाला, काले, महोगनी और सफेद रंग का एक कॉली कुत्ता खड़ा था।
अज़ूर की भौंहें तन गईं। 'हाय, पेरी। कितना बड़ा सरप्राइज! तुम यहाँ क्या कर रही हो?'
मैं किताबों की दुकान में अंशकालिक काम करता हूँ।
‘शानदार! तो मैं स्पिनोज़ा का क्या करूँ?’
'माफ़ करें?'
उन्होंने कहा, 'मेरा कुत्ता। बाहर बहुत ठंड है।'
‘ओह, कोई बात नहीं, आप उसे अंदर ला सकते हैं,’ पेरी ने कहा, और फिर दुकान में मालिकों की कुत्तों के प्रति नापसंदगी को याद करके उसने अपना विचार बदल दिया। ‘शायद… स्पिनोज़ा… प्रवेश द्वार पर आपका इंतज़ार कर सकता है?’

लेकिन प्रोफेसर अज़ूर पहले ही अपने कुत्ते के साथ अंदर जा चुके थे, दोनों ने अपना सिर ऊपर उठा रखा था, उनकी आंखें सीधे आगे की ओर थीं, मानो दो मिस्र के चित्रलिपि हों।
‘मैं काफी समय से यहां नहीं आया था,’ अज़ूर ने कमरे का जायजा लेते हुए कहा। ‘यह जगह बदल गई है। यह पहले से बड़ी और अधिक रोशनीदार लग रही है।’
पेरी ने कहा, 'हमने कुछ चीज़ों को फिर से व्यवस्थित किया और पुराने भारी- भरकम फर्नीचर को हटा दिया।' उसने देखा कि स्पिनोज़ा इधर-उधर सूंघ रहा था, फिर सबसे नरम बीन बैग पर बैठ गया, उसके बाल ज़मीन पर फैल गए।
अगर प्रोफ़ेसर अज़ूर ने उसकी बेचैनी को महसूस किया भी, तो उन्होंने इसे ज़ाहिर नहीं किया। उनकी आवाज़ अपने विशिष्ट अंदाज़ में कांप रही थी और वे पहले ही दूसरे विषय पर आ चुके थे। 'वैसे, खिड़की में दिख रहा वह निषिद्ध वृक्ष बहुत प्यारा है। बढ़िया विचार है।'
पेरी को गर्व का अनुभव हुआ। वह उसे बताना चाहती थी कि यह उसकी रचना है, लेकिन वह नहीं चाहती थी कि वह सोचे कि वह अपनी बड़ाई कर रही है। इसके बजाय, उसने सबसे पहले जो बात उसके मन में आई, वही कह दी। 'क्या आप कोई खास किताब ढूंढ रहे थे?'
‘अभी नहीं,’ अज़ूर ने कहा। ‘मेरी प्रचारक ने मुझे आकर कुछ प्रतियों पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा है। मैंने उनसे वादा किया है कि मैं आऊंगा।’ उनकी नज़र उस कुर्सी पर पड़ी जिस पर पेरी बैठी थीं। ‘यह जानी-पहचानी लग रही है। क्या आप इसे पढ़ रही हैं?’
पेरी ने अपने पैर हिलाए। 'हां, अभी शुरू ही किया है।'
वह उसके बोलने का इंतज़ार करता रहा। वह भी इंतज़ार करती रही, मानो उन्हें अभी तक वह भाषा नहीं मिली हो जिसमें वे सचमुच संवाद कर सकें। अंत में उसने मेज की ओर इशारा करते हुए कहा, 'आप बैठ जाइए, कृपया? मैं आपकी किताबें ढूंढती हूँ।'
वहाँ बहुत सारी किताबें थीं। सात किताबें स्टॉक में थीं; बाकी दो का ऑर्डर दोबारा दिया गया था। हर किताब की दस से पंद्रह प्रतियाँ थीं, इतनी किताबें थीं कि एक छोटा सा टावर बनाया जा सकता था। प्रोफेसर अज़ूर ने एक कुर्सी खींची, अपना कोट उतारा, एक फाउंटेन पेन निकाला और लगन से हस्ताक्षर करने लगे। वह उनके लिए कॉफी लाई और एक कोने में बैठकर उन्हें देखती रही।

ढेर को आधा खोलते-खोलते, अज़ूर रुक गया और अपने चश्मे के ऊपर से उसे हैरानी भरी नज़रों से देखने लगा। 'तुम अपने परिवार के साथ नया साल क्यों नहीं मना रही हो?'
पेरी ने हाथ से हल्के से इशारा करते हुए कहा, "मैं यात्रा नहीं कर पाई," मानो इस्तांबुल दरवाजे के बाहर इंतजार कर रहा हो। "लेकिन कोई बात नहीं, क्रिसमस हमारे लिए कोई बड़ी बात नहीं है।"
एक लंबी, भेदक निगाह। 'क्या आप मुझे यह बता रहे हैं कि आपको इस बात का दुख नहीं है कि आप छुट्टियां अपने परिवार के साथ नहीं बिता सके?'
‘मेरा मतलब वो नहीं था।’ वो उसे महीनों से जानती थी, लेकिन उसे अब भी लग रहा था कि उसने उसे जानबूझकर गलत समझा है। ‘बस ये मौसम ईसाई छात्रों के लिए ज़्यादा महत्वपूर्ण है।’ वो थोड़ी देर रुकी। क्या उसने कुछ गलत कह दिया था? वो हमेशा अपने शब्दों को लेकर बहुत सावधान रहती थी, मानो बर्फ पर चल रही हो, हर थोड़ी देर में रुककर ये देखती रहती थी कि कहीं उसके पैरों के नीचे की ज़मीन फट तो नहीं गई – अभी तक तो नहीं।
उसने उसे गौर से देखा, उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी जो मानो उसे भेद रही हो। 'क्या तुम्हारे माता-पिता मुसलमान हैं, और धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं?'
पेरी ने कहा, 'मेरी मां और एक भाई तो हैं। लेकिन मेरे पिता और मेरा दूसरा भाई नहीं हैं।'
‘अहा, क्या गजब का अंतर है!’ अज़ूर ने उस विजयी भाव से कहा, मानो उसे पहेली का वह खोया हुआ टुकड़ा मिल गया हो जो हर समय उसकी आँखों के सामने था। ‘मुझे अंदाज़ा लगाने दीजिए। आप अपने पिता और अपने बड़े भाई के बहुत करीब हैं।’ उसने मुश्किल से अपनी बात कही। 'उह, हाँ, यह सच है।'
सिर हिलाते हुए वह वापस किताबों की ओर लौट गया।
‘आपका क्या?’ पेरी ने झिझकते हुए पूछा। ‘मेरा मतलब है, क्या आप अपने परिवार के साथ जश्न मना रहे हैं?’
ऐसा लग रहा था मानो वह सुन ही नहीं रहा हो, बस अपना नाम लिखता जा रहा था, और उसने अपनी बात दोहराने की हिम्मत नहीं की। कुछ मिनटों के लिए, या यूँ कहें कि कुछ देर के लिए, किताबों की दुकान में केवल एक कुत्ते के खर्राटे, एक बुजुर्ग ग्राहक की टिक-टिक, एक लंबी घड़ी की आवाज़ और उसके फाउंटेन पेन की खरोंच की आवाज़ ही सुनाई दे रही थी। उसने देखा कि वह अपना जबड़ा कस रहा है,

उसकी आँखें पल भर के लिए बेकाबू हो गईं। उसके आस-पास सब कुछ क्षणभंगुर, अस्थिर और गतिमान लग रहा था। न अतीत, न भविष्य, बस यही वर्तमान क्षण, जो पहले ही बीत चुका था।
उन्होंने कॉफी की एक घूंट ली। 'स्पिनोज़ा अब मेरा परिवार है।'
अब। जिस तरह से उसने उस शब्द का उच्चारण किया, उससे पेरी को ऐसा लगा मानो उसने कोई ऐसा ढक्कन खोल दिया हो जिसे छूने का उसे कोई अधिकार नहीं था और उसके अंदर छिपी उदासी को देख लिया हो। 'मुझे माफ कर दो,' उसने कहा।
कलम रुक गई। ‘चलो एक सौदा करते हैं, तुम और मैं,’ अज़ूर ने कहा। ‘तुम मुझसे इतनी बार माफ़ी मांग चुके हो कि अब से, चाहे तुम कुछ भी भयानक कर दो, मुझे तुम्हारी माफ़ी नहीं सुननी है। वादा करो?’
उसे अपनी पसलियों में अपने दिल की धड़कन महसूस हो रही थी, हालांकि उसे ठीक-ठीक पता नहीं था कि ऐसा क्यों हो रहा था; यह किसी नाजायज समझौते जैसा लग रहा था। फिर भी, उसने जरा भी संकोच नहीं किया। 'मैं वादा करती हूँ।'
‘बहुत बढ़िया!’ किताबों के ढेर पर हस्ताक्षर करने के बाद, वह उठ खड़ा हुआ। ‘कॉफी के लिए धन्यवाद।’
उन्होंने कहा, 'मैं किताबों पर स्टिकर लगा दूंगी। हस्ताक्षरित प्रतियां।' ‘धन्यवाद।’ उसने पेरी की ओर मुस्कुराते हुए कहा।
लंबे बालों वाले प्रोफेसर और लंबे बालों वाली कॉली कुतिया, वर्षों की दोस्ती से परिपूर्ण उनके शरीर एक सामंजस्यपूर्ण तालमेल में दरवाजे की ओर बढ़े। जैसे ही अज़ूर ने दरवाज़े की मूठ पकड़ी, वह रुका, मुड़ा और उसकी ओर देखा। 'सुनो, हम एक अनौपचारिक रात्रिभोज कर रहे हैं, कुछ पुराने दोस्त, कुछ सहकर्मी, सहायक, उनमें से एक लगभग तुम्हारी उम्र का है, अच्छा भी हो सकता है, उबाऊ भी। लेकिन नए साल की पूर्व संध्या पर तुम्हें अकेला नहीं रहना चाहिए। इंग्लैंड में विदेशियों को एक अजीब तरह से आज़ादी का रोमांच और साथ ही उदासी का अकेलापन महसूस कराने का अनोखा तरीका है। क्या तुम हमारे साथ आना चाहोगी?'
इससे पहले कि वह कोई जवाब सोच पाती, उसने अपना नोटपैड निकाला, एक पन्ना फाड़ा और उस पर पता और समय लिख दिया।
‘सोचिए, कोई दबाव नहीं है। अगर आपका आने का मन करे, तो आ जाइए। कुछ भी साथ मत लाइए। न फूल, न शराब, न टर्किश डिलाइट, बस आप खुद आइए।’

उसने दरवाजा खोला और बाहर कदम रखा। बर्फ गिरनी शुरू हो गई थी। बर्फ के टुकड़े हवा में बेतरतीब ढंग से घूम रहे थे, मानो वे आसमान से गिरने के बजाय जमीन से ही चक्कर लगाते हुए ऊपर उठ रहे हों। ऑक्सफोर्ड किसी स्नो ग्लोब में बसे शहर जैसा लग रहा था।
'शानदार,' अज़ूर ने अपने कुत्ते से, खुद से या पेरी से कहा।
दरवाजे से उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'बहुत सुंदर।'
फिर उसने कुछ ऐसा किया जिसकी किसी को उम्मीद नहीं थी। हालांकि देर रात हो चुकी थी और ठंड थी, और वह जा रहा था और वह अपने स्वेटर में बाहें मोड़े कांप रही थी, फिर भी वह उसकी किताब के बारे में बोलने लगी, खुद को रोक नहीं पा रही थी, उसकी सांसों से भाप के बादल निकल रहे थे: 'आप कहते हैं कि हमारा जीवन उन अनेक संभावित जीवनों में से केवल एक है जो हम जी सकते थे। और मुझे लगता है कि हम सभी यह बात गहराई से जानते हैं। खुशहाल शादियों और सफल करियर में भी संदेह का एक अंश होता है। हम यह सोचने से खुद को रोक नहीं पाते कि अगर हमने कोई दूसरा रास्ता चुना होता... या कई रास्ते, हमेशा एक से अधिक! तो हमारा जीवन कैसा होता! और आप हमें बताते हैं कि ईश्वर के बारे में हमारी धारणा अनेक धारणाओं में से केवल एक है। तो फिर ईश्वर के बारे में कट्टर होने का क्या मतलब है - चाहे हम आस्तिक हों या नास्तिक?'
'बिल्कुल सही,' अज़ूर ने कहा, उसकी निगाहें उसके चेहरे पर घूम गईं, उसे उससे इस तरह की प्रतिक्रिया सुनकर आश्चर्य और खुशी दोनों हुई।
पेरी ने आगे कहा, ‘लेकिन आपको यह जानना होगा कि इस दुनिया में मेरी माँ जैसी कई महिलाएं हैं, जिनकी सुरक्षा की भावना उनके विश्वास से आती है। उन्हें पूरा यकीन है कि ईश्वर की केवल एक ही व्याख्या है: उनकी अपनी। इन लोगों के पास पहले से ही बहुत सारी परेशानियाँ हैं, और आप उनसे उनका एकमात्र सहारा, उनका विश्वास छीनना चाहते हैं। मेरी माँ... मेरा मतलब है, कभी-कभी मैं उन्हें देखती हूँ और मुझे उनमें इतना दुख दिखाई देता है कि मैं महसूस कर सकती हूँ कि अगर उनके पास अपने विश्वास का सहारा न होता तो वे पागल हो जातीं।’
उनके बीच रेशम के पंखे की तरह कोमल सन्नाटा छा गया।
‘मैं समझता हूँ। लेकिन हर तरह का निरंकुशवाद कमजोरी है,’ अज़ूर ने कहा। ‘पूर्ण नास्तिकता हो या पूर्ण आस्तिकता। मेरे विचार से, पेरी, दोनों ही

समान रूप से समस्याग्रस्त हैं। मेरा काम नास्तिकों में आस्था का संचार करना और आस्तिकों में संशयवाद का संचार करना है।’
'लेकिन क्यों?'
अज़ूर की निगाहें उस पर टिक गईं। 'क्योंकि मैं शुद्धतावादी नहीं हूँ। यह बौद्धिक प्रगति में बाधा डालता है।' एक बर्फ का टुकड़ा उसकी टोपी पर आकर रुका, दूसरा उसके बालों में। 'देखो, कुछ विद्वान विभाजन और वर्गीकरण करने में रुचि रखते हैं; दूसरे, मिश्रण और एकीकरण में। विभाजन करने वाले और समूहीकरण करने वाले। जबकि मैं अपनी सभी इंद्रियों को जागृत रखना चाहता हूँ - तुम्हारे विशाल ऑक्टोपस की तरह। हमें एक केंद्रीकृत मस्तिष्क पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। आइए कविता को दर्शन में और दर्शन को सीधे अपने दैनिक जीवन में शामिल करें। आज की समस्या यह है कि दुनिया सवालों से ज़्यादा जवाबों को महत्व देती है। लेकिन सवाल कहीं ज़्यादा मायने रखने चाहिए! मुझे लगता है कि मैं शैतान को ईश्वर में और ईश्वर को शैतान में लाना चाहता हूँ।'
‘मैं – हम… हम ऐसा कैसे कर सकते हैं?’
जहां कहीं भी हमें द्वैत दिखाई देगा, हम उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ देंगे। हम एकरूपता से बहुलता और सरलता से जटिलता का निर्माण करेंगे। 'इसका क्या मतलब है?'
इसका मतलब है कि हम सब कुछ बिगाड़ देंगे, हम सीमाओं को धुंधला कर देंगे। हम असंगत विचारों और असंभावित लोगों को एक साथ लाएंगे। कल्पना कीजिए, एक इस्लाम विरोधी को एक मुस्लिम महिला से प्यार हो जाता है... या एक यहूदी विरोधी एक यहूदी का सबसे अच्छा दोस्त बन जाता है... और यह सिलसिला तब तक चलता रहेगा जब तक हम श्रेणियों को उनके वास्तविक स्वरूप में नहीं समझ लेते: हमारी कल्पना की उपज। जो चेहरे हम दर्पण में देखते हैं, वे वास्तव में हमारे नहीं हैं। केवल प्रतिबिंब हैं। हम अपने सच्चे स्वरूप को केवल दूसरों के चेहरों में ही पा सकते हैं। पूर्णतावादी शुद्धता का सम्मान करते हैं, हम संकरता का। वे हर किसी को एक ही पहचान में सिमटना चाहते हैं। हम इसके विपरीत प्रयास करते हैं: हर किसी को सौ वस्तुओं, हज़ार धड़कते दिलों में समेटना। अगर मैं इंसान हूँ, तो मुझे हर जगह के लोगों के लिए महसूस करने के लिए पर्याप्त विशाल होना चाहिए। इतिहास को देखिए। जीवन का

अवलोकन कीजिए। यह सरलता से जटिलता की ओर विकसित होता है। इसका उल्टा नहीं, वह तो पतन होगा।
पेरी ने कहा, 'लेकिन क्या यह बहुत ज्यादा नहीं है? लोगों को सरलीकरण की जरूरत है।'
'बकवास है, मेरी प्यारी। हमारे दिमाग तो घुमाव-फिराव के लिए ही बने हैं!' फिर कहने के लिए कुछ नहीं बचा था। उसने विदाई में हाथ उठाया और उसने सिर हिलाया। इस तरह वे दोनों, आदमी और कुत्ता, अपने सामने फैले अंधेरे में चले गए। पेरी का पेट कमजोर हो रहा था, उसकी सांसें अनियमित थीं; वह एक ही समय में उत्साहित और भयभीत दोनों थी, किसी अनजानी चीज़ के कगार पर खड़ी थी। उसने उन्हें तब तक देखा जब तक वे कोने से मुड़ नहीं गए। उसके लिए यह कोई साधारण क्षण नहीं था। प्यार में पड़ने का पल हमेशा पता चल जाता है।

मानसिक

इस्तांबुल, 2016
कमरे में लौटते ही पेरी को कॉफी, कॉन्यैक और सिगार की महक हवा में फैली महंगी इत्रों की खुशबू के साथ अजीब तरह से घुलमिलती हुई महसूस हुई। वह अभी भी शिरीन की आंसरिंग मशीन पर छोड़े गए संदेश के बारे में सोच ही रही थी कि तभी उसकी नज़र कुछ ही दूरी पर एक ज्योतिषी पर पड़ी। चेहरे पर संतुष्टि भरी मुस्कान लिए वह आदमी एक सोफे पर बैठा था, जिसके चारों ओर घुटनों के बल बैठी और चापलूसी करती औरतें थीं, मानो किसी विचित्र प्राच्यवादी कल्पना का सुल्तान हो। अमेरिकी हेज-फंड मैनेजर भी वहीं था, धैर्यपूर्वक अपनी कॉफी के कप के परिणाम का इंतज़ार कर रहा था।
पेरी सामाजिक शिष्टाचार के नियमों की परवाह किए बिना पुरुषों के समूह की ओर चल पड़ी। वह कई सिगारों से निकलने वाले नीले-भूरे धुएं के बीच अपने पति के बगल में समूह के बीचोंबीच बैठ गई।
अदनान ने अपना हाथ उसके कंधे पर रखा और धीरे से दबाया। एक बार, दो बार। उनके बीच एक संकेत था, जिसका मतलब था, 'क्या तुम ऊब रही हो?' उसने उसका हाथ पकड़ा और बदले में सिर्फ एक बार दबाया। 'मैं ठीक हूँ।'
‘मेरी बात याद रखना, मध्य पूर्व का नक्शा फिर से बनाया जाएगा,’ वास्तुकार अपने आसपास मौजूद लोगों से कह रहा था। ‘यह स्पष्ट है कि पश्चिमी शक्तियों की एक बड़ी योजना है।’
‘यह तो निश्चित है। वे हम मुसलमानों को कभी समृद्ध नहीं होने देंगे,’ इस्लामी अखबार के मालिक ने सहमति जताते हुए कहा। ‘धर्मयुद्ध कभी खत्म नहीं हुए!’
‘हाँ, लेकिन तुर्की अब पहले जैसा तुर्की नहीं है,’ राष्ट्रवादी वास्तुकार ने कहा। ‘हम अब सीधे-सादे भेड़ नहीं हैं। अब हम यूरोप के बीमार आदमी नहीं रहे। यूरोप अब हमसे डरा हुआ है – और अशांति फैलाने के लिए कुछ भी करेगा।’ उस उद्योगपति ने सहमति जताते हुए कहा, 'वे अराजकता फैलाना बखूबी जानते हैं। एक अदृश्य शक्ति बटन दबाती है और सब कुछ फिर से भड़क उठता है, रक्तपात और हिंसा फैल जाती है। हमें सतर्क रहना होगा।'
बाकी के लोग ध्यान से सुन रहे थे - कुछ सिर हिला रहे थे, कुछ चुप थे।

सिगार के धुएं के बीच पेरी ने उनकी ओर देखा। उसने धीरे से कहा, 'मुझे तो आपकी बातें सरासर वहम लग रही हैं। यूरोपीय... पश्चिमी लोग... रूसी... अरब... अगर आप उन्हें एक समूह के रूप में नहीं, बल्कि व्यक्तिगत रूप से जानें, तो आप समझ पाएंगे कि हम सब, कमोबेश, शरीर और मन से एक समान हैं।' वह थोड़ी देर रुकी। 'हम खुद को केवल दूसरों के चेहरों में ही पहचान सकते हैं।' वास्तुकार और उद्योगपति उसे अचरज से देखते रह गए। अदनान ने उसे आँख मारी। 'बहुत खूब कहा, डार्लिंग।'
अपने पति को देखकर मुस्कुराते हुए पेरी ने उनसे इजाज़त मांगी और खड़ी हो गईं। वह कमरे के दूसरी तरफ गईं और महिलाओं के समूह की ओर बढ़ीं।
उसे देखकर, जनसंपर्क महिला झुकी और ज्योतिषी के कान में कुछ फुसफुसाया। आदमी ने भौंहें चढ़ाकर सुना। उसने ऊपर देखा और पेरी को घूरने लगा। वह मुस्कुराया। पेरी नहीं मुस्कुराई। उसकी मुस्कान और चौड़ी हो गई। चापलूसी और खुशामद सुनने के आदी सभी लोगों की तरह, वह उस एक व्यक्ति को देखकर सबसे ज्यादा उत्सुक था जो उससे बचने की कोशिश कर रहा था।
‘आपका मेहमान हमारे साथ क्यों नहीं बैठता?’ उस ज्योतिषी ने मेजबान से पूछा, जो उसके सामने बैठी थी और उसकी गोद में पोम-पोम आराम से बैठा था।
दृढ़ निश्चय के साथ, व्यवसायी महिला उछलकर खड़ी हो गई। एक हाथ पोम-पोम के पेट के नीचे रखते हुए, उसने दूसरे हाथ से पेरी की कोहनी को थाम लिया और धीरे से लेकिन दृढ़ता से उसे विशिष्ट अतिथि की ओर ले गई।
‘क्या आप हमारी दोस्त पेरी से मिलीं?’ उसने ज्योतिषी से कहा। ‘वह भी आपकी तरह देर से आई थी। यहाँ आते समय उसका एक्सीडेंट हो गया था।’
'लगता है तुम्हारा दिन काफी मुश्किल भरा रहा,' उस आदमी ने पेरी के पट्टी बंधे हाथ और फटी हुई पोशाक को देखते हुए कहा।
‘कुछ खास नहीं…’ पेरी ने कहा।
‘आप एक उपहार के हकदार हैं। क्या आप चाहेंगे कि मैं आपका भविष्य बताऊं?’ वह उठ खड़ा हुआ और मुस्कुराते हुए बोला, ‘मुफ्त में।’
पत्रकार की प्रेमिका और उसके दोनों ओर अपनी बारी का इंतजार कर रही जनसंपर्क महिला खुश नहीं थीं।
पेरी ने सिर हिलाया। 'तुम्हारे पास करने के लिए बहुत कुछ है।'

‘चिंता मत करो, मैं सबके लिए यहाँ हूँ।’ उसके चेहरे पर धीरे-धीरे मुस्कान फैल गई, मानो वह कुछ और कहना चाहता था लेकिन उसने उसे अपने तक ही सीमित रखने का फैसला किया हो।
मुझे लगता है कि मैं इस बार इसे छोड़ दूंगा।
वह मुस्कुराया, हालांकि उसकी आंखों में एक दृढ़ चमक आ गई थी। 'मैं पच्चीस साल से यह काम कर रहा हूं, और मुझे अभी तक ऐसी कोई महिला नहीं मिली जो अपना भविष्य जानना न चाहती हो।'
पीआर महिला को एक अवसर दिखाई दिया। 'उसके अतीत के बारे में क्या ख्याल है?' ‘लेकिन नहीं… उसे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है,’ उस आदमी ने पेरी पर निगाहें टिकाते हुए और उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा। ‘फिर भी आपसे मिलकर अच्छा लगा।’
पेरी ने लगभग सहज भाव से अपना बायां हाथ आगे बढ़ाया। हाथ मिलाने के बजाय, उसने उसकी कलाई पकड़ ली और छोड़ा नहीं। उससे पेरी तक कुछ संचारित हुआ, एक झुनझुनी सी सनसनी, गर्माहट की एक लहर।
उसका हाथ पकड़े हुए उसने कहा, 'धोखेबाजों पर भरोसा मत करो, लेकिन असली ज्योतिषी पर जरूर करो।'
'ओह, वह सबसे अच्छा है, बाकियों जैसा बिल्कुल नहीं,' उस व्यवसायी महिला ने पुष्टि की।
'शायद किसी और दिन,' पेरी ने पीछे हटते हुए कहा।
जैसे ही उसने एक कदम बढ़ाया, ज्योतिषी की आवाज उसके कानों में गूंज उठी। 'तुम किसी को याद कर रही हो।'
पेरी ने पीछे मुड़कर उसकी ओर देखा। 'तुमने क्या कहा?'
वह करीब आया। 'तुमने जिसे प्यार किया, उसे खो दिया।'
पेरी ने तुरंत खुद को संभाला। 'यही बात दुनिया की आधी महिलाओं और पुरुषों से कही जा सकती है।'
वह हँसा, उसकी आवाज़ में बनावटी चमक थी। 'यह अलग है।'
अनजाने में ही उसने अपनी बाहों को अपनी छाती पर मोड़ लिया, और आगे किसी भी तरह का संपर्क न करने का दृढ़ निश्चय कर लिया।
उन्होंने गोपनीय स्वर में कहा, "मुझे उनके नाम का पहला अक्षर दिख रहा है," लेकिन उनकी आवाज़ इतनी तेज़ थी कि सभी महिलाएं सुन सकें। "यह 'ए' है।"

पेरी ने बिना सोचे समझे कहा, 'ज्यादातर पुरुषों के नाम 'ए' से शुरू होते हैं। उदाहरण के लिए, मेरे पति का नाम।'
‘जानते हो क्या, मैं तुम्हें सबके सामने शर्मिंदा नहीं करूंगा। मैं इसे एक नैपकिन पर लिख दूंगा।’
‘किज़िम! हमें एक पेन लाओ, जल्दी करो!’
जनसंपर्क अधिकारी ने शरारती अंदाज में कहा, 'अगर यह पुरानी कहानी है, तो इसे साझा क्यों न किया जाए?'
‘किसने कहा कि यह बूढ़ा है?’ ज्योतिषी ने आगे कहा। ‘यह जीवित है, सांस ले रहा है।’
पेरी ने अपने भीतर उमड़ते तूफान के बावजूद खुद को शांत रखने की कोशिश की। वह बस इतना चाहती थी कि वह उसे अकेला छोड़ दे। न सिर्फ उसे, बल्कि इन सभी महिलाओं और सभी पुरुषों को, और इस अंतहीन अराजकता से भरे शहर को भी। वेट्रेस अनुरोधित वस्तु लेकर इतनी तेज़ी से आई कि मानो वह इसी क्षण का इंतज़ार कर रही हो। तांत्रिक ने दिखावा करते हुए कुछ लिखा ताकि दूसरे उसे देख न सकें, और नैपकिन को मोड़ा – हर हरकत बेहद धीमी और सलीकेदार थी।
'यह मेरी तरफ से तुम्हारे लिए तोहफा है,' उसने पेरी को देते हुए कहा।
‘ठीक है, धन्यवाद।’
वह महिलाओं से दूर चली गई, पुरुषों के पास से गुज़री और छत पर कदम रखा। मछली पकड़ने वाली नाव गायब हो चुकी थी, पानी दूर तक फैला हुआ था, गहरे से गहरे पछतावे से भी ज़्यादा काला। एक कार तेज़ इंजन की गर्जना और खुली खिड़कियों से बजते तेज़ संगीत - अंग्रेज़ी में एक रोमांटिक गीत - के साथ सड़क पर दौड़ती हुई आई। पेरी ने आँखें सिकोड़कर उस आदमी - हमेशा एक पुरुष - की कल्पना करने की कोशिश की जो इस समय इतनी तेज़ आवाज़ में ऐसा संगीत बजा रहा होगा।
धीरे से उसने अपनी बाईं मुट्ठी खोली – वह हाथ जिससे वह लिखती थी, वह हाथ जो उसका सबसे मजबूत हाथ था। वहाँ, एक सिकुड़े हुए नैपकिन की सतह पर, उस ज्योतिषी ने तीन स्त्री आकृतियाँ बनाई थीं – जैसे तीन बुद्धिमान बंदर। तीनों।
पहले वाक्य के नीचे लिखा था: 'उसने बुराई देखी।' दूसरे के नीचे: 'उसने बुराई सुनी।' और तीसरे के नीचे ये शब्द लिखे थे: 'उसने बुराई की।'

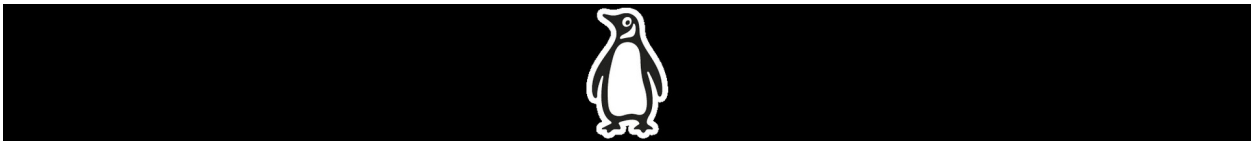

भाग चार

बीज

ऑक्सफोर्ड, 2001
नए साल की पूर्व संध्या पर पेरी इतनी उत्साहित थी कि वह अपनी आधी इच्छाएँ भी पूरी नहीं कर पाई। सुबह वह दौड़ने गई, लेकिन अपनी लय बनाए नहीं रख पाई और पिंडली में इतना तेज दर्द हुआ कि उसे जल्दी ही दौड़ना बंद करना पड़ा। जब वह पढ़ने के लिए अपनी डेस्क पर बैठी, तो उसका ध्यान कहीं और लग रहा था, शब्द सफेद कागज पर भूखी चींटियों की तरह रेंग रहे थे। उसे उतनी ही भूख लग रही थी। उसे अक्सर तनाव कम करने के लिए कुछ खाने की आदत थी, इसलिए उसे डर था कि अगर उसने एक निवाला भी खा लिया, तो वह रुक नहीं पाएगी। इसलिए उसने सेब कुतर-कुतर कर खा लिए। और उसने रेडियो सुना। इससे उसे थोड़ी राहत मिली, रेडियो की स्थिर आवाज़ से उसका मन शांत हुआ। उसने विश्व समाचार, स्थानीय समाचार, राजनीतिक बहसें और एज़्टेक साम्राज्य पर बीबीसी की एक

डॉक्यूमेंट्री सुनी। लेकिन एक डॉक्यूमेंट्री - चाहे वह शक्तिशाली एज़्टेक साम्राज्य पर ही क्यों न हो - ज्यादा देर तक नहीं चल सकती थी। उसने शाम को भुलाने की कितनी भी कोशिश की, वह उसके विचारों में छाई रही। अंत में, जब तैयार होने का समय आया, तो उसे राहत मिली। प्रोफेसर अज़ूर के साथ डिनर करना उसकी प्रत्याशा से भी बदतर नहीं हो सकता।
पेरी ने मस्कारा, ब्लैक आईलाइनर और लिप ग्लॉस लगाया और बस इतना ही किया। उसने आईने में अपना चेहरा देखा और पाया कि उसकी नाक, जो उसे अपनी माँ से विरासत में मिली थी, कुछ ज़्यादा ही गोल-मटोल थी। अगर सही कॉस्मेटिक्स से इसे पतला दिखाने का कोई तरीका होता, तो उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था। अगर शिरिन यहाँ होती, तो पेरी शायद उससे सलाह लेती। लेकिन अगर शिरिन यहाँ होती, तो पेरी शायद अज़ूर के यहाँ नहीं जाती। प्रोफेसर ने कहा था, "नए साल की शाम को अकेले नहीं रहना चाहिए।" उसे उम्मीद थी कि उन्होंने दया करके तो नहीं बुलाया था।
क्या पहनें, यह एक चुनौती थी। ऐसा नहीं था कि उसके पास विकल्पों की कमी थी। लेकिन उसके पास जो थोड़े से कपड़े थे, उनसे उसने कई तरह के कॉम्बिनेशन बनाए, और हर एक को उसने एक-एक करके पहनकर देखा। ढीली ब्लाउज के साथ काली डेनिम स्कर्ट, जींस के साथ ब्लाउज, हरी जैकेट के साथ जींस... वह किसी छात्रा की तरह नहीं दिखना चाहती थी, या इससे भी बुरा, ऐसा नहीं दिखना चाहती थी जैसे वह छात्रा की तरह दिखना ही नहीं चाहती हो। आखिरकार, बिस्तर पर कपड़ों के ढेर के बीच, उसने मखमली स्कर्ट और नीले रंग के स्वेटर को चुना - जिसकी कोमलता कश्मीरी ऊन जैसी लग रही थी। उसने अपने पहनावे को बुरी नजर से बचाने वाले मोतियों के गहरे नीले हार से पूरा किया।
हालांकि उसने साफ कह दिया था कि वह कुछ नहीं लाएगा, लेकिन उसने अपनी माँ से सीखा था कि कभी भी खाली हाथ कहीं नहीं जाना चाहिए। उसने लिटिल क्लेरेंडन स्ट्रीट की एक दुकान से आठ छोटी टार्ट खरीदीं, जो उसकी मूर्खता थी क्योंकि उनकी कीमत एक पूरे केक से भी ज़्यादा थी।
वह बस स्टॉप तक चलकर गई और इंतज़ार करने लगी। पाँच मिनट से भी कम समय में बस आ गई। वह खड़ी होकर बस के दरवाज़े खुलते और बंद होते देखती रही। फिर उसने बस को अपने बिना जाते हुए देखा और स्कर्ट और स्वेटर बदलने के लिए वापस अपने कमरे में चली गई। एक लंबी काली ड्रेस और भारी बूट। अब बेहतर लग रहा था।

से आ रही है। उसने चारों ओर देखा। उसकी नज़र दाईं ओर ऊँची झाड़ी पर पड़ी। वह जम गई, उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। कुछ भी नहीं हिल रहा था, हवा भी नहीं, फिर भी उसे अब यकीन हो गया था कि कोई न कोई उसे देख रहा है।
सहज ही उसने पुकार कर पूछा, 'वहाँ कौन है?'
घने अंधेरे में पेरी को झाड़ियों के पीछे एक परछाई दिखाई दी। वह एक कदम आगे बढ़ी। 'ट्रॉय! क्या यह तुम हो?'
लड़का बाहर निकला, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह शर्मिंदा लग रहा था। ‘हे भगवान, तुमने मुझे डरा दिया,’ पेरी ने कहा। ‘क्या तुम मेरा पीछा कर रहे हो?’
‘तुम नहीं, मूर्ख,’ ट्रॉय ने कहा और घर की ओर इशारा किया। ‘मैं तो शैतान को पकड़ने आया हूँ।’ वह रुका। ‘तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’
पेरी ने जवाब देने से इनकार कर दिया। 'तुम प्रोफेसर की जासूसी कर रहे हो!' मैंने तुमसे कहा था, मैं उस पर मुकदमा कर रहा हूँ। अदालत में सबूत चाहिए। पेरी ने सोचा, तुम उसके प्रति जुनूनी हो। यह अजीब बात थी कि जुनून के अनेक प्रकारों में, घृणा और प्रेम में बस कुछ ही अंतर थे, मानो कलाकार के पैलेट पर आस-पास के रंग हों।
घर में हंसी की लहर दौड़ गई। ट्रॉय झाड़ियों के पीछे भाग गया। 'कृपया उन्हें मत बताना कि मैं यहाँ हूँ।'
पेरी ने भौंहें चढ़ाते हुए कहा, 'तुम्हें ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं है। मैं अंदर जाकर दस मिनट इंतजार करूंगी। फिर बाहर आकर देखूंगी। अगर तब तक तुम नहीं निकले, तो मैं अज़ूर को बता दूंगी। अगर वह पुलिस को फोन नहीं करेगा, तो मैं कर दूंगी!'
‘वाह, शांत हो जाओ,’ ट्रॉय ने हाथ हवा में उठाते हुए कहा। ‘गोली मत चलाओ।’ वह उसे छोड़कर सामने के दरवाजे की ओर मुड़ी, जिस पर रंगीन कांच लगा था: एम्बर, ऑलिव और क्रिमसन रंग का। उसने झटपट घंटी बजाई। एक चिड़िया जैसी आवाज़ हवा में गूंजी। न तो कोई मीठी कैनरी, न ही बुलबुल, बल्कि एक कर्कश तोते जैसी, मानो बेचारे आगंतुक पर हंस रही हो। अंदर से आवाज़ें एक पल के लिए बंद हुईं और उतनी ही जल्दी फिर से शुरू हो गईं। रंगीन कांच के दूसरी ओर एक परछाई दिखाई दी। उसे पास आते कदमों की आहट सुनाई दी। उसने अपने होंठों पर लिप ग्लॉस नहीं लगाया था, लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी।
दरवाजा खुल गया।

एक महिला प्रवेश द्वार पर खड़ी थी। लंबी, गोरी, सुडौल, लचीली और आकर्षक। उसने पेरी को ऊपर से नीचे तक देखा, उसके होंठों पर एक ऐसी मुस्कान थी जो अगर दबंग न होती तो दोस्ताना लगती। वह जानती थी कि पेरी आकर्षक है; गहरे नीले रंग की स्ट्रैपलेस ड्रेस जो उसके शरीर से चिपकी हुई थी, उसकी सुडौल आकृति को उजागर कर रही थी। पेरी ने सोचा, यह तो कोई प्रोफेसर नहीं है। उसे खुशी थी कि उसने अपना स्वेटर बदल लिया था। वह इस महिला से कोई भी समानता नहीं रखना चाहती थी। नीले रंग का एक भी शेड नहीं।
अज़ूर ने कहा था कि उसका कुत्ता, स्पिनोज़ा, अब उसका परिवार है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि उसकी कोई प्रेमिका नहीं थी। या पत्नी भी नहीं। वह शादी की अंगूठी नहीं पहनता था, लेकिन हर पति उसे पहनना ज़रूरी नहीं समझता। उसे यह ख्याल क्यों नहीं आया कि उसकी ज़िंदगी में कोई तो है? बेशक है। उसकी उम्र में तो हर किसी की होती है।
‘नमस्कार, प्यारी बच्ची,’ महिला ने पेरी के हाथ से डिब्बा छीनते हुए कहा। ‘तुम ही तो तुर्की की लड़की हो।’
तभी, तेज़ कदमों की आहट के साथ, अज़ूर प्रकट हुआ, जिसके हाथ में शराब की एक बंद बोतल थी, जो किसी छोटे जहाज़ की तोप की तरह उनकी ओर ताने खड़ी थी। उसने गहरे भूरे रंग का टर्टलनेक स्वेटर और गहरे लाल रंग की ऊन और कश्मीरी जैकेट पहनी हुई थी।
‘पेरी, तुम आ गई!’ प्रोफेसर ने प्रकाश में चमकते माथे के साथ कहा। ‘वहाँ ठंड में खड़े मत रहो। अंदर आओ, अंदर आओ!’
वह उनके पीछे-पीछे ड्राइंग रूम में गई। गलियारे की दीवारें फ्रेम की हुई तस्वीरों से सजी थीं। दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोगों के चित्र उसे घूर रहे थे, मानो वे पहले से ही कुछ ऐसा जानते हों जो उसे अभी जानना बाकी था।
‘बेहद दिलचस्प तस्वीरें। इन्हें किसने खींचा?’ पेरी ने पूछा।
अज़ूर ने आँख मारते हुए जवाब दिया, 'मैंने किया।'
'अरे, सच में? आपने तो खूब यात्रा की होगी।'
‘बस थोड़ा सा। आपको पता है, मैं तुर्की जा चुका हूँ।’
'इस्तांबुल को?'
उसने सिर हिलाया। इस्तांबुल नहीं, जहाँ हर कोई जाता था या सोचता था कि उन्हें कभी न कभी जाना ही पड़ेगा। नहीं, अज़ूर तो दूसरी जगहों पर जा चुका

था – नेमरुत पर्वत, जहाँ प्राचीन देवताओं की विशाल मूर्तियाँ थीं; सुमेला का बीजान्टिन मठ, जो एक खड़ी चट्टान पर बसा था; और अराarat पर्वत, जहाँ नूह का जहाज आकर रुका था। पेरी ने घबराकर निगल लिया, उसे डर था कि कहीं वह उससे इन जगहों के बारे में न पूछ ले, जहाँ वह कभी नहीं गई थी।
बैठक कक्ष में, आमने-सामने की दो दीवारों पर पूरी ऊंचाई वाली किताबों की अलमारियां लगी हुई थीं। उनके बीच में सुरुचिपूर्ण लोगों का एक समूह खड़ा था, जो शैम्पेन के गिलास और वाइन के ग्लास पकड़े हुए दिल खोलकर बातें कर रहा था।
वहाँ मौजूद मेहमानों की ओर मुड़ते हुए, अज़ूर ने एक युवक को पुकारा, 'डैरेन, इधर आओ। मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे सबसे अच्छे छात्रों में से एक से मिलो,' और जैसे ही उसने उसे आते देखा, वह गायब हो गया।
डैरेन भौतिकी का स्नातक छात्र निकला। वह पेरी के लिए शैम्पेन का गिलास लेकर आया, उसका व्यवहार विनम्र और सलीकेदार था। उसने पेरी के लहजे की तारीफ की, मानो यह तारीफ उसने वाकई में मेहनत से कमाई हो। उसने पेरी से उसके बारे में पूछा, लेकिन वह अपने बारे में बात करने के लिए ज़्यादा उत्सुक था, मानो समय की कमी से जूझ रहा हो। हाँ, वह बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी और प्यार के लिए बेताब था। उसने पेरी को हंसाने की कोशिश की, एक के बाद एक चुटकुले सुनाए, शायद उसने कहीं पढ़ा होगा कि महिलाएं अच्छे हास्यबोध वाले पुरुषों पर मोहित हो जाती हैं। हर बार वह अपनी आँखें घुमाता, मानो उसे खुद अपने चुटकुले मज़ेदार न लग रहे हों। फिर भी, वह अच्छा लड़का था। पेरी ने सोचा, वह ऐसा आदमी है जो अपनी प्रेमिका से प्यार और सम्मान करेगा, उससे प्रतिस्पर्धा नहीं करेगा।
लेकिन वह जानती थी कि उनके बीच एक क्षणिक चिंगारी से ज़्यादा कुछ नहीं होगा। आखिर ऐसा क्यों होना था? वह इस लड़के की तरफ आकर्षित क्यों नहीं हो रही थी, जो दयालु और मिलनसार था, उम्र में उसके करीब था और शायद उसके लिए अच्छा भी था? इसके बजाय, वह प्रोफेसर के लिए दबी हुई तड़प रही थी - एक ऐसा आदमी जो न केवल बूढ़ा, अनजान और पहुँच से बाहर था, बल्कि गलत भी था। यह बात उसे लगातार परेशान करती थी कि वह खुशी में दिलचस्पी क्यों नहीं रखती थी, और वास्तव में कभी नहीं रखती थी - वह जादुई शब्द जो इतनी सारी किताबों, कार्यशालाओं और टीवी शो का विषय था। वह दुखी नहीं रहना चाहती थी। बेशक, वह नहीं चाहती थी। जीवन में खुशी को एक सार्थक लक्ष्य के रूप में खोजना उसके

दिमाग में कभी आया ही नहीं। भला वह अज़ूर जैसे आदमी के लिए अपने दिल में प्यार कैसे पाल सकती थी?
उसने गहरी साँस ली। एक ऐसी हिम्मत, जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी, उसे मदहोश कर देने वाले इत्र की तरह घेरने लगी। क्या दूसरे लोग भी उसके अंदर हो रहे बदलाव को महसूस कर पा रहे थे? सामाजिक जीवन के मीठे शब्दों और बनावटी मुस्कानों के परे एक ऐसी सीमा थी जो ज़िम्मेदार लोगों को टकराव चाहने वाले बेमेल लोगों और रोमांच की तलाश में निकले लुटेरों से अलग करती थी। एक ऐसी पतली सी रेखा, जो तुर्की की शर्मीली लड़कियों को हर तरह की मुसीबत और पाप से दूर रखती थी। उस सीमा रेखा के करीब जाना कैसा होगा, इतना करीब जाना कि पैरों के नीचे कठोर धरती का अंत और उसके आगे के खालीपन की शुरुआत महसूस हो, और अचानक खुद को हल्का और बेफिक्र होकर गिरने देना? हालाँकि वह न तो बहादुर थी और न ही सनकी, फिर भी युवावस्था के दौरान कहीं न कहीं उसके हृदय में अपरंपरागतता का बीज बोया गया था, जो अनजाने में अंकुरित हो रहा था और मिट्टी से फूटने की प्रतीक्षा कर रहा था। नाज़पेरी नलबंतोग्लू, जो हमेशा शालीन, सावधान और संतुलित थी, नियमों को तोड़ने और गलतियाँ करने के लिए तरसती थी।
'रात के खाने का समय हो गया है,' अज़ूर ने कमरे के दूसरी ओर से एक मोहक मुस्कान के साथ कहा, और एक बड़ा सा परोसने वाला कांटा इस तरह लहराया जैसे वह किसी अनजान मेहमान पर हमला करने के लिए भाला हो।

रात

ऑक्सफ़ोर्ड, 2001/2
पेरी सबके पीछे-पीछे एक विशाल ओक की लकड़ी की मेज के पास गई, जो किसी मध्ययुगीन नाटक की सजावट की वस्तु जैसी लग रही थी। वह कल्पना कर सकती थी कि मेज सरदारों और शूरवीरों से घिरी हुई है, और उस पर भुना हुआ मांस, भरवां मोर और चमकती हुई जेली सजी हुई हैं। बस फर्क इतना था कि इस मेज पर चांदी की थालियां और सोने के प्याले नहीं थे, बल्कि सादे बर्तन थे।
मेज के पीछे एक चिमनी थी, जिसके दोनों किनारों पर मजोलीका की टाइलें लगी थीं और उसके ऊपर एक फ्रेम में लगी हुई काली-सफेद तस्वीर टंगी थी। पेरी जलती हुई आग की ओर बढ़ी, नाचती हुई लपटों ने उसे अपनी ओर खींच लिया। हर टाइल पर एक अलग आकृति बनी हुई थी – ज़्यादातर पुरुष, लेकिन कुछ महिलाएं भी; उनके कपड़े पुराने ज़माने के थे, चेहरे पर गंभीरता थी। ये पैगंबरों, संदेशवाहकों और संतों की तस्वीरें थीं। कुछ टाइलों पर उनके नाम खुदे हुए थे: राजा सुलेमान, संत फ्रांसिस, अब्राहम, बुद्ध, संत टेरेसा, रामानन्द… आकृतियाँ पानी ढो रही थीं, चर्मपत्र पर लिख रही थीं, अपने शिष्यों से बात कर रही थीं या रेगिस्तानी इलाके में अकेली चल रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें किसी खास क्रम में नहीं रखा गया था। उन सबको एक साथ देखना, मानो वे किसी भोज में शामिल हों, थोड़ा अजीब लगा। इन पवित्र हस्तियों की अलग-अलग कल्पना करना आसान था। पेरी की निगाहें पैगंबर मोहम्मद को ढूंढ रही थीं, सोच रही थीं कि क्या उन्हें भी शामिल किया गया है। वहाँ वह घोड़े पर सवार होकर स्वर्ग की ओर आरोहण कर रहे थे, उनका चेहरा ढका हुआ था, उनका सिर ज्वालाओं से घिरा हुआ था, ठीक वैसे ही जैसे पुराने समय की फारसी और तुर्की लघु चित्रों में दर्शाया जाता था। वहाँ कुंवारी मरियम भी शिशु यीशु के साथ थीं, उनकी त्वचा बाहर की बर्फ की तरह पीली थी, और उनके साथ पंख वाले देवदूत चल रहे थे। उन्होंने मूसा को जमीन पर पड़ी एक छड़ी की ओर इशारा करते देखा, जिसका आधा हिस्सा साँप में बदल गया था।
आज़ूर ने अपनी चिमनी के चारों ओर ये तस्वीरें क्यों लगाई थीं? अगर यह सौंदर्यबोध का मामला नहीं था, तो क्या यह उसकी आस्था प्रणाली की अभिव्यक्ति थी – और अगर ऐसा था, तो वह वास्तव में किस पर विश्वास करता था?

उसने अब तक उसकी कई किताबें पढ़ ली थीं, लेकिन वह अब भी उसके लिए एक रहस्य बना हुआ था। अपने मन में उठ रहे सवालों का जवाब न मिलने पर, उसने चिमनी के ऊपर लगी तस्वीर पर ध्यान केंद्रित किया।
यह घर की एक तस्वीर थी, जो स्पष्ट रूप से कुछ साल पहले ली गई थी। बस स्टॉप से पैदल चलते हुए उसने जो ओक का पेड़ देखा था, वह अभी भी वहीं था, साथ ही घुमावदार रास्ता भी। तस्वीर में फूलों का घना बगीचा और घने, भारी सफेद बादल भी थे, जो इतने करीब थे मानो छत को छू रहे हों। घर अलग, छोटा लग रहा था; शायद वर्षों में इसमें कुछ बदलाव किए गए थे। हालांकि तस्वीर में वसंत और प्रकृति अपने चरम पर थी, पेरी को ऐसा लग रहा था जैसे कोई खोया हुआ स्वर्ग हो, एक ऐसा खुशनुमा समय जो फिर कभी नहीं लौटेगा।
तब तक सभी मेहमान अपने हाथों में गिलास लिए मेज के चारों ओर जमा हो चुके थे और धैर्यपूर्वक अपनी सीटों पर बैठने के लिए निर्देशित किए जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।
'अज़ूर, आप हमें कैसे बैठना पसंद करेंगे?' एक दुबले-पतले, लंबे जबड़े वाले व्यक्ति ने पूछा, जिसके बारे में पेरी को बाद में पता चला कि वह क्वांटम भौतिकी के एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर थे।
‘जैसे कि वो इतने नियम-कानून थोपेंगे! इस सदन में बैठना तो व्यक्तिगत पसंद का मामला है,’ एक भारी-भरकम आदमी ने कहा। धर्मशास्त्र और धर्म संकाय में प्रोफेसर, वो अज़ूर के पुराने दोस्त थे और उन्हें सबसे अच्छी तरह जानते थे। अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए उन्होंने एक कुर्सी खींची और बैठ गए। उससे प्रेरणा लेकर, बाकी मेहमान भी एक-एक करके मेज के चारों ओर बैठ गए। पेरी को जैसे ही बैठने की जगह मिली, डैरेन उसके बगल में बैठ गया। खूबसूरत गोरी लड़की दूसरी तरफ, अज़ूर के बगल में बैठ गई।
धर्मशास्त्र के प्रोफेसर पीछे झुक गए और पृष्ठभूमि में बज रहे संगीत का आनंद लेने लगे। कुछ क्षण बाद, उन्होंने अपना गिलास उठाया। 'मैं चाहता हूँ कि हम सब अपने उदार मेज़बान के लिए एक टोस्ट करें। हम उन्हें धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने हमें एक साथ लाया - हम ऑक्सफोर्ड में परित्यक्त और अकेले लोग, जो इस बर्फीली रात में घिरे हुए हैं।'
लोहे के एक मोमबत्ती स्टैंड पर जलती हुई तीन मोमबत्तियों को देखते हुए, जिनकी परछाइयाँ दीवारों पर एक-दूसरे पर पड़ रही थीं, अज़ूर ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

पेरी ने अपने रात्रिभोज के साथियों पर एक नज़र डाली – विभिन्न विषयों के विद्वानों और छात्रों का एक मिला-जुला समूह। जब वह पहली बार अंदर आई थी, तो उसने मान लिया था कि इन सभी लोगों में, उनके मतभेदों के बावजूद, एक समान गुण है: बुद्धिमत्ता। उसने तय किया था कि अज़ूर के करीबी लोगों में शामिल होने के लिए वे ज़रूर खास होंगे, औसत से कहीं अधिक ज्ञानी और संवेदनशील। वह कितनी बड़ी धृष्टता थी! उन सभी में एक बात समान थी कि उनमें से प्रत्येक, किसी न किसी कारण से, नव वर्ष अकेले मनाने वाला था – इससे पहले कि अज़ूर ने हस्तक्षेप किया और उन्हें एक सुनसान समुद्र तट पर बिखरे हुए सीपियों की तरह इकट्ठा कर लिया।
बुजुर्ग प्रोफेसर ने आगे कहा, 'एक और कारण है जिसकी वजह से मैं चाहता हूं कि हम अपने मेजबान को बधाई दें। बार-बार बाख का संगीत बजाने के लिए। अगर हर कोई रोजाना दस मिनट बाख का संगीत सुने, तो मैं आपको यकीन दिला सकता हूं कि विश्वासियों की संख्या में वृद्धि होगी।'
अज़ूर ने सिर हिलाया। 'सावधान रहो, जॉन। जैसा कि तुम मुझसे बेहतर जानते हो, बाख का संगीत धर्मशास्त्रीय रूप से बेहद जटिल है। यह सच है कि उनके संगीत को ईश्वर की वाणी का उत्कृष्ट माध्यम माना जाता है। लेकिन जितना अधिक तुम सुनोगे, उतना ही ईश्वर की आवश्यकता उनके संगीत की रचना में कम दिखाई देगी। तुम उनके कार्यों को मानवीय आत्मा की सर्वोच्च अभिव्यक्ति के रूप में समझने लगोगे। बाख तुम्हें आस्तिक बना सकते हैं - या फिर एक सच्चे संशयवादी।'
कई लोग हंस पड़े।
'आप लोग स्वयं ही ले लीजिए,' अज़ूर ने अपने हाथ खोलते हुए कहा।
अचानक सभी मेहमानों का ध्यान खाने पर गया। मेज के बीचोंबीच तीन बड़ी थालियाँ रखी थीं। पहली थाली में उबली हुई फलियों का ढेर था; दूसरी में काले चावल; और तीसरी में सुनहरा भुना हुआ एक बड़ा टर्की। साथ में गहरे लाल रंग की शराब का एक बड़ा गिलास। बस इतना ही। कोई सजावट या मसाले नहीं थे। सब कुछ सादा था, मानो बनावटी सा। पेरी अपनी माँ के बारे में सोचकर मुस्कुराई। सेल्मा ऐसे सादे खाने पर लोगों को बुलाने के बजाय मरना पसंद करती। उसने अपनी बेटी को बताया था कि एक सफल डिनर पार्टी का राज है, 'हर व्यक्ति के लिए दो खास व्यंजन परोसना। चार मेहमानों के लिए आठ; पाँच के लिए दस।' आज रात बारह लोग थे और सिर्फ तीन व्यंजन। उसकी माँ तो हैरान रह जाती।

मेहमानों ने एक-एक करके थाली में से खाना लेना शुरू किया और फिर उसे अगले व्यक्ति को दे दिया। जब पेरी की बारी आई, तो उसने भी भरपेट खाना लिया, और अचानक उसे एहसास हुआ कि उसने पूरे दिन कुछ नहीं खाया था।
अनाम गोरी लड़की अज़ूर की ओर झुकी। 'क्या तुमने यह सब खुद बनाया है?'
पेरी का चेहरा खिल उठा। अगर उसे उससे यह पूछना पड़ रहा है, तो वह उसकी पत्नी हो ही नहीं सकती।
‘जी हां, मेरी प्यारी, देखते हैं तुम्हें यह कैसा लगेगा,’ अज़ूर ने कहा, और फिर सभी को संबोधित करते हुए उसने कहा, ‘भोजन का आनंद लें।’
मोमबत्ती की झिलमिलाती रोशनी में, उसकी आँखें गहरे हरे रंग की थीं; उसकी पलकों के सिरे चमकते हुए प्रतीत हो रहे थे और उसके होंठ, जिन्हें पेरी ने पहले कभी देखने की हिम्मत नहीं की थी, लगभग उसी रंग के लग रहे थे जिस रंग की शराब वह पी रहा था।
अज़ूर ने अपना सिर झुकाया और झुकी हुई पलकों से पेरी की ओर देखा, उसके चेहरे पर हल्की हैरानी के भाव थे। पेरी शर्म से लाल हो गई, उसे एहसास हुआ कि वह उसे बहुत देर तक घूर रही थी। तुरंत ही, वह डैरेन की ओर मुड़ी, उसकी उपस्थिति के लिए आभारी थी।

मिठाई के तौर पर क्रिसमस प्लम पुडिंग परोसी गई। अज़ूर ने गरमागरम पुडिंग पर थोड़ी सी ब्रांडी डाली और माचिस से उसमें आग लगा दी। नीली लपटें पूरी सतह पर फैल गईं; वे घूमती और मस्ती करती हुई अपनी छोटी, मासूम जिंदगी की आखिरी सांस लेती हुई गायब हो गईं। अज़ूर ने बड़ी कुशलता से पुडिंग को काटा और सबको कस्टर्ड सॉस के साथ एक बड़ा टुकड़ा परोसा। मेहमान, जो इस नजारे को देखते हुए चुप हो गए थे, पहला निवाला चखते ही मेजबान की पाक कला की तारीफ करने लगे।
भौतिकी के प्रोफेसर ने सुझाव दिया, 'आपको एक पाक कला की किताब लिखनी चाहिए। यह बहुत स्वादिष्ट है। आपने इसे कैसे बनाया?'
‘खैर, इंसान सीख जाता है,’ अज़ूर ने धीरे से कहा।

पेरी के लिए, उन शब्दों से उसके निजी जीवन का सुराग मिला। उसने अनुमान लगाया कि वह अविवाहित होगा। उसे उम्मीद थी कि कोई इस मामले की पड़ताल करेगा, लेकिन किसी ने नहीं की। इसके बजाय, वे अफ़गानिस्तान पर आक्रमण के बारे में बातचीत में मशगूल हो गए। मेज पर माहौल बदल गया क्योंकि कुछ मेहमानों ने टोनी ब्लेयर के प्रति असंतोष व्यक्त किया और लेबर पार्टी में पीछे बैठे सांसदों के विद्रोह की प्रशंसा की। फिर भी, उनके लहजे में एक तरह की शांति थी जिसे पेरी राजनीति से जोड़ना मुश्किल पा रही थी। तुर्की में, उसने अपने पिता के दोस्तों से लेकर खुद तक, जितने भी राजनीतिक आदान-प्रदान देखे थे, वे सभी तीन बड़े 'आर' से घिरे हुए थे: आक्रोश, क्रोध और निराशा। जब विषय गंभीर होते थे, भावनाएँ तीव्र होती थीं और हालात सुधरने की संभावना कम होती थी, तो बातचीत में शैली को सबसे पहले त्याग दिया जाता था। जबकि यहाँ वे इस तरह से बात कर रहे थे कि विषयवस्तु से ज़्यादा शैली को प्राथमिकता दी जा रही थी। सांस्कृतिक तुलनाओं में उसका दिमाग इतना उलझा हुआ था कि वह मेज पर चल रही बातचीत से बेखबर हो गई और जब उसने देखा कि सभी उसे देख रहे हैं, तो उसे तुरंत समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों हो रहा है। बुजुर्ग प्रोफेसर उसकी मदद के लिए आगे आए। 'हम तो बस यही कह रहे थे कि आपका देश दिलचस्प है।'
शिरिन की 'दिलचस्प' शब्द के इस्तेमाल को लेकर दी गई चेतावनी को याद करते हुए पेरी ने अपने प्रोफेसर की ओर देखा। लेकिन अज़ूर, अपने गिलास के किनारे से उसे देखते हुए, उत्सुकता से यह जानने को उत्सुक था कि वह क्या कहने वाली है।
‘आप क्या सोचते हैं? क्या तुर्की को कभी यूरोपीय संघ में शामिल होने का मौका मिलेगा?’ छोटे सफेद बालों वाली एक महिला ने पूछा, जिनके बाल हल्के गुच्छों में बंधे हुए थे। वह बुजुर्ग प्रोफेसर की पत्नी थीं।
'हाँ, मुझे उम्मीद है,' पेरी ने कहा।
‘क्या आपको नहीं लगता कि यह सांस्कृतिक रूप से… अलग है?’ गोरी लड़की ने बीच में टोकते हुए कहा।
‘मुझे नहीं पता कि अलग होने से आपका क्या मतलब है,’ पेरी ने कहा, उसके मन में उथल-पुथल मच गई। एक ओर, वह आलोचनात्मक टिप्पणी करना चाहती थी, क्योंकि उसके देश के बारे में कई बातें उसे निराश करती थीं। दूसरी ओर, वह चाहती थी कि ये लोग उसकी मातृभूमि को पसंद करें। उसके मन में एक रक्षात्मक भाव उमड़ आया।

एक ज़िम्मेदारी का एहसास। इससे पहले उसने कभी ऐसा महसूस नहीं किया था कि वह किसी सामूहिक इकाई का प्रतिनिधित्व कर रही है।
भौतिकी के प्रोफेसर ने पूछा, 'तो क्या आप धर्म को बाधा नहीं मानते? क्या आपको कभी इस बात की चिंता होती है कि तुर्की ईरान जैसा बन सकता है?'
पेरी ने कहा, 'यह खतरा तो है। लेकिन ईरान स्मृति और परंपरा का समाज है। हम तुर्क लोग भूलने में माहिर हैं।'
उसके बगल में बैठे डैरेन ने पूछा, 'तुम्हें क्या लगता है, क्या बेहतर है? याद रखना या भूल जाना?'
‘दोनों के अपने-अपने नुकसान हैं,’ पेरी ने बिना झिझक के जवाब दिया। ‘लेकिन मैं भूल जाना ही बेहतर समझूंगी। अतीत एक बोझ है। याद रखने का क्या फायदा जब हम कुछ बदल ही नहीं सकते?’
बुजुर्ग प्रोफेसर ने कहा, 'भूलने का सौभाग्य केवल युवाओं के पास होता है।' पेरी ने अपना सिर झुका लिया। वह जवान दिखना नहीं चाहती थी। बल्कि, वह चतुर और बुद्धिमान दिखना चाहती थी। लेकिन उसे आश्चर्य हुआ जब उसने देखा कि अज़ूर ने सहमति में सिर हिलाया। 'अगर मुझे चुनाव करना होता, तो शायद मैं भी याददाश्त न रखने का विकल्प चुनती। मुझे अल्ज़ाइमर होने का बेसब्री से इंतज़ार है।'
उस खूबसूरत महिला ने अज़ूर के हाथ पर अपना हाथ रखा। 'प्यारे, तुम्हारा मतलब यह नहीं है।'
पेरी ने अपनी नज़रें फेर लीं। वह इन लोगों को नहीं जानती थी; उनका अतीत, उनके संबंध, सब कुछ उसकी समझ से परे था। वह केवल अनकही बातों और उन विषयों को समझ सकती थी जिनके इर्द-गिर्द वे दबे पांव घूम रहे थे।
आधी रात से कुछ देर पहले, जब चाय और कॉफ़ी परोसी जा रही थी, तो वह शौचालय जाने के लिए उठी। हाथ धोते समय उसने आईने में जो चेहरा देखा, वह एक ऐसी युवती का था जो बार-बार आत्मविश्वास और प्रसन्नता से भरी रहने में असफल रही थी। वह हमेशा खुद को खुश रहना न जानने के लिए दोषी ठहराती थी। ज़रूर उसने कुछ गलत किया होगा जिससे उसे अनचाहा दुख मिला है। लेकिन शायद जो लोग खुशी की कसौटी पर खरे नहीं उतरते, वे दोषी नहीं होते। उदासी आलस्य या आत्म-दया की अभिव्यक्ति नहीं है। शायद ऐसे लोग जन्म से ही ऐसे होते हैं। खुश रहने के लिए संघर्ष करना उतना ही व्यर्थ है जितना लंबा होने के लिए संघर्ष करना।

बाहर निकलते समय, हॉल में, तरह-तरह के चित्रों के बीच, पेरी ने एक ऐसी तस्वीर देखी जिसे देखकर वह रुक गई।
तस्वीर में दिख रही महिला – उभरी हुई गाल की हड्डियाँ, दूर-दूर फैली आँखें, भरे हुए होंठ – कमर पर ढीले ढंग से बंधी लाल रंग की दुपट्टी के अलावा पूरी तरह नग्न थी। उसके बाल लापरवाही से जूड़े में बंधे थे, उसके कंधे पॉलिश किए हुए हाथीदांत के गहनों की तरह हल्के और चमकदार थे। उसके स्तन बड़े और गोल थे, आँखों के नीचे काले घेरे थे और निप्पल उभरे हुए थे; उसकी नाभि थोड़ी उभरी हुई थी, और एक हाथ से उसने अपने पैरों को ढकने वाला कपड़ा पकड़ रखा था, मानो किसी भी क्षण उसे छोड़ दे। उसके होठों की मुस्कान तस्वीर खिंचवाने की खुशी का संकेत दे रही थी। साथ ही यह भी बता रही थी कि वह फोटोग्राफर को जानती है।
स्तब्धता में डूबी पेरी आगे की ओर लड़खड़ा गई, मानो किसी वर्जित क्षेत्र में घुसपैठ कर गई हो। वह स्तब्ध खड़ी रही, मानो उस क्षण स्तब्ध हो गई हो। घर के भीतर कहीं एक घड़ी टिक-टिक कर रही थी। एक पूर्वसूचना, जो परिचित भी थी और जिसकी आदत डालना असंभव भी। भय की लहर के साथ उसने धुंध में बच्चे की उपस्थिति को महसूस किया, जो खतरनाक रूप से करीब था। वह वहीं था, वही गोल चेहरा, विश्वास भरी आँखें, उसके आधे चेहरे पर बैंगनी रंग का धब्बा। वह उसे कुछ बताने की कोशिश कर रहा था - तस्वीर में दिख रही महिला के बारे में। उदासी। यहाँ चारों ओर इतनी उदासी थी - तीव्र, अनछुई। पेरी यह नहीं बता पा रही थी कि क्या वह किसी पुराने दुख से टकरा गई है या क्या वह खुद इसे अपने साथ ले आई है।
‘चले जाओ!’ पेरी ने डरते हुए फुसफुसाया। उसे उसके लिए अब और सब्र नहीं था।
अभी नहीं। यहाँ नहीं।
धुंध में मौजूद बच्चा मुंह फुलाए खड़ा था।
‘तुम मुझे क्या बताने की कोशिश कर रहे हो? तुम यहाँ नहीं आ सकते, इस जगह पर नहीं –’
एक आवाज ने उसकी बात काट दी। 'पेरी, तुम किससे बात कर रही हो?'
उसने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि अज़ूर उसके पीछे खड़ा है। उसकी सुनहरी चिंगारियों से चमकती आँखें किसी भी बात का संकेत नहीं दे रही थीं।
पेरी ने दीवार की ओर इशारा करते हुए कहा, 'मैं बस खुद से बातें कर रही थी... और उसे देख रही थी।' तिरछी नज़र से देखते हुए, उसे राहत मिली जब उसने देखा

कि धुंध में छिपा बच्चा धीरे-धीरे गायब होने लगा था, हवा में भाप का एक कुंडल सा बन गया था।
‘मेरी पत्नी,’ अज़ूर ने कहा।
'आपकी पत्नी?'
'उनकी मृत्यु चार साल पहले हुई थी।'
‘ओह, मुझे बहुत खेद है।’
‘फिर से?’ उसने पूछा, उसकी निगाहें तस्वीर में दिख रही महिला से हटकर सामने खड़ी महिला पर टिक गईं। ‘तुम्हें सचमुच रुक जाना चाहिए…’
पेरी ने आलोचना को टालने के लिए तुरंत कहा, 'उसके चेहरे के हाव-भाव मध्य पूर्वी लोगों जैसे हैं।'
'हां, उसके पिता अल्जीरियाई थे। सेंट ऑगस्टीन की तरह बर्बर।'
‘क्या सेंट ऑगस्टीन बर्बर थे? लेकिन वे ईसाई थे।’
अज़ूर ने उसकी ओर देखा और उसकी युवावस्था को निहारते हुए कहा, 'इतिहास विशाल है। बर्बर लोग यहूदी, ईसाई, यहाँ तक कि एक समय में मूर्तिपूजक भी थे। और मुसलमान भी। अतीत ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है जो आज हमें विचित्र लग सकती हैं, लेकिन उस समय बिल्कुल तर्कसंगत थीं।'
उन शब्दों का पेरी से कोई सीधा संबंध नहीं था, फिर भी उन्होंने उसके भीतर एक खालीपन, एक अनछुआ सा क्षेत्र पैदा कर दिया। उसके अनुभव में, न केवल अतीत बल्कि वर्तमान भी तर्क से परे अनुभवों से भरा हुआ था।
‘तुम पीले दिख रहे हो,’ उसने कहा।
तभी उसने अपने दिल की बात उनसे कही। जब वे दोनों पास में खड़े मेहमानों की आवाज़ें सुन रहे थे, पेरी ने अपने प्रोफेसर को बताया कि बचपन से ही, किसी अज्ञात कारण से, उसे 'अजीबोगरीब अनुभव' होते रहे हैं। उसने यह बात अपने पिता को बताई थी, जिन्होंने इसे 'अंधविश्वास' कहकर खारिज कर दिया था, और अपनी माँ को भी, जिन्हें डर था कि कहीं उस पर जिन्न का साया न हो। तब से उसने यह बात किसी को नहीं बताई थी, कहीं वे भी उसे गलत न समझ लें।
अज़ूर ने ध्यान से सुना, उसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव फैल गए। 'मैं आपके इस अवास्तविक अनुभव पर टिप्पणी नहीं कर सकता। लेकिन मैं आपको एक बात पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ: अलग होने से मत डरो। तुम बहुत खास हो।' ड्राइंग रूम से आती हुई उत्साहित आवाजों के एक झटके ने उनकी बातचीत को बाधित कर दिया।

‘आधी रात हो गई होगी!’ अज़ूर ने अपने बालों में उंगलियां फेरते हुए कहा। ‘इसे बाद में जारी रखते हैं। हमें करना ही होगा! मेरे कमरे में आओ।’
वह उसकी ओर बढ़ा और उसके दोनों गालों पर चुंबन किया। 'नया साल मुबारक हो!' फिर वह बाकी लोगों को चूमने चला गया।
'प्रोफेसर जी को नव वर्ष की शुभकामनाएं!' पेरी ने उनकी पीठ की ओर फुसफुसाते हुए कहा, उनकी गर्माहट उसकी त्वचा पर अभी भी महसूस हो रही थी।
मेरे कमरे में आओ। यकीनन यह कोई साधारण बात नहीं थी। अनचाही उत्तेजना उसके अंदर दौड़ पड़ी। उसने कहा था कि वह खास है - बहुत खास। वह उसे इस तरह समझ सकता था जैसे कोई और नहीं समझ सकता था। जब वह वहाँ स्थिर खड़ी, सोचती हुई, धीरे-धीरे सब कुछ स्पष्ट होता गया, मानो उसकी सारी उम्मीदों, सारी आशाओं के ठोस रूप लेने से ठीक पहले की आखिरी किरण हो। जब तक वह समारोह में लौटी, तब तक उसने खुद को यकीन दिला दिया था कि उसके प्रोफेसर के मन में भी उसके लिए भावनाएँ हैं।

आधी रात के कुछ ही देर बाद मेहमान जाने लगे। ठंड में कदम रखते ही पेरी को ट्रॉय की याद आई। उसने घबराकर ऊँची झाड़ी की ओर देखा – वहाँ रात के सिवा कुछ नहीं था।
पेरी और डैरेन को छोड़कर लगभग सभी के पास कार थी। खूबसूरत गोरी महिला - जो खुद को शराब से परहेज करने वाली बताती है - ने उन्हें लिफ्ट देने की पेशकश की।
ऑक्सफ़ोर्ड वापस जाने का सफ़र छोटा था, शाम के शोरगुल के बाद अजीब सी खामोशी छाई हुई थी। बीबीसी रेडियो 4 पर गुस्ताव फ़्लॉबर्ट के प्रेम पत्रों पर एक कार्यक्रम प्रसारित हो रहा था। कामुक शब्दों से कार भर गई, जिससे श्रोताओं में एकांत का भाव और आने वाले रोमांस की लालसा जागृत हो गई। ड्राइवर के बगल में बैठी पेरी सोच रही थी कि क्या अतीत में लोगों को प्रेम की बेहतर समझ थी। उसने अपना सिर आधी धुंधली खिड़की पर टिका दिया और आगे सड़क पर नज़रें गड़ाए रखीं, जिसके कुछ हिस्से कार की हेडलाइट्स की रोशनी में जगमगा रहे थे, फिर रात के अंधेरे में गायब हो रहे थे। उसने अज़ूर

और तस्वीर में दिख रही महिला के बारे में सोचा। उनका यौन जीवन कैसा रहा होगा? उसने सोचा कि कैसे वह अपने मेहमानों को प्लेटें भरते देखकर मुस्कुराता था; कैसे वह अपने कॉफ़ी मग को दोनों हाथों में थामे रखता था और उसे ऊपर उठाता था, भाप का आनंद लेता था जो उसके चेहरे को छूती थी; रात के अंत में जब वह सबको विदा कर रहा था, तब उसने महिलाओं को, जिनमें वह भी शामिल थी, उनके कोट पहनने में कैसे मदद की, और कक्षा में वह जैसा था, उससे कितना अलग था - निडर, कोमल, आश्चर्यजनक रूप से नाजुक।
ऑक्सफ़ोर्ड लौटकर पेरी और डैरेन एक साथ कार से उतरे। शाम की कड़ाके की ठंड हवा में ताज़गी भर चुकी थी। वे लगातार बातें करते हुए चलते रहे, जब तक कि वे पेरी के अस्थायी ठिकाने पर नहीं पहुँच गए। उन्होंने स्ट्रीट लाइट के नीचे एक-दूसरे को चूमा। फिर अंधेरे में भी उन्होंने एक-दूसरे को चूमा। शाम की उमंग से थोड़ा मदहोश महसूस करते हुए, पेरी ने अपनी आँखें बंद कर लीं, वह अपनी उत्तेजना से ज़्यादा डैरेन की उत्तेजना से उत्साहित थी।
‘क्या मैं ऊपर आ सकता हूँ?’ उसने पूछा।
उसने उस लड़के को देखा जो कभी वह हुआ करता था – सड़क पार करते समय अपनी माँ का हाथ थामे, महिलाओं के प्रति आदर करना सीख रहा था। अगर वह मना भी कर देती, तो वह जानती थी कि वह ज़िद नहीं करेगा। वह अपने रास्ते चला जाएगा, शायद निराश होगा, लेकिन असभ्य नहीं होगा। अगले दिन अगर वे फिर मिलेंगे, तो वह उसके साथ और वह उसके साथ अच्छा व्यवहार करेगी।
'हां,' उसने कहा, एक ऐसी भावना के चलते जिसे वह प्रश्न नहीं करना चाहती थी। उसे पता था कि सुबह उठते ही उसके मन में एक भयानक एहसास जागेगा। उस व्यक्ति के साथ सोने का अपराधबोध, जिसकी उसे सच में कोई परवाह नहीं थी; अपने पिता को निराश करने और अपनी माँ के सबसे बुरे डर को सच करने का अपराधबोध। भले ही उन्हें कभी इस बारे में पता न चले, लेकिन अगली बार जब वह उनसे बात करेगी तो उसका मन हमेशा दुखी रहेगा और शायद उसके बाद भी काफी समय तक ऐसा ही रहेगा। लेकिन एक बात थी जो उसे और भी परेशान कर रही थी। जब वह डैरेन के स्पर्श और चुंबन का जवाब दे रही थी, तब वह किसी और के बारे में सोच रही थी। उसकी सारी भावनाओं पर इस बात का असर हावी था कि वह अपने प्रोफेसर को चाहती थी।
कहते थे कि नए साल के पहले कुछ घंटों में किया गया काम पूरे साल के कामों को निर्धारित करता है। काश, यह बात सच न होती। क्योंकि जनवरी के पहले दिन

में प्रवेश करते ही उसके दिल में कई तरह की भावनाएं उमड़ रही थीं। उसे उम्मीद थी कि 2002 उसके लिए पछतावे का साल नहीं होगा।

झूठ

ऑक्सफोर्ड, 2002
छुट्टियां खत्म होने से पहले, पेरी ने शिरीन का निमंत्रण स्वीकार कर लिया और ट्रेन से लंदन के लिए रवाना हो गई। उसने देखा कि छात्र और छोटे बच्चों वाले परिवार डिब्बों में चढ़ रहे हैं। उसके डिब्बे में – उसने गलती से प्रथम श्रेणी का टिकट खरीद लिया था – तीन सलीके से कपड़े पहने अधेड़ उम्र के पुरुष थे, जो एक-दूसरे से बिल्कुल अलग नहीं दिख रहे थे, और एक अधेड़ उम्र की महिला थी, जिसके भूरे बाल करीने से संवारे हुए थे। उन्होंने पेरी को ठंडी निगाहों से देखा, मानो कह रहे हों: तुम इस डिब्बे में बैठने लायक नहीं लगतीं। अपनी सीट का नंबर देखकर, वह खुद को मास्टर एकहार्ट की संपूर्ण रहस्यवादी रचनाओं में मग्न करने लगी।
वह अपनी ईश्वर-डायरी अपने साथ ले गई थी, जिसमें उसने अब लिखा: "जिस दृष्टि से मैं ईश्वर को देखती हूँ, उसी दृष्टि से ईश्वर मुझे देखते हैं," एकहार्ट कहती हैं। "यदि मैं कठोरता से ईश्वर के पास जाती हूँ, तो ईश्वर भी कठोरता से मेरे पास आते हैं। यदि मैं प्रेम से ईश्वर को देखती हूँ, तो ईश्वर भी प्रेम से मुझे देखते हैं। मेरी दृष्टि और ईश्वर की दृष्टि एक ही है।" ट्रेन तेज़ी से आगे बढ़ी, उसकी स्थिर लय पेरी के मन में गूंज रही थी। थोड़ी देर में एक अटेंडेंट आया और ट्रॉली लेकर डिब्बे में घुस आया। ट्रॉली से उसने प्लास्टिक की ट्रे में नाश्ता और तरह-तरह के पेय पदार्थ परोसे। पेरी के पास आकर उसने उसे बताया कि उसके पास दो विकल्प हैं। पहला विकल्प: हैम और चीज़ क्रोइसैन्ट। दूसरा विकल्प: पोर्क सॉसेज के साथ तले हुए अंडे।
पेरी ने सिर हिलाया। 'क्या आपके पास कुछ और है?'
‘शाकाहारी?’ कर्मचारी ने पूछा।
'नहीं, ये सूअर का मांस है,' पेरी ने कहा।
उस आदमी की गहरी और धँसी हुई आँखें, उसके पतले दाढ़ी वाले चेहरे में, एक पल के लिए उसे निहारती रहीं। पेरी की निगाहें उसकी नेमटैग पर पड़ीं: मोहम्मद।
‘मैं देखता हूं कि मैं क्या कर सकता हूं,’ उसने कहा और चला गया।
एक मिनट बाद मोहम्मद एक चिकन सैंडविच लेकर आया। उसने मुस्कुराते हुए पेरी को सैंडविच दे दिया। जब वह आदमी चला गया, तब पेरी को ख्याल आया कि शायद

उसने उसे अपना खाना दिया हो। शायद उसका लंच। अजनबी लोगों के बीच एक अदृश्य जुड़ाव बन गया, जब उन्हें पता चला कि वे एक ही धर्म या राष्ट्रीयता के हैं, तो उनमें तुरंत आत्मीयता विकसित हो गई। एक ऐसा भाईचारा जो छोटी-छोटी बातों में झलक रहा था - एक मुस्कान, एक इशारा, एक सैंडविच। फिर भी, उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह एक धोखेबाज है। उस आदमी ने उसे एक अच्छी मुसलमान समझा था, लेकिन क्या वह सच में मुसलमान थी?
सांस्कृतिक रूप से वह एक मुस्लिम थी, इसमें कोई शक नहीं। फिर भी, उसने जितनी दुआएँ याद की थीं, उनकी संख्या उसकी हथेली की उंगलियों से ज़्यादा नहीं थी। न तो वह अपने धर्म का पालन करती थी और न ही शिरीन की तरह खुद को धर्मभ्रष्ट मुस्लिम मानती थी। 'धर्मभ्रष्ट' शब्द सुनते ही मन में बासी अंडे या खराब मक्खन की याद आ जाती थी। इस्लाम से उसका रिश्ता, चाहे वह धर्म का पालन करती हो या नहीं, खत्म नहीं हुआ था। उसकी उलझन कभी खत्म नहीं हुई थी। ज़िंदा थी। शाश्वत थी। अगर वह कहीं खड़ी भी होती, तो बस उलझन में डूबी रहती। लेकिन अगर वह यह बात मोहम्मद को बताती, तो क्या वह अपना सैंडविच वापस मांगता?

पेरी जब छोटी थी, तो हर ईद-उल-अधा पर उनके घर में झगड़े होते थे। मेन्सुर जानवरों की कुर्बानी देने की रस्म के खिलाफ थे। उनका मानना था कि मेमने पर खर्च किया गया पैसा जरूरतमंदों को देना बेहतर होगा। इस तरह भूखे अपना पेट भर सकेंगे और तृप्त लोग अपनी पीठ थपथपा सकेंगे; और इस प्रक्रिया में किसी भी जानवर को मरना नहीं पड़ेगा।
सेल्मा असहमत थी। उसने कहा, "भगवान ने चीजों को इस तरह क्यों चाहा, इसके पीछे एक कारण था। अगर आप पवित्र ग्रंथ को पढ़ने की जहमत उठाते, तो आप समझ जाते।"
'मैंने इसे पढ़ा,' मेन्सुर ने कहा। 'मेरा मतलब है, वह हिस्सा। उसका कोई मतलब नहीं बनता।'
‘इसमें क्या बात समझ में नहीं आती?’ सेल्मा ने चिड़चिड़ाते हुए कहा।

‘कुरान में ईश्वर ने कभी भी इब्राहिम को अपने बेटे की बलि देने का निर्देश नहीं दिया – उस व्यक्ति ने सब कुछ गलत समझा।’
'मनुष्य!'
लेकिन सुनो, पत्नी, अब्राहम ने वास्तव में परमेश्वर को अपने बेटे को मारने का आदेश देते हुए नहीं सुना था। उसने सपना देखा था, है ना? क्या पता उसने सपने की गलत व्याख्या की हो? मुझे लगता है कि परमेश्वर ने अपनी दया से देखा कि अब्राहम ने सब कुछ कितना गलत समझा था और अपने बेटे को बचाने के लिए, उसने मेमने को भेजा।
सेल्मा ने आह भरी। 'तुम एक बड़े, रूठे हुए लड़के की तरह हो। भगवान का शुक्र है, मैंने अपने बच्चों का पालन-पोषण कर लिया है। मुझे घर में एक और बच्चा नहीं चाहिए।'
अपनी खुद की भेड़ खरीदने का पक्का इरादा करके सेल्मा पैसे बचाती थी। भेड़ को बगीचे में रखा जाता, उस पर मेहंदी लगाई जाती और उसे अच्छा खाना खिलाया जाता, जब तक कि उसे वध के लिए नहीं भेज दिया जाता। फिर उसका मांस सात पड़ोसियों और गरीबों में बाँट दिया जाता।
एक साल - पेरी की उम्र तेरह साल रही होगी - उन्हीं पड़ोसियों ने मिलकर अपने लीरा जमा करके एक बैल खरीदने का फैसला किया। उन्हें उम्मीद थी कि वह एक भव्य, शक्तिशाली और काली छाया वाला जानवर होगा। लेकिन जो बैल आया, वह विशाल तो था, पर घबराया हुआ, मानो डर से पागल हो गया हो। वह न तो कोई शांत बलि का मेमना था और न ही कोई शानदार भेंट। वह निराशाजनक साबित हुआ।
उन्होंने जानवर को गैराज में रख दिया, जहाँ अगले दो दिनों में उसकी पीड़ा बढ़ती चली गई। रातों में वे उसे छटपटाते, भागने की कोशिश करते हुए सुनते थे, उसकी दहाड़ें मानो उसकी आत्मा की गहराई से आ रही हों। शायद उसे अपने भाग्य का आभास हो गया था। तीसरे दिन, जैसे ही वे उसे धूप में बाहर लाए, बैल आज़ाद हो गया। पूरी गति से दौड़ते हुए, उसने अपने रास्ते में आए पहले राहगीर पर हमला कर दिया और उसे ज़मीन पर घसीट लिया। वह किसी तरह खुद को छुड़ाकर कूड़ेदान के पीछे छिप गया। इस बीच जमा हुए दर्शकों में हंसी गूंज उठी। किसी ने बचे हुए व्यक्ति की पीठ थपथपाई। बच्चे यह जानने के लिए दौड़ पड़े कि आखिर यह सब शोर-शराबा किस बात का है। बगीचे की दीवार पर चढ़कर पेरी बैल के सींगों को हिलते हुए देख सकती थी, अकेला जानवर भीड़ को तितर-बितर कर रहा था, उसका आतंक अब लगभग चरम पर था।

वध से पहले मेमनों के विपरीत, बैल एक लड़ाकू था और उसने क्या ही ज़बरदस्त लड़ाई लड़ी – चारों ओर से उसका पीछा कर रहे बीस आदमियों के खिलाफ। वह राजमार्ग पर दौड़ पड़ा, डामर के एक युद्धक्षेत्र में जहाँ धातु के राक्षसों की एक सेना ने उसे घेर लिया। उस जानवर को काबू में करने में आदमियों को तीन घंटे लग गए, और वह भी तब जब उन्होंने उसे मारने से पहले बेहोश करने वाली बंदूक से गोली मारी। बाद में, कुछ लोगों ने चेतावनी दी कि इसका मांस हलाल नहीं है क्योंकि बेहोश करने वाली दवाइयों ने उसे चक्कर दिला दिए थे। लेकिन तब तक किसी को भी उनकी राय की ज़रा भी परवाह नहीं थी। ‘ये कैसी बर्बरता है?’ मेन्सुर ने घर लौटकर अपनी पत्नी से शिकायत की। ‘इस्लाम कहता है कि किसी को भी चोट न पहुँचाओ, जानवरों को भी नहीं। बेचारा जानवर डर के मारे मर गया। उन्होंने उसे तड़पाया। मैं ये मांस नहीं खाऊँगा।’
सेल्मा एक पल के लिए चुप रही। 'इसे मत खाओ, ठीक है। शायद मैं भी न खाऊं। लेकिन कुछ बुरा मत कहना। सम्मान रखो, पतिदेव।'
पेरी को झगड़े की आशंका थी, लेकिन अपने माता-पिता को पहली बार सहमत देखकर वह आश्चर्यचकित रह गई। उनके हिस्से का मांस जरूरतमंद परिवारों में बांट दिया गया।
उस शाम खाने की मेज पर, पेरी ने देखा कि उसके पिता बार-बार अपना गिलास भर रहे थे। “आज का दिन कैसा रहा, है ना?” उन्होंने बेसुध होकर कहा। “बैल का पीछा करते लोगों के पीछे भागते रहे। तुम बच्चों के जन्म के बाद से मुझे इतनी थकान कभी महसूस नहीं हुई, जब से तुमने हमें आधी रात तक जगाए रखा।” उनके शब्द लड़खड़ा रहे थे।
पेरी, जो जग से गिलास में पानी भर रही थी, लगभग पानी गिरा ही देती। 'तुम्हारा मतलब क्या है, "तुम बच्चे"?'
मेंसुर ने अपना हाथ माथे पर फेरा। उनका चेहरा ऐसा था मानो उन्हें अभी-अभी अपनी गलती का एहसास हुआ हो। एक पल के लिए वे यह तय करने में लगे रहे कि बात जारी रखें या नहीं। 'खैर, मुझे यकीन है कि आपको याद होगा।'
‘क्या याद है?’
‘एक लड़का था, तुम्हारा जुड़वा भाई। वह जीवित नहीं बच पाया।’
उसके मन के भीतर कहीं न कहीं कुछ आकार ले रहा था। 'क्यों?'

‘अरे, भौंरे, पूछो मत। बहुत समय पहले की बात है,’ मेन्सुर ने कहा, लेकिन फिर जिज्ञासा से अभिभूत होकर बोला, ‘क्या तुम्हें सच में कोई अंदाजा नहीं है?’ ‘मुझे नहीं पता आप किस बारे में बात कर रहे हैं, बाबा।’
'मैं समझ गया, यह अजीब है... मुझे हमेशा लगा था कि आपको कुछ बातें याद होंगी।' पेरी को यह समझने में सालों लग जाएंगे कि उसका मतलब क्या था।

ट्रेन पैडिंगटन स्टेशन पर आकर रुकी। शिरीन टिकट मशीन के पास खड़ी थी, उसने घुटनों तक लंबा चांदी-धूसर रंग का फर कोट पहना हुआ था। शहर के बीचोंबीच, वह किसी मैदानी इलाके की जीव जैसी लग रही थी।
‘उस काम के लिए कितने जानवरों को मारा गया है?’ पेरी ने पूछा।
'चिंता मत करो, यह असली नहीं है,' शिरिन ने उसके गालों पर चुंबन करते हुए कहा।
पेरी ने अपनी सहेली के चेहरे को गौर से देखा। 'तुम झूठ बोल रही हो, है ना?' ‘हूँ!’ शिरिन ने गुस्से से कहा। ‘यह पहली बार है जब तुमने मुझे पकड़ा है। बधाई हो, मुझे तुम्हारे लिए बहुत खुशी है, माउस। तुम्हारी आँखें खुल रही हैं।’
पेरी जानती थी कि शिरिन उसे चिढ़ा रही है। हालांकि वह खूब हंस रही थी, लेकिन उसे बेचैनी का एक झटका लगा क्योंकि उसने अपनी सहेली के शब्दों में एक छोटी सी सच्चाई महसूस की: शिरिन ने उससे पहले भी झूठ बोला था, शायद एक से अधिक बार, लेकिन किस बारे में और क्यों, यह पेरी को अभी तक पता नहीं था।

बेली डांसर

ऑक्सफोर्ड, 2002
पेरी ने खिड़की खोली और ठंडी हवा का आनंद लिया। अपने कमरे में वापस आकर वह खुश थी, हालाँकि उसे और बड़े कमरे की चाह थी। वह हाथ में किताब लिए बिस्तर पर बैठ गई और अपने पैरों को अपनी ओर खींच लिया। अज़ूर ने अपनी पिछली कक्षाओं में से एक में छात्रों को कांट के दर्शन में ईश्वर की अवधारणा पर एक लेख पढ़ने के लिए कहा था। दूसरी बार पढ़ने पर उसे कांट पहले से कहीं अधिक पेचीदा लगे। वह समझ सकती थी कि धर्मशास्त्री जर्मन दार्शनिक की ओर क्यों आकर्षित होते हैं। लेकिन फिर, विपरीत खेमे के कुख्यात विचारक, जैसे नीत्शे या डार्विन, भी उन्हीं से प्रेरित थे। पेरी ने निष्कर्ष निकाला कि इम्मानुअल कांट, इस्तांबुल की तरह, अपने स्वभाव के कई पहलुओं को समेटे हुए थे।
इसमें कोई हैरानी नहीं कि अज़ूर उसे इतना पसंद करता था। वह भी बहुमुखी प्रतिभा का धनी था। अज़ूर के कई रूप थे, मानो कई अलग-अलग व्यक्तित्व हों। पैनल चर्चा में आत्मविश्वास से भरा वाद-विवाद करने वाला; रोज़मर्रा की ज़िंदगी में ध्यान आकर्षित करने वाला अभिनेता; कक्षा में डराने वाला प्रोफ़ेसर; अपने दफ्तर में सख्त पूछताछ करने वाला; अपने घर की एकांत में सौम्य मेज़बान – उसके और कितने चेहरे थे? उसके विचार नव वर्ष की पूर्व संध्या के रात्रिभोज और उसके बाद की घटनाओं की ओर लौट गए। तब से वह डैरेन से बच रही थी, हालाँकि उसने कई बार फोन किया था और संदेश छोड़े थे जिनमें बढ़ती चिंता झलक रही थी, भले ही वह दुखी न हो। अगर कक्षाएं और किताबों की दुकान में अंशकालिक नौकरी न होती – और शिरिन न होती, जो हमेशा उसके दरवाजे पर दस्तक देने का कोई न कोई बहाना ढूंढ लेती थी – तो वह खुशी-खुशी अपने कमरे में तब तक बंद हो जाती जब तक उसका मन शांत न हो जाता।
अज़ूर के प्रति उसके आकर्षण ने उसके दैनिक जीवन को बेहद कष्टदायक बना दिया था। जब भी वह धुंध में छिपे बच्चे के बारे में बात करने के लिए उसके कमरे में जाती, तो उसके हर हावभाव, हर शब्द को वह समझने की कोशिश करती, कभी भी शांति से उसकी ओर नहीं देख पाती। एक जादूगरनी की तरह जो हर जगह दैवीय संकेत

लॉन्गवॉल स्ट्रीट के कोने पर उसे एक टेलीफोन बूथ दिखाई दिया। दो घंटे के समय अंतर को देखते हुए, उसके पिता घर पर अकेले या दोस्तों के साथ शराब पी रहे होंगे।
मेंसुर ने फोन उठाया। 'हेलो?'
‘बाबा… मुझे माफ़ करना, क्या मैंने गलत समय पर फोन किया?’
‘पेरी, मेरी प्यारी,’ उसने कहा। ‘तुम्हारा मतलब “बुरा समय” से क्या है? तुम हमेशा फोन कर सकती हो। काश तुम और ज्यादा बार फोन करती।’
उसकी आवाज में व्याप्त कोमलता को सुनकर उसकी सांस गले में अटक गई।
'आप ठीक हैं?'
‘मैं ठीक हूँ,’ उसने कहा। ‘माँ कैसी हैं?’
‘वह अपने कमरे में है। क्या मैं उसे फोन करूँ?’
‘नहीं, मैं उससे किसी और समय बात करूँगी।’ उसने धीरे से कहा, ‘मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है।’
‘ओह, तुम मुझे रुला दोगे, भौंरा।’
'नए साल की पूर्व संध्या पर घर न आ पाने का मुझे बहुत बुरा लग रहा है।'
‘अरे, नए साल की शाम की किसे परवाह?’ मेन्सुर ने कहा। ‘तुम्हारी माँ ने टर्की को ज़्यादा पका दिया और पुलाव जला दिया। इसलिए हमने सूखा मांस और काला चावल खाया। हमने टोम्बाला खेला। तुम्हारी माँ जीत गई। वह कहती है कि उसने धोखा नहीं दिया, लेकिन क्या हम उस पर विश्वास कर सकते हैं? ओह, और हमने टीवी पर एक बेली डांसर देखी – मतलब, मैंने देखी। बस इतना ही।’
कुछ बातें ऐसी थीं जिनका उसने जिक्र नहीं किया था, लेकिन पेरी ने फिर भी उन्हें सुन लिया: मेन्सुर की लगातार शराब पीने की आदत और कम कपड़ों में नाचने वाली नर्तकी का अपने कूल्हों को हिलाना, ये दोनों ही बातें सेल्मा को क्रोधित कर देतीं; उसके माता-पिता के बीच फिर से हुआ झगड़ा।
जैसे कि उसने उसके मन की बात पढ़ ली हो, मेन्सुर ने कहा, 'हाँ, मेरे मन में कुछ विचार आए। इससे बेहतर अवसर और क्या हो सकता है? आप जानती ही हैं कि लोग क्या कहते हैं, नए साल के पहले कुछ घंटे आप जिस तरह बिताते हैं, साल के बाकी दिन भी वैसे ही बीतते हैं।'
पेरी का दिल बैठ गया।
'कोई बात नहीं कि तुम नहीं आ सके,' मेन्सुर ने कहा। 'हमारे पास जश्न मनाने के लिए अभी कई और साल हैं। स्कूल सबसे महत्वपूर्ण चीज है।'

स्कूल... विश्वविद्यालय या कॉलेज नहीं, बल्कि स्कूल। यह बुनियादी शब्द अनगिनत माता-पिता के लिए लगभग पवित्र था, जो स्वयं पूर्ण रूप से शिक्षित न होते हुए भी शिक्षा में विश्वास रखते थे और अपने बच्चों के भविष्य में अपना सब कुछ निवेश करते थे।
‘मेरा भाई कैसा है?’ पेरी ने पूछा। उसे यह बताने की ज़रूरत नहीं थी कि वह किस भाई की बात कर रही है। यह हाकान ही होगा, क्योंकि वे उमुत के बारे में शायद ही कभी बात करते थे, और जब भी करते थे, तो हमेशा एक अलग ही लहजे में। ‘बहुत बढ़िया, बहुत बढ़िया। वे माता-पिता बनने वाले हैं।’
'वास्तव में?'
‘हां,’ मेन्सुर ने गर्व से भरी आवाज में कहा। ‘एक लड़का।’
अस्पताल में उस भयानक रात को एक साल से ज़्यादा समय बीत चुका था, लेकिन उसकी यादें अभी भी उसके मन में ताज़ा थीं। कीटाणुनाशक की गंध, काई जैसे हरे रंग का पेंट, दुल्हन की हथेलियों पर लाल रंग के अर्धचंद्र – और अब फरीदे उसके बच्चे को जन्म देने वाली थी। उसकी माँ के शब्द उसके दिमाग में गूँज रहे थे: कई शादियाँ इससे भी कमज़ोर नींव पर बनी हैं।
मुझे नहीं लगता कि मैं कभी ऐसा कर पाऊंगा।
'क्या करना है?'
‘ऐसे व्यक्ति से शादी करो जो मेरे साथ बुरा बर्ताव करे।’
मेंसुर ने आह भरी - आधी आह, आधी हंसी। 'तुम्हारी माँ और मैं तुमसे प्यार करते हैं,' उसने कहा और रुक गया, क्योंकि उसे उन दोनों का नाम एक साथ लेने की आदत नहीं थी। 'जो भी तुम्हें खुशी दे, हम उसका साथ देंगे।'
उसकी आँखों में आँसू भर आए। जब लोग उसके साथ शत्रुतापूर्ण व्यवहार करते थे, तो वह हमेशा करुणा से पेश आने पर अधिक असुरक्षित महसूस करती थी।
‘मेरी आत्मा, क्या हुआ? क्या तुम रो रही हो?’
उसने सवाल को अनसुना कर दिया। 'लेकिन बाबा... अगर एक दिन मैं आपको शर्मिंदा कर दूं तो क्या होगा? क्या आप मुझे ठुकरा देंगे?'
‘मैं अपनी बेटी को कभी ठुकराऊंगा नहीं, चाहे कुछ भी हो जाए,’ मेन्सुर ने कहा। ‘बस शर्त ये है कि तुम किसी दाढ़ी वाले इमाम को दामाद बनाकर घर न लाओ। ये तो मुझे मार ही डालेगा! और तुम्हें उन टैटू वाले बाइसेप्स वाले संगीतकारों में से किसी से भी डेट नहीं करना चाहिए, उन्हें क्या कहते हैं?

मेटलहेड्स। मुझे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन इससे तुम्हारी माँ पागल हो जाएगी। तो इमाम या मेटलहेड के अलावा, तुम्हारे पास बहुत सारे विकल्प हैं।’ पेरी हंस पड़ी। उसे टीवी के सामने बिताए उनके रीति-रिवाज याद आ गए, वो समय जब उसने उसे सीटी बजाना सिखाया था, च्युइंग गम से बुलबुला बनाना सिखाया था, नमकीन सूरजमुखी के बीज खाना सिखाया था और बड़ी कुशलता से उनके छिलके दांतों से तोड़ना सिखाया था।
'सच में, यह भाग्यशाली लड़का कौन है?' मेन्सुर ने पूछा।
वह आखिरी शब्द, 'लड़का', सोचने पर मजबूर कर देने वाला था। उसके पिता के नज़रिए से, वह केवल एक लड़के से ही प्यार कर सकती थी, जो उसकी ही उम्र का हो।
‘अरे, मैं तो बस एक छात्रा हूँ, कोई गंभीर बात नहीं है। मैं अभी किसी गंभीर चीज़ के लिए बहुत छोटी हूँ।’
'हां, पेरिसिम।' उसकी आवाज़ में राहत झलक रही थी। 'यह समय भी बीत जाएगा। अपनी पढ़ाई पर ध्यान दो।'
‘मैं करूँगा, बाबा।’
‘अरे, इस बारे में अपनी माँ से बात मत करो। उन्हें परेशान करने की कोई ज़रूरत नहीं है।’
'बिल्कुल नहीं।'
फोन रखने के बाद, वह करीब एक घंटे तक दौड़ती रही। बर्फीले पत्थरों पर उसके पैर फिसल रहे थे, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। जब वह मैदान में लौटी, तब तक वह इतनी थक चुकी थी कि उसकी पिंडलियों में तेज दर्द हो रहा था और हर बार कुछ निगलने पर उसका गला दुख रहा था, जो कि एक भयंकर फ्लू के शुरुआती लक्षण थे। वह तुरंत सो गई, सपने में भी दौड़ती रही, और शिरीन द्वारा लिखा और उसके बिस्तर पर छोड़ा गया एक नोट उसके हाथ में था।
पेरी, मुझे हमारे लिए एकदम सही घर मिल गया है! तैयार हो जाओ, हम शिफ्ट होने जा रहे हैं!

सूची

इस्तांबुल, 2016
‘क्या तुमने सुना अभी क्या हुआ? भयानक, बहुत भयानक!’
वह जनसंपर्क अधिकारी थीं, जो अपना प्रश्न सभी उपस्थित लोगों से पूछ रही थीं। वह शौचालय जाने के लिए बाहर निकली थीं, लेकिन तुरंत लौट आईं, उनका चेहरा लाल हो चुका था।
किसी ने कहा, 'इस बार क्या हुआ है?'
दुनिया में दो तरह के शहर होते हैं: एक वो जो अपने निवासियों को आश्वस्त करते हैं कि कल, परसों और उसके अगले दिन भी सब कुछ लगभग एक जैसा ही होगा; और दूसरे वो जो इसके ठीक विपरीत, चुपके से अपने निवासियों को जीवन की अनिश्चितता का एहसास दिलाते रहते हैं। इस्तांबुल दूसरी तरह का शहर है। यहाँ आत्मनिरीक्षण के लिए कोई जगह नहीं है, घटनाओं की गति के साथ तालमेल बिठाने के लिए घड़ियों का इंतज़ार करने का समय नहीं है। इस्तांबुलवासी एक के बाद एक ब्रेकिंग न्यूज़ की ओर भागते रहते हैं, तेज़ी से आगे बढ़ते हैं, तेज़ी से जानकारी ग्रहण करते हैं, जब तक कि कोई ऐसी घटना न हो जाए जो उनका पूरा ध्यान आकर्षित कर ले।
‘मैंने इसे अपने ट्विटर फीड पर देखा, एक धमाका,’ पीआर महिला ने कहा। ‘इस्तांबुल में?’ व्यापारी ने पूछा। ‘कब?’
तीन बुनियादी सवाल, हमेशा इसी क्रम में: क्या? कहाँ? कब? क्या: एक भयानक विस्फोट की सूचना मिली थी। कहाँ: शहर के ऐतिहासिक क्षेत्र के सबसे घनी आबादी वाले इलाकों में से एक में। कब: अभी चार मिनट पहले ही। विस्फोट इतना ज़बरदस्त था कि उसने उस इमारत का बाहरी हिस्सा ध्वस्त कर दिया और अगली गली तक की खिड़कियाँ चकनाचूर कर दीं, राहगीरों को घायल कर दिया, गाड़ियों के अलार्म बजने लगे और कुछ क्षणों के लिए रात के आसमान का रंग बदलकर जंग लगे भूरे रंग का हो गया।
व्यवसायी महिला के नेतृत्व में अधिकांश मेहमान टीवी पर समाचार देखने के लिए जल्दी से ऊपर चले गए। पेरी भी धीरे-धीरे उनके पीछे-पीछे एक रोशन और आरामदायक कमरे में गई। वह समूह के पीछे खड़ी हो गई, जहाँ से उसे बड़ी

स्क्रीन की झलक मिल रही थी। एक उत्तेजित रिपोर्टर - एक युवती जिसके बाल इतने लंबे थे कि उन्हें ओढ़ने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता था - दोनों हाथों से माइक्रोफ़ोन पकड़े हुए तेज़ी से बोल रही थी। 'हमें अभी तक यह नहीं पता कि कितने लोग मारे गए हैं, कितने घायल हुए हैं, लेकिन हालात अच्छे नहीं लग रहे हैं। अच्छे नहीं। हम बस इतना जानते हैं कि यह एक शक्तिशाली बम था।' बम। यह शब्द, मानो कहीं से जहरीली गैस का गुबार बनकर कमरे के बीचोंबीच गूंज उठा। उस समय तक, मेहमानों ने मन ही मन उम्मीद की थी कि शायद गैस रिसाव या खराब जनरेटर की वजह से यह तबाही मची हो। हालांकि इससे जो हुआ था उसकी गंभीरता कम नहीं हो जाती। लेकिन बम अलग बात थी। बम का मतलब सिर्फ एक दुखद घटना ही नहीं, बल्कि जान से मारने की मंशा भी थी। आपदाएँ वाकई डरावनी होती हैं। लेकिन आपदाओं के साथ बुराई का मिलन भयावह होता है।
फिर भी, वे बमों के साथ जीना सीख चुके थे – या यूं कहें कि बमों की संभावना के साथ। हालांकि आतंकवादी अनियमित और अनिश्चित तरीके से हमला करते थे, लेकिन माना जाता था कि वे कुछ खास पैटर्न का पालन करते थे। वे रात में हमला नहीं करते थे। वे लगभग हमेशा दिन के उजाले को ही चुनते थे, जब वे कम से कम समय में ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को निशाना बना सकते थे और अगले दिन की खबरों में छा सकते थे। रात, हालांकि अन्य मायनों में खतरनाक थी, ऐसी हिंसा से सुरक्षित थी। या कम से कम उन्होंने यही सोचा था।
इसलिए, उस व्यवसायी महिला ने पूछा, 'एक बम? इस अजीब समय पर?'
‘शायद आतंकवादी भी ट्रैफिक में फंस गए होंगे,’ व्यापारी ने चुटकी लेते हुए कहा। ‘इस्तांबुल में अब कुछ भी समय पर नहीं चलता, यहां तक कि अजराइल भी नहीं।’
वे हँसे – एक संक्षिप्त, भावहीन ठहाका। विपत्ति के समय मज़ाक करना असहज और अपराधबोध पैदा करता था; साथ ही, इससे भय भी दूर हो जाता था और अनिश्चितता का बोझ भी कम हो जाता था, जो असहनीय था।
इसी बीच, टीवी स्क्रीन पर, पृष्ठभूमि में, बच्चों और पुरुषों की भीड़ जमा हो गई थी, जो रिपोर्टर के हर शब्द को ध्यान से सुन रहे थे, इस उम्मीद में कि साक्षात्कार के लिए उन्हीं को चुना जाएगा। बारह साल से कम उम्र का एक लड़का, कैमरे का लेंस अपने चेहरे पर देखकर उत्साहित होकर हाथ हिला रहा था। अब स्क्रीन हेलीकॉप्टर व्यू पर बदल गई, जिसमें ऊपर से पूरा इलाका दिखाई दे रहा था। घर एक दूसरे के ऊपर इस तरह बने थे कि वे कंक्रीट के एक अखंड ब्लॉक

जैसे लग रहे थे। हालांकि, करीब से देखने पर अंतर स्पष्ट हो गए। एक इमारत तो ऐसी लग रही थी मानो वह कई वर्षों के गृहयुद्ध से गुज़री हो। टूटी हुई खिड़कियाँ, जली हुई दीवारें, बाहर फुटपाथ पर बिखरा हुआ कांच।
‘हम सब परिवार के साथ घर पर टीवी के सामने बैठे थे, तभी हमें एक आवाज़ सुनाई दी, ज़मीन हिल गई। मुझे लगा जैसे भूकंप आ गया हो,’ एक चश्मदीद ने बताया – वह कद में छोटा और गठीला आदमी था, जिसने पायजामा पहना हुआ था। उसकी आवाज़ में एक अजीब सी उत्तेजना थी जिसे वह मुश्किल से रोक पा रहा था – वह इस बात से अचंभित था कि कुछ मिनट पहले जिस चैनल पर वह टीवी देख रहा था, अब लाखों लोग उसे देख रहे थे। जैसे-जैसे वह अपने अनुभव बता रहा था, रिपोर्टर के कहने पर स्क्रीन के नीचे एक लाल बैनर दिखाई दिया जिसमें मृतकों की संख्या बताई गई थी।
समुद्र किनारे स्थित हवेली में, मेहमान एक-एक करके सैलून में वापस लौटे, ताकि समूह के बाकी सदस्यों को नवीनतम जानकारी दे सकें। 'पांच मृत, पंद्रह घायल।'
‘यह संख्या बढ़ सकती है। कुछ घायलों की हालत गंभीर है,’ पत्रकार ने कहा, जो अपने कार्यालय को फोन करने के लिए वहीं रुका हुआ था।
जिस सहजता से वे खाने की मेज पर मेज़े की प्लेटें एक-दूसरे को देते थे, उसी सहजता से अब वे खूनी घटनाओं के छोटे-छोटे विवरण साझा करने लगे। दोहराव का कोई महत्व नहीं था, पुनरावृत्ति तो दूर की बात थी। जितना अधिक वे साझा करते, उतना ही यह सब अवास्तविक लगने लगता। त्रासदी अन्य वस्तुओं की तरह एक वस्तु थी। इसका उपभोग होना तय था - व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से। पत्रकार की प्रेमिका ने गहरी सांस ली और फिर बोली, "तो वे अपने फ्लैट में बम बना रहे थे। सोचो ज़रा। उन्होंने टुकड़ों को ऐसे जोड़ा जैसे कोई शैतानी लेगो हो। फिर बम फट गया। अच्छी खबर: आतंकवादी मौके पर ही मारे गए। बुरी खबर: ऊपर वाले फ्लैट में रहने वाले पड़ोसी की भी जान चली गई। वह एक सेवानिवृत्त शिक्षक थे।"
“शायद भूगोल पढ़ाते थे, बेचारे,” व्यापारी ने थोड़ी लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। “क्या ही किस्मत थी… ज़रूर एक सभ्य नागरिक रहे होंगे, छात्रों के प्रश्नपत्र जाँचते होंगे, पुराने सूट पहनते होंगे। सालों की मेहनत के बाद, उन्होंने संन्यास ले लिया। अज्ञानी बच्चों से जूझते-जूझते थक गए। नीचे वाले फ्लैट में आतंकवादियों का एक झुंड आ गया… भाड़ में जाएँ ये, बम बनाने

लगे… धमाका! शिक्षक का अंत। अपने छात्रों को ऑक्सबो झीलों और राजधानियों के बारे में पढ़ाया, जबकि उनके चारों ओर आतंक का भयानक भूगोल फैला हुआ था!” कुछ पल बाद ही किसी ने दोबारा कुछ कहा। जनसंपर्क अधिकारी ने पूछा, 'क्या हमें पता है कि बम हमलावर कौन थे? क्या वे मार्क्सवादी थे? कुर्द अलगाववादी थे? इस्लामी कट्टरपंथी थे?'
वास्तुकार मुस्कुराया। 'कितना शानदार मेनू है!'
पेरी ने अपने पति को धीरे से गला साफ करते सुना। अदनान ने कहा, 'यह सिर्फ आतंकवाद या उसकी भयावहता की बात नहीं है। बात यह है कि हम ऐसी खबरों के कितने आसानी से आदी हो जाते हैं। कल इस समय शिक्षक के बारे में शायद ही कोई बात कर रहा होगा। एक हफ्ते में तो उसे भुला दिया जाएगा।'
पेरी ने नीचे देखा, उसके शब्दों में निहित उदासी उसके दिल तक पहुँच गई और वहीं ठहर गई, जैसे लकड़ी की आग के बुझते अंगारों में मंद गर्मी बनी रहती है।

दूसरे का चेहरा

ऑक्सफोर्ड, 2002
मुख्य द्वार के बाहर एक टैक्सी उनका इंतजार कर रही थी। वे कुछ देर चुपचाप टैक्सी में बैठे रहे, तभी पेरी ने छींक मारकर शांति भंग कर दी।
‘भगवान आपका भला करे, माउस!’
‘अच्छा, धन्यवाद… मुझे अब भी विश्वास नहीं हो रहा कि मैं तुम्हारे साथ रहने जा रही हूँ!’ पेरी ने खिड़की से बाहर गुजरती सड़कों को देखते हुए आह भरी।
पेरी के विरोध की परवाह किए बिना, शिरिन रहने के लिए जगह की तलाश करती रही। उसने कॉलेज अधिकारियों को मना लिया कि वे शैक्षणिक वर्ष के मध्य में ही बाहर जा सकते हैं। अपने अदम्य उत्साह के कारण उसे घर ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा। जैसे कोई भौंरा फूलों पर मंडराता है, वैसे ही लगन से उसने जमा राशि और पहले महीने का किराया चुका दिया और अपने थोड़े से सामान को ले जाने के लिए कार का इंतजाम कर लिया। उसने सब कुछ इतनी सहजता और कुशलता से व्यवस्थित किया था कि जब वह दिन आया, तो पेरी को बस अपना कोट उठाना था और अपनी दोस्त के साथ दरवाजे से बाहर निकल जाना था।
‘चिंता मत करो, हम खूब मजे करेंगे,’ शिरिन ने उत्साह से कहा। ‘हम तीनों!’ पेरी ने गहरी सांस ली। 'और कौन आ रहा है?'
शिरिन ने अपने बैग से एक पाउडर कॉम्पैक्ट निकाला और शीशे में खुद को देखा, मानो जवाब देने से पहले उसे अपने चेहरे के भावों को जांचना हो। 'मोना हमारे साथ आ रही है।'
‘क्या? और तुम मुझे यह बात अब बता रहे हो?’
“खैर, घर साझा करने की बात हो तो दो से तीन बेहतर होते हैं।” शिरीन मुस्कुराई, मानो उसे खुद भी अपनी बात पर यकीन न हो।
पेरी ने सिर हिलाया। 'तुम्हें मुझसे पूछना चाहिए था।'
‘माफ़ करना, मैं भूल गई थी। मेरे दिमाग में बहुत कुछ चल रहा था।’ शिरिन की आवाज़ नरम पड़ गई। ‘क्या बात है? मुझे लगा था कि तुम मोना को पसंद करती हो।’ 'हां, मैं करता हूं, लेकिन तुम दोनों की आपस में नहीं बनती!'

शिरिन ने कहा, 'बिल्कुल सही। मुझे चुनौती की जरूरत है।'
'आपका क्या मतलब है?'
अगर शिरिन के पास कोई स्पष्टीकरण होता, तो उसे अभी इंतजार करना पड़ता। वे उस पते पर पहुँच चुके थे। जेरिको में एक विक्टोरियन शैली का पंक्तिबद्ध मकान, जिसमें भूतल पर खाड़ीनुमा खिड़कियाँ, ऊँची छतें और एक छोटा सा पिछला बगीचा था।
मोना सामने के दरवाजे की सीढ़ियों पर खड़ी थी, उसके बगल में बैग और बक्से रखे थे। उसने उन्हें हाथ हिलाकर इशारा किया और नीचे उतर आई, उसके चेहरे पर घबराहट साफ झलक रही थी। एक नज़र में ही पेरी समझ गई कि मोना को भी शिरीन ने अपने जाल में फंसा लिया था – ठीक वैसे ही जैसे उसे फंसाया गया था।
टैक्सी का किराया चुकाने और उससे बाहर कूदते ही शिरीन ने पुकारा, 'हाय मोना।'
तीनों असहज रूप से फुटपाथ पर खड़े होकर एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे। उनकी भिन्नताएँ सड़क की स्थापत्य कला की सामंजस्यता के विपरीत थीं: मोना अपने लंबे भूरे कोट और बेज रंग के हेडस्कार्फ़ में; शिरिन अपने पूरे मेकअप, छोटी काली ड्रेस और ऊँची एड़ी के बूट में; पेरी अपनी जींस और नीले ट्रेंचकोट में।
‘हम इसकी कुछ प्रतियां बनवाएंगे,’ शिरिन ने अपने हाथ में चाबियां खनकाते हुए घोषणा की। ‘यह बहुत रोमांचक होने वाला है।’
और इन शब्दों के साथ उसने दरवाजा खोला और घर में दौड़ पड़ी। फिर मोना अंदर आई, दाहिना पैर पहले रखते हुए, उसके होंठ प्रार्थना में लीन थे। 'बिस्मिल्लाह इर-रहमान इर-रहीम।'
सबसे आखिर में पेरी आई, उसे छींक और खांसी आ रही थी। हालाँकि उसने पहले घर की तस्वीरें देखी थीं और वह सजा हुआ भी था, फिर भी वह आधा खाली सा लग रहा था। दूसरे लोगों के साथ एक ही छत के नीचे रहना, उनसे अनिश्चित समय पर, दिन-रात मिलना-जुलना, उसे डरा रहा था – उन लोगों के बीच इतनी मजबूरी वाली नज़दीकी, जो प्रेमी तो नहीं थे, लेकिन एक खास तरह का अपनापन साझा करते थे। उसने अपनी चिंताओं को दूर करने की कोशिश की। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। किस्मत एक जुआरी थी जिसे दांव बढ़ाना पसंद था। पेरी को आभास हुआ कि इस अनुभव के अंत में, या तो वे जीवन भर के लिए पक्की दोस्त, बहनें बन जाएँगी, या फिर यह सब झगड़ों और आंसुओं में खत्म हो जाएगा।

‘ठीक है!’ शिरिन मान गई। ‘लेकिन तुम्हें पैसों को लेकर इतना परेशान होना बंद करना होगा। ज़िंदगी बहुत छोटी है। मेरा मतलब है, कौन जाने आखिर में मुझे तुम्हारा कितना कर्ज़ चुकाना पड़ेगा? शायद तुम मुझे कोई अनमोल सबक सिखा दो, है ना?’

अगले कुछ घंटों में, वे अपने-अपने कमरों में लौट गए और सामान खोलने में व्यस्त हो गए। अपने छोटे आकार और कम साज-सज्जा के बावजूद, बगीचे की ओर खुलने वाली खिड़की वाला पेरी का कमरा उसे तुरंत भा गया। लेकिन सबसे बड़ा आश्चर्य पर्दे से ढका हुआ भारी लकड़ी का चौपाया पलंग था। किसी दूसरे युग की निशानी जैसा, जब वह उस पर लेटी और पर्दे खींचे तो उसे ऐसा लगा जैसे वह किसी घोड़ागाड़ी में बैठी हो। खिड़की के पास एक आरामदायक कोना भी था। उसने वहाँ एक कुर्सी रखी और उसे 'पढ़ने का कोना' घोषित कर दिया।
रात के खाने के समय उसने मोना के दरवाजे की दस्तक दी, जो उसके घर के ठीक सामने था। दोनों उत्सुकता से एक साथ अपना पहला भोजन तैयार करने के लिए नीचे रसोई में गईं। उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि शिरीन पहले से ही मेज पर बैठी थी और शराब की बोतल, सेब के रस का डिब्बा, जैतून की प्लेट और तीन गिलास सजा रही थी।
शिरीन ने कहा, 'हमें जश्न मनाना चाहिए। ऑक्सफोर्ड में तीन युवा मुस्लिम महिलाएं! पापी, आस्तिक और भ्रमित।'
मोना और पेरी के बीच कुछ देर तक सन्नाटा छाया रहा, क्योंकि वे यह समझने की कोशिश कर रही थीं कि कौन सा विशेषण किसके लिए है। पेरी ने अपना वाइन का गिलास उठाया और हवा में कहते हुए बोली, 'हमारी दोस्ती के लिए!'
‘हमारे सामूहिक अस्तित्व के संकट के लिए!’ शिरिन ने कहा।
'अपने बारे में खुद बोलो,' मोना ने सेब का रस पीते हुए कहा।
‘खैर, आप सच्चाई को मानने से इनकार कर रहे हैं,’ शिरीन ने कहा। ‘इस समय हम मुसलमान पहचान के संकट से गुजर रहे हैं। खासकर महिलाएं। और हम जैसी महिलाएं तो और भी ज्यादा!’
'अर्थ?'

मतलब, वे लोग जो एक से अधिक संस्कृतियों के संपर्क में आते हैं! हम बड़े सवाल पूछ रहे हैं। जीन-पॉल सार्त्र, तुम जल जाओगे! ज़रा इस पर गौर करो! हम एक ऐसे अस्तित्वगत संकट का सामना कर रहे हैं जैसा तुमने पहले कभी नहीं देखा होगा!
मोना बैठते हुए बोली, 'मुझे इस तरह की बातें पसंद नहीं हैं। आपको ऐसा क्यों लगता है कि हम दूसरों से इतने अलग हैं? आप तो ऐसे बात करते हैं जैसे हम किसी दूसरे ग्रह से आए हों!'
शिरिन ने अपनी शराब का एक घूंट तेज़ी से पिया। 'अरे बहन, जाग जाओ! बाहर कुछ पागल लोग धर्म के नाम पर, हमारे धर्म के नाम पर, बेहद घिनौनी हरकतें कर रहे हैं। शायद मेरे धर्म के नाम पर नहीं, लेकिन तुम्हारे धर्म के नाम पर तो ज़रूर। क्या तुम्हें इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता?'
‘इससे मेरा क्या लेना-देना है?’ मोना ने ठुड्डी आगे बढ़ाते हुए कहा। ‘क्या आप हर ईसाई से, जिससे आप मिलते हैं, इनक्विजिशन के अत्याचारों के लिए माफी मांगने को कहते हैं?’
'अगर हम मध्य युग में रह रहे होते, तो हां, मैं शायद ऐसा कर ही लेता।'
‘ओह, तो आज के ईसाई और यहूदी सब पंखहीन फरिश्ते हैं?’ मोना ने कहा। ‘क्या आप कभी गाजा में किसी चेकपॉइंट से गुज़रे हैं? मुझे नहीं लगता कि आप गुज़रे होंगे! रवांडा में हुए नरसंहार का क्या? स्ब्रेबेनिका का क्या? आप दुनिया के सभी ईसाइयों को उन भयानक हत्याओं के लिए ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकते, और आपको ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिए! लेकिन फिर कुछ पागलों के कृत्यों के लिए सभी मुसलमानों को क्यों दोषी ठहराते हैं?’
‘उह, क्या तुम दोनों लड़ना बंद कर सकते हो?’ पेरी ने खांसते हुए कहा। उसे बुखार आने जैसा महसूस हो रहा था।
शिरिन अपनी बात पर अड़ी रहीं। ‘हाँ, ईसाई और यहूदियों में भी बहुत से सनकी लोग हैं और हमें हर तरह की कट्टरता की निंदा करनी चाहिए, चाहे वह कहीं से भी आए। लेकिन आप इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि इस समय मध्य पूर्व में कट्टरता कहीं और से ज़्यादा फैली हुई है। क्या आप मिस्र में अकेले घूम सकती हैं बिना यौन उत्पीड़न के? रात के अंधेरे में सड़कों की तो बात ही छोड़ दीजिए! मैं व्यक्तिगत रूप से ऐसी महिलाओं को जानती हूँ जिन्हें तीर्थयात्रा पर जाते समय परेशान किया गया। पवित्र स्थानों पर! दिन दहाड़े! सऊदी पुलिस के सामने! महिलाएं इन बातों पर चुप रहती हैं क्योंकि

उन्हें शर्म आती है। और हमें शर्म क्यों आती है, उन लोगों को क्यों नहीं जो ऐसा करते हैं? बहुत सी ऐसी बातें हैं जिन पर हमें सवाल उठाने की ज़रूरत है।’
मोना ने कहा, 'मैं सवाल उठा रही हूँ। मैं इतिहास पर सवाल उठा रही हूँ। राजनीति पर। वैश्विक गरीबी पर। पूंजीवाद पर। आय असमानता पर। प्रतिभा पलायन पर। युद्ध उद्योग पर। उपनिवेशवाद की भयावह विरासत को मत भूलिए। सदियों की लूट और शोषण। इसीलिए पश्चिम इतना समृद्ध है! आइए इस्लाम को शांति से रहने दें और गंभीर मुद्दों पर बात करना शुरू करें!'
शिरिन ने निराशा में हाथ ऊपर उठाते हुए कहा, 'ये तो आम बात है। अपनी समस्याओं के लिए दूसरों को दोष देना।'
‘उह… क्या हम रात का खाना खा लें?’ पेरी ने एक बार फिर कोशिश की, हालाँकि उसे जवाब की उम्मीद नहीं थी। यह एक ऐसी स्थिति थी जिसे वह अच्छी तरह जानती थी – मानो अपने माता-पिता के साथ फिर से रह रही हो। गुस्से भरे आरोप एक-दूसरे पर बरस रहे थे; गलतफहमियों का सिलसिला चल रहा था। फिर भी, इस बार उसे चुपचाप देखना आसान लग रहा था। हवा में व्याप्त तनाव उसे उस तरह प्रभावित नहीं कर रहा था जैसा घर पर करता था। शिरीन और मोना उसके माता-पिता नहीं थे जो आपस में झगड़ते रहते थे। उसे बीच-बचाव करने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं हुई। भावनात्मक ज़िम्मेदारी का बोझ न होने के कारण, उसका मन विश्लेषण करने के लिए स्वतंत्र था। इसलिए उसने सुना, मन ही मन उनसे ईर्ष्या करते हुए। उनकी स्पष्ट भिन्नता के बावजूद, वे समान रूप से भावुक थीं। मोना को अपनी आस्था थी; शिरीन को अपना क्रोध। आखिर उसके पास सहारा क्या था?
शिरिन ने आगे कहा, ‘मैं बस इतना कहना चाहती हूं कि आज एक युवा मुस्लिम को जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, वे एक बौद्ध भिक्षु या मॉर्मन पादरी के सामने आने वाली चुनौतियों से कहीं अधिक गंभीर हैं। आइए इस बात को स्वीकार करें।’
मोना ने कहा, 'मैं कुछ भी स्वीकार नहीं करूंगी। जब तक आप अपने ही धर्म के प्रति पूर्वाग्रही रहेंगे, तब तक हम ठीक से बातचीत नहीं कर सकते।'
शिरीन ने ऊंची आवाज में कहा, 'लो, वही शुरू हो गया। जैसे ही मैं मुंह खोलकर अपने मन की बात कहती हूं, आप नाराज हो जाते हैं। कोई मुझे बता सकता है कि युवा मुसलमान इतनी आसानी से नाराज क्यों हो जाते हैं?'

मोना ने कहा, 'शायद इसलिए कि हम पर हमला हो रहा है? मुझे हर दिन अपना बचाव करना पड़ता है, जबकि मैंने कुछ भी गलत नहीं किया है। मुझसे यह साबित करने की उम्मीद की जाती है कि मैं आत्मघाती हमलावर नहीं हूँ। मुझे हर समय निगरानी में रहने का एहसास होता है - क्या आप जानते हैं कि यह कितना अकेलापन भरा होता है?'
मानो जवाब में, दिन भर से जमा हो रहे बारिश के बादल शहर पर टूट पड़े और खिड़की से टकराने लगे। पेरी ने पास ही बहती टेम्स नदी के बारे में सोचा, जो उफान पर थी और मानो अपने प्रवाह से मुक्त होने की कोशिश कर रही थी।
‘तुम अकेले हो? रहने दो!’ शिरीन ने कहा। ‘तुम्हारे साथ लाखों लोग खड़े हैं। सरकारें। पारंपरिक धर्म। मुख्यधारा का मीडिया। लोकप्रिय संस्कृति। तुम यह भी मानते हो कि भगवान तुम्हारे साथ है, जो कि बहुत बड़ी बात है। तुम्हें और क्या चाहिए? तुम्हें पता है हमारे इलाके में असली अकेले कौन हैं? नास्तिक। यज़ीदी। समलैंगिक। ड्रैग क्वीन। पर्यावरणविद। विवेक के आधार पर युद्ध का विरोध करने वाले। ये सब समाज से बहिष्कृत हैं। अगर तुम इनमें से किसी श्रेणी में नहीं आते, तो अकेलेपन की शिकायत मत करो।’
मोना ने कहा, 'तुम्हें कुछ नहीं पता। मुझे धमकाया गया, गालियां दी गईं, बस से धक्का दिया गया, मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया गया जैसे मैं गूंगी हूँ - और यह सब मेरे हिजाब की वजह से हुआ। तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है कि मेरे साथ कितना बुरा बर्ताव किया गया है! यह तो बस कपड़े का एक छोटा सा टुकड़ा है।' तो फिर आप इसे क्यों पहनते हैं?
‘यह मेरी पसंद है, मेरी पहचान है! मुझे आपके तौर-तरीकों से कोई फर्क नहीं पड़ता, तो आपको मेरे तौर-तरीकों से क्यों फर्क पड़ता है? सोचो, यहाँ उदारवादी कौन है!’
शिरीन ने कहा, 'बेहद अज्ञानी! पहले एक, फिर दस, फिर लाखों। देखते ही देखते हिजाब पहनने वालों का गणतंत्र बन जाता है। इसीलिए मेरे माता-पिता ने ईरान छोड़ा: तुम्हारे उस छोटे से कपड़े ने हमें देश निकाला दे दिया!'
पेरी के हर शब्द के साथ उसका चेहरा सख्त होता गया। वह एक कोने से टूटी हुई लकड़ी की मेज को घूर रही थी। उसे हमेशा से ही खरोंचों और चिकनी सतह के नीचे छिपी खामियों से लगाव रहा था।
‘पेरी, तुम्हारा क्या ख्याल है?’ शिरिन ने अचानक पूछा।
‘हां, हमें बताओ, हम में से कौन सही है?’ मोना ने कहा।

पेरी उनकी निगाहों के नीचे बेचैन हो रही थी। वह एक उम्मीद भरी निगाहों से दूसरे की ओर देखती रही, शब्दों को ढूंढने में उसे कठिनाई हो रही थी। उसने कहा, कुछ मायनों में शिरीन सही थी, कुछ मायनों में मोना। उदाहरण के लिए, वह इस बात से सहमत थी कि एक बंद मुस्लिम संस्कृति में अल्पसंख्यक समुदाय के किसी सदस्य के लिए जीवन व्यवस्थित रूप से अन्यायपूर्ण हो सकता है – चाहे वह सांस्कृतिक हो, धार्मिक हो या यौन – हालांकि वह पश्चिमी समाज में हिजाब पहनने वाली महिला की कठिनाइयों से भी अवगत थी। उसके लिए, यह हमेशा संदर्भ पर निर्भर करता था। किसी भी स्थान और समय में जो भी शक्तिहीन या वंचित पक्ष होता, वह उसका समर्थन करना चाहती थी। इसलिए वह किसी एक पक्ष का पूर्ण समर्थन नहीं करती थी, सिवाय कमजोर पक्ष के।
शिरिन ने मेज पर उंगलियां थपथपाते हुए कहा, 'यह बहुत अमूर्त है।' मोना के हावभाव से लग रहा था कि इस बार वे दोनों सहमत थीं। पेरी का जवाब, हालांकि संतुलित था, किसी को भी संतुष्ट नहीं कर पाया।
‘मैं एक बात साफ़ कर देना चाहती हूँ,’ मोना ने एक बार फिर शिरीन की ओर मुड़ते हुए कहा। ‘मुझे नास्तिकों से कोई आपत्ति नहीं है। न ही समलैंगिकों से। न ही ड्रैग क्वीन्स से। यह उनकी ज़िंदगी है। लेकिन मुझे इस्लाम विरोधी लोगों से नफ़रत है। अगर तुम युद्ध भड़काने वाले नव-रूढ़िवादी की तरह बातें करोगी, तो बेहतर होगा कि मैं इस घर से निकल जाऊँ।’
‘मैं, एक नव-रूढ़िवादी?’ शिरीन ने अपना गिलास इतनी ज़ोर से नीचे रखा कि शराब मेज पर छलक गई। ‘तुम जाना चाहते हो? ठीक है! लेकिन यह आसान रास्ता होगा। हमें एक-दूसरे की बात समझने की कोशिश करनी चाहिए।’
किसी बात पर टिके रहना। मुझे यह मुहावरा याद रखना होगा, पेरी ने मन ही मन सोचा।
मोना ने कहा, 'मैं सहमत हूँ।'
‘बहुत बढ़िया,’ शिरीन ने कहा। ‘हम मुस्लिम महिलाओं का घोषणापत्र लिखेंगे। MWM एक शानदार लोगो बनेगा। हम इसमें वो सब कुछ लिखेंगे जो हमें परेशान करता है। कट्टरता। लिंगभेद।’
मोना ने कहा, 'इस्लामोफोबिया।'
पेरी ने कहा, 'मुझे लगता है कि हमें अब रात का खाना बनाना शुरू कर देना चाहिए।'

'लेकिन तुम अपने नास्तिकता से काफी खुश हो,' मोना ने कहा।
शिरिन ने नाटकीय अंदाज़ में कहा, “मैं पहले कट्टर नास्तिक हुआ करती थी… अब नहीं, प्रोफ़ेसर अज़ूर की बदौलत। लेकिन मैंने अपने संशयवाद के लिए बहुत मेहनत की। मैंने इसमें अपना दिमाग, दिल और हिम्मत लगाई। मैंने भीड़-भाड़ और धार्मिक सभाओं से खुद को अलग कर लिया! यह मुझे यूं ही नहीं मिल गया। हां, मुझे अपनी इस यात्रा पर गर्व है।”
तो ये सच है, तुम अपनी संस्कृति से नफ़रत करते हो। तुम मुझसे नफ़रत करते हो। तुम्हारे लिए, मैं या तो पिछड़ी हुई हूँ या मेरा दिमाग़ धो दिया गया है। दबी हुई। अज्ञानी। लेकिन मैंने कुरान का अध्ययन किया है, तुम्हारे विपरीत। मुझे ये अत्यंत प्रभावशाली, ज्ञानवर्धक और काव्यात्मक लगा। मैंने पैगंबर के जीवन का अध्ययन किया है। जितना ज़्यादा मैंने उनके बारे में पढ़ा, उतना ही उनके व्यक्तित्व की मैं प्रशंसा करने लगी। मुझे अपने धर्म में शांति मिलती है। क्या तुम्हें परवाह है? मुझे तो ये भी नहीं पता कि मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए क्यों राज़ी हुई!
इसके बाद, मोना गुस्से में पैर पटकते हुए अपने कमरे की ओर सीढ़ियों से ऊपर चली गई। उसके भावों के भार से फर्श की लकड़ियाँ चरमरा उठीं।
शिरिन ने अपना खाली गिलास उठाया और पूरी ताकत से दीवार पर फेंक दिया। गिलास के छोटे-छोटे टुकड़े फर्श पर बिखर गए, मानो उदास कॉन्फ़ेटी के टुकड़े हों। पेरी चौंक गई, लेकिन तुरंत उठकर सफाई करने चली गई।
‘हिलो मत,’ शिरिन ने पेरी से कहा। ‘यह मेरी गड़बड़ है। मैं इसे साफ कर दूंगी।’
‘ठीक है,’ पेरी ने कहा। वह जानती थी कि शिरिन केवल बड़े टुकड़े ही उठाएगी, लेकिन लकड़ी के छोटे-छोटे टुकड़े फर्श के तख्तों के बीच फंसे रहेंगे, मानो किसी दिन उन्हें काटने के लिए तैयार हों। ‘मैं अपने कमरे में जा रही हूँ।’ शिरिन ने आह भरी। 'शुभ रात्रि, माउस।'
पेरी ने कुछ कदम बढ़ाए, लेकिन फिर वहीं रुक गई, उसकी निगाहें शिरिन पर टिकी हुई थीं, जिसके चेहरे से अचानक बहादुरी गायब हो गई थी।
'उसने मुझे चेतावनी दी थी कि यह आसान नहीं होगा,' शिरीन ने खुद से बुदबुदाते हुए कहा जब उसे लगा कि वह अकेली है।
‘तुम्हें किसने चेतावनी दी थी?’ पेरी ने पूछा।

शिरिन ने अपना सिर उठाया, उसकी पलकें बेतरतीब ढंग से फड़फड़ा रही थीं। 'कुछ नहीं,' उसने कहा। उसकी आवाज़ में एक तीखापन था जो पहले नहीं था। 'देखो, हम बाद में बात करेंगे, ठीक है? मुझे अब नहाना है। आज का दिन बहुत लंबा रहा है।'

नींद न आने के कारण, रसोई में अकेली बैठी पेरी ने अपने लिए एक और गिलास वाइन डाली, उसका दिमाग चकरा रहा था। क्या उसने अनजाने में किसी राज़ का पता लगा लिया था? शिरिन की अनकही टिप्पणी उसे कचोट रही थी। चाहे अंतर्ज्ञान से हो या तर्क से, उसे शक था कि शिरिन की साथ रहने की उत्सुकता के पीछे एक शातिर चालबाज़ था: अज़ूर।
उसे उनकी पिछली किताबों में से एक का एक अंश याद आया, जिसमें उन्होंने इस विचित्र विचार का वर्णन किया था कि कड़वे मतभेदों और आपसी आरोप-प्रत्यारोप में उलझे लोगों को एक बंद कमरे में अकेले छोड़ दिया जाए और उन्हें एक-दूसरे की आँखों में देखने के लिए मजबूर किया जाए। एक श्वेत वर्चस्ववादी कैदी को एक अश्वेत कैदी के साथ एक ही कोठरी में रखा जाए; एक जेड खनिक को एक पर्यावरणविद् के साथ; एक शिकारी को एक लुप्तप्राय पशु संरक्षणवादी के साथ। जब उसने ये पंक्तियाँ पढ़ी थीं, तब उसने उन पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया था, लेकिन अब सब कुछ स्पष्ट हो गया। वह एक खेल के भीतर थी, अनजाने में अपनी भूमिका निभा रही थी, किसी दूरस्थ मस्तिष्क द्वारा नियंत्रित।
हताशा में वह चुपके से ऊपर चली गई। मोना के शयनकक्ष का दरवाजा बंद था। गलियारे के अंत में स्थित स्नानघर से पानी बहने की आवाज आ रही थी। अंदर शिरिन एक धुन गुनगुना रही थी जो उसे हल्की-हल्की जानी-पहचानी लग रही थी, मानो किसी भूत की तरह गूंथ रही हो।
पेरी दबे पांव शिरिन के बेडरूम में दाखिल हुई। चारों तरफ गत्ते के डिब्बे बिखरे पड़े थे। साफ था कि शिरिन ने सामान खोलने में ज्यादा मेहनत नहीं की थी। एक बड़े डिब्बे पर बड़े अक्षरों में लिखा था: किताबें। डिब्बा खुला हुआ था और पेरी देख सकती थी कि कुछ किताबें शेल्फ पर रखी हुई थीं। देखकर लग

रहा था कि शिरिन इस काम से ऊब गई थी, इसलिए उसने डिब्बे के बाकी हिस्से को छुआ तक नहीं था।
पेरी ने किताबों के पन्नों को खंगाला। उसे जो चाहिए था, उसे ढूंढने में ज्यादा समय नहीं लगा। एक-एक करके, उसने प्रोफेसर अज़ूर की सारी पुरानी किताबें निकाल निकालीं। पहली किताब उठाते ही उसने उसका पहला पृष्ठ खोला। उस पर हस्ताक्षर थे, जैसा कि उसने उम्मीद की थी।
प्यारी शिरिन को,
सतत प्रवासी, निडर विद्रोही, दार्शनिक बहिष्कृत,
वो लड़की जो सवाल पूछना जानती है और जवाब ढूंढने से डरती नहीं है… ए. ज़ेड. अज़ूर
पेरी ने ईर्ष्या से भरी झटपट किताब बंद कर दी। ऐसा नहीं था कि वह यह नहीं जानती थी कि शिरिन नियमित रूप से, कम से कम सप्ताह में दो बार, प्रोफेसर से मिलने जाती थी और वे दोनों बहुत करीबी थीं, लेकिन शिरिन को उनकी नज़रों में इतना महत्व देखकर उसे बहुत तकलीफ़ होती थी। उसने बाकी किताबों को भी देखा तो पाया कि उन पर भी कुछ लिखा हुआ था। आज़ूर की नवीनतम किताब, जो उसने सबसे आखिर में उठाई, उस पर सबसे लंबा संदेश लिखा हुआ था।
शिरिन के लिए, जो अपने नाम से बिल्कुल अलग है,
मीठा और तीखा, फारस के अनार की तरह।
सिंह और सूर्य की भूमि…
लेकिन उसे यह जानना तो होगा ही, भले ही उससे प्रेम न हो, कि वह किस बात को तिरस्कार की दृष्टि से देखती है; क्योंकि केवल दूसरे के दर्पण में ही, क्या कोई ईश्वर के चेहरे की झलक देख सकता है?
मेरे प्रिय, प्यार से।
अपनी सौतेली बहन से प्यार करो…
ए. जेड. अज़ूर
कौन सी सौतेली बहन? पेरी जानती थी कि शिरिन की कोई सौतेली बहन नहीं थी - जब तक कि वह 'दूसरी औरत' के लिए एक रूपक न हो।
पेरी ने गहरी सांस ली जब उसे इस पूरे मामले की भयावहता का एहसास हुआ। शिरीन धर्म और धार्मिक लोगों से घृणा करती थी। हालांकि वह सभी संप्रदायों की आलोचना करती थी, लेकिन जिस धर्म में उसका पालन-पोषण हुआ था, उसी की वह सबसे अधिक निंदा करती थी। वह विशेष रूप से उन युवा मुस्लिम महिलाओं से चिढ़ती

थी जो अपनी निजी इच्छा से सिर ढकती थीं। उसने एक बार कहा था, 'मुल्ला और नैतिकता के नाम पर पाबंदियां हमें बाहर से चुप करा देते हैं। लेकिन वे लड़कियां जो ईमानदारी से मानती हैं कि पुरुषों को आकर्षित न करने के लिए उन्हें खुद को ढकना चाहिए, वे हमें अंदर से चुप करा देती हैं।' पेरी जितना इस पर विचार करती गई, उतना ही उसे यकीन होता गया कि प्रोफेसर अज़ूर ने शिरीन को एक सामाजिक प्रयोगशाला में इसलिए रखा था ताकि उसे उसकी 'दूसरी' यानी मोना से बातचीत करने के लिए मजबूर किया जा सके।
इस खोज से पेरी बुरी तरह हिल गई थी, लेकिन एक बात उसे और भी ज़्यादा परेशान कर रही थी। शायद यह सिर्फ़ मोना की बात नहीं थी। उसने गहरी साँस ली, पहली बार खुद को शिरीन की नज़रों से देखते हुए। उसकी अनिश्चितता, उसकी झिझक, उसका डर, उसकी निष्क्रियता... ऐसे गुण जिनसे शिरीन जैसी कोई भी घृणा करती। ऑक्सफ़ोर्ड में तीन मुस्लिम महिलाएँ: पापी, आस्तिक और भ्रमित। इस विचित्र सामाजिक प्रयोग के लिए सिर्फ़ मोना को ही नहीं चुना गया था। अब वह समझ गई थी: दूसरी सौतेली बहन खुद पेरी थी।
उसने किताब वापस रखी, डिब्बा बंद किया और कमरे से बाहर निकल गई। उसे अपने कॉलेज के शांत कमरे को छोड़कर इस घर में आने का कितना अफ़सोस हो रहा था, जहाँ उनकी हर हरकत प्रोफ़ेसर अज़ूर को बताई जाएगी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी कांच के जार में बंद मक्खी हो; पहली नज़र में गर्म और सुरक्षित, लेकिन फिर भी फंसी हुई।

चक्र

इस्तांबुल, 2016
अदनान ने एक बार फिर कहा, 'सेवानिवृत्त शिक्षक को भुला दिया जाएगा। अब हमें किसी बात से हैरानी नहीं होती। हम संवेदनहीन हो गए हैं।'
‘लेकिन, प्रिय, क्या तुम कुछ ज्यादा ही कठोर नहीं हो रही हो? हम और क्या कर सकते हैं?’ व्यवसायी महिला ने पूछा। ‘नहीं तो हम पागल हो जाएंगे!’
ये शब्द सुनकर, ज्योतिषी ने अधीरता से अपना सिर हिलाते हुए कहा, 'व्यक्तियों की तरह राष्ट्रों की भी एक राशि होती है। इस देश का जन्म 29 अक्टूबर को हुआ था। वृश्चिक राशि, जिस पर मंगल और प्लूटो का शासन है। मंगल कौन है? युद्ध का देवता। प्लूटो कौन है? पाताल लोक का देवता। ग्रह ही सब कुछ बता देते हैं।'
धार्मिक समाचार पत्र के मालिक ने कहा, 'ज्योतिषीय बकवास। जब हम सब एक अल्लाह में विश्वास करते हैं तो 'देवताओं' से आपका क्या मतलब है?'
उस ज्योतिषी ने अपनी पीठ सीधी की और नाराज सा दिखने लगा।
पत्रकार ने कहा, 'पूरे मध्य पूर्व के चक्र अवरुद्ध हैं।'
‘इसमें कोई हैरानी की बात नहीं,’ व्यापारी ने बीच में टोकते हुए कहा। ‘वे ऊर्जा के नाम पर सिर्फ तेल को ही जानते हैं। आध्यात्मिक ऊर्जा की बात ही क्या करें!’
'तो आपके पेशेवर विचार में किन चक्रों को खोलने की जरूरत है?' व्यवसायी महिला ने अपने पति की टिप्पणी को नजरअंदाज करते हुए पूछा।
‘पांचवां,’ जवाब आया। ‘यह कंठ चक्र है। दबे हुए विचार, अनकही इच्छाएं। यह मुंह के पिछले हिस्से से शुरू होता है और ग्रासनली और पेट पर दबाव डालता है।’
कुछ मेहमानों ने अपनी गर्दन को छुआ।
“वैसे, मेरा गला सूख रहा है, मुझे अपना चक्र खोलना होगा,” व्यापारी ने कहा। “किज़िम, हमारे लिए और व्हिस्की लाओ।”
उस ज्योतिषी ने आगे कहा, 'एक ऐसी तकनीक है जिसका उपयोग किसी राष्ट्र के चक्रों को खोलने के लिए किया जा सकता है...'
‘क्या इसे लोकतंत्र कहते हैं?’ पेरी ने पूछा।

प्लास्टिक सर्जन ने अपनी घड़ी देखी। 'अरे बाप रे, बहुत देर हो गई है। मुझे अब चलना चाहिए। मेरी सुबह की फ्लाइट है।' हालांकि वह बहुत समय पहले स्टॉकहोम में बस गए थे, लेकिन वह अक्सर इस्तांबुल लौटते थे, जहां उनके व्यापारिक हित थे और अफवाहों के अनुसार, उनकी एक प्रेमिका भी थी जो उनकी बेटी की उम्र की थी।
‘ठीक है, आप चले जाइए और हम इस गड़बड़ को संभाल लेंगे,’ पीआर महिला ने कहा। बेहतर जीवन की तलाश में विदेश जाने वालों से एक तरफ ईर्ष्या की जाती थी, तो दूसरी तरफ उन्हें नीचा दिखाया जाता था। बात न्यूयॉर्क, लंदन या रोम की नहीं थी। जो लोग पीछे रह गए, उनके लिए तो कहीं और जीवन जीने का विचार ही चुनौती भरा था। वे भी नए आसमान के नीचे चलने के लिए तरसते थे। नाश्ते और ब्रंच के दौरान वे विदेश जाने की विस्तृत योजनाएँ बनाते थे – लगभग हमेशा उनका मतलब पश्चिम की ओर होता था। लेकिन उनकी योजनाएँ, रेत के महल की तरह, परिचितता की लहर के साथ धीरे-धीरे नष्ट हो जाती थीं। रिश्तेदार, दोस्त और साझा यादें उन्हें बांधे रखती थीं। धीरे-धीरे वे किसी दूसरी जगह जाने की अपनी लालसा को भूलते चले गए – जब तक कि एक दिन उनकी मुलाकात किसी ऐसे व्यक्ति से नहीं हुई जिसने वास्तव में वही किया था जो वे कभी करना चाहते थे। तभी उनके मन में आक्रोश पैदा हुआ।
प्लास्टिक सर्जन ने अपने खिलाफ माहौल को भांप लिया। उन्होंने कहा, 'स्वीडन भी कोई स्वर्ग नहीं है।'
एक कमजोर तर्क जो किसी को भी यकीन नहीं दिला सका। कल वह यूरोप वापस चला जाएगा और उन्हें उनकी समस्याओं के साथ अकेला छोड़ देगा। वह दालचीनी के बन्स खाएगा जबकि वे क्षेत्रीय अस्थिरता, राजनीतिक उथल-पुथल और बमबारी से जूझ रहे होंगे।
पेरी ने सहानुभूति से मुस्कुराते हुए उससे कहा, 'यहां रहना आसान नहीं, यहां से जाना आसान नहीं।'
वह यह समझाना चाहती थी कि जो लोग कठिनाइयों के बावजूद पीछे रह गए, उन्होंने स्थायी मित्रता और व्यापक सामाजिक नेटवर्क का आनंद लिया, जबकि जो लोग हमेशा के लिए पलायन कर गए, वे अधूरे रह गए, एक पहेली के उस टुकड़े की तरह जिसमें एक महत्वपूर्ण टुकड़ा गायब है।

‘खैर, यह कितना दुखद है कि उसे आल्प्स में रहना पड़ता है!’ पत्रकार की प्रेमिका ने कहा, जो अपने प्रेमी के बार-बार कहने के बावजूद भी शराब पी रही थी।
‘आल्प्स स्विट्जरलैंड में हैं, स्वीडन में नहीं,’ किसी ने उसे सुधारने की कोशिश की, लेकिन पत्रकार की प्रेमिका ने उस टिप्पणी को अनसुना कर दिया। अपने पेट को तंग मिनी-स्कर्ट में दबाए हुए, वह उछलकर खड़ी हो गई और प्लास्टिक सर्जन की ओर अपने रंगे हुए, आधे चबाए हुए नाखून से इशारा करते हुए बोली, ‘तुम लोग भगोड़े हो! तुम लोग जाकर विदेश में आराम से रहो… हम ही हैं जो उग्रवाद, कट्टरवाद, लिंगभेद और… से निपटते हैं।’ वह मुड़ी जैसे आस-पास कोई और ‘वाद’ ढूंढ रही हो। ‘मेरी आज़ादी खतरे में है…’
‘खतरे की बात हो ही रही है…’ मेज़बान ने ज्योतिषी की ओर मुड़कर कहा, ‘प्रिय, मुझे आपको घर दिखाना ही होगा। केवल आप ही बता सकते हैं कि हमारे यहाँ इतनी अजीबोगरीब दुर्घटनाएँ क्यों हुई हैं। पहले बाढ़ आई, फिर बिजली गिरी। और क्या आपने उस जहाज के बारे में सुना? वह सीधे हवेली में जा घुसा, बिल्कुल किसी एक्शन फिल्म की तरह!’ उसने अपने पति की ओर देखा, कहीं वह कुछ भूल तो नहीं गई।
'पेड़,' व्यापारी ने मददगार ढंग से कहा।
‘अरे हाँ, हमारे छत पर एक पेड़ गिर गया! क्या आपको लगता है कि यह बुरी नज़र का असर है?’
‘लगता तो यही है। ईर्ष्या की शक्ति को कभी कम मत आंकना,’ ज्योतिषी ने कहा। ‘क्या तुमने नौकरानियों के कमरे चेक करवाए? हो सकता है उनमें से किसी ने तुम पर श्राप डाल दिया हो।’
‘आपको लगता है कि उनकी हिम्मत होगी? अगर हमें कुछ भी संदिग्ध लगा तो मैं उन्हें तुरंत बाहर निकाल दूंगी।’ व्यवसायी महिला ने अपना गला ऐसे पकड़ा जैसे उसे सांस लेने में दिक्कत हो रही हो। ‘आप कहां से शुरू करना चाहेंगी?’ 'तहखाना। अगर आप किसी अशुभ संकेत की तलाश में हैं, तो हमेशा सबसे अंधेरे कोनों की जाँच करें।'
जैसे ही ज्योतिषी और मेजबान वहां से गुजरीं, पेरी को एक कंपन महसूस हुई। एक और पल बीतने के बाद उसे एहसास हुआ कि यह उसके पति का फोन था। उसका चेहरा पीला पड़ गया – शिरीन वापस कॉल कर रही थी।

यरीहो का घर

ऑक्सफोर्ड, 2002
जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि घर का उनका अपना-अपना हिस्सा सबसे पसंदीदा था। शिरिन के लिए वह बाथरूम था - और सटीक कहें तो, अलग से रखा हुआ पंजे के आकार का बाथटब। मोमबत्तियों, बाथ सॉल्ट, क्रीम और तेलों से उसने उसे आत्म-संतोष का मंदिर बना दिया था। उसकी शाम की दिनचर्या थी टब को गर्म पानी से लबालब भरना, जिसमें वह तरह-तरह की खुशबूएँ मिलाती थी। एक घंटे तक उसमें भीगते हुए वह पत्रिकाएँ पढ़ती, संगीत सुनती, अपने नाखून संवारती और दिवास्वप्न देखती।
मोना को रसोई सबसे ज़्यादा पसंद थी। वह सुबह जल्दी उठ जाती और नमाज़ पढ़ना कभी नहीं भूलती थी। वह वज़ू करती, अपनी दादी की दी हुई रेशमी चटाई बिछाती और अपने और दूसरों के लिए दुआ करती, जिनमें शिरीन भी शामिल थी, जिसके बारे में मोना का मानना था कि उसे ईश्वर की प्रेरणा की ज़रूरत है। वह प्रेरणा किस रूप में होगी, यह उसने अल्लाह पर छोड़ दिया, क्योंकि वही सबसे बेहतर जानता था। उसके बाद वह नीचे रसोई में जाती और सबके लिए नाश्ता बनाती - पैनकेक, फुल मुदम्मस, ऑमलेट।
पेरी के लिए, उसके कमरे में चारपाई वाला पलंग उसकी पसंदीदा जगह थी। शिरीन ने उसे खरगोश के फर की तरह मुलायम मिस्र के सूती चादरों का एक अतिरिक्त सेट दिया था, जिससे पेरी का इस पलंग से लगाव और भी बढ़ गया था। वह यहीं पढ़ाई करती थी। रात में जब वह पलंग पर लेटती, तो बाहर लगे एल्डर के पेड़ की ऊपरी शाखाओं में हवा की सरसराहट या दूर बहती नदी की आवाज़ सुनती। सामने वाली दीवार पर परछाइयाँ एक शांत लय में हिलती रहतीं। उसे ऐसी आकृतियाँ दिखाई देतीं जो उसे काल्पनिक और वास्तविक, दोनों तरह के देशों के नक्शों की याद दिलातीं; ऐसे क्षेत्र जिनके लिए हजारों लोग मारे गए थे, खून पर खून बहाया गया था। अपनी कल्पनाओं की तेज़ गति से थककर वह सो जाती, इस ज्ञान से सुकून पाती कि जब वह अगले दिन उठेगी तो दुनिया वैसी ही होगी जैसी है।
सुबह के समय जब देर से सोने वाली शिरिन बिस्तर पर होती थी और जल्दी उठने वाली मोना प्रार्थना कर रही होती थी, तब पेरी दौड़ने के लिए बाहर जाती थी। दौड़ते समय वह अज़ूर के बारे में सोचती रहती थी। जब उसने शिरिन को उन तीनों

मोना और शिरीन के बीच आपसी तनाव पल-पल बढ़ता जा रहा था। उस शाम उनके बीच जो झगड़ा हुआ, वह अब तक का सबसे भयानक झगड़ा था।
पेरी बिना खाना खाए अपने कमरे में लौट गई, खुद को बिस्तर पर गिरा दिया और अपने कानों पर हाथ रख लिए क्योंकि नीचे से लगातार शोर आ रहा था।
कल सुबह, उसने सोचा और आशा की, कि वे एक-दूसरे से कही गई बातों पर शर्मिंदा होंगे।
हालांकि, पूरी संभावना यही थी कि वे इसे भुला देंगे – अगली लड़ाई तक। तीनों में से केवल पेरी ही उनके हर शब्द, हर हावभाव, हर दर्द को याद रखेगी। बचपन से ही वह एक समर्पित संग्राहक थी, दर्द भरी यादों को संजोने वाली। वह अपनी स्मृति को एक कर्तव्य, एक ज़िम्मेदारी मानती थी जिसे अंत तक निभाना था – भले ही उसे यह आभास था कि इतना बड़ा बोझ एक दिन उसे नीचे गिरा देगा।
पेरी जब छोटी थी, तो वह हवा की भाषा समझ सकती थी, अधकटे खेतों या बबूल के पेड़ों से गिरती बर्फ में खुदे संकेतों को पढ़ सकती थी, नल से बहते पानी के साथ गा सकती थी। वह तो यह भी सोचती थी कि अगर वह कोशिश करे तो एक दिन ईश्वर को अपनी आँखों से देख सकेगी। एक बार अपनी माँ के साथ टहलते हुए, उसकी मुलाकात एक ऐसे हेजहॉग से हुई जिसे कार ने कुचल दिया था। उसने उसकी आत्मा के लिए प्रार्थना करने की ज़िद की – जिससे सेल्मा को बहुत बुरा लगा। उसकी माँ ने समझाया कि स्वर्ग एक छोटी, सीमित जगह है जो कुछ चुने हुए लोगों के लिए आरक्षित है। वहाँ जानवरों को स्वीकार नहीं किया जाता।
पेरी ने पूछा, 'और कौन स्वर्ग नहीं जा सकता?'
‘पापी, दुष्ट कर्म करने वाले, जो हमारे धर्म को त्याग देते हैं और सही रास्ते से भटक जाते हैं… और जो आत्महत्या कर लेते हैं। उन्हें अंतिम संस्कार की प्रार्थना तक नहीं दी जाएगी।’
और जाहिर तौर पर, हेजहॉग भी। सड़क पर मरे हुए जानवरों को उनके कूड़ेदान में फेंक दिया गया था। उस रात पेरी चुपके से घर से निकली और बदबूदार कूड़ेदान से उस मरे हुए जानवर को निकाला। उसे दस्ताने नहीं मिले थे और जब उसने उसके बेजान शरीर को छुआ तो वह कांप उठी, मानो जानवर के शव से कुछ उसके अंदर समा गया हो। उसने अपने हाथों से एक गड्ढा खोदा, हेजहॉग को दफनाया और लकड़ी के स्केल से बनाए गए एक पत्थर से उस जगह को चिह्नित किया। फिर उसने प्रार्थना की। धीरे-धीरे, अंतिम संस्कार का आयोजन करना उसका पसंदीदा खेल बन गया। उसने मरी हुई मधुमक्खियों और मुरझाई हुई पंखुड़ियों, टूटे पंखों वाली

तितलियों और मरम्मत से परे क्षतिग्रस्त खिलौनों के अंतिम संस्कार का आयोजन किया। सेनेट में अवांछित जानवरों के लिए।
जैसे-जैसे वह बड़ी होती गई, उसने अपनी विचित्रताओं को एक-एक करके दबाना सीख लिया। परिवार, स्कूल और समाज ने उसकी सारी असामान्यताओं को पीसकर साधारणता के फीके चूर-चूर कर दिया। सिवाय धुंध में दिख रहे उस बच्चे के। लेकिन वह हमेशा जानती थी कि वह अलग है। एक ऐसा विचित्रपन जिसे उसे हर हाल में छुपाना था; एक ऐसा निशान जो हमेशा के लिए उसकी त्वचा पर अंकित रहेगा। उसने सामान्य होने के लिए इतना प्रयास किया कि अक्सर उसके पास कुछ और होने की ऊर्जा ही नहीं बचती थी, जिससे वह खुद को बेकार समझने लगती थी। अनजाने में ही, एकांत उसके लिए एक विकल्प न रहकर अभिशाप बन गया था। उसके सीने में एक ऐसा गहरा और स्थायी खालीपन था कि उसे लगता था कि इसकी तुलना केवल ईश्वर की अनुपस्थिति से ही की जा सकती है। हाँ, शायद यही बात थी। वह अपने भीतर ईश्वर की अनुपस्थिति को ढो रही थी। इसीलिए यह इतना भारी लगता था।

प्यादा

ऑक्सफोर्ड, 2002
पेरी अपने कंधे पर किताबों से भरा बैग और दोपहर के खाने से बचे हुए अंगूरों का गुच्छा लिए हुए साइकिल को रैडक्लिफ स्क्वायर से गुजार रही थी। रैडक्लिफ कैमरे के सामने, उसने ट्रॉय को अपने कुछ दोस्तों के साथ बेंच पर बैठे हुए और जोश से बातें करते हुए देखा। पेरी को देखते ही वह अपने दोस्तों के समूह से अलग होकर उसकी ओर चल पड़ा।
‘हाय पेरी। क्या तुम अभी भी अज़ूर के लिए पढ़ रही हो?’
और तुम... अब भी उस पर जासूसी कर रहे हो?
उसके होंठों का हल्का सा मुड़ना ही काफी था। 'उस आदमी को किसी प्रतिष्ठित संस्थान में पढ़ाने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए। तुम्हें पता है उसे अपने छात्रों की ज़रा भी परवाह नहीं है? उसके लिए तो बस उसका अहंकार ही सब कुछ है।'
छात्र उसे पसंद करते हैं।
‘हाँ, ज़रूर। खासकर महिलाएँ… जैसे तुम्हारी दोस्त, शिरीन।’ उसका नाम लेते हुए उसका सिर अजीब तरह से हिल गया।
पेरी ने अपने जूते की एड़ी को बजरी में गाड़ दिया। 'उसका क्या होगा?'
‘अरे, जैसे तुम्हें पता ही नहीं।’ उसने उसकी तरफ घूरकर देखा। ‘क्या मुझे सब कुछ साफ़-साफ़ बताना पड़ेगा?’
‘क्या स्पष्ट करना है?’
ट्रॉय की आँखें चमक उठीं। 'अज़ूर का शिरिन के साथ प्रेम संबंध है।'
उनके बीच कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया, हालांकि ज्यादा देर तक नहीं। 'लेकिन वह उनकी पुरानी छात्रा है...' पेरी ने कहा, और उसके शब्द अधूरे रह गए। 'वह उसके सेमिनार में भाग लेने के दौरान उसके साथ सो रही थी। मुझे यकीन है कि उन्होंने बिस्तर पर साथ-साथ उसके निबंधों की जाँच की होगी।'
पेरी ने नज़रें फेर लीं। उस पल उसे वो बात समझ में आई जो अब तक वह नहीं समझ पाई थी: अज़ूर के प्रति ट्रॉय की नफ़रत उसकी ईर्ष्या से और भी बढ़ गई थी।
यह लड़का शिरिन से प्यार करता था।

कभी-कभी वह उसके कॉलेज के कमरों में जाती है। वे दरवाजा बंद कर लेते हैं।
दिन के हिसाब से उन्हें बीस मिनट से लेकर आधे घंटे तक का समय लगता है।
मैंने समय नोट किया है, मैं बाहर इंतजार करता रहा हूँ।
‘बस करो।’ पेरी का चेहरा लाल हो गया।
मुझे पता है कि तुम भी उससे मिलने जाते हो। मैंने तुम्हें देखा है।
‘मेरे बारे में चर्चा करने के लिए…’ पेरी ने रुककर आगे कहा, ‘मेरे काम के बारे में।’
'झूठे, इस सेमेस्टर में तुम्हारा उनके साथ कोई सेमिनार नहीं है!'
पेरी ने कहा, 'मुझे...मुझे उसे कुछ महत्वपूर्ण बात बतानी थी।'
उसके लिए यह समझाना नामुमकिन था कि वह धुंध में छिपे बच्चे के बारे में बात करने के लिए कुछ बार वहाँ गई थी। अज़ूर ने उससे दर्जनों विस्तृत सवाल पूछे थे कि यह सब कैसे शुरू हुआ और उसके माता-पिता ने इस पर कितनी अलग-अलग प्रतिक्रिया दी थी। जिन्न का डर, तांत्रिक के पास जाना, उसकी डायरी में लिखी बातें... उसने उसे सब कुछ बता दिया था, अपनी बचपन की यादों को एक पुल में बदल दिया था, जिससे उसे उम्मीद थी कि अंत में वह उसके दिल तक पहुँच पाएगी। लेकिन जब अज़ूर का सब्र टूट गया, तो उसने वह पुल तोड़ दिया और अपने कमरे में आने के निमंत्रण देना बंद कर दिया।
‘क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा?’ ट्रॉय ने कहा। ‘यह आदमी अहंकारी शिकारी है। यह युवा दिमागों और युवा शरीरों को अपना शिकार बनाने की तलाश में है।’ पेरी ने फुसफुसाते हुए कहा, 'मुझे जाना होगा।'

भयानक माइग्रेन से बेहाल होकर वह घर जाते समय रास्ते में एक दवा की दुकान पर रुक गई। ऑक्सफ़ोर्ड आने के बाद से उसने हर तरह की दर्द निवारक दवाइयाँ आज़मा ली थीं। अब वह जानी-पहचानी गलियों में चल रही थी, और गर्भनिरोधकों से भरी अलमारियों के पास रुक गई, ऐसी किस्में जो उसने इस्तांबुल में कभी नहीं देखी थीं। चमकीले पैकेट, आकर्षक रंग, विचित्र डिज़ाइन, सनसनीखेज शब्द। उसके मन में ख्याल आया कि काश उसके माता-पिता ने इनमें से किसी एक उत्पाद

का इस्तेमाल किया होता तो वह पैदा ही न होती। न ही वह। यह एक सुखद शून्यता होती। न कोई पीड़ा, न कोई अपराधबोध, न कुछ भी नहीं।
उसे यह सच्चाई जानने में कई साल लग गए, जिसे उसके माता-पिता ने उसके बचपन में उससे बड़ी सावधानी से छिपा रखा था। यह सच है कि सेल्मा देर से गर्भवती हुई थी, लेकिन उसने एक नहीं बल्कि दो बच्चों को जन्म दिया था। एक लड़की और एक लड़का। पेरी और पोयराज़ - लड़की का नाम सुनहरे धागे से बुनी एक परी के नाम पर रखा गया था, और लड़के का नाम उत्तर-पूर्व की सबसे तेज़ हवा के नाम पर।
जब वे चार साल के थे, एक गर्म और सुस्त दोपहर में, सेल्मा कुछ देर के लिए बच्चों को सोफे पर अकेला छोड़कर रसोई में चली गई। वह बेर का जैम बना रही थी
- जो उसकी खासियतों में से एक थी। उन्होंने स्थानीय बाजार से भरपूर मात्रा में बेर खरीदे थे, और अब कुछ कॉफी टेबल पर एक कटोरे में थे, बाकी रसोई के काउंटरटॉप पर उबलने, मीठा करने और संरक्षित करने के लिए रखे थे। चारों ओर बैंगनी रंग छाया हुआ था।
कुछ देर बाद ऊबकर पेरी सोफे से रेंगते हुए कालीन पर आ गई। उसने कटोरे में रखे बेरों की ओर हाथ बढ़ाया, एक बेर उठाया, उत्सुकता से उसे देखा और चखा। बहुत खट्टा था। उसने अपना इरादा बदल दिया। उसने वह बेर अपने भाई को दे दिया, जिसने खुशी-खुशी उसे स्वीकार कर लिया। बस कुछ ही सेकंड लगे, इससे ज्यादा नहीं। जब तक सेल्मा रसोई से लौटी, उसका छोटा बेटा सांस लेने के लिए संघर्ष करना बंद कर चुका था, उसका चेहरा उस फल के रंग जैसा हो गया था जिसने उसकी सांस रोक रखी थी। पेरी ने यह सब देखा, कुछ समझे बिना, बिना हिले-डुले। अंतिम संस्कार के बाद घर पर जमा हुए रिश्तेदारों और पड़ोसियों के सामने सेल्मा अपनी बेटी पर चिल्लाई, ‘तुमने मुझे फोन क्यों नहीं किया? तुम्हें क्या हो गया था? तुमने अपने भाई को मरते हुए देखा और एक शब्द भी नहीं कहा। दुष्ट बच्ची!’
उनके बीच की दूरी कभी कम नहीं हो सकती थी। पेरी को अंदर ही अंदर पता था कि उसकी माँ उसके जुड़वाँ भाई की मौत के लिए हमेशा उसे ही दोषी ठहराएगी। चार साल की बच्ची के लिए मदद के लिए चिल्लाना कितना मुश्किल हो सकता है? अगर उसने मुझे बुलाया होता, तो मैं उसे बचा सकती थी।
सुन्नपन। पेरी की सबसे बड़ी चाहत यही थी। काश, वह कुछ भी महसूस न कर पाती और न ही कुछ याद रख पाती। लेकिन चाहे वह कितनी भी कोशिश कर ले, अतीत बार-बार

लौट आता था, और उसके साथ-साथ दर्द भी। उस दोपहर की याद उसके जुड़वां भाई के साये के साथ उसका पीछा करती रहती थी। और साथ ही अपराधबोध, शर्म और आत्म-घृणा भी, जो उसके सीने में इस तरह घर कर गई थी मानो कोई भावना न होकर कोई कठोर, भौतिक पदार्थ हो।

उसी शाम पेरी ने शिरिन को रसोई में अकेले सलाद के लिए टमाटर काटते हुए पाया। शिरिन अपने वजन पर नज़र रख रही थी, जो उसके मिजाज की तरह घटता-बढ़ता रहता था। मोना शहर से बाहर से आए रिश्तेदारों के साथ रात के खाने पर गई थी और देर से घर लौटेगी।
पेरी ने कहा, 'मुझे आपसे कुछ पूछना है।'
'ज़रूर, पूछो।'
‘क्या यह अज़ूर की योजना थी? मेरा मतलब है, हमारा एक ही घर में रहना। हमारी दोस्ती, शुरू से ही – क्या यह उसका विचार था?’
शिरिन ने अपनी भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, 'आपको ऐसा क्यों लगता है?'
पेरी ने कहा, 'कृपया अब और झूठ मत बोलो... यह उसके लिए एक प्रयोग है, है ना? अज़ूर की सामाजिक प्रयोगशाला।'
‘वाह, क्या साजिश है!’ शिरीन ने टमाटरों को सलाद के कटोरे में डाला और उसमें कुछ जैतून मिला दिए। ‘प्रोफेसर से तुम्हारी क्या समस्या है?’
ऐसा लगता है कि उसे अपने छात्रों के जीवन में दखल देने में आनंद आता है। ‘हम्म,’ शिरिन ने कहा। ‘वह और कैसे पढ़ा सकते हैं? आपको क्या लगता है कि इतिहास में विद्वानों ने अपने शिष्यों को कैसे प्रशिक्षित किया होगा? गुरु और शिष्य। दार्शनिक और उनके शिष्य। वर्षों की कड़ी मेहनत और अनुशासन। लेकिन हम यह सब भूल गए हैं। विश्वविद्यालय अब पैसे पर इतने निर्भर हो गए हैं कि जो छात्र फीस दे सकते हैं, उनके साथ शाही जैसा व्यवहार किया जाता है।’
‘वह हमारा गुरु नहीं है और हम उसके शिष्य नहीं हैं।’
‘जी हां, मैं हूं,’ शिरीन ने चिमटा उठाते हुए कहा और सलाद मिलाना शुरू कर दिया। ‘मैं खुद को उनकी समर्पित शिष्या मानती हूं।’

पेरी चुप हो गई, उसे समझ नहीं आ रहा था कि कैसे जवाब दे।
'अज़ूर के प्रति हमारा सम्मान ही एकमात्र ऐसी चीज़ है जो मोना और मुझमें समान है। तुम्हें क्या हुआ है? मुझे लगा था कि तुम प्रोफेसर को पसंद करती हो।'
पेरी के गाल लाल हो गए; उसे खुद से नफरत हो रही थी कि वह इतनी भोली क्यों थी। 'मुझे डर है कि वह हमसे बहुत ज्यादा उम्मीदें रखता है और हम उसकी मांगों को पूरा नहीं कर पाएंगे।'
‘ओह, तो तुम्हें उसे निराश करने की चिंता है,’ शिरीन ने मुस्कुराते हुए कहा और कटोरा उठाकर अपने कमरे की ओर चल पड़ी। ‘तो चिंता मत करो!’
‘रुको,’ पेरी ने कहा।
उसका मुंह सूख रहा था। उसे डर था कि अगर उसने वह सवाल बता दिया जो उसे अंदर ही अंदर परेशान कर रहा था, तो इसके क्या परिणाम होंगे, फिर भी उसे पूछना ही पड़ा। 'क्या तुम्हारा उसके साथ अफेयर चल रहा है?'
सीढ़ियों पर आधे रास्ते में शिरिन रुक गई। उसने एक हाथ रेलिंग पर रखा और अपनी सहेली को नीचे घूरने लगी, उसकी आँखें आग की तरह लाल थीं।
अगर आप शंका के कारण पूछ रहे हैं, तो यह आपकी समस्या है, मेरी नहीं। अगर आप ईर्ष्या के कारण पूछ रहे हैं, तो भी यह आपकी समस्या है, मेरी नहीं।
'मैं न तो शंकालु हूं और न ही ईर्ष्यालु,' पेरी ने अपनी आवाज धीमी रखते हुए कहा।
‘सच में?’ शिरीन हंस पड़ी। ‘ईरान में एक कहावत है जो मामानी ने मुझे सिखाई थी। जो खुद को चूहा बना लेती है, उसे बिल्लियां खा जाती हैं।’
'आप क्या कहने की कोशिश कर रहे हैं?'
‘मैंने कहा, मेरे मामलों से दूर रहो, चूहे, वरना मैं तुम्हें जिंदा खा जाऊंगा।’
यह सुनकर शिरीन गुस्से में अपने कमरे की ओर चली गई, और पेरी को रसोई में ही छोड़ दिया, जो खुद को छोटा और महत्वहीन महसूस कर रही थी।
वह अज़ूर से कितनी नफ़रत करती थी। उसका अहंकार। उसकी लापरवाही। शिरिन और न जाने किसके साथ इश्कबाज़ी करते हुए उसकी बेपरवाही। उसके भीतर नफ़रत का एक पहिया बेकाबू होकर घूम रहा था, मानो उसे चक्कर आ रहा हो। उसने उससे कितनी उम्मीदें रखी थीं। वह अपने ज्ञान और दूरदृष्टि से उसे उस दुविधा से बाहर

निकलने का रास्ता दिखाएगा जिसने उसे बचपन से परेशान कर रखा था। उसने ऐसा कुछ नहीं किया था।
लेकिन, सबसे ज़्यादा, वह खुद से नफ़रत करती थी: अपने व्याकुल मन से, जो सुखद विचारों की जगह चिंताएँ और बुरे सपने पैदा करता था; अपने बदसूरत शरीर से, जिसे वह रोज़ बोझ समझती थी, जिसकी खुशियों का वह कभी आनंद नहीं ले पाती थी; अपने भावुक चेहरे से, जिसे वह कई बार किसी और से बदलना चाहती थी – जैसे कि अपने जुड़वाँ भाई से। और वह क्यों मर गया और वह बच गई? क्या यह ईश्वर की एक और भयानक गलती थी?
उसे पूरा यकीन था कि वह न तो शिरिन जैसी बन सकती है - निडर, आत्मविश्वासी - और न ही मोना जैसी - वफादार, दृढ़। वह खुद से थक चुकी थी, अतीत के दर्द से आहत थी, भविष्य से डरी हुई थी। मन से उदास, स्वभाव से भ्रमित, नवजात बाघ की तरह डरपोक, फिर भी अपने भीतर छिपी जंगली प्रवृत्ति का सम्मान करने में असमर्थ... कोई नहीं समझ सकता था कि पेरी होना कितना थका देने वाला था। काश, वह सोकर किसी और के रूप में जाग पाती। या, इससे भी बेहतर, बिल्कुल न जाग पाती।
उस रात धुंध में छिपा वह बच्चा फिर आया। उसके चेहरे पर बैंगनी धब्बा और गहरा होता जा रहा था। उसने उसके बिस्तर की चादरों पर बैंगनी रंग के आँसू बहाए। चारों ओर एक गहरा, चमकदार रंग फैल गया, जो पके हुए बेरों की याद दिलाता था। बच्चा अपनी अस्पष्ट भाषा में बोलता रहा, उससे कुछ ऐसा करने का आग्रह करता रहा जो बहुत समय से लंबित था। इस बार वह उसकी बात समझ गई और मान गई। शायद वह उस अभागे हेजहॉग से फिर मिल पाएगी। उस जानवर का क्या हुआ, उसके शरीर का, उसकी आत्मा का? वह स्वयं यह जान पाएगी कि ईश्वर के स्वर्ग में प्रवेश न पाने वालों का क्या होता है।

मार्ग

इस्तांबुल, 2016
जब पेरी शिरीन को वापस फोन करने के लिए छत पर गई, तो उसने देखा कि कोने में दो लोग दुबके बैठे थे, आधे साये में, फिर भी उन्हें पहचानना नामुमकिन नहीं था - एक व्यवसायी और बैंक के सीईओ। कंधे झुके हुए, सिर नीचे किए, निगाहें ज़मीन पर गड़ाए, ऐसा लग रहा था जैसे वे किसी गंभीर मामले पर चर्चा कर रहे हों।
‘तो आप क्या करने वाले हैं?’ सीईओ ने पूछा।
“अभी फैसला नहीं किया है,” व्यापारी ने सिगार का धुआं उड़ाते हुए कहा। “लेकिन कसम से, मैं उन कमीनों को सबक सिखाऊंगा। उन्हें पता चलेगा कि वे किसके साथ पंगा ले रहे हैं।”
सीईओ ने कहा, 'सुनिश्चित करें कि आपके पास कुछ भी लिखित में न हो।'
दोनों आदमियों ने पेरी को दरवाजे के पास खड़े नहीं देखा था। चुपके से वह वहाँ से चली गई, जो कुछ उसने अभी सुना था उससे उसका सिर चकरा रहा था। दफ्तर में लगी वो तस्वीरें जिनमें भ्रष्ट नेताओं और तीसरी दुनिया के तानाशाहों से उसके संबंध दिखाए गए थे; सार्वजनिक धन के गबन की अफवाहें; माफिया सरगनाओं से उसके संबंध – सब कुछ एक ही बात थी। उनके मेज़बान के व्यापारिक सौदे संदिग्ध थे, और उसे शक था कि डिनर में आए कई मेहमान – शायद उसका पति भी
– यह जानते थे। लेकिन वे एक अमीर और ताकतवर आदमी के साथ एक अच्छी शाम बिताने के रास्ते में उसकी खराब प्रतिष्ठा को आने नहीं देने वाले थे। आखिर कोई अपराध में सहयोगी कब बनता है – जब वह सक्रिय रूप से उसमें हिस्सा लेता है या जब वह निष्क्रिय रूप से अनभिज्ञता का दिखावा करता है?
रसोई और ड्राइंग रूम के बीच एक छोटा सा रास्ता था, जिसकी एक दीवार पर शीशा लगा हुआ था। पेरी यहीं, इस संकरी जगह में खड़ी थी, फोन को ऐसे पकड़े हुए जैसे उसे डर हो कि कोई उसे छीन न ले। जब भी कोई नौकरानी झूलते दरवाजे से अंदर या बाहर जाती, वह रसोई में झाँकती – रसोइया लहसुन काट रहा था, उसके हाथ में चाकू लकड़ी के तख्ते पर फंदांगो की तरह बज रहा था। वह आदमी थका हुआ और चिड़चिड़ा लग रहा था। इतना सारा खाना बनाने के बाद, उसे अभी-अभी एक ट्राइप

सूप बनाने के लिए कहा गया था – इस्तांबुल की सबसे अच्छी परंपरा के अनुसार, शराब के बाद के बुरे असर को दूर करने के लिए।
पेरी ने देखा कि शेफ अपने सहायक से कुछ बुदबुदा रहा है, जिस पर सहायक ज़ोर से हंस पड़ा। उसे लगभग यकीन था कि वे मेज पर कही गई हर बात छुपकर सुन रहे थे और सबका मज़ाक उड़ा रहे थे। दरवाज़ा बंद हो गया, और वह रसोई की जीवंत दुनिया से अलग हो गई। अब गलियारे में अकेली खड़ी पेरी को एक जानी-पहचानी घबराहट सताने लगी। बहुत लंबे समय से टल रहे काम को करने की हिम्मत जुटाना बर्फीले ठंडे समुद्र में छलांग लगाने जैसा था। एक पल भी हिचकिचाहट हुई तो हिम्मत टूट जाएगी। उसने जल्दी से शिरीन का नंबर डायल किया। पहली ही घंटी बजते ही फोन उठ गया।
‘हाय शिरिन… मैं पेरी हूँ।’
गहरी सांस लेते हुए उसने कहा, 'हां, मुझे पता है।'
उसकी आवाज में जरा भी बदलाव नहीं आया था - वही चुस्त, गूंजदार और आत्मविश्वास से भरी हुई आवाज।
पेरी ने कहा, 'काफी समय हो गया है।'
‘जब मैंने तुम्हारा संदेश सुना तो मुझे यकीन ही नहीं हुआ,’ शिरिन ने कहा। फिर, थोड़ी धीमी आवाज़ में बोली, ‘मजेदार बात है, मैंने इस पल के लिए पहले से ही तैयारी कर रखी थी। मैंने सोच रखा था कि अगर तुम दोबारा फोन करोगे तो मैं क्या कहूँगी, लेकिन अब…’
'तुम क्या कहने वाले थे?' पेरी ने फोन को एक कान से दूसरे कान पर लगाते हुए पूछा।
'मेरा यकीन मानो, तुम जानना नहीं चाहोगे,' शिरिन ने कहा। 'तुमने पहले फोन क्यों नहीं किया?'
मुझे चिंता थी कि आप अभी भी नाराज होंगे।
‘हाँ,’ शिरिन ने कहा। ‘मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा, मुझे तुम समझ नहीं आ रही। तुमने अपने साथ और उसके साथ जो किया वो पागलपन है… तुमने उससे माफी तक नहीं मांगी।’
पेरी ने कहा, 'हमारा एक समझौता हुआ था।' उसके शब्द, उसके पूरे शरीर की तरह, नाजुक और टूटते हुए महसूस हो रहे थे। 'उसने मुझसे वादा करवाया था कि मैं उससे कभी माफी नहीं मांगूंगी, चाहे कुछ भी हो जाए।'
'बकवास।'

पेरी ने आह भरी। 'मैं तब जवान थी।'
‘तुम ईर्ष्या कर रहे थे!’
पेरी ने खुद से सहमति में सिर हिलाया। 'हां... मैं थी।'
रसोई का दरवाजा खुला; एक नौकरानी भाप से भरे कटोरे से भरी एक बड़ी ट्रे लेकर बाहर भागी। लहसुन और सिरके की तेज गंध पेरी की नाक में घुस गई।
‘तुम कहाँ हो?’ शिरिन ने पूछा।
'समुद्र किनारे बने एक आलीशान बंगले में पार्टी। मछली के टैंक, डिजाइनर बैग, बड़े-बड़े सिगार, ट्रफल्स... आपको यह बिल्कुल पसंद नहीं आएगा।'
शिरिन हंस पड़ी।
पेरी ने कहा, 'आज का दिन बहुत अजीब रहा।' अब जब उसने बोलना शुरू कर दिया था, तो शब्द सहजता से बह रहे थे। 'मेरा सामान छीन लिया गया। मैं उस बदमाश को जान से मार सकती थी।' उसने यह नहीं बताया कि उसने उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश की थी। अगर शिरीन के साथ भी ऐसा ही कुछ हुआ होता, तो वह बिना किसी झिझक के बता देती। वे दोनों कितनी अलग थीं; और आज भी कितनी अलग हैं। 'उसे मेरे पर्स में रखी हमारी एक तस्वीर मिल गई।'
‘तुम हमारी तस्वीर अपने साथ रखते हो?’ शिरिन ने पूछा। ‘कौन सी?’
‘याद है, बॉड के सामने, सर्दियों के मौसम में?’ पेरी ने शिरिन के कुछ कहने का इंतज़ार नहीं किया। ‘तुम, मोना और मैं… प्रोफ़ेसर अज़ूर। इतने सालों तक मैंने खुद को यकीन दिलाया कि मैंने ऑक्सफ़ोर्ड को पीछे छोड़ दिया है, लेकिन मैं खुद को धोखा दे रही थी।’
मुझे कभी समझ नहीं आया कि आपने पढ़ाई-लिखाई में रुचि कैसे खो दी। आप तो एक बहुत ही प्रतिभाशाली छात्र थे।'
पेरी ने कहा, ‘एक बदलाव। मैं एक माँ हूँ, एक पत्नी…’ वह थोड़ी देर रुकी। ‘एक गृहिणी, एक चैरिटी ट्रस्टी! मैं अपने पति के बॉस के लिए पार्टियाँ देती हूँ – ठीक उसी तरह की महिला बनने से मैं हमेशा डरती थी। मेरी माँ का आधुनिक रूप। और जानते हैं क्या? मुझे यह पसंद है – ज़्यादातर समय।’
शिरिन ने पूछा, 'क्या तुमने शराब पी है?'
जितना मुझे करना चाहिए उससे कहीं अधिक।
पत्तों की हल्की सरसराहट जैसी धीमी हंसी। अगर शिरिन ने कुछ और कहा भी तो पेरी उसे सुन नहीं पाई, क्योंकि तभी वह तांत्रिक मेज़बान के साथ हाथ में हाथ डाले उसके पास से गुज़रा, पूरे घर में बुरी नज़र की तलाश में। वह एक

तरफ मुड़ा और अपने होठों को हल्का सा हिलाते हुए पेरी की तरफ देखा, मानो वह जानता हो कि वह किससे बात कर रही है।
शिरिन ने पूछा, 'तुम्हारे जुड़वां बच्चे कैसे हैं?'
‘आपको कैसे पता चला कि मेरे जुड़वां बच्चे हैं?’
‘सुना है।’ पेरी के लिए उसके स्रोत का अनुमान लगाना मुश्किल नहीं था; वे दोनों वर्षों से अलग-अलग मोना के संपर्क में थे।
‘वे बड़े हो रहे हैं। मेरी बेटी ने मेरे खिलाफ शीत युद्ध छेड़ रखा है। अब तक तो वह जीत रही है।’
शिरिन ने सहानुभूति भरी आह भरी। वह बहुत अच्छी थी – पेरी की उम्मीद से कहीं ज्यादा अच्छी।
‘घर पर सब कैसा चल रहा है?’ पेरी ने पूछा। उसने भी कुछ बातें सुनी थीं। वह जानती थी कि शिरीन और उसके दीर्घकालिक साथी – जो एक मानवाधिकार वकील हैं – ने कितनी बार ब्रेकअप किया और फिर साथ आए, इसका हिसाब ही खो दिया था।
‘ठीक है… असल में, मैं गर्भवती हूँ। मेरी डिलीवरी मई में होने वाली है।’ बस यही बात थी। हार्मोन का असर। शिरीन मां बनने वाली थी। वह एक ऐसे दौर से गुज़र रही थी जब मन में कड़वाहट की बजाय क्षमा करना ज़्यादा स्वाभाविक था। जब आप एक नए जीवन का स्वागत करने की तैयारी कर रहे हों, तो पुरानी शिकायतों को मन में रखना मुश्किल होता है।
पेरी ने कहा, 'बधाई हो, यह बहुत अच्छी खबर है। मुझे आपके लिए बहुत खुशी है। लड़का होगा या लड़की?'
'लड़का।'
‘क्या आपने कोई नाम सोच रखा है?’ पेरी ने पूछा और तुरंत ही जवाब को भांप लिया।
‘मुझे लगता है तुम पहले से ही जानती हो कि मैं उसे क्या नाम दूंगी,’ शिरिन ने कहा। कुछ पल का सन्नाटा छा गया। सन्नाटे में दुश्मनी की एक झलक घुल गई, जैसे किसी पुराने समोवर से धुआं निकलता है। ‘मैंने तुम्हें इतने लंबे समय से नफरत की है कि अब नफरत करने की कोई गुंजाइश ही नहीं बची।’
‘अज़ूर के बारे में क्या? वह मेरे बारे में क्या सोचता है?’
लगभग चौदह साल हो गए थे जब उसने आखिरी बार उससे बात की थी। कई बार पेरी को यकीन नहीं होता था कि प्रोफेसर की उपस्थिति उसके जीवन में उतनी ही मजबूत थी जितनी उसे याद थी, क्योंकि वह पूरी तरह से अतीत में विलीन हो गया था।

खुद पता लगा लो। वो अभी घर पर ही होगा। क्या तुम्हारे पास पेन है?
चौंककर पेरी ने चारों ओर देखा। 'बस एक पल।'
उसने कान से फोन लगाए रसोई का दरवाजा खोला और पट्टी बंधे हाथ से लिखने का इशारा किया। शेफ ने अपनी जेब से एक फाउंटेन पेन और फ्रिज पर चिपके नोटपैड का एक पन्ना उसे दे दिया।
पेरी ने इशारे से कहा, 'धन्यवाद।'
शिरिन ने वह संख्या दोहराई, इसलिए नहीं कि उसे ऐसा करने की ज़रूरत थी, बल्कि इसलिए कि इससे उसे कुछ कहने का मौका मिल गया। उसने आगे कहा, 'उसे फोन करो।'
तभी समुद्र किनारे बने उस आलीशान घर में नीचे वाले दरवाजे की घंटी की आवाज़ गूंजी। एक नौकरानी यह जानने के लिए रसोई से बाहर भागी कि कौन आया है। ऐसा लग रहा था कि वह अपने हाथ में कुछ खाना छुपा रही है। पेरी सोच रही थी कि क्या कर्मचारियों ने परोसे गए स्वादिष्ट व्यंजनों का स्वाद चखा था; क्या उन्होंने रात का खाना खाया भी था।
अचानक एक जोरदार आवाज सुनाई दी - एक खुला दरवाजा दीवार से टकराकर वापस बंद हो गया, जिसके बाद कई तरह की आवाजें आईं: एक दबी हुई चीख; तेज और भारी कदमों की आवाज।
पेरी ने खुद को यह कहते हुए सुना, 'मुझे तुम्हारी याद आती है।'
‘माउस, मुझे भी तुम्हारी याद आती है।’
गलियारे से पेरी ने देखा कि ड्राइंग रूम के दूसरी तरफ दो आदमी अंदर घुस आए, उनके चेहरे काले स्कार्फ से ढके हुए थे और उनके हाथों में बंदूकें थीं। उनमें से एक ने ज़ोर से चिल्लाते हुए कहा, 'सब लोग खड़े हो जाओ!'
‘क्या हो रहा है?’ व्यवसायी महिला चिल्लाई।
'चुप रहो! जैसा हम कहते हैं वैसा करो, अभी!'
‘तुम मुझसे इस तरह बात नहीं कर सकते…!’ व्यवसायी महिला के मुँह से दबी हुई, घुटती हुई आवाज़ निकली। संभवतः उसका पति अभी भी छत पर ही था।
'एक और बेवकूफी भरा शब्द बोला, कसम से, और तुम्हें इसका पछतावा होगा!' ट्रिगर की धातुई क्लिक की आवाज़। पेरी ने अपने जीवन में दूसरी बार इतनी नज़दीक से बंदूक देखी थी। उसके भाई उमट के पास से पकड़ी गई बंदूक के विपरीत, हमलावरों की बंदूकें बड़ी और गहरे हरे रंग की थीं।
‘माउस, क्या तुम वहाँ हो?’ शिरिन ने पूछा।

[illegible] [illegible] [illegible] [

शेरी का गिलास

ऑक्सफोर्ड, 2002
राष्ट्रपति का आवास पंद्रहवीं शताब्दी के एक अग्रभाग के पूरे एक हिस्से में फैला हुआ था। अज़ूर पॉलिश किए हुए काले मुख्य द्वार तक गया और घंटी बजाई। कुछ ही सेकंड बाद एक वरिष्ठ स्काउट प्रकट हुआ और उसे विशाल प्रवेश कक्ष में ले गया।
'प्रोफेसर जी, कृपया इधर आइए,' उस व्यक्ति ने कहा, और वह अज़ूर को एलिज़ाबेथन शैली की ओक की सीढ़ियों से ऊपर ले गया, एक पैनल वाली लंबी गैलरी से होते हुए राष्ट्रपति के अध्ययन कक्ष तक ले गया।
अंदर, राष्ट्रपति अपने कागज़ात व्यवस्थित करने में व्यस्त थे – सबसे ज़रूरी कागज़ात हाथीदांत की ट्रे में, महत्वपूर्ण लेकिन कम ज़रूरी कागज़ात भूरी ट्रे में, और बाकी सभी पीले रंग की ट्रे में – जैसा कि वे हमेशा किसी ऐसी मुलाकात के समय करते थे जो उन्हें पसंद नहीं होती थी। यह एक कठिन बातचीत होने वाली थी और उन्हें अपने विचारों को व्यवस्थित करने की ज़रूरत थी। इसी बीच, उन्होंने अपनी मेज को साफ करना शुरू कर दिया। स्टिकी नोट्स, स्टेपलर, चांदी के हैंडल वाला मोती का लेटर ओपनर… उन्होंने पेंसिलें – हर एक को पूरी तरह से तेज किया हुआ – एक बेलनाकार चमड़े के डिब्बे में रख दीं। यह उनकी बेटी का उपहार था।
दरवाजे पर हुई तेज दस्तक ने उसे उसकी तल्लीनता से जगा दिया। 'अंदर आ जाइए।' अज़ूर मखमली जैकेट पहने हुए अंदर आया, जिसका रंग बैंगनी की सही छटा लिए हुए था। उसके नीचे उसने हल्के रंग का टर्टलनेक पहना हुआ था। उसके बाल हमेशा की तरह बिखरे हुए थे।
'सुप्रभात, लियो। काफी समय हो गया।'
‘अज़ूर, आपको देखकर बहुत खुशी हुई,’ राष्ट्रपति ने विनम्र और स्नेहपूर्ण लेकिन तनाव भरी आवाज़ में कहा। ‘काफी समय हो गया। मैं चाय के बारे में सोच रहा था; क्या आप मेरे साथ चाय पीना चाहेंगे – या, अभी क्या समय हुआ है… शायद एक गिलास शेरी?’

अज़ूर ने कभी विद्वानों की तरह सुबह-सुबह शेरी पीने की आदत नहीं अपनाई थी, लेकिन आज सुबह उन्हें लगा कि शायद उन्हें या राष्ट्रपति को एक ड्रिंक की ज़रूरत पड़ सकती है। 'हाँ, क्यों नहीं।'
कुछ ही क्षणों में, एक और भी अधिक उम्र का स्काउट प्रकट हुआ – उसका चेहरा पत्थर जैसी खामोशी से तराशा हुआ था, वर्षों की सेवा के कारण उसकी कमर झुकी हुई थी। दीवारों पर लगे चित्रों और खिड़की के पास रखी गॉथिक शैली की ओक की कुर्सियों की तरह, यह कल्पना करना भी मुश्किल था कि कभी वह कॉलेज का हिस्सा नहीं था।
कुछ देर तक दोनों आदमी उस स्काउट को देखते रहे, जिसका एक हाथ पीठ के पीछे बंधा हुआ था और हाथ कांप रहा था, वह बड़ी धीमी गति से शेरी डाल रहा था। चांदी का डेकैंटर, क्रिस्टल के गिलास, नमकीन बादाम।
जब वे फिर से अकेले हुए तो राष्ट्रपति ने कहा, 'मैंने टाइम्स में आपका हालिया साक्षात्कार पढ़ा, बहुत अच्छा था।'
'धन्यवाद, लियो।'
कुछ देर तक अजीब सी खामोशी छाई रही।
राष्ट्रपति ने कहा, 'आप जानते हैं कि मैं आपकी कितनी प्रशंसा करता हूं। हमें आपके जैसा साथी पाकर सौभाग्यशाली महसूस हो रहा है। और मैं अनीसा को बहुत पसंद करता था।'
‘धन्यवाद, लेकिन आपने मुझे यहाँ मेरी दिवंगत पत्नी के बारे में बात करने के लिए आमंत्रित नहीं किया है,’ अज़ूर ने कहा। ‘मैं आपको इतने लंबे समय से जानता हूँ कि मुझे पता चल जाता है कि आप कब परेशान होते हैं। क्या बात है, मुझे बताइए।’
राष्ट्रपति ने अपने चिपकाने वाले नोटपैड निकाले। उन्होंने पहले ही उन्हें रंगों के अनुसार व्यवस्थित कर लिया था – नारंगी, हरे और गुलाबी। अज़ूर की ओर देखे बिना ही उन्होंने बुदबुदाते हुए कहा, 'तुम्हारे बारे में शिकायतें हैं।'
अज़ूर ने राष्ट्रपति का मुआयना किया – कनपटी पर उनके बाल सफ़ेद हो रहे थे, माथे पर झुर्रियाँ थीं, होंठों पर घबराहट भरी हरकत थी; हर तरह से वे पूर्व वित्त अधिकारी जैसे ही दिख रहे थे। उन्होंने कहा, 'मुझसे सीधे-सीधे बात करने की ज़रूरत नहीं है।'

नहीं, बिलकुल नहीं। मैं ऐसा सपने में भी नहीं सोच सकता। हर बार जब आप पर हमले हुए, और भगवान जानता है कि ऐसे कई मौके आए हैं... चाहे आपके विचारों की वजह से हो या आपके पढ़ाने के तरीके की वजह से... मेरा मतलब है, आप लोकप्रिय हैं, लेकिन सभी के बीच नहीं, आप यह जरूर जानते होंगे... मैंने हमेशा आपका साथ दिया है।
‘मुझे पता है,’ अज़ूर ने शांत भाव से कहा।
राष्ट्रपति ने चिपकाने वाली नोटपैडों से एक छोटा सा टावर बनाया। ‘मैं आपके साथ खड़ा रहा क्योंकि मुझे आपकी बौद्धिक ईमानदारी पर भरोसा था। मैं ज्ञान और निष्पक्षता के प्रति आपकी प्रतिबद्धता का सम्मान करता था।’ एक आह। ‘आखिर आपने इतने लोगों को क्यों नाराज कर दिया?’
अज़ूर और उनकी शिक्षण विधियों के बारे में मौखिक और लिखित रूप से आरोप लगाते हुए, अंडरग्रेजुएट छात्र रो रहे थे। उन पर आरोप था कि वे अपने छात्रों पर अत्यधिक दबाव डालते हैं, उनकी कमजोरियों को उजागर करते हैं, उन्हें उनके दोस्तों के सामने अपमानित करते हैं, और दिखावटी रूप से विवादास्पद और आपत्तिजनक हैं। राष्ट्रपति ने ज़ोर से कहा, 'आपत्तिजनक।' अज़ूर ने कहा, 'उन्हें नाराज़ न होना सीखना होगा। यह कोई नर्सरी नहीं है। यह एक विश्वविद्यालय है। अब बड़े होने का समय आ गया है। उन्हें हमेशा लाड़- प्यार नहीं दिया जा सकता। हमारे छात्रों को परिस्थितियों से निपटना सीखना होगा। कभी-कभी कुछ भी हो जाता है।'
'हां, लेकिन यह आपके काम का हिस्सा नहीं है।'
मुझे ऐसा लगता है।
'आपका काम उन्हें दर्शनशास्त्र पढ़ाना है।'
'एकदम सही!'
‘पाठ्यपुस्तकों में वर्णित दर्शनशास्त्र।’
'दर्शन, जीवन के समान।'
एक और आह। ‘वे यूं ही नाराज़ होकर और हद से ज़्यादा परेशान होकर नहीं घूम सकते। बहुत सारे छात्र शिकायत करते हैं।’ अध्यक्ष ने स्टिकी पैड के ढेर को गिरा दिया। ‘लेकिन एक और बात है… जो ज़रूरी है।’
'यह क्या है?'
एक छात्रा।
वे शब्द हवा में लटके रहे, मानो मिटने से इनकार कर रहे हों।

राष्ट्रपति ने कहा, 'लोग कह रहे हैं कि आपके कुछ छात्रों के साथ संबंध हैं।' ‘इससे किसी को कोई लेना-देना नहीं है, है ना? जब तक मैं किसी का फायदा नहीं उठा रहा हूँ... या मेरा फायदा नहीं उठाया जा रहा है।’
राष्ट्रपति ने अपना सिर हिलाया। 'उस स्थिति की नैतिकता पर सवाल उठ सकते हैं।'
‘क्या यह शिरीन के बारे में है? आपको पता होना चाहिए कि वह मेरी छात्रा नहीं है। अब और नहीं।’
‘उह… नहीं, यह उसका नाम नहीं है।’
अज़ूर ने हैरानी से भौंहें चढ़ाते हुए पूछा, 'तुम किसके बारे में बात कर रहे हो?'
‘एक तुर्की छात्रा। वह आपकी कक्षा में पढ़ती है।’ राष्ट्रपति ने अपनी थकी हुई निगाहें ऊपर उठाईं। ‘उसने कल रात आत्महत्या करने की कोशिश की।’
अज़ूर का चेहरा पीला पड़ गया। 'पेरी? हे भगवान! क्या वह ठीक है?'
‘जी हां, ठीक है… युवती,’ राष्ट्रपति ने कहा। ‘पैरासिटामोल की ओवरडोज। उसका लिवर काफी मजबूत है।’
‘मुझे विश्वास नहीं हो रहा।’ अज़ूर अपनी सीट पर धंस गया, उसके चेहरे से सारी रौनक गायब हो गई थी।
'कहानी यह है कि आपका उसके साथ अफेयर था और आपने उसे... छोड़ दिया।'
अज़ूर ने ज़ोर से साँस ली, मानो उसे किसी ने मुक्का मारा हो। 'क्या उसने ऐसा कहा?'
‘खैर, ऐसा बिल्कुल नहीं है। लड़की अभी बात करने की हालत में नहीं है,’ राष्ट्रपति ने कहा। ‘यह वही लड़का है जिसने आप पर मुकदमा किया है, ट्रॉय… उसने प्रेस से बात करने की धमकी दी है। वह काफी परेशान लग रहा था। मेरे पास उसका लिखित बयान है।’
‘क्या मैं इसे देख सकता हूँ?’
'मुझे खेद है कि ऐसा नहीं हो सकता। इसे आचार समिति के पास भेजना होगा।'
मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि मेरे और पेरी के बीच कुछ भी नहीं हुआ। आपको बस उससे पूछना है; मुझे पूरा विश्वास है कि वह आपको सच बता देगी। ‘देखिए, आप एक बहुत ही अच्छे शिक्षक हैं, लेकिन सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप इस कॉलेज के फेलो हैं। हम कॉलेज की प्रतिष्ठा को धूमिल नहीं होने दे सकते। आप जानते ही होंगे कि आपने इतने सालों में कई

दुश्मन बना लिए हैं।’ राष्ट्रपति ने शेरी का एक घूंट लिया। ‘आप मीडिया की कल्पना कीजिए… वे इस कहानी पर टूट पड़ेंगे, वे तो मांसाहारी हैं।’
आप क्या सुझाव दे रहे हैं?
‘अच्छा… आप चाहें तो कुछ समय के लिए अवकाश ले सकते हैं। कुछ समय के लिए पढ़ाना बंद कर दें। इस मामले को शांत होने दें और समिति को अपनी जांच पूरी करने दें। एक बार जब यह लड़की गवाही दे देगी तो सब ठीक हो जाएगा। तब तक हमें इस… मामले को बंद करना होगा।’
अज़ूर उसे टकटकी लगाकर देखता रहा, मानो कुछ खोज रहा हो। फिर वह खड़ा हो गया। 'लियो, तुम मुझे लंबे समय से जानते हो, मैंने कभी अनैतिक व्यवहार नहीं किया है।'
राष्ट्रपति भी खड़े हो गए। ‘सुनिए –’
‘ट्रॉय की गवाही त्रुटिपूर्ण है, मैं आपको आश्वस्त कर सकता हूँ। अनाइस निन ने क्या कहा था? हम चीजों को वैसे नहीं देखते जैसी वे हैं। हम उन्हें वैसे देखते हैं जैसे हम हैं।’
‘भगवान के लिए, इन परिस्थितियों में अनाइस निन का हवाला देना बिल्कुल भी उचित नहीं है।’
‘मैं पेरी के सच बोलने का इंतजार करूंगा,’ अज़ूर ने कहा। उसने अपना सिर हिलाया। ‘बेचारी लड़की, उसने अपने साथ क्या किया?’
फिर वह चला गया। कॉलेज के फेलो होने के नाते, अगर वह जाना नहीं चाहता था तो कॉलेज वाले उसे निकाल नहीं सकते थे। फिर भी, अब भी उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि दूसरे उसके बारे में क्या सोचते हैं, पर भीतर ही भीतर वह जानता था कि वह कॉलेज के शिक्षकों के लिए शर्मिंदगी का कारण बन चुका है। उसका सिर ऐसे धड़क रहा था मानो उसके भीतर लंबे समय से फंसा कोई दर्द बाहर निकलने की कोशिश कर रहा हो। तेज, लहराते कदमों से वह इमारत से बाहर निकला और बारिश में चला गया, जो सुबह से लगातार हो रही थी।
ईश्वर की अनुपस्थिति की ध्वनि

ऑक्सफोर्ड, 2002
जब पेरी को जॉन रेडक्लिफ अस्पताल के एक कमरे में होश आया, तो वह तुरंत यह नहीं बता पाई कि वह कहाँ है। रंग बहुत चटख और भड़कीले थे – चादरों का सफेद

रंग बहुत साफ-सुथरा था, और बिस्तर के कवर का नीला रंग बहुत खुशनुमा। खिड़की के बाहर आसमान का धूसर रंग उसे उन सीसे के टुकड़ों की याद दिला रहा था जिन्हें उसकी माँ बुरी नज़र से बचाने के लिए पिघलाती थी। उसे अपने दिमाग में कुछ बड़बड़ाहट सुनाई दे रही थी, व्यर्थ की प्रार्थनाएँ। बेचैन होकर उसने अपनी आँखें फिर से बंद करने की कोशिश की, मानो आवाज़ को दूर भगाना चाहती हो, लेकिन उसके बगल में लेटी मरीज़ – लगभग साठ साल की एक महिला – बात करने के लिए उत्सुक लग रही थी।
‘हे भगवान, लड़की, तुम जाग गई! मुझे लगा था कि तुम हमेशा के लिए सोती रहोगी।’ बेहद सहजता से बोलते हुए उस महिला ने कहा कि उसकी शादी को चालीस साल हो गए हैं और वह इतनी बार अस्पताल में भर्ती हो चुकी है कि वह पूरे स्टाफ को नाम से जानती है। उसकी आवाज़ कमरे में एक फूलते हुए गुब्बारे की तरह गूंज रही थी, जिससे पेरी के कानों में दबाव बढ़ रहा था।
‘तुम्हारा क्या ख्याल है, लड़की? पहली बार आ रही हो या पहले भी आ चुकी हो?’ पेरी ने गला साफ किया, उसके मुंह में एक अजीब सा रासायनिक स्वाद उठ रहा था। उसने अपनी आवाज़ ढूंढने की कोशिश की और सिर हिलाया, बोलने में असमर्थ। चादर में सिमटते हुए, उसने अपना चेहरा खिड़की की ओर कर लिया। बीते दिन की कुछ यादें उसके दिमाग में घूमने लगीं। उसने आखिर क्या किया था?
अपने पिता की याद आते ही उसकी आँखों से एक आँसू बह निकला और उसे उनके शब्द याद आ गए: तुम मेरी होशियार बेटी हो। मेरे बच्चों में से सिर्फ तुम ही यह कर सकती हो। शिक्षा तुम्हें बचाएगी और तुम हमारे टूटे हुए परिवार को बचाओगी। तुम्हारे जैसी युवा पीढ़ी इस देश को पिछड़ेपन से बाहर निकालेगी। ऑक्सफोर्ड में नालबंतोग्लस परिवार का नाम रोशन करने के लिए भेजी गई उस स्वप्निल संतान ने बदले में अपमान और असफलता ही ला दी थी। अनजाने में ही पेरी इतनी ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी कि दूसरे मरीज़ ने उसकी मानसिक स्थिति को लेकर चिंतित होकर आपातकालीन बटन दबाकर नर्स को बुलाया। कुछ ही मिनटों में पेरी को आड़ू के रंग का एक तरल पदार्थ दिया गया, जिसकी गंध भयानक थी लेकिन अजीब बात यह थी कि उसमें कोई स्वाद नहीं था। उसने अपना सिर तकिए में दबा लिया, थकान से उसकी पलकें भारी हो गई थीं।
अपनी अर्ध-बेहोशी की हालत में उसे धुंध में बस उस बच्चे का चेहरा ही दिखाई दे रहा था। जब उसे उसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी, तब वह कहाँ था? क्या उसका

अस्तित्व और इच्छाशक्ति उससे अलग थी, या वह महज़ अपराधबोध से ग्रस्त उसके मन का भ्रम था?

अगली सुबह पेरी पहली बार अपने मनोचिकित्सक से मिली। एक युवा डॉक्टर, जिसकी मुस्कान बेहद दयालु और उदार थी। उन्होंने कहा, "तुम अकेली नहीं हो। हम एक टीम के रूप में काम करेंगे। वे उसे वे साधन देंगे जिनसे वह एक नई पेरी का निर्माण कर सकेगी; वह अपनी आत्मा की निर्माता होगी। खुद अपनी रचनाकार होगी।" उनकी आदत थी कि वे अक्सर रुकते थे और हर बात के अंत में एक ही सवाल पूछते थे, 'यह कैसा लगता है?' उन्होंने समझाया कि उपचार से आत्म-विनाशकारी विचार गायब नहीं होंगे, बल्कि उन्हें यह सिखाया जाएगा कि अगर वे वापस आएं तो उनसे कैसे निपटना है। उन्होंने आत्महत्या की प्रवृत्ति को मौसम की तरह, भारी बारिश की तरह समझाया। आप इससे बच नहीं सकते, लेकिन अगर आप जानते हैं कि कैसे सूखा रहना है, तो आप इससे कम प्रभावित होंगे।
उन्होंने कहा, ‘एक और बात है। जब आप तैयार हों, तो कोई दबाव नहीं है। आपसे किसी प्रोफेसर के बारे में एक-दो सवाल पूछे जा सकते हैं। हमें पता चला है कि उन पर छात्रों को, जिनमें आप भी शामिल हैं, सबके सामने धमकाने के आरोप लगे हैं। विश्वविद्यालय इन आरोपों की जांच कर रहा है – आपके और अन्य छात्रों के हित में। जब भी आप तैयार हों, कोई जल्दी नहीं है। कैसा रहेगा?’ पेरी की रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। तो उन्हें लगा कि अज़ूर ने ही उसे आत्महत्या के लिए उकसाया था। यह सुनकर वह स्तब्ध रह गई, फिर भी उसने कुछ नहीं कहा।

द डॉन रेडवुड

ऑक्सफोर्ड, 2002
जिस सुबह पेरी को समिति के सामने पेश होना था, वह मैग्डेलन ब्रिज के पास स्थित बॉटनिक गार्डन में अकेली बैठी थी। हर बार जब वह यहाँ आती, तो उसे ऐसा लगता जैसे वह अपने बचपन की किसी पसंदीदा जगह पर टहल रही हो, और अपने आस-पास के माहौल से सहज महसूस करती हो। साठ फुट ऊँचा डॉन रेडवुड का पेड़ – उसे यह नाम कितना प्यारा लगता था! – उस बेंच के ऊपर खड़ा था जहाँ वह बैठी थी। यह पेड़, जो पहले केवल जीवाश्मों से ही जाना जाता था, चीन की एक दूरस्थ घाटी में उगता हुआ पाया गया था। उसे वनस्पति विज्ञान की इस जादुई खोज की कहानी बहुत अच्छी लगती थी।
सूरज की किरणें उसकी पीठ पर पड़ रही थीं, उसने अपने पैरों को अपनी ओर खींच लिया, घुटनों को ठुड्डी से टिका लिया, दुर्लभ पौधों और पेड़ों के बीच एक अजीब सी शांति का अनुभव कर रही थी। उसके हाथ में एक कॉफी का कप था, जिसे उसने अपने गाल से लगा रखा था, उसकी गर्माहट किसी प्रेमी के स्पर्श की तरह सुकून दे रही थी।
शिरिन की आवाज़ उसके कानों में गूंजी। माउस, तुम हमेशा खुद को इतना दुखी क्यों रखती हो? तुम्हारा चेहरा इतना उदास और मुरझाया हुआ क्यों है? ऐसा लगता है जैसे किसी नब्बे साल के बूढ़े ने तुम्हें पूरा निगल लिया हो। कब तुम थोड़ा मज़ा करना सीखोगी?
लेकिन अज़ूर का कहना था कि 'ईश्वर के प्रश्न' को समझने का सबसे अच्छा तरीका न तो धार्मिकता है और न ही संशयवाद, बल्कि एकांतवास है। उन सभी तपस्वियों और संन्यासियों के आध्यात्मिक खोज के लिए रेगिस्तान में चले जाने के पीछे एक कारण था। अज़ूर का तर्क था कि दूसरों की संगति में, ईश्वर से नहीं बल्कि शैतान से संवाद होने की संभावना अधिक होती है। यह एक मज़ाक था, हालांकि अज़ूर के साथ आप कभी नहीं जान सकते थे कि यह सच होगा या नहीं।
हाँ, वह उसकी तरफ से गवाही देने जाएगी। यह उसका फर्ज़ था। उसने उसकी तकलीफ में ज़रूर योगदान दिया था – एकतरफ़ा प्यार उसकी ज़िंदगी में सबसे बुरी चीज़ थी – लेकिन उसके आत्महत्या के प्रयास के लिए उसे ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता था। इसके अलावा, वह उसकी आभारी भी थी। उसने उसकी चेतना में

लालच से नफरत थी जिसे वह जिज्ञासा की भावना से जोड़ता था, उस घमंड से जिसे वह अकादमिक शोध के पीछे छिपाता था। वह यह तय नहीं कर पा रही थी कि उसे किस बात से ज़्यादा दुख हो रहा था: कि वह चुपके से शिरिन के साथ सो रहा था या कि उसने उसे उसी तरह प्यार करने से इनकार कर दिया था। वह उसके जीवन में अचानक आया और अपने पीछे तबाही छोड़ गया। हाँ, वह उसके खिलाफ गवाही देगी।
पेरी के आत्महत्या के प्रयास के बारे में सुनकर शिरिन और मोना को गहरा सदमा लगा था। जैसे ही उन्हें मिलने की अनुमति मिली, वे तुरंत आ गईं, उनके चेहरों पर चिंता साफ झलक रही थी। वे यह जानने के लिए बेताब थीं कि पेरी ने ऐसा क्यों किया - एक ऐसा सवाल जिसका जवाब पेरी को नहीं पता था। शिरिन ने उससे अज़ूर के बचाव में गवाही देने की भी गुहार लगाई थी। उसने पेरी से अपने प्रिय प्रोफेसर को बचाने का अनुरोध किया था। पेरी सोच रही थी कि क्या शिरिन को उस पर भरोसा था और वह उसे एक प्रिय मित्र मानती थी; या क्या उसे बस यह लगता था कि पेरी - माउस - को बहकाना आसान है?
उसने खुद से कहा, निष्पक्ष रहो। अपनी भावनाओं को तथ्यों से अलग रखो, कम से कम इतना तो तुम अज़ूर की ऋणी हो। यह सुनिश्चित करो कि तुम भावनाओं से प्रेरित न हो। उसने ही तुम्हें यह सिखाया है। शिरिन के साथ उसके संबंध के बारे में, वे दोनों सहमति से संबंध बना रहे थे, किसी ने भी दूसरे का शोषण नहीं किया। जहाँ तक ट्रॉय के उसे गिराने के इरादों की बात है, क्या वे पूरी तरह निस्वार्थ थे?
वनस्पति उद्यान की एक बेंच पर बैठी पेरी के मन में उठ रहे हर सवाल ने उसे और भी जटिल बना दिया। मनोचिकित्सक ने उससे कहा था कि जब तक वह बेहतर और स्वस्थ महसूस न करे, तब तक गंभीर निर्णय लेने से बचना ही सबसे अच्छा होगा। लेकिन इन परिस्थितियों में वह ऐसा कैसे कर सकती थी? पेरी खोई हुई सी महसूस कर रही थी; उसे बांधे रखने वाली पतली रस्सी टूट गई थी और वह अनजान जलधाराओं में बह रही थी, उसे समझ नहीं आ रहा था कि किस दिशा में तैरे। जल्द ही उसे समिति के सदस्यों के सामने पेश होना था। वह उन्हें क्या बताएगी? बदले में वे उससे किस तरह के सवाल पूछेंगे? उसकी भावनाएँ इतनी तेज़ी से उमड़ रही थीं कि उसे यकीन नहीं था कि वह उन्हें शब्दों में व्यक्त कर पाएगी, खासकर अजनबियों के सामने और अपनी भाषा के अलावा किसी और भाषा में।

उसने अपनी घड़ी देखी। उसका दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था मानो सीने से बाहर निकल आएगा। वह खड़ी हुई और उस इमारत की ओर चलने लगी जहाँ प्रोफ़ेसर अज़ूर की प्रतिष्ठा दांव पर लगी थी।

अपने कॉलेज के शांत कमरे में बैठा अज़ूर अपनी डेस्क पर खिड़की से बाहर देख रहा था। उसने कोशिश की कि कमेटी की बैठक के नतीजे के बारे में उसका ध्यान न भटके। उसके मन में यह डर गहरा रहा था कि कहीं उसे प्यार करने वाले लोग अंत में दुखी न हो जाएँ। वह जानता था कि शिरीन से उनके प्रेम प्रसंग के बारे में कई सवाल पूछे जाएँगे। वह उसे बचाने के लिए सच छुपाने की कोशिश करेगी। उसने सोचा, यह सब व्यर्थ है, क्योंकि उसने पहले ही सब कुछ साफ़-साफ़ बता देने का फैसला कर लिया था। उसके पास छिपाने के लिए कुछ नहीं था। उसने कुछ भी गलत नहीं किया था।
ट्रॉय को भी बुलाया जाएगा। वह झूठ का वो पुलिंदा उगल देगा जिसे वो सच कहता था। उसे वो लड़का कभी पसंद नहीं था। धूर्त। अच्छा हुआ कि उसने उसे कक्षा से निकाल दिया था। सालों से उसने छात्रों और प्रोफेसरों के बीच राजनीतिक परिभाषाओं, ऐतिहासिक विचारों आदि पर होने वाले झगड़ों की कई कहानियां सुनी थीं। जहाँ तक उसकी बात है, उसे मतभेदों से शायद ही कभी कोई परेशानी होती थी। हर साल कुछ मुश्किल मामले सामने आते थे, ऐसे छात्र जो यह दिखाना चाहते थे कि वे कितने होशियार, कितने खास और अपने साथियों से कितने आगे हैं। और यह ठीक था। कक्षा में ट्रॉय का रवैया ही उसे नापसंद था। दूसरे छात्रों पर हुकुम चलाना, जिससे भी असहमत होता उसका मज़ाक उड़ाना, लोगों को अपशब्द कहना, स्कूल के बाद उनका पीछा करना और भगवान पर अपने विचारों से उन्हें धमकाना। पहले तो उसने सोचा था कि ट्रॉय की मौजूदगी सबको ज़्यादा स्पष्ट रूप से सोचने पर मजबूर करेगी, लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि ज़्यादातर छात्र उससे डरे हुए थे। इसलिए उसने उसे कक्षा से निकाल दिया, जिससे वो लड़का अलग-थलग, शत्रुतापूर्ण और खतरनाक रूप से प्रतिशोधी बन गया। अज़ूर को पता था कि उसके आलोचक, जिनकी संख्या बहुत अधिक थी, उसे केंद्र में रखकर किसी घोटाले के होने की आशंका से उत्साहित थे। कुछ लोग तो खुलेआम उसे

बर्खास्त करने की इच्छा जता रहे थे। एक खास तरह के लोग होते हैं जो दूसरों के दुख में खुशी मनाते हैं, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति किसी और की भूख मिटाने की कोशिश करे।
और पेरी... खूबसूरत, शर्मीली, नाज़ुक, आत्मनिरीक्षण करने वाली पेरी। वह उसके बारे में क्या कहेगी? उसे उसकी कोई चिंता नहीं थी। आख़िरकार, पेरी के बारे में लगे आरोप निराधार थे, और उसे पूरा विश्वास था कि वह निष्पक्ष और ईमानदार होगी। वह गवाही देगी, अगर उसके लिए नहीं तो सच्चाई के लिए, जो कि एक ही बात होगी।
अज़ूर के हाथों में एक काल्पनिक तराजू था, जिस पर उसके मामले के गुण-दोष दोनों ही पलड़ों पर रखे थे। उसके खिलाफ आरोप थे: छात्रों पर ऐसे असाइनमेंट का दबाव डालना जिन्हें कुछ लोग आपत्तिजनक, यहाँ तक कि अपमानजनक भी मान सकते हैं; कुछ छात्रों को कक्षा में मानसिक रूप से टूट जाने का कारण बनना; और, ज़ाहिर है, आकर्षक शिरिन के साथ प्रेम संबंध। उसके बचाव में आरोप थे: शिक्षण, शोध और कार्य में उसके लंबे अनुभव; बौद्धिक और अकादमिक जीवन में उसका योगदान; पुस्तकों और लेखों के प्रकाशन में उसकी दक्षता; और यह तथ्य कि शिरिन - उसके मामले का एकमात्र 'नैतिक' पहलू - उनके प्रेम संबंध शुरू होने के समय उसकी छात्रा नहीं थी।
ट्रॉय और उसके सहयोगियों के तमाम प्रयासों के बावजूद, उसके खिलाफ मामला कमजोर था।
उनका हमेशा से यही मानना था कि अगर आप मुक्का सहना नहीं जानते, तो आप लड़ाई जीतना भी नहीं जान सकते। फिर भी, उन्हें अपनी इस सोच का एहसास था कि वे कितने घमंडी थे। वे ईश्वर को एक ऐसी भाषा में ढालना चाहते थे, जिसे अगर बोला न भी जाए, तो कम से कम बहुत से लोग समझें और साझा करें। ईश्वर को, किसी अलौकिक सत्ता, प्रतिशोधी न्यायाधीश या जनजातीय प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि एक एकजुट करने वाले विचार, एक साझा खोज के रूप में। क्या ईश्वर की खोज, सभी लेबल और रूढ़ियों से मुक्त होकर, एक ऐसे तटस्थ स्थान में परिवर्तित हो सकती है जहाँ नास्तिकों और एकेश्वरवाद के विरुद्ध विश्वास करने वालों सहित सभी को सार्थक चर्चा मिल सके? क्या ईश्वर लोगों को केवल अध्ययन के विषय के रूप में एकजुट कर सकता है? यह एक मानसिक प्रयोग था: यदि पृथ्वी पर प्रत्येक आत्मा, हाफ़िज़ के दावे के अनुसार, ईश्वर को पूर्ण करती है, तो क्या होगा जब अलग-अलग व्यक्तित्वों को एक ही कमरे में रखा जाए,

उन्हें एक-दूसरे की आँखों में देखने के लिए कहा जाए और उन्हें ईश्वर के बारे में एक-दूसरे की समझ को पूर्ण करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए? उन्होंने स्वीकार किया कि वे कभी-कभी सख्त और नियंत्रणकारी थे। यह सच है कि उन्होंने अपनी कक्षा को एक प्रयोगशाला के रूप में इस्तेमाल किया था। लेकिन इसके पीछे एक अच्छा कारण था।
छात्र… ज्ञान में पिछड़े, उम्र में आगे, जल्दबाज़ी में राय बनाने वाले और पूरी तरह स्वार्थी। उन्हें कभी यह ख्याल ही नहीं आया कि उनके शिक्षकों की भी अपनी कहानी है, अपना रहस्य है, कहीं और एक ज़िंदगी है। अज़ूर ने उनके साथ बाबेल का टावर खड़ा कर दिया था। उसने उन्हें अपनी पूरी ताकत से आज़माया था। वह असफल रहा।
पेरी के साथ संबंध बनाना उसकी सबसे बड़ी गलती थी। उसे इस बात में दिलचस्पी थी कि इतनी शांत और अंतर्मुखी लड़की का एक छिपा हुआ पहलू भी है, जो उसके अनुसार 'रहस्यमय' से जुड़ा हुआ है। पेरी, उसके सेमिनार के बाकी सभी छात्रों की तुलना में, ईश्वर के साथ एक व्यक्तिगत विवाद रखती थी और वह इसी बात से आकर्षित हुआ था। हाँ, उसने उसके साथ अतिरिक्त समय बिताया, भले ही वह जानता था - भला वह कैसे न जानता? - कि लड़की के मन में उसके लिए भावनाएँ थीं। वह बहुत छोटी थी। बहुत भोली थी। बहुत दबी हुई थी। उसे अधिक सावधान रहना चाहिए था, लेकिन आखिर उसने कब सावधानी बरती थी?
अज़ूर का पालन-पोषण धार्मिक परिवार में नहीं हुआ था। उनके पिता एक धनी अंग्रेज़ व्यापारी थे, जिनकी खुशी उनकी सफलता के विपरीत अनुपात में थी; उनकी माँ एक प्रतिभाशाली लेकिन निराश चिली पियानोवादक थीं, जिन्हें अपने जीवनकाल में वह पहचान न मिलने का गहरा दुख था, जिसकी वे हकदार समझती थीं। उनके परिवार का क्यूबा के हवाना में एक व्यवसाय था, जहाँ अज़ूर का जन्म हुआ था। उनके पिता अर्नेस्ट हेमिंग्वे के साथ शार्क मछली पकड़ने की कहानियाँ सुनाते थे - हालाँकि उस उल्लेखनीय दोस्ती के कुछ ही सबूत बचे हैं, सिवाय कुछ तस्वीरों और हस्तलिखित नोट्स के। अज़ूर ने पारिवारिक कर्तव्यों और अपेक्षाओं के विरुद्ध जाकर दर्शनशास्त्र को अपना पेशा चुना था। हालाँकि, अपने माता-पिता को खुश करने के लिए, उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र में स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के लिए सहमति दी, और उन्होंने यही किया।

विश्वविद्यालय में अपने अंतिम वर्ष में, मध्य पूर्वी अध्ययन के एक विशेषज्ञ से कक्षाएं लेने के बाद उनका जीवन बदल गया। प्रोफेसर नसीम ने युवा अज़ूर को ऐसी चुनौती दी थी जैसी पहले किसी ने नहीं दी थी। अल्जीरियाई बर्बर परिवार से आने वाले अज़ूर ने उन्हें विभिन्न संस्कृतियों, बदलते दृष्टिकोणों और असहज प्रश्नों से परिचित कराया था। उन्होंने उन्हें इब्न अरबी, मेस्टर एकहार्ट, रूमी, इसहाक लूरिया, फरीदुद्दीन अत्तार और उनकी 'कॉन्फ्रेंस ऑफ द बर्ड्स' तथा उनके पसंदीदा हाफ़िज़ जैसे रहस्यवादियों की रचनाओं से भी अवगत कराया था।
एक दोपहर, अज़ूर ब्रुकलाइन में प्रोफ़ेसर नसीम के घर उनसे मिलने गए। वहीं उनकी मुलाकात नसीम की छोटी बेटी अनीसा से हुई। बड़ी-बड़ी भूरी आँखें, काले घुंघराले बाल और एक ऐसी जीवंतता जो उनके आसपास के सभी लोगों को प्रभावित और प्रेरित करती थी। उन्होंने घंटों बातें कीं - किताबों, संगीत, राजनीति के बारे में। अनीसा का सपना था कि वह अपने खुद के फ्लैट में शिफ्ट हो जाए। उन्होंने कहा, 'लेकिन मैं जहाँ भी रहूँ, मुझे पानी ज़रूर दिखना चाहिए।' उसी शाम अज़ूर को रात के खाने पर बुलाया गया। बेशक खाना स्वादिष्ट था, ऐसा स्वाद उसने पहले कभी नहीं चखा था, लेकिन वहाँ की सहज हंसी और अरबी धुनें उसे मंत्रमुग्ध कर गईं। मोमबत्ती की रोशनी में अनीसा की निगाहें उसके चेहरे पर टिकी थीं। उस पल अज़ूर ने चाहा कि काश ये उसका परिवार होता। घर की उस संयमित शिष्टता से उनकी सहजता, उनका स्वाभाविक उत्साह कितना अलग था। आज तक अज़ूर को यह समझ नहीं आया कि उसे अनीसा से प्यार हुआ था या उसके परिवार से।
सात सप्ताह से भी कम समय बाद उनकी शादी हो गई।
कुछ ही समय में उस युवा जोड़े को पता चल गया कि वे एक-दूसरे के कितने विपरीत हैं। अनीसा ज्यादातर अपनी ही दुनिया में खोई रहती थी। वह बेहद अधिकार जताने वाली और ईर्ष्यालु थी, और अक्सर भावनात्मक रूप से टूट जाती थी, कभी-कभी तो बहुत ही छोटी-छोटी बातों पर भी। वह किशोरावस्था से ही दवाइयाँ ले रही थी।
अनिस्सा की प्रोफेसर नसीम की पहली शादी से एक बड़ी सौतेली बहन नूर थी। मिलनसार, विचारशील और दयालु, जब भी परिवार इकट्ठा होता, वह उनके बगल में मेज पर बैठ जाती, अज़ूर और उसके पिता की बातचीत सुनती और उत्सुकता भरे सवाल पूछती। धीरे-धीरे, अज़ूर उसे एक अलग नज़रिए से देखने लगी। उसकी मुस्कान की

मिठास, उसकी निगाहों की चमक, उसकी उंगलियों की कोमलता और उसके दिमाग की तेज़ी। वह उनके विचारों का सम्मान करती थी। वह भी उसके विचारों का सम्मान करते थे। अज़ूर ने पहले कभी नहीं सोचा था कि ऐसा सम्मान अपने आप में आकर्षण का स्रोत हो सकता है।
उसी साल, गर्मियों के अंत में, अज़ूर और नूर ने एक सीमा पार कर ली। परिवार को जल्द ही इसका पता चल गया। प्रोफेसर नसीम, वह नेक बूढ़ा आदमी, ने अज़ूर को बुलाया और उसके चेहरे पर चिल्लाया; उसकी गर्दन की नसें नीली धाराओं की तरह उभर रही थीं। उसने अपने युवा प्रतिभाशाली शिष्य पर शैतान की तरह व्यवहार करने का आरोप लगाया, और कहा कि वह केवल उसकी शांति और कड़ी मेहनत से अर्जित प्रतिष्ठा को नष्ट करने के इरादे से उसके घर में घुस आया है। अज़ूर और अनीसा अलग हो गए और सुलह कर ली। उन्होंने बोस्टन से दूर जाने का फैसला किया। यूरोप में नई शुरुआत करने का। अनीसा ने कहा, "तुम्हारी शर्म हमारा पीछा नहीं करेगी। शर्म सागरों को पार नहीं कर सकती।" हालांकि, वह इसके बारे में बात करना कभी नहीं छोड़ती थी, खुलकर नहीं, बल्कि इशारों और व्यंग्यपूर्ण टिप्पणियों के ज़रिए, इस बात से आश्वस्त थी कि अज़ूर के पश्चाताप से भी वह रिश्ता नहीं सुधरेगा जो उसने बुरी तरह तोड़ा था। अनजाने में ही सही, उसे अपने पति के पाप में आनंद आता था, जिससे उसे अपने वैवाहिक जीवन में एक नैतिक लाभ मिलता था, एक ऐसा धार्मिक अहसास जो पके हुए जामुनों से भी मीठा होता था।
वे ऑक्सफ़ोर्ड पहुँचे, जहाँ से पानी का सुंदर नज़ारा दिखता था। वहाँ अनीसा आसानी से घुलमिल गई और अज़ूर ने भी जल्दी ही अपना ठिकाना बना लिया। वह यहाँ खूब फला-फूला। ऑक्सफ़ोर्ड समुदाय ने उसकी पत्नी का स्वागत किया। लेकिन जो भी उससे मिला, वह उसके भीतर दबे गहरे अंधकार को नहीं देख पाया। जब वह खुश होती, तो वह बेहद खुश होती। जब दुखी होती, तो वह पूरी तरह टूट जाती। खुशी हो या दुख, अनीसा के लिए हमेशा चरम सीमाएँ ही होती थीं।
जब वह लापता हुई तब वह चार महीने की गर्भवती थी। सुबह-सुबह, जब घना कोहरा छाया हुआ था, वह नदी किनारे टहलने गई और फिर कभी वापस नहीं लौटी। उसका शव छब्बीस दिन बाद मिला, जबकि पुलिस गोताखोरों ने नदी में बार-बार तलाशी ली थी। ऑक्सफोर्ड मेल में इस बारे में एक लेख छपा था, जिसमें उसकी शादी की पोशाक में वसंत के फूलों की माला पहने हुए एक तस्वीर थी। अज़ूर को कभी समझ नहीं आया कि पुलिस को वह तस्वीर कहाँ से मिली। पुलिस प्रवक्ता ने कहा कि

उसकी मौत को रहस्यमय माना जा रहा है। किसी भी तरह की साजिश का संदेह नहीं था। कोरोनर ने खुला फैसला सुनाया, लेकिन अज़ूर उस एक बात को लेकर व्याकुल हो गई: रहस्यमय।
प्रोफेसर नसीम ने अज़ीर और नूर के बीच प्रेम प्रसंग को अनीसा के मिजाज में बदलाव और अचानक गायब हो जाने का कारण बताया। परिवार ने उन्हें कभी माफ नहीं किया, और न ही अज़ीर ने भीतर ही भीतर खुद को माफ किया। हालांकि, इस घटना ने उन्हें माफी मांगने के प्रति अति संवेदनशील बना दिया। उन्हें यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी जब लोग छोटी-छोटी बातों के लिए माफी मांगते थे, जबकि जीवन में इससे कहीं बड़ी माफी होती थी जिसे कभी व्यक्त नहीं किया जा सकता था। अपनी परवरिश में मिली स्वतंत्र सोच और प्रोफेसर नसीम के न्यायप्रिय विश्वास के बीच उन्होंने अपने लिए एक अलग रास्ता बना लिया। वे अनसुलझे रहस्यों को पढ़ाना चाहते थे। वे ईश्वर के बारे में पढ़ाना चाहते थे।

सुबह की हवा जब हल्की-हल्की हवा में बदल गई, तो पेरी एक सपने जैसी अवस्था में समिति की सुनवाई की ओर बढ़ी। उसके पैर भारी और अकड़े हुए लग रहे थे। सूरज बादल के पीछे छिप गया था, एक तेज़ हवा का झोंका ऊपर से गुज़रा और ऐसा लग रहा था जैसे कोई दूसरा मौसम आ गया हो – मानो दुनिया बदल गई हो जब से उसने बॉटनिकल गार्डन और उस भोर के रेडवुड के पेड़ को छोड़ा था जिसने उसे छाया दी थी।
ट्रॉय प्रवेश द्वार पर बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा था। शिरिन सीढ़ियों पर बैठी थी, सीने पर हाथ बांधे, रोने से उसकी आँखें सूजी हुई थीं। दोनों बेसब्री से पेरी के आने का इंतज़ार कर रहे थे ताकि उसे अपने पास बुला सकें। उस इमारत के अंदर कहीं कुछ लोग थे जिनके चेहरे पर भावहीनता थी और वे अभद्र सवाल पूछ रहे थे।
अज़ूर कहाँ था, वह सोच रही थी, और उसके मन में क्या चल रहा होगा। काश वह अभी उसके पास होता, ताकि वे उसके बारे में उसकी अनगिनत कल्पनाओं में खो सकें।
वे इन लोगों के बीच से गुज़र सकते थे, उनकी आलोचना भरी निगाहों से बेखबर,

इस अचानक आई विपत्ति से अप्रभावित। काश रात होती और वह उससे कविता, दर्शन और ईश्वर के विरोधाभास के बारे में बातें करता, ऐसे शब्द जो खुली आग की चिंगारियों की तरह हवा में उड़ते; केवल वे दोनों, ऐसे आकाश के नीचे जो कहीं भी हो सकता था, एक स्वप्निल विश्वविद्यालय शहर या एक भीड़भाड़ वाला शहर, उसका सिर उसकी गर्दन के मोड़ पर टिका हुआ। काश उनकी उम्र, स्थिति और संस्कृति के सभी अंतर हवा में गायब हो जाते। काश वह झुककर उसके चेहरे को छूता, उसके होंठों को चूमता और मंत्र की तरह उसका नाम लेता। काश उसका मन और उसका हृदय एक तलवार में विलीन हो जाते जो उसके भीतर बसी शिरिन की आत्मा को नष्ट कर देती। उसे किसी चीज की इतनी तीव्र इच्छा हुए बहुत समय हो गया था। पेरी ने अपना कोट कसकर ओढ़ लिया, ठंड उसकी त्वचा में चुभ रही थी। अगर वह उसके पक्ष में गवाही देती, जैसा कि वह नैतिक रूप से बाध्य महसूस करती थी, तो शायद वह समझ पाता कि वह उससे कितना प्यार करती है और वह उससे थोड़ा-बहुत प्यार करने लगता। शायद... फिर भी उसके दिल में ये सब होने की कोई संभावना नहीं थी। उसका नाम साफ हो जाएगा और वह शिरीन के साथ इसका जश्न मनाएगा - जिसे हमेशा अपनी मनचाही चीज़ मिल जाती थी।
दूर से पेरी इन सब बातों के बारे में सोच रही थी। फिर धीरे-धीरे, मानो उसकी सारी ऊर्जा खत्म हो गई हो, वह रुक गई। क्या वह वही लड़की नहीं थी जिसने अपने जुड़वां भाई को दम घुटते हुए देखा था और मदद के लिए पुकारा भी नहीं था? हमेशा बीच में फंसी, खुद पर ध्यान आकर्षित करने से डरती हुई, किसी का पक्ष लेने को तैयार नहीं, किसी को नाराज़ न करने पर इतनी केंद्रित कि अंत में सभी निराश रह गए। खुद को बदलने के तमाम प्रयासों के बावजूद, वह अपनी आत्मा में गहराई से समाई भावनात्मक जड़ता को दूर करने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं थी। वह, पेरी, नाज़पेरी, रोज़ा, माउस, गवाही नहीं देंगी। न अभी, न बाद में। वह कोई अभिनेत्री नहीं, बल्कि महज़ एक दर्शक थी। यह उनकी समस्या थी। उनका मूर्खतापूर्ण खेल। वह पीछे मुड़ी और ऐसे चली गई मानो किसी अजनबी की प्रतिष्ठा दांव पर लगी हो, न कि उस आदमी का भविष्य जिसे उसने अपने पूरे दिल से प्यार किया था, जिसके सपने देखे थे और जिसे चाहा था।
कई साल बीत गए, तब जाकर उसे एहसास हुआ कि उसकी निष्क्रियता ने उसके प्रिय व्यक्ति के विनाश में सक्रिय रूप से योगदान दिया। जब उसने अज़ूर को धोखा दिया, तो उसने सच्चाई को धोखा दिया।

अलमारी

इस्तांबुल, 2016
एक तीसरा व्यक्ति, जिसका चेहरा आधे से रुमाल से ढका हुआ था, उन दोनों घुसपैठियों के साथ शामिल हो गया था। उसके बोलने के तरीके से लग रहा था कि वह उनका नेता है। वह शायद बगीचे में बाहर इंतजार कर रहा था जबकि बाकी दोनों हवेली में घुस गए और उसके लिए रास्ता साफ कर दिया।
‘जैसा हम कहें वैसा करो, किसी को चोट नहीं लगेगी,’ वह दहाड़ा। फिर भी उसकी आवाज़ में न तो गुस्सा था और न ही बेचैनी; बस ठंडा, उदासीन भाव था। ‘तुम्हारी मर्ज़ी।’
पेरी को एहसास हुआ कि वह कांप रही है। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। क्या उसे भागना चाहिए या छिपना चाहिए? ये लोग कौन थे – संगठित माफिया, आम लुटेरे या आतंकवादी – ये सभी इस्तांबुल में बड़ी संख्या में मौजूद थे? या क्या यह सब पैसे का खेल था? उस व्यापारी ने पैसा और ईर्ष्या दोनों बराबर मात्रा में जमा करते हुए कितने लोगों को नाराज़ किया था? उसे छत पर उसका परेशान चेहरा याद आया। लेकिन सोचने का समय नहीं था। गलियारे से, जहाँ वह दुबकी हुई थी, रसोई के दरवाजे को देखते हुए वह रुक गई। ड्राइंग रूम से देखे बिना वह अंदर नहीं भाग सकती थी। उसने एक कदम पीछे लिया। उसके हाथों ने पीछे लगे शीशे की सतह को छुआ। वह थोड़ा सा हिला – एक अलमारी का दरवाजा।
उसने उसे धक्का देकर खोला। अंदर कोट, बक्से, जूते, छाते थे। बिना सोचे समझे वह अंदर कूद गई और चुंबकीय कुंडी को बंद कर दिया। उसकी पीठ लकड़ी के तख्ते से सट गई और वह अंधेरे में सिकुड़कर एक गेंद जैसी बन गई। एक बार फिर, अपने जीवन में वह एक डरी हुई हेजहॉग बन गई।
एक मिनट बाद, शायद उससे भी कम समय में, कोई गलियारे में इधर-उधर भागता हुआ चिल्लाने लगा, 'किचन से बाहर निकलो! तुम सब। अभी!'
वे कर्मचारियों को इकट्ठा कर रहे थे। रसोइया, सहायक, रात के लिए रखी गई नौकरानियाँ। तेज़ कदमों की आहट। बूटों की भारी धमक। डरी हुई फुसफुसाहट। अलमारी के अंदर, पेरी ने मोबाइल का म्यूट बटन दबाया और अपनी माँ को एक संदेश टाइप किया। पुलिस को तुरंत फोन करो। तुम्हें पता है मैं कहाँ हूँ।

‘धत् तेरे की!’ उसने कहा, यह समझते हुए कि सेल्मा शायद सो गई होगी और अगली सुबह तक उसका संदेश नहीं देख पाएगी। डेनिज़ के चले जाने और सुरक्षित होने से उसे बहुत राहत मिली। लेकिन अदनान यहीं था… वहीं। उसका पति, उसका विश्वासपात्र, उसका सबसे अच्छा दोस्त। उसकी साँस एक सिसकी के साथ निकली। उसे एक ज़ोरदार आवाज़ सुनाई दी। एक महिला चीखी। पेरी ने एक चीख पहचानी, जो बाद में ज़ोरदार हंसी में बदल गई। यह आवाज़ मशहूर पत्रकार की प्रेमिका की लग रही थी। 'तुम्हें उनका आना नहीं दिखा? तुम खुद को भविष्यवक्ता कहती हो - भविष्यवक्ता बकवास है!'
अपने घुटनों को पकड़कर पेरी जम सी गई। क्या यह सब उस व्यापारी को उसके कर्मों का फल मिलने के बारे में था? या यह महज़ एक संयोग था – एक और आकस्मिक घटना जिसे समझने की व्यर्थ कोशिश की जा रही थी? उसे प्रवेश द्वार पर लगे सुरक्षा कैमरे और कांटेदार तार याद आए – सब व्यर्थ। दुनिया खतरों से भरी थी। हर कोने में अराजकता और अव्यवस्था मंडरा रही थी। क्या बुराई हमारे कर्मों का कोई दैवीय दंड था, या मनमानी किस्मत का खेल? अगर सब कुछ अनिश्चितता पर निर्भर था, तो बेहतर इंसान बनने की कोशिश करने का क्या मतलब था? अतीत के पापों का प्रायश्चित कैसे किया जाए, अगर अपने तौर-तरीकों को बदलकर नहीं? वह अच्छी थी – सिवाय उस आदमी के जिसे उसने सालों पहले प्यार किया था, और अपने दिल के किसी अनछुए कोने में, आज भी उससे प्यार करती थी। प्रोफेसर अज़ूर ने उसे सिखाया था कि अनिश्चितता अनमोल होती है। लेकिन क्या होगा अगर भ्रम ही सब कुछ हो?
पेट में अजीब सी बेचैनी महसूस करते हुए उसने पुलिस को फोन किया। एक पुलिस अधिकारी ने फोन उठाया और तुरंत उससे सवालों की बौछार करने लगा, मानो उसे गवाह की बजाय अपराधी समझ रहा हो। पेरी ने अपनी पूरी कोशिश करते हुए धीमी आवाज़ में उसे रोकते हुए कहा, 'वहाँ हथियारबंद लोग हैं...'
‘आपकी आवाज सुनाई नहीं दे रही। जोर से बोलिए,’ अधिकारी ने फटकार लगाई। पेरी ने उसे पता दिया।
‘आप उस घर में क्यों हैं?’ अधिकारी ने पूछा।
‘मैं मेहमान हूँ,’ उसने हताशा में फुफकारते हुए कहा। ‘उनके पास बंदूकें हैं।’
‘घर में तुम कहाँ हो?’ अधिकारी ने पूछा, लेकिन जवाब का इंतज़ार नहीं किया।
वह उसका नाम, उसका काम, उसका पता जानना चाहता था। ये सब बेकार के सवाल थे।

वह इतने समय से एक आदर्श नागरिक रही थी, लेकिन राज्य के डेटाबेस में वह सिर्फ एक डिजिटल रचना थी, एक ऐसा नंबर जिसका कोई इतिहास नहीं था।
अंत में, उस व्यक्ति ने कहा, 'ठीक है, हम एक टीम भेजेंगे।'
इसके बाद उसने बैटरी चेक की। यह पंद्रह मिनट या शायद उससे भी कम चलेगी। वह सोच रही थी कि इस बीच क्या होगा: क्या उसे बाकी लोगों के साथ पकड़ लिया जाएगा और बंधक बना लिया जाएगा या पुलिस आएगी और एक ऑपरेशन शुरू करेगी, जिसके दौरान उन सभी को बचाया जा सकेगा या मार दिया जाएगा? शायद बैटरी खत्म होने तक, तुर्की बुर्जुआ वर्ग का यह आखिरी भोज हमेशा के लिए खत्म हो जाएगा। जीवन अक्सर अन्यायपूर्ण लगता था, लेकिन मृत्यु उससे भी बड़ा अन्याय था। किसे स्वीकार करना ज़्यादा मुश्किल था: कि इस पागलपन में कोई छिपा हुआ मकसद था, अगर कोई सही जगह देख पाता; या कि इसमें कोई तर्क ही नहीं था, और इसलिए कोई न्याय भी नहीं था?
उसका हाथ फिर से फड़क रहा था, मानो उसका अपना दिमाग हो, किसी ऑक्टोपस की भुजा की तरह। बाहर उसके पति और दोस्त बंधक बने हुए थे, और वह कोट और जूतों के रैक के बीच मोबाइल की चमकीली रोशनी में छिपी हुई थी। उसने शिरीन द्वारा दिया गया नंबर दिखाया।
उसने अज़ूर को बुलाया।

अपमान

ऑक्सफोर्ड, 2016
हर दिन शाम ढलते ही अज़ूर टहलने निकल जाता था। वह पाँच से सात मील तक पैदल चलता, ऐतिहासिक रास्तों पर चलता, प्राचीन जंगलों से गुज़रता और लहराते खेतों को पार करता। खुले आसमान के नीचे मन में एक अलग ही स्पष्टता आ जाती थी, वह सोचता था, उद्देश्यपूर्ण और संयमित, लेकिन बिना किसी निश्चित मंज़िल के। अगर इंसानों के बारे में उसका कोई एक पक्का विश्वास था, तो वह यह था कि वे मानसिक रूप से गिरगिट की तरह होते हैं, शर्म और अपमान को भी सहने में सक्षम। यह बात उसने अटकलों से नहीं, बल्कि अपने निजी अनुभव से जानी थी। उसे शर्मिंदगी झेलनी पड़ी थी। उसे बदनामी का सामना करना पड़ा था। अगर किसी ने उसके युवा रूप को, जब वह शिक्षा और समाज दोनों में महत्वाकांक्षी और आत्मविश्वास से भरा हुआ था, बताया होता कि एक दिन वह सूरज के बहुत करीब उड़ने की तरह ज़मीन पर गिर पड़ेगा, तो उसे इस बात पर विश्वास करना बहुत मुश्किल लगता। सच तो यह है कि उस सिद्धांतवादी, युवा अज़ूर ने शायद कहा होता कि इस तरह के अपमान के साथ जीने से बेहतर मर जाना है। फिर भी, इस घोटाले के एक दशक से भी अधिक समय बाद, वह अभी भी मौजूद था, अभी भी जीवित था और अंदर से अभी भी गहरे आहत था।
चौदह साल पहले उन्हें अपना अध्यापन पद छोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा था। तब से उनका उस कॉलेज से एक ढीला-ढाला रिश्ता बना रहा, जो कभी उनका अकादमिक घर हुआ करता था, ठीक वैसे ही जैसे गर्भनाल जो अब उन्हें पोषण तो नहीं देती, लेकिन जिसे तोड़ा नहीं जा सकता। उन्हें वापस आकर पढ़ाने के लिए नहीं कहा गया था, और उन्होंने कोशिश भी नहीं की, कहीं ऐसा न हो कि उनका नाम उनके सहकर्मियों या विभाग के लिए शर्मिंदगी का कारण बन जाए। इन वर्षों में उन्होंने अपने बारे में कई लेख पढ़े थे, लेकिन एक लेख सबसे अलग था। उसमें उन पर सत्ता के भ्रम में डूबे एक अहंकारी व्यक्ति होने का आरोप लगाया गया था, एक ऐसा सत्ता और ज्ञान का मिश्रण जो युवा, असुरक्षित दिमागों को नासूर की तरह खराब कर देता है। बुराई का एक संपूर्ण चित्र बनाते हुए, लेखक ने पेरी के आत्महत्या के प्रयास को अनीसा के लापता होने से जोड़ दिया था। ‘यह एक ऐसा व्यक्ति है जिसने बौद्धिक रूप से बहकाई गई हर युवती के जीवन में

देने के हर प्रयास को दृढ़ता से नकार दिया था। उन्हें पता था कि चाहे कितना भी समय बीत गया हो, वे उनसे पहला सवाल उसी विवाद के बारे में पूछेंगे। भले ही वे इंटरव्यू में इसका जिक्र न करें, उनके लेख में इसका उल्लेख जरूर होगा, जो और भी बुरा हो सकता था। इसलिए उन्होंने यथासंभव लंबे समय तक इनकार किया। लेकिन पहुंच से बाहर रहने से वे अपने पाठकों की नजरों में और भी आकर्षक बन गए थे। उनके पास एक वफादार पाठक वर्ग था जो उनकी हर रचना को जानता, पढ़ता और साझा करता था। जैसा कि एक पत्रकार ने कहा था, उस दौर के सबसे बदनाम विचारकों में भी वे सबसे सम्मानित थे।
स्पिनोज़ा के देहांत के बाद, उन्होंने दूसरा कुत्ता पालने से इनकार कर दिया था। लेकिन यह फैसला ज़्यादा दिन नहीं टिका। दो महीने का एक रोमानियन शेफर्ड पिल्ला उनके दरवाजे पर आ पहुँचा, जिसके गले में एक सुनहरा रिबन बंधा था – शिरिन की ओर से जन्मदिन का तोहफा। घने, सफेद मुलायम बाल, जिन पर हल्के भूरे रंग के धब्बे थे। शांत और चतुर, पहाड़ों के लिए बना हुआ जानवर। ईश्वर और अन्य सभी चीजों के बारे में अपने निराशावादी विचारों के लिए प्रसिद्ध रोमानियन दार्शनिक के नाम पर उसका नाम रखना उचित लगा। इसके अलावा, यह अज़ूर के मिजाज के अनुकूल भी था। अब से सियोरान ही उसके साथ सैर पर जाने लगा।

आज दोपहर शिरीन उसके दरवाजे पर दस्तक देने आई, उसका पेट फूला हुआ था और गाल लाल हो रहे थे। गर्भावस्था कुछ महिलाओं को और भी अधिक सुंदर बना देती है, और वह उनमें से एक थी। अगर कभी कोई पापी संत हुआ कर भी सकता था, तो वह शिरीन ही थी।
‘तुम आओगे ना? कृपया मना मत करना। नहीं तो हंगामा मच जाएगा,’ उसने अपनी चमकदार हरी रंग की मैनीक्योर की हुई उंगलियों के नाखूनों से उसकी मेज पर थपथपाते हुए कहा।
शिरिन एक कुशल अकादमी बन चुकी थीं; कांड के बाद वे प्रिंसटन चली गईं, जहाँ से वे लगभग हर दिन बिना चूके उन्हें पत्र लिखती थीं। लौटने पर उन्हें अपने पुराने कॉलेज में अध्यापन का पद मिल गया। तब से उम्र के अंतर और जीवनशैली

में भिन्नता के बावजूद वे अच्छे दोस्त बने रहे। अज़ूर ने सोचा कि उन दोनों का अपने पुराने रिश्ते को फिर से जीवित करने की कोशिश न करना प्रशंसनीय और उचित था, लेकिन दुखद भी था। वह जानता था कि वह बूढ़ा हो रहा है।
‘देखो, यह आदमी कितना घिनौना है। नस्लवादी। समलैंगिक विरोधी। इस्लाम विरोधी। बेचारी मोना को तो दिल का दौरा ही पड़ जाता। उसे ज़रा भी शर्म नहीं है। वह कहता है कि भगवान उसके मुँह से बोलते हैं।’
अज़ूर मुस्कुराया। 'वे बहुत सारे हैं; इसकी आदत डाल लो।'
‘मैं नहीं आऊंगी,’ शिरिन ने कहा। ‘कृपया आइए।’
‘तुम मुझसे क्या चाहती हो, प्रिय? क्या तुम्हें लगता है कि मेरी उपस्थिति किसी के लिए, खासकर उसके लिए, कोई मायने रखती है? मैं उनकी नजरों में एक चलता-फिरता कलंक हूँ। इसके अलावा, मैंने भगवान से बहस करना छोड़ दिया है। अब और मत करो।’
मुझे इस बात पर जरा भी यकीन नहीं है। बस आ जाइए, प्लीज़।
उसके जाने के बाद, उसने अपने लिए चाय बनाई और रसोई की मेज पर बैठ गया। बाहर लगे सिकोमोर पेड़ की पत्तियों से छनकर आती सूरज की किरणें उसके चेहरे पर धब्बेदार पैटर्न बना रही थीं, जिससे उसकी तराशी हुई विशेषताएं और भी निखर रही थीं। उसके बगल में एक स्थानीय अखबार मुड़ा हुआ पड़ा था। उसमें एक डच विद्वान के बारे में लेख था, जो इस्लाम, शरणार्थियों, समलैंगिक विवाह और दुनिया की स्थिति पर अपने विवादास्पद विचारों के लिए जाने जाते थे। उन्होंने ईश्वर तक सीधी पहुँच का दावा किया था – एक विशेषाधिकार प्राप्त क्लब की सदस्यता। लगभग दो शताब्दियों से ऑक्सफोर्ड यूनियन प्रतिष्ठित बाहरी वक्ताओं को आमंत्रित करता रहा है, जो पारंपरिक से लेकर विवादास्पद तक होते थे। लेकिन किसी को भी इस एक व्यक्ति के भाषण के लिए हुए हंगामे जैसा शोर-शराबा याद नहीं था।
अज़ूर ने चाय का प्याला उठाया, जिससे वक्ता के सिर के चारों ओर फैले अखबार पर एक दाग लग गया – अब वह व्यक्ति सचमुच पवित्र प्रतीत हो रहा था। वह कुछ पल के लिए उस छवि को टकटकी लगाकर देखता रहा। फिर, अचानक ही उसने अपनी जैकेट और कार की चाबियाँ उठा लीं।

बीस मिनट बाद, जब अज़ूर बादलों से घिरे आकाश में धुंधली सी दिख रही इमारत के पास पहुंचा, तो उसने देखा कि छात्रों का एक समूह बाहर तख्तियां लेकर वक्ता के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहा था और मांग कर रहा था कि उसे विश्वविद्यालय परिसर से हटा दिया जाए।
एक युवक ने उसे रोक लिया। देखने में वह नया लग रहा था। वह अज़ूर को नहीं जानता होगा।
‘हमने इस राक्षस को रोकने के लिए एक याचिका शुरू की है, क्या आप हस्ताक्षर करेंगे?’ उनकी अंग्रेजी में उच्चारण का हल्का सा लहजा था, लेकिन सुनने में सहज थी।
‘क्या अब बहुत देर नहीं हो गई है?’ अज़ूर ने कहा। ‘वह व्यक्ति दस मिनट में बोलने वाला है।’
‘कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर हमें पर्याप्त हस्ताक्षर मिल गए तो अगली बार यूनियन को उसके जैसे किसी व्यक्ति को आमंत्रित करने से पहले दो बार सोचना पड़ेगा। वैसे भी, हम अंदर जाकर बातचीत में बाधा डालने की योजना बना रहे हैं।’ उसने अज़ूर के सामने एक बॉलपॉइंट पेन और एक पैड थमा दिया।
‘मुझे आपको निराश करने के लिए खेद है,’ अज़ूर ने कहा, ‘लेकिन मैं हस्ताक्षर नहीं करूंगा।’
युवक के चेहरे पर तिरस्कार का भाव आ गया। 'तो आप उससे सहमत हैं? एक फासीवादी से?'
मैंने यह नहीं कहा कि मैं उनके विश्वदृष्टिकोण से सहमत हूं।
लेकिन छात्र की रुचि पहले ही समाप्त हो चुकी थी, इसलिए वह मुड़कर तेज़ी से चलने लगा। अज़ूर दुविधा में पड़ गया कि उसे जाने दे या उसके पीछे भागे।
‘रुको!’ वह उसके पीछे दौड़ पड़ा।
छात्र आश्चर्यचकित होकर रुक गया।
‘आप मुसलमान हैं, है ना?’
एक सावधानीपूर्वक सहमति।
'मुझे लगता है कि आपने रूमी को पढ़ा है। वह पंक्ति याद है? यदि आप हर रगड़ से चिढ़ जाते हैं, तो आपका दर्पण कैसे चमकेगा?'
'क्या?'

‘इस व्यक्ति को बोलने दो। विचारों को विचारों से चुनौती दी जानी चाहिए। किताबों को बेहतर किताबों से। चाहे वे कितने भी मूर्खतापूर्ण क्यों न हों, आप लोगों की आवाज़ को दबा नहीं सकते। वक्ताओं पर प्रतिबंध लगाना कोई सही तरीका नहीं है।’
उन्होंने कहा, 'अपनी ज्ञान भरी विचारधारा को अपने तक ही सीमित रखो। किसी को भी मेरे धर्म और मेरे लिए पवित्र मानी जाने वाली चीजों का अपमान करने का अधिकार नहीं है।'
लेकिन कल्पना कीजिए कि अगर आप इस व्यक्ति की नफरत से ऊपर उठ सकें तो आपको कितनी आजादी महसूस होगी? हमें अपमान का जवाब बुद्धिमत्ता से देना चाहिए। ‘क्या ये फिर से तुम्हारा रूमी है?’
दरअसल, यह शम्स है, उसका साथी और –’
‘मुझे अकेला छोड़ दो,’ युवक ने अपने दोस्तों की ओर बढ़ने से पहले कहा और उनके कान में कुछ फुसफुसाया। वे सभी अज़ूर की ओर देखने लगे।
वह अपनी ज़बान पर काबू क्यों नहीं रख पाता था? इस ज़बान ने तो उसे ज़िंदगी में पहले ही बहुत परेशानियाँ दे दी थीं। अपने कम होते, सफ़ेद बालों में उंगलियाँ फेरते हुए वह ऑक्सफ़ोर्ड यूनियन में दाखिल हुआ। प्रवेश द्वार पर एक पोस्टर लगा था जिस पर भाषण का शीर्षक था: 'यूरोप को यूरोपियों के लिए बचाओ'।
हॉल में जमा भीड़ में तनावपूर्ण उत्तेजना का माहौल था। कुछ लोग वक्ता के प्रति क्रोध, तिरस्कार और अविश्वास की भावना लेकर यहाँ आए थे, जिसने अपमानजनक और उपहासपूर्ण बातें करके अपना पेशा बना लिया था; कुछ लोग इस बात से संतुष्ट थे कि आखिरकार कोई तो उनके मन की बात खुलकर कह रहा है। जैसे-जैसे अज़ूर धीरे-धीरे भीड़ में से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ा, पुराने कुछ साथियों ने उसे हाथ हिलाकर अभिवादन किया, जबकि अन्य ने ऐसा दिखाया जैसे उन्होंने उसे देखा ही न हो। शर्म एक अदृश्यता का आवरण थी। वह इसे सबके सामने ओढ़े रहता था। इससे उसे अब उतना दर्द नहीं होता था, जितना पहले होता था, जब वह देखता था कि लोग कितनी आसानी से फैसला सुना लेते हैं और दूरी बना लेते हैं। ऐसे समय में, वह पेरी के बारे में सोचता, सोचता कि वह इस्तांबुल में क्या कर रही होगी, उसने अपने लिए किस तरह का जीवन बनाया होगा। अगर उसे जीवन भर के अपमान की सजा मिली है, तो उसे जीवन भर के पछतावे की सजा मिली होगी। भला कौन कह सकता है कि आत्मा के लिए कौन सा कष्टदायक होगा?

उसे आते देख शिरिन खड़ी हो गई और हाथ हिलाते हुए बोली, एक हाथ अपने पेट पर रखा हुआ था। उसकी खुशी इतनी दिल को छूने वाली थी कि अज़ूर उदास हो गया। ये उसके कायर आरोप लगाने वाले या अवसरवादी प्रतिद्वंद्वी नहीं थे जिन्होंने उसे असुरक्षित महसूस कराया था। बल्कि वे लोग थे जो हर हाल में उससे प्यार करते थे, उसका सम्मान करते थे और उसका साथ देते थे। वे उसके बेगुनाह साबित होने का इंतज़ार कर रहे थे। लेकिन उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया था। वह हमेशा से यही सोचता था कि दूसरों के सामने अपनी बेगुनाही साबित करने की जितनी कोशिश करोगे, उनकी नज़रों में उतना ही दोषी साबित होओगे। इसके अलावा, पुरानी फाइलों को खोलना पेरी को भी दुख पहुँचाता।
‘आने के लिए धन्यवाद,’ शिरिन ने कहा। ‘मुझे पता था कि आप आएंगे।’
मैं जल्दी जा रहा हूँ। मुझे नहीं लगता कि मैं उसे अंत तक सहन कर पाऊँगा। वह मान गई।
कुछ देर बाद वक्ता मंच पर आए, बिना टाई पहने हुए, चमकीले नीले रंग के कश्मीरी सूट में। उन्होंने पश्चिमी सभ्यता के सामने आने वाले खतरों के बारे में तीस मिनट तक भाषण दिया। उनकी आवाज़ एक सधी हुई लय में ऊपर-नीचे होती रही, कभी धीमी होकर कर्कश फुसफुसाहट में बदल जाती, तो कभी उन शब्दों पर तेज़ हो जाती जिनसे डर पैदा होगा। उन्होंने कहा कि वे नस्लवादी नहीं हैं। निश्चित रूप से विदेशियों से नफरत करने वाले भी नहीं हैं। उनकी पसंदीदा बेकरी एक अरब दंपति चलाते हैं, उनके निजी डॉक्टर पाकिस्तानी मूल के हैं और उन्होंने अपने जीवन की सबसे अच्छी छुट्टियाँ कई साल पहले बेरूत में बिताई थीं, जहाँ एक टैक्सी ड्राइवर ने उनका खोया हुआ बटुआ ढूंढकर दिया था। लेकिन यूरोप के दरवाज़े मज़बूती से बंद करने होंगे। दूसरों द्वारा पैदा की गई पूरी अव्यवस्था का यही एकमात्र तार्किक परिणाम था। यूरोप उनका घर था। मुसलमान अजनबी थे। यहाँ तक कि पाँच साल का बच्चा भी जानता है कि अजनबियों को घर में आमंत्रित नहीं किया जाता। दुनिया में हर कोई पश्चिम की दौलत से ईर्ष्या करता था और इसे बाहरी लोगों और भीतर के उन यहूदियों से बचाना ज़रूरी था, जो यह नहीं समझते थे कि संस्कृति को कमज़ोर करना, नस्ल को दूषित करना, विरासत को अपवित्र करना गलत है। गलत! गलत! अंतरजातीय और अंतरधार्मिक विवाह, ये सभी पश्चिमी समाज की अखंडता को खतरे में डालते हैं। हमें शुद्धता की बात करने में शर्म नहीं आनी चाहिए। नस्लीय, सांस्कृतिक,

सामाजिक और धार्मिक शुद्धता। वह वाक्पटु, सभ्य और – सभी अच्छे नेताओं की तरह – जानते थे कि कब मजाक करना है।
यूरोप की समस्या यह थी कि उसने ईश्वर को त्याग दिया था। लोग अंततः इस ऐतिहासिक गलती को समझ रहे थे। अब समय आ गया था कि उद्धारकर्ता ईश्वर को वापस लाया जाए – शिक्षा जगत में, परिवार में, सार्वजनिक जीवन में। स्वतंत्रता को कभी भी नास्तिकता से नहीं जोड़ना चाहिए। यूरोप अपना समय समलैंगिक विवाह जैसे मूर्खतापूर्ण विषयों पर बहस करने में बर्बाद कर रहा था, जबकि बर्बर सेनाएँ हमारे द्वार पर मंडरा रही थीं। यदि लोग समलैंगिक होना चुनते हैं, तो ठीक है, लेकिन उन्हें इसके परिणाम भुगतने होंगे। वे विवाह का दावा नहीं कर सकते – जिसे स्पष्ट रूप से एक पुरुष और एक स्त्री के बीच ईश्वर के साथ एक वाचा के रूप में परिभाषित किया गया है। वर्तमान उथल-पुथल – आतंकवाद, शरणार्थी संकट, यूरोपीय धरती पर इस्लामी चरमपंथ – ईश्वर का यूरोपियों को सबक सिखाने का तरीका था। परीक्षा लेना, सुधारना, निखारना, परिपूर्ण बनाना। अतीत में प्रभु ने पापी शहरों पर आग और गंधक बरसाई थी; आज उन्होंने हम पर शरणार्थियों और आतंकवादियों की वर्षा की। हर युग अपनी सजा लेकर आता है।
मेरे मित्रों, ईश्वर आज हमारे साथ हैं। उन्होंने उन्हें विश्वविद्यालयों से निकालने की कोशिश की। उन्होंने उन्हें बहुत समय से नाराज किया है। लेकिन वे अपनी पूरी महिमा के साथ उपस्थित हैं। मैं तो बस उनका पात्र हूँ, उनकी विनम्र वाणी हूँ।
श्रोताओं के बीच अपनी सीट से अज़ूर ने ज़ोरदार और बेबाक अंदाज़ में उपहास किया, जिससे हॉल में सन्नाटा छा गया। वक्ता समेत सभी की निगाहें उसकी ओर मुड़ गईं।
'हमारे सामने कौन है? अगर मैं गलत नहीं हूं तो हम प्रोफेसर अज़ूर की उपस्थिति से सम्मानित महसूस कर रहे हैं,' वक्ता ने कहा, 'हालांकि अब वह प्रोफेसर नहीं हैं।'
जैसे ही सहकर्मी और छात्र उस उद्दंड श्रोता को बेहतर ढंग से देखने के लिए अपनी गर्दनें ऊपर उठाने लगे, हॉल में फुसफुसाहट फैल गई। अज़ूर खड़ा हो गया। उसके बगल में शिरिन चुपचाप बैठी रही, उसका चेहरा भूत की तरह सफेद पड़ गया था।
‘आप सही कह रहे हैं। मैं अब पढ़ाता नहीं हूँ।’

वक्ता ने मुंह बनाते हुए कहा, 'हां, मैंने सुना। यह खबर एम्स्टर्डम के हमारे शांत छोटे से कोने तक भी पहुंची।' उसके चेहरे पर सहानुभूति की एक बनावटी मुस्कान फैल गई। 'लेकिन मुझे यह देखकर खुशी हो रही है कि ईश्वर ने आपको फिर से प्रकाश में लौटा दिया है।'
‘किसने कहा कि मुझे अंधेरे में रखा गया था?’ अज़ूर ने कहा।
‘खैर, यह तो स्पष्ट है…’
अज़ूर ने सिर हिलाया। 'तो मुझे तुम्हें उम्मीद देनी होगी। मैं हर तरह से अपवित्र रहा हूँ। अगर ईश्वर मेरे माध्यम से काम कर सकता है, तो वह किसी के भी माध्यम से चमत्कार कर सकता है - शायद तुम्हारे जैसे बंद दिमाग को भी खोल सकता है।'
‘संत फ्रांसिस का उद्धरण देना आपकी बहुत बड़ी सराहना है। मेरा अनुमान है कि आपने अपने निजी उद्देश्यों के लिए ऐसा किया होगा। लोग ऐसा ही करते हैं। किसी दिन हमें इस पर बहस करनी चाहिए। यह मजेदार होगा।’
और इतना कहकर उपदेशक आगे बढ़ गया, अज़ूर को वहीं खड़ा छोड़कर, जो एक ऐसी बहस में शामिल होने के लिए बेचैन था जो निकट भविष्य में संभव नहीं थी।

शाम की सैर से लौटते समय, ऑक्सफोर्ड यूनियन के उस पल को याद करते हुए, घर ठंडा लग रहा था। दीवारों पर लगी तस्वीरें, चिमनी के पास की टाइलें। जब वह कल की लज़ान्या गर्म कर रहा था, तभी उसका फोन बजने लगा। एक अनजान नंबर, जो अंतरराष्ट्रीय लग रहा था। किसी से बात करने का मन नहीं था, इसलिए उसने फोन नहीं उठाया। फोन बीच में ही रुक गया, एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। उसके पैरों के पास बैठा सियोरान धीरे से रोया। फिर फोन दोबारा बजने लगा।
इस बार भीतरी किसी आवाज़ ने उसे फ़ोन उठाने के लिए प्रेरित किया। और उसने उठा लिया। इस्तांबुल के एक समुद्रतटीय आलीशान बंगले से, फ़ोन के दूसरी ओर पेरी थी, जो अपनी आवाज़ ढूंढने की कोशिश कर रही थी।

तीन जुनून

इस्तांबुल, 2016
सांस अंदर लो। सांस बाहर छोड़ो। एक पल के लिए, मानो समय थम सा गया और वह फिर से वही लड़की बन गई जो कभी थी, मानो किसी बुरे सपने से बाहर निकली हो या किसी और बुरे सपने में धकेल दी गई हो – जिस अलमारी में वह घुसी थी, वह उसके भाई की जेल कोठरी जैसी थी। इस बीच, बाहर, मेहमानों और कर्मचारियों को ऊपर सुनहरे दफ्तर में ले जाया गया था। पेरी ने उनके कदमों की आहट सुनी थी जब उन्हें एक साथ ले जाया जा रहा था, लेकिन अब घर में एक भयानक सन्नाटा छा गया था। घंटी बजने का इंतज़ार करते हुए उसने अपने पति के फोन पर अपनी पकड़ और मज़बूत कर ली। जैसे ही उसने दूसरी तरफ अज़ूर की आवाज़ सुनी, उसके गले में अचानक एक गांठ सी बन गई।
'नमस्ते?'
उस जानी-पहचानी आवाज़ ने उसकी आँखों में आँसू ला दिए। उसका मुँह मानो पश्चाताप के छोटे-छोटे कणों से भरा हुआ था। यह भयावह था कि कैसे साझा अतीत, तरल पीड़ा की तरह, वर्तमान की खामोशी में बह रहा था।
'नम?'
शब्द इतनी तेज़ी से उसके मुँह से निकल गए कि वह लगभग फोन काट ही देती। फिर भी वह खुद से भागते-भागते थक चुकी थी और अपने डर का सामना करने की तीव्र इच्छा ने उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। 'अज़ूर... मैं हूँ, पेरी।' ‘पेरी…’ उसने दोहराया और रुका, मानो उसके नाम का आह्वान ही सब कुछ समाहित कर लेता हो, अच्छा और बुरा और इन सबके बीच की हर चीज।
उसका दिमाग तेज़ी से चल रहा था। उसकी धड़कनें तेज़ थीं। फिर भी जब उसने दोबारा बात की तो उसकी आवाज़ शांत थी। 'मुझे आपको पहले ही फोन कर देना चाहिए था। मैंने कायरतापूर्ण व्यवहार किया।'
अज़ूर चुप रहा। उसे पता था कि यह पल आएगा, लेकिन उसने इसकी कभी योजना नहीं बनाई थी।
‘कितना बड़ा आश्चर्य!’ उसने आखिरकार कहा। वह कुछ और कहने ही वाला था, लेकिन फिर उसने अपना इरादा बदल दिया। ‘तुम ठीक हो?’

‘नहीं, ऐसा नहीं है,’ उसने बिना ज़्यादा सोचे-समझे जवाब दिया। उसने उसे यह नहीं बताया कि घर में हथियारबंद लोग हैं। न ही उसने यह कहा कि उसकी बैटरी कम हो रही है, इसलिए यह बातचीत अचानक खत्म हो सकती है। उसे पृष्ठभूमि में एक कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनाई दी। ‘स्पिनोज़ा?’
‘स्पिनोज़ा का निधन हो गया है, मेरे प्रिय। मुझे उम्मीद है कि वह अब एक बेहतर दुनिया में होंगे।’
वह चुपचाप रोने लगी। 'अज़ूर, मुझे आपसे माफी मांगनी चाहिए। मुझे समिति के सामने बोलना चाहिए था।'
उन्होंने नरमी से कहा, 'खुद को दोष मत दो। तुम उस समय सही फैसला लेने की स्थिति में नहीं थे। तुम बहुत छोटे थे।'
मैं काफी बड़ा हो चुका था।
‘खैर… मुझे और सावधान रहना चाहिए था।’
यह सुनकर वह चौंक गई। तो उसने इतने समय तक उससे नफरत नहीं की थी, जैसा कि उसे डर था। बल्कि उसने खुद ही नफरत का बोझ उठा लिया था।
मैंने आपकी नवीनतम पुस्तक पढ़ी, वह कहना चाहती थी। मैंने आपकी प्रकाशित हर एक किताब पढ़ी है... आप बदल गए हैं। आप अधिक संशयवादी... उदासीन लगते हैं। और मुझे आश्चर्य होता है कि क्या इसका मतलब यह है कि आपने अपनी बेचैनी, वह चंचल स्वभाव खो दिया है जो आपके छात्रों को मोहित कर लेता था और पूरे दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता था। मुझे उम्मीद है कि ऐसा नहीं है।
ऊपर से उसे दूर से कदमों की आहट सुनाई दी। थोड़ी देर की हलचल हुई। किसी ने चीख मारी। गोली चलने की आवाज गूंजी। एक धमाका हुआ।
पेरी का पूरा शरीर अकड़ गया, उसकी सांसें खरखराहट के साथ आने लगीं।
‘यह क्या था?’ अज़ूर ने पूछा।
‘कुछ नहीं,’ उसने कहा।
'आप कहां हैं?'
इस्तांबुल के एक आलीशान विला में, जिस पर अभी-अभी बदमाशों ने कब्ज़ा कर लिया है, एक अलमारी के अंदर, मेरे मुँह में डर का स्वाद और ऑक्सफोर्ड नाम के एक ट्रफल का स्वाद है। नहीं, वह उसे यह नहीं बता सकती थी।
'क्या इससे कोई फर्क पड़ता है?' उसने अपनी आवाज को बेहद धीमी रखते हुए कहा।

उन्होंने कहा, 'जब मैं तुमसे मिला, पेरी, तो मैंने सोचा, इस लड़की को पता नहीं है लेकिन वह बर्ट्रेंड रसेल के तीन जुनूनों को अपने भीतर समेटे हुए है: प्यार की लालसा, ज्ञान की खोज और मानवता के दुख के प्रति असहनीय करुणा।' उसका चेहरा उदासी से भर गया।
उन्होंने कहा, ‘तुममें ये तीनों गुण थे। प्यार की तुम्हारी ज़रूरत बहुत गहरी थी। सीखने की तुम्हारी प्यास। दूसरों के प्रति तुम्हारी संवेदनशीलता... आत्म-त्याग की हद तक। मुझे तुम्हारे लिए दुख हुआ। लेकिन मुझे तुम पर गुस्सा भी आया। तुमने मुझे एक ऐसी महिला की याद दिला दी जिसे मैं जानता था।’
‘आपकी पत्नी?’ उसने सावधानी से पूछा।
नहीं, मेरी प्यारी। यह नूर नाम की कोई महिला थी। मुझे डर लगने लगा था कि कहीं मैं तुम्हें भी उसी तरह चोट न पहुँचा दूँ जैसे मैंने उसे पहुँचाई थी। सच तो यह है कि मुझे पता है कि मैंने हर उस महिला को दुख पहुँचाया है जिसने मुझसे मदद मांगी है।
‘शिरिन को छोड़कर।’
'सच है, वह अजेय थी। वह ऐसी ही दिखती थी। वह उम्र में छोटी थी, लेकिन मजबूत और जिद्दी थी। जन्मजात योद्धा। उसके सामने चिंता की कोई बात नहीं थी। उसका कभी कुछ बुरा नहीं हो सकता था।'
‘तुम अपराधबोध से रहित प्रेम चाहते थे।’
‘शायद,’ अज़ूर ने कहा। ‘देखो, तुम अकेले नहीं हो जो भगवान से माफी मांग रहे हो।’
स्क्रीन पर बैटरी का रंग काले से लाल हो गया। 'क्या आप मेरे लिए कुछ करेंगे?'
'आगे बढ़ो।'
मैं एक और सेमिनार करना चाहूंगा। अभी।
वह हँस पड़ा। 'तुम्हारा क्या मतलब है? किस पर?'
‘क्षमा और प्रेम पर,’ उसने कहा। ‘और ज्ञान पर। इस बार मैं प्रोफेसर बनूंगी, ठीक है?’
एक सतर्क विराम। 'मैं सुन रहा हूँ, प्रिय।'
“अच्छा,” उसने कहा। “आज का व्याख्यान इब्न अरबी और इब्न रुश्द – एवरोएस पर है। इब्न रुश्द एक प्रख्यात दार्शनिक थे, और इब्न अरबी एक युवा और आशावान

छात्र थे जब वे दोनों पहली बार मिले थे। दोनों के बीच तुरंत एक जुड़ाव महसूस हुआ, क्योंकि दोनों ही पुस्तकों और ज्ञान के प्रति समर्पित थे और दोनों में से कोई भी रूढ़िवादिता को नहीं मानता था। लेकिन वे दोनों बहुत अलग भी थे।”
'कैसे?'
‘देखिए, यह सवाल पूरब और पश्चिम दोनों जगह एक ही है, है ना? आप स्वयं के बारे में और दुनिया के बारे में अपना ज्ञान कैसे बढ़ा सकते हैं? इब्न रुश्द के पास इसका स्पष्ट उत्तर था: चिंतनशील मनन के माध्यम से। तर्क के माध्यम से। अध्ययन के माध्यम से।’
और इब्न अरबी?
वे तर्क और रहस्यवादी अंतर्दृष्टि दोनों चाहते थे। उनका मानना था कि मनुष्य होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी बुद्धि का विस्तार करें। लेकिन उन्होंने यह भी माना कि कुछ चीजें मन की सीमाओं से परे हैं। अलग होने से पहले, इब्न रुश्द ने इब्न अरबी से आखिरी बार पूछा, क्या हम तर्कसंगत विचार-विमर्श के माध्यम से ही सत्य को उजागर करते हैं?
‘और इब्न अरबी ने क्या कहा?’
उन्होंने हां भी कहा और ना भी। उन्होंने कहा, “हां और ना के बीच, आत्माएं अपने शरीर से और मन अपने शरीर से अलग हो जाते हैं।” उनका मानना था कि ईश्वर की खोज करने वालों से अधिक अज्ञानी कोई नहीं होता, फिर भी केवल वही लोग जो अपने से बड़े सत्य की खोज करते हैं, उसे प्राप्त करने का अवसर पाते हैं। ‘मुझे बताओ, पेरी, तुम्हें इस कहानी में दिलचस्पी क्यों थी?’
क्योंकि मैं हमेशा हां और ना के बीच की उस दुविधा में फंसी रहती थी। आस्था से भी मेरा नाता था, संदेह से भी। मैं असमंजस में थी। ढुलमुल। कभी आत्मविश्वासी नहीं रही। शायद इसी अनिश्चितता ने मुझे वो बना दिया जो मैं आज हूं। यही मेरी सबसे बड़ी दुश्मन भी बन गई। मुझे इससे निकलने का कोई रास्ता नहीं दिख रहा था।’ वह थोड़ी देर रुकी। ‘मैंने तुम्हें धुंध में बच्चे के बारे में बताया था। अगर मतिभ्रम नहीं, तो यह एक ऐसा अनुभव था जिसके बारे में तुमने पहले कभी नहीं सुना था। कोई और विद्वान इस पर हंसता, लेकिन तुमने नहीं हंसा। तुम हमेशा नई चीजों के लिए खुली रहती थी। मैं तुम्हारी इस बात की प्रशंसा करती हूं।’

'आपको लगता है कि आप ही अकेले भ्रमित थे। लेकिन हममें से बहुत से लोग भ्रमित हैं।'
हम। एक आह जैसा शब्द। इतना छोटा, इतना विशाल। हम, भ्रमित लोग।
पेरी ने सिर हिलाया। 'मैंने तुम्हारी बहुत ज़्यादा तारीफ़ की। अब मुझे सब कुछ साफ़-साफ़ समझ आ रहा है। जब हम प्यार में पड़ते हैं तो दूसरे को अपना भगवान बना लेते हैं - यह कितना खतरनाक है? और जब वह हमें बदले में प्यार नहीं करता, तो हम क्रोध, आक्रोश, नफ़रत से जवाब देते हैं...'
उसने कहा, ‘प्रेम में कुछ ऐसा है जो आस्था से मिलता-जुलता है। यह एक तरह का अंधविश्वास है, है ना? सबसे मधुर आनंद। अपने सीमित, परिचित स्वरूप से परे किसी सत्ता से जुड़ने का जादू। लेकिन अगर हम प्रेम में बहक जाते हैं - या आस्था में - तो यह एक हठधर्मिता, एक जुनून में बदल जाता है। मिठास खट्टी हो जाती है। हम उन देवताओं के हाथों दुख भोगते हैं जिन्हें हमने खुद बनाया है।’
'मैं पृथ्वी पर उन अंतिम व्यक्तियों में से एक होना चाहिए जिन्हें देवता माना जाता है,' अज़ूर ने कहा।
‘यह तुम नहीं थे,’ पेरी ने कहा। ‘यह वह अज़ूर था जिसे मैंने खुद अपने लिए बनाया था। वह अज़ूर जिसकी मुझे अपने खंडित अतीत को समझने के लिए ज़रूरत थी। वही प्रोफेसर था जिससे मैं मोहित थी। मेरे मन में बसा हुआ अज़ूर।’
तो वह बोलती रही। उसकी आवाज़ में दृढ़ता बढ़ती जा रही थी, उसकी आँखें अब अंधेरे में पूरी तरह से अभ्यस्त हो चुकी थीं, उसके घायल हाथ में एक मोबाइल टिमटिमा रहा था। वह ऑक्सफ़ोर्ड के बाहर एक घर में एक आदमी को प्रवचन दे रही थी, जबकि उसका कुत्ता धैर्यपूर्वक उसके पास इंतज़ार कर रहा था। स्थिति बिल्कुल उलट हो सकती थी: वह खतरे में होता, वह सुरक्षित। आज वह शिक्षक थी; वह, छात्र। भूमिकाएँ बदलती रहती हैं, शब्द कभी स्थिर नहीं रहते। जीवन का आकार एक वृत्त है, और उस वृत्त का प्रत्येक बिंदु केंद्र से समान दूरी पर होता है - चाहे कोई उसे ईश्वर कहे या कुछ और।
समुद्र किनारे स्थित हवेली की ओर आती सायरन की आवाज़ उसे सुनाई दी। कुछ ही मिनटों में, सब कुछ बदलने वाला था – एक नई शुरुआत या फिर एक असमय अंत। फ़ोन की आखिरी बीप बजने के बाद, उसने अलमारी का दरवाज़ा खोला और बाहर कदम रखा।

[redacted]

[redacted], [redacted], [redacted]-[redacted] [redacted], [redacted] [redacted] [redacted]

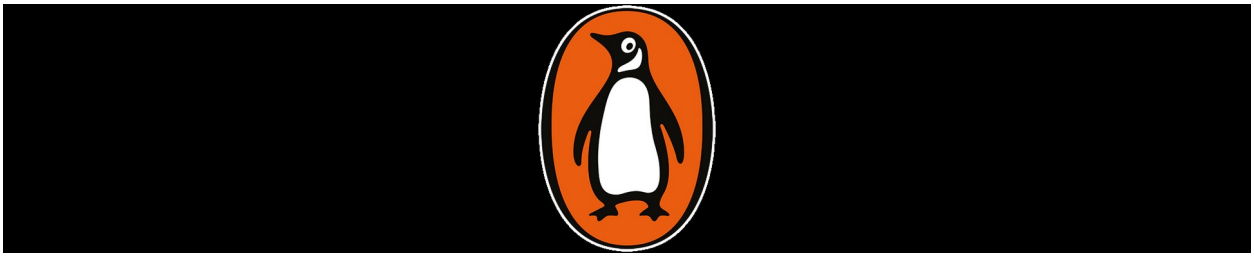

शुरुआत

चलिए बातचीत शुरू करते हैं…
Penguin को Twitter.com@penguinUKbooks पर फॉलो करें
हमारी सभी कहानियों से अपडेट रहने के लिए YouTube.com/penguinbooks पर जाएं।
अपने Pinterest पर ‘Penguin Books’ को पिन करें Facebook.com/penguinbooks पर ‘Penguin Books’ को लाइक करें SoundCloud.com/penguin-books पर पेंगुइन को सुनें
लेखक के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें और
Penguin.co.uk पर इस तरह की और भी कहानियां पढ़ें।

वाइकिंग
यूके | यूएसए | कनाडा | आयरलैंड | ऑस्ट्रेलिया
भारत | न्यूजीलैंड | दक्षिण अफ्रीका
वाइकिंग, पेंगुइन रैंडम हाउस समूह की कंपनियों का हिस्सा है, जिनके पते यहां मिल सकते हैं:
global.penguinrandomhouse.com.

पहली बार 2016 में प्रकाशित
कॉपीराइट © एलिफ़ शफ़ाक, 2016
रेनर मारिया रिल्के द्वारा लिखित उद्धरण न्यू डायरेक्शंस पब्लिशिंग कॉर्प की अनुमति से प्रकाशित किया गया है। अनुवाद बैबेट ड्यूच द्वारा, "पोएम्स फ्रॉम द बुक ऑफ आवर्स" से लिया गया है, कॉपीराइट © 1941 न्यू डायरेक्शंस पब्लिशिंग कॉर्प।
राबिया द्वारा रचित यह उद्धरण डैनियल लाडिंस्की की अनुमति से प्रकाशित किया गया है। अनुवाद डैनियल लाडिंस्की द्वारा किया गया है, जो उनके द्वारा संपादित पुस्तक "लव पोएम्स फ्रॉम गॉड" से लिया गया है। कॉपीराइट © डैनियल लाडिंस्की
हाफ़िज़ का यह अंश डैनियल लाडिंस्की की अनुमति से प्रकाशित किया गया है। अनुवाद डैनियल लाडिंस्की द्वारा किया गया है, जो डैनियल लाडिंस्की द्वारा संपादित पुस्तक "द गिफ्ट" से लिया गया है। कॉपीराइट © डैनियल लाडिंस्की यह अंश टी. एस. एलियट की रचना 'द रॉक' से लिया गया है, कॉपीराइट © टी. एस. एलियट। फेबर एंड फेबर लिमिटेड की अनुमति से पुनर्प्रकाशित।
लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है।
ISBN: 978-0-241-97887-0
* महोदय: ‘महोदय’।

* □□□□□□□: ‘□□□□□□□ □□□□□□ □□’□
* □□□□□ □□□□□□□□: ‘□□□□□ □□□□□□ □□ □□□’□
* □□□□□: ‘□□□□□ □□□ □□□’□
□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□
* □□□□□□: ‘□□□□□ □□□□□’□
* □□□□□ □□□□□□□□: ‘□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□’□
* □□□□□□□: '□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□'□
* □□□□□□□□□ □□□□, □□□□□□□□□ □□□□: ‘□□□□□□□□□ □□□□, □□□□□□□□□ □□□□’□
* □□□□□: ‘□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□’□
□□□□□□
† □□□□□□□□□□□□
‡ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□
§ □□□□□, □□□□□□□□□□□□
* □□□□□□□□□□: ‘□□□□□ □□□□□□’□

sjeet